।। श्री सर्वेश्वरो जयति ॥

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः॥

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

अ.भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

आचार्यपीठाभिषेक – अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव – स्मारिका

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठस्थ पौराणिक साभ्रमती नदी के पावन तट पर सुशोभित श्री निम्बार्क-विहार

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री "श्रीजी" महाराज

के

आचार्यपीठाभिषेक–अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव पर

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में

आयोजित सप्त दिवसीय

[दि० २२ मई १९९३ से २८ मई १९९३ ई० पर्यन्त]

अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन

एवं

स्वर्णजयन्ती महोत्सव

स्मारिका

प्रकाशक—

अखिल भारतीय जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) किशनगढ़ (राज०)

दीपमालिका
वि० सं० २०५१

न्यौछावर
१०१) रु०

मुद्रक—
श्रीओमप्रकाश भँवर
श्रीनिम्बार्क – मुद्रणालय
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)
किशनगढ़ – राजस्थान

श्रीनिम्बार्कतीर्थस्तवः

रचयिता—

आशुकवि पं. सत्यनारायणः शास्त्री, काव्यतीर्थो निम्बार्कभूषणोऽजयमेरुः

निःशेषलोकस्य सदाऽनुकूलं संसारतापत्रयनाशमूलम् ।
दैन्याधिसंतापविभेदशूलं निम्बार्कतीर्थं प्रणमामि नित्यम् ॥१॥
मायामहामोहमदापहारं निःसारसंसारविकारहारम् ।
आगन्तुकान्तः शुभभक्तिचारं निम्बार्कतीर्थं प्रणमामि नित्यम् ॥२॥
यात्रिव्रजान्तः स्थितपापहारि सुरम्यकुण्डस्थितपुण्यवारि ।
भक्तालिचित्तेषु सुखप्रचारि निम्बार्कतीर्थं प्रणमामि नित्यम् ॥३॥
द्रष्टुञ्जना येऽत्र समाव्रजन्ति तेषां हि पापानि लयं व्रजन्ति ।
मुदं ददात्यापदमाशु हन्ति निम्बार्कतीर्थं प्रणमामि नित्यम् ॥४॥
श्रीराधिकामाधवनामधेयो विराजतेऽत्रैव सुरादिगेयः ।
देवः सदाभक्तमनोनिधेयो निम्बार्कतीर्थं प्रणमामि नित्यम् ॥५॥
पापौघभंगं सुखदायिसंगं चलद्विशुद्धाम्बुसुलोलभंगम् ।
आत्मौजसाऽऽक्रान्तजगद्भुजंगं निम्बार्कतीर्थं प्रणमामि नित्यम् ॥६॥
स्मरामितीर्थेन्द्रमिदं सदैव भजामि शुद्धेन हृदा मुदैव ।
गायामि रागेण महानुरागं निम्बार्कतीर्थं प्रणमामि नित्यम् ॥७॥
ध्यायन्ति गेहस्थजनाः सदा ये निहन्ति तेषामखिलान्यघानि ।
लोकैः सुवन्द्यं मनसाऽप्यनिन्द्यं निम्बार्कतीर्थं प्रणमामि नित्यम् ॥८॥
जज्ञेऽर्बुदात्साभ्रमतीह सिन्धुस्तस्यास्तटस्थं भुवि पुण्यराशि ।
कल्याणकृत्किल्बिषनाशकारि निम्बार्कतीर्थं प्रणमामि नित्यम् ॥९॥
श्रीसाभ्रमत्याः सरितोऽधिवेलमग्रे सुतीर्थं किल पिप्पलादात् ।
विराजते पापहरं सुपुण्यं निम्बार्कतीर्थं प्रणमामि नित्यम् ॥१०॥
कोलाहलत्रस्तविकर्त्तनोऽयं निम्बे निलिल्ये स्वसुरक्षणार्थम् ।
तदाप्रभृत्येतदभूत्सुतीर्थं निम्बार्कतीर्थं प्रणमामि नित्यम् ॥११॥
स्नानेन मार्तण्डसपर्यया च लभेत लोकोऽत्र निजेष्टसिद्धिम् ।
व्याध्याधिवृन्दं क्षयमेतितूर्णं निम्बार्कतीर्थं प्रणमामि नित्यम् ॥१२॥
विवस्वतो द्वादशनामभिर्ना मार्तण्डमञ्चेदिह शुद्धभावैः ।
स पुत्रपौत्रान्धनधान्यमेव विन्देत निःसंशयमाशु लोके ॥१३॥
निम्बार्कतीर्थान्नहि तीर्थमन्यन्महीतलेऽस्तीति च सत्यमेव ।
सद्भावभाजी तदवश्यमेत्य कुर्याद्धि साफल्ययुतं नृजन्म ॥१४॥
प्रगुम्फितं पद्मपुराणवर्ति—निम्बार्कतीर्थस्तवनं वरेण्यम् ।
पठन्ति ते यान्ति जनाः स्वभक्त्या गोलोकसंज्ञं ध्रुवधाम नित्यम् ॥१५॥

अनुक्रमणिका

स्वर्णजयन्ती समारोह

हिन्दू संस्कृति सम्मेलन प्रवक्ता

विश्वशान्ति सम्मेलन प्रवक्ता

शिक्षा सम्मेलन प्रवक्ता

महिला सम्मेलन प्रवक्ता

समापन समारोह प्रवक्ता

* चित्र-सूची *

रंगीन चित्र

सादे चित्र

★★

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज

के आचार्यपीठाभिषेक–अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव पर आयोजित स्वर्णजयन्ती महोत्सव

एवं अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के शुभावसर पर

देश के वरिष्ठ महानुभावों द्वारा

संप्रेषित–शुभकामनाएँ

राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली

महामहिम राष्ट्रपतिजी को सम्बोधित आपका पत्र प्राप्त हुआ। इस सन्दर्भ में निवेदन है कि आपके आगमन हेतु अनुरोध को स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं। इसका उन्हें खेद है। सम्मेलन की सफलता की शुभकामना है।

—सिद्धार्थवामन मालवदे
(निजी सचिव)

श्रीजगद्गुरु शंकराचार्य महासंस्थानम्, दक्षिणाम्नाय श्रीशारदापीठम्, शृङ्गेरी

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीशाः श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्या एकादशवर्षेभ्यः पूर्वं शृङ्गेरीशारदापीठाधीश्वरजगद्गुरुशंकराचार्यश्रीचरणान् स्वीयेमठे सगौरवं सभाजितवन्त इति जगद्गुरुचरणानां स्मृति पटले अद्यापि वरिवर्ति। तेषामधुना स्वर्णजयन्तीमहोत्सवः प्रवर्तत इति प्रमोदस्थानम्।

महास्वामिनोऽमृतशिलामयी मूर्तिः अस्मिन्नेव मासे द्वादशदिनाङ्के प्रतिष्ठां प्रेष्यति। भवद्भिश्चिकीर्षितः स्वर्णजयन्तीमहोत्सवः तदा प्रवर्त्तयिष्यमाणा विविधसम्मेलनादयः कार्यक्रमा भगवतो भूतभावनस्यासीमया कृपया सुष्ठुसम्पद्यन्ताम्, लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु इति च श्रीचरणा आशासते।

—दक्षिणामूर्तिः

राज्यपाल राजस्थान, राजभवन जयपुर

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, श्रीनिम्बार्क-तीर्थ (सलेमाबाद) किशनगढ़ जिला-अजमेर;के पीठाधीश्वर श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरण-देवाचार्यजी महाराज के आचार्य पीठाभिषेक का स्वर्णजयन्ती महोत्सव का आयोजन २२ मई १९९३ को किया जा रहा है।

मुझे विश्वास है कि पाटोत्सव की स्वर्णजयन्ती के अनुष्ठान भारतीय उप महाद्वीप की परम्परागत सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता एवं सद्भाव को बनाने की दृष्टि से उपयोगी एवं

उद्देश्यपूर्ण सिद्ध होंगे । मैं आचार्यवर के स्वस्थ एवं सुदीर्घ जीवन की कामना करते हुए आयोज्य अध्यात्म अनुष्ठानों की सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ ।

—एम० चेन्ना रेड्डी

महाराजा गजसिंहजी सा० जोधपुर–राजस्थान, उम्मेदभवन

पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों में व्यस्तता के कारण महाराजा साहब अखिल भारतीय सनातन धर्म सम्मेलन में सम्मिलित नहीं हो सकेंगे । महाराजा साहब की ओर से सम्मेलन की सफलता के लिए शुभकामनाएँ ।

—सचिव ठा० सुरेन्द्रसिंहजी

श्रीमंत राजमाता महारानी विजयराजे सिन्धिया, ग्वालियर

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के आचार्य पीठाभिषेक के अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव के आयोजन का समाचार जानकर प्रसन्नता हुई, इस परम पुनीत कार्यक्रम की सफलता के लिए श्रीमंत की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ स्वीकार कीजिये ।

—विजयराजे सिन्धिया

गो० श्रीगोपाललालजी श्रीमहाप्रभुजी का बड़ा मन्दिर बल्लभाचार्य मार्ग–कोटा

श्रीनिम्बार्कपीठ पर सप्तदिवसीय अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन दिनांक २२ मई से २८ मई तक हो रहा है, यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई । अस्वस्थता के कारण आना नहीं हो सकेगा । सम्मेलन सानन्द सम्पन्न हो ऐसी शुभकामना है ।

—निजी पार्षद रूपनारायण

श्रीमठ जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यपीठ, पंचगंगा घाट, वाराणसी

अति प्रसन्नता है कि परम पूज्य जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के आचार्य पीठाभिषेक का स्वर्णजयन्ती महोत्सव मनाया जा रहा है । परम प्रभु श्रीराघवेन्द्र की कृपा से स्वर्णजयन्ती महोत्सव के समस्त कार्यक्रम मर्यादानुकूल एवं सकुशल सम्पन्न हो । परमपूज्य श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराज पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों में व्यस्त रहेंगे ।

—निजी पार्षद राजनाथ पाण्डेय

प्रो. वि. वेंकटाचलम् कुलपति सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ. प्र.)

भारत वसुन्धरा दिव्य विभूतियों से समलंकृत होकर युगों-युगों से अध्यात्म ज्ञान-विज्ञान एवं सदाचार का सन्देश विश्व मानवता को देती रही है इसी शृङ्खला में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर सन्त शिरोमणि श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज उन महाविभूतियों में अन्यतम हैं, जिन्होंने अपने महनीय ब्रह्मवर्चस् सम्पन्न मंगल सन्निधान से जनमानस को न केवल आप्यायित किया है, अपितु शास्त्रपीयूषवर्षणी वाग्धारा से एवं शास्त्रानुमोदित धर्माचरण से लोकमंगल सम्पादित किया है। आचार्यचरण के श्रीनिम्बार्कपीठासीन होने से निम्बार्कदर्शन का आलोक उत्तरोत्तर वृद्धिगत होकर धर्मप्राण जनता का मार्गदर्शन कर रहा है।

श्री 'श्रीजी' महाराज के आचार्यपीठाभिषेक अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव के पावन अवसर पर मैं उनके दीर्घ आयुष्य की कामना करता हूँ तथा श्रीसर्वेश्वर प्रभु से अभ्यर्थना करता हूँ कि इस भूमण्डल पर दैवीसम्पत् का अनुदिन प्रवचन आचार्यश्री के सान्निध्य में होता रहे।

आचार्यचरण के पीठाभिषेक के स्वर्णजयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन की सफलता के लिए भी मैं हार्दिक शुभकामना समर्पित करता हूँ।

—ह० वि० वेंकटाचलम्

श्रीमच्चैतन्य सम्प्रदाय मूर्द्धन्य सुधीप्रवर श्रीपुरुषोत्तम गोस्वामीजी महाराज, वृन्दावन

स्वर्णजयन्ती महोत्सव एवं विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का आमन्त्रण मिला। पूज्य महाराजश्री इस अनूठे आयोजन की सूचना पाकर आनन्दित हैं। श्री 'श्रीजी' महाराज की भगवत्सेवा की ५० वीं जयन्ती पर वे बधाई लिखाते हैं तथा आशा करते हैं कि श्रीराधामाधव की कृपा से यह अनुष्ठान सफल होगा। वैष्णवाचार के आधारभूत ग्रन्थ "क्रमदीपिका" के प्रकाशन से लेकर समयोचित विषयों पर गोष्ठियों का आयोजन श्री श्रीजी महाराज की समग्र दृष्टि का द्योतक है। भगवान् श्रीसर्वेश्वर उन्हें धर्म और देश, सेवा हेतु शतायु करें।

—निजी पार्षद श्रीवत्स गो०

स्वामी श्रीसत्यमित्रानन्दजी गिरि, भारतमाता मन्दिर सप्त सरोवर, हरिद्वार

स्वर्णजयन्ती महोत्सव में पूज्य गुरुदेव आने में असमर्थ रहेंगे क्योंकि भारतमाता मन्दिर का दण्डादि महोत्सव एवं वृद्धाश्रम उद्घाटन का कार्यक्रम हरिद्वार में २२ मई से २५ मई तक रहेगा। सम्मेलन सफलता पूर्वक सम्पन्न हो ऐसी शुभकामनाएँ लिखाई है।

—निजी पार्षद न्यायमित्र शर्मा

युगसन्त मुरारी बापू—श्रीरामकथा प्रवक्ता, महुवा (भावनगर) सौराष्ट्र

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज की स्वर्णजयन्ती के शुभावसर पर करबद्ध मंगलकामना। आपके सर्वविध विश्रुत वर्चस्व से आज हम सभी गौरवान्वित हैं। मैं इस अवसर पर उपस्थित होता तो मेरा अत्यन्त अहोभाग्य होता पर गंगोत्री आदि स्थलों पर पूर्व निश्चित श्रीरामकथा आयोजन होने से अत्यन्त विवश हूँ। समागत सभी धर्माचार्यों, सन्त-महात्माओं एवं भक्तों को सादर अभिवादन।

—मुरारी बापू

श्री श्रीजी हजूर महाराणा साहिब श्रीअरविन्दसिंहजी मेवाड़, राजमहल उदयपुर

आचार्यपीठाभिषेक पाटोत्सव की स्वर्णजयन्ती का सलेमाबाद में भव्य आयोजन हो रहा है। इन सात दिनों में जो कार्यक्रम रखे गये हैं उनसे देश की मूल संस्कृति के प्राणों को अपूर्व बल मिलेगा, ऐसा विश्वास है। भगवान् श्री एकलिंगनाथ इस परम पावन समारोह को आशा से भी अधिक सफलता प्रदान करें।

—निजी सचिव कृष्णचन्द्र शास्त्री

महाराणा महेन्द्रसिंह—मेवाड़, समूर बाग उदयपुर

मुझे बहुत दुःख है कि आचार्यचरणों की भावनानुसार उनकी स्वर्णजयन्ती समारोह में पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों की विवशता के कारण उपस्थित नहीं हो सकूँगा। स्वर्णजयन्ती समारोह की सम्पन्नता की मंगलकामना।

—महाराणा महेन्द्रसिंह—मेवाड़

अटलबिहारी वाजपेयी, संसद सदस्य, रायसीना रोड़, नई दिल्ली

आपका १० मई १९९३ का पत्र तथा स्वर्णजयन्ती महोत्सव का विस्तृत कार्यक्रम प्राप्त हुआ, बहुत-बहुत धन्यवाद।

इस मंगलमय अवसर पर मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार करें। मैं समारोह की सफलता चाहता हूँ और प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि वह सभी प्रकार से आपकी सहायता करे।

मुझे समारोह में उपस्थित होने में बड़ी प्रसन्नता होती किन्तु पूर्व निश्चित कार्यक्रम के कारण मेरे लिए आना सम्भव नहीं हो सकेगा।

शुभकामनाओं सहित।

—अटलबिहारी वाजपेयी

नवलकिशोर शर्मा, महामन्त्री अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (इ) नई दिल्ली

जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के आचार्य पीठाभिषेक का अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव स्वर्ण जयन्ती महोत्सव में मेरी बहुत इच्छा थी कि उपस्थित हो सकता। मैंने इसके लिए वचन भी दिया था, मगर एकाएक ही अमेठी में कांग्रेस अधिवेशन के कारण अब आना सम्भव नहीं है। उन्हीं तारीखों को यह अधिवेशन है। मेरी अनुपस्थिति को अन्यथा न लेते हुए, इस अवसर पर मेरी मंगल कामना स्वीकार करें। आशा है इस अवसर पर आयोजित सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न होगा।

शुभकामनाओं सहित।

—नवलकिशोर शर्मा

हरिदेव जोशी, पूर्व मुख्यमन्त्री–राजस्थान, जयपुर

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के आचार्य पीठाभिषेक का अर्द्धशताब्दी [पचासवां] पाटोत्सव स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है और इस अवसर पर सप्त दिवसीय अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन भी किया जा रहा है।

मेरी शुभकामना है कि सनातन धर्म सम्मेलन पूर्णतया सफल हो।

—हरिदेव जोशी

डा० मुरलीमनोहर जोशी, संसद सदस्य राज्यसभा, अध्यक्ष–भारतीय जनता पार्टी

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता है कि अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी' श्रीराधा-सर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के आचार्य पीठाभिषेक की अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है और इस अवसर पर एक सप्त दिवसीय अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन भी किया जा रहा है। इस अवसर पर मैं पूज्य श्रीआचार्यजी का अभिनन्दन करता हूँ तथा सम्मेलन की सफलता के प्रति अपनी शुभ-कामनाएँ प्रकट करता हूँ।

—मुरलीमनोहर जोशी

श्रीहरिशंकर भाभडा, अध्यक्ष–राजस्थान विधान सभा, जयपुर

मेरा विश्वास है कि प्रस्तावित सनातन धर्म सम्मेलन के अन्तर्गत आयोजित किये जाने वाले विविध कार्यक्रमों से देश के धर्मप्राण लोगों में सनातन धर्म और हिन्दु संस्कृति को बहुआयामी स्वरूप और प्राचीन सांस्कृतिक परम्पराओं के सम्बन्ध में जन-जन में व्याप्त

आशंकाओं का न केवल निराकरण हो सकेगा वरन् सनातन धर्म के प्रति उनकी आस्था और सुदृढ़ हो सकेगी।

कृपया स्वर्ण जयन्ती पाटोत्सव के आयोजनों की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

—हरिशंकर भाभड़ा

गीता भवन ट्रस्ट, इन्दौर, एन. एम. व्यास प्रबन्ध ट्रस्टी

प्रभु कृपा से २२ से २८ मई तक आचार्य पीठाभिषेक अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव एवं स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का आयोजन विशाल रूप में हो रहा है। प्रसन्नता हुई। आपश्री के आचार्यत्वकाल में अनेकों परोपकारी लोक कल्याणकारी मानव सेवार्थ कार्य सम्पन्न हुये ऐसे महान् विभूति के पूज्य चरणों में बारम्बार नमन करते हुये परमपिता से यही प्रार्थना करता हूँ कि आप स्वस्थ एवं दीर्घायु रहें तथा आपके मार्गदर्शन में अनेकों सेवाकार्य होते रहें। यही मंगलमय शुभकामना कर रहा हूँ।

—एन. एम. व्यास

रामस्नेही श्रीपुरुषोत्तमदासजी शास्त्री, श्रीरामस्नेही सम्प्रदायाचार्य खेडापा–श्रीरामधाम खेडापा जोधपुर

यह मेरा परम सौभाग्य होता कि मैं इस स्वर्ण जयन्ती के निमित्त समायोजित इस विराट् सनातन धर्म सम्मेलन में सम्मिलित होकर एक ही स्थान पर भारत के अनेक मूर्धन्य सन्तों, महापुरुषों व विद्वानों का सान्निध्य, सत्संग, दर्शन प्राप्त कर लेता। पर भाग्य में लिखे बिना हर एक को ऐसा दुर्लभ लाभ एकाएक कैसे मिल सकता है? ठीक इन्हीं दिनों में २२ मई से २८ मई तक सांचोर गिरी में भागवत सप्ताह कथा का पूर्व में कार्यक्रम तय हो चुका है। अखिल चराचर नायक राम महाराज से मेरे राम की यही हार्दिक प्रार्थना है कि श्री 'श्रीजी' महाराज के इस स्वर्ण जयन्ती महोत्सव की सफलता के साथ वे परम विद्वान् परम गम्भीर, परम उदारमना साधुसेवी श्री श्रीजी महाराज जैसे महापुरुष को सुदीर्घ आयुष्य प्रदान करावें ताकि वे अपने जीवन व साधन के गहरे अनुभवों से सुदीर्घकाल तक सम्प्रदाय, जन समुदाय व देश को निरन्तर सत्पथ पर चलाते हुये कल्याणानुगामी बनाते रहें।

भावत्क : श्रीपुरुषोत्तमदास शास्त्री

श्रीहिताश्रम सेवान्यास समिति वृन्दावन, स्वामी हितदासजी

व्रजवास के नियम एवं शारीरिक असमर्थता व शीत से उत्सव सुख से वंचित रहूँगा। क्षमा प्रार्थी हूँ। स्वामीजी की दीर्घायु और सर्वविध मंगलकामना करता हुआ पुनः क्षमा प्रार्थी हूँ।

—स्वामी हितदास

अखिल भारतीय सनातन धर्म प्रतिनिधि सम्मेलन सं. अ. डा. गोस्वामी गिरिधारीलाल

आज सबसे जरूरी है कि देश की एकता एवं अखण्डता के लिए सनातन धर्म का योगदान आवश्यक है। मैं समझता हूँ कि देश के महान् सन्त, महात्मा ही देश की एकता एवं अखण्डता के काम को पूरा कर सकते हैं।

बहुत प्रसन्नता है कि श्रीचरणों के आशीर्वाद से अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन हो रहा है। मैं इसकी पूर्ण सफलता की कामना करता हूँ।

—रमाकान्त गोस्वामी

श्रीवैद्यनाथ झा–प्राचार्य श्रीनिम्बार्क महाविद्यालय, वृन्दावन

आचार्यपीठ में पूर्व की भाँति अपितु उससे भी वृहद् रूप में सनातन धर्म सम्मेलन आदि अनेकानेक सम्मेलनों का आयोजन हो रहा है यह बड़ी प्रसन्नता की बात है। पूज्य श्री 'श्रीजी' महाराज द्वारा अपने कार्यकाल में सनातन धर्म, वैष्णव धर्म, सम्प्रदाय, संस्कृत तथा संस्कृति के सम्बन्ध में जो अद्भुत कार्य हुए हैं, वे केवल निम्बार्कीय आचार्यों के लिए ही नहीं अपितु अन्यान्य सनातन धर्म के आचार्यों के लिए भी अनुकरणीय हैं। परम पूज्य महाराजश्री का पाटोत्सव तथा इस प्रसंग में आयोजित समस्त सम्मेलन आदि कार्यक्रम निर्विघ्न सम्पन्न हो यही मंगलमय श्रीसर्वेश्वर प्रभु से कामना है और प्रार्थना है श्रीनित्यनिकुञ्जेश्वरी अकारण-करुण रासेश्वरी श्री श्रीजी से कि हमारे पूज्य आचार्यश्री शताधिक आयुष्य प्राप्त कर इसी तरह जगत् का कल्याण करते रहें।

—वैद्यनाथ झा

गोस्वामी श्यामसुन्दर संगीताचार्य, बाग बुन्दोला वृन्दावन

परम पूज्य अनन्त श्रीविभूषित परम स्नेहास्पद श्री 'श्रीजी' महाराज के श्रीचरणों में श्याम की नित्यप्रति की प्रणाम। मेरी सत्यता स्वयं जान लेंगे आप अन्तर्यामी हैं। शारीरिक कष्ट से विवश होकर श्रीचरणों तक आने में असमर्थ हूँ। आप सर्व समर्थ हैं क्षमा करेंगे यदि ये बालक जो आपके पास आ रहे हैं इन्हें ही सब कुछ मालूम है सत्य कहेंगे। कृपा विशेष बनाये रखें। श्याम आपका है शत-शत वन्दन करते हुए।

—श्यामसुन्दर

किशनलाल दुबे, १२० आनन्द नगर, इन्दौर

स्वर्ण जयन्ती समारोह के इस मांगलिक शुभ अवसर पर इस अकिंचन सेवक की हार्दिक श्रद्धाञ्जली पूर्वक अनन्त शुभकामनाएँ हैं। प्रभु सर्वेश्वर श्रीमान् को स्वस्थ एवं चिरंजीवी करे ताकि देश, समाज, संस्कृति, गोमाता, भारतमाता और हिन्दुत्व की रक्षा और समुन्नति होकर और पूर्ण पूर्णता प्राप्त करे।

❋ श्रद्धा सुमनाञ्जली ❋

धर्म की धुरा को धार, फोड़ पाप के पहार, भारत की भूमि से अधर्म को नसाया है।
प्रेमपूर्ण भक्ति के भाव का प्रचार कर, शिव शक्ति विष्णु के भेद को मिटाया है।।
संस्कृत औ संस्कृति की रक्षा में संलग्न हो, गौ-वर्द्धन-सेवा में रत हिन्दु जाति को जगाया है।
राधा औ राधाकान्त के अनुरागरक्त, श्रीजी आपने भारत भव्यता को विश्व में बढ़ाया है।।
धर्मधुरन्धर वेदव्रती, धीर वीर गम्भीर, गो सेवी परमारथी विद्वद्वर मति धीर।
काव्य कानन केसरी भक्ति मुक्ति दातार, चिरजीवो "श्रीजी" सदा शील निधान उदार।।
मृदुता वाणी में सदा निखिल गुणों की खान, शत-शत वन्दन चरण में श्रीजी सन्त महान्।
सर्वेश्वर से विनय है परमारथ के हेतु, चिरजीवन दे आपको जो पालक श्रुति सेतु।

—किशनलाल दुबे

विरागी बाबा—श्रीसर्वेश्वर ट्रेडिंग कम्पनी, बम्बई

परम श्रद्धेय प्रातः स्मरणीय आचार्य श्रीजी महाराज के मंगलमय चरणों में दास विरागी बाबा का दण्डवत स्वीकार हो।

भगवन्! आपके उत्सव के पत्र मिले और वृन्दावन में आपके भेजे हुये प्रतिनिधि भी मिले किन्तु मेरा शरीर कुछ ठीक नहीं है इसलिये नहीं आ पा रहा हूँ। मेरा दुर्भाग्य है कि इतने बड़े सन्त-समागम से वंचित रहा मुझे अपनत्व के नाते क्षमा कर देना, आपका पवित्र स्नेह बनाये रखना।

—विरागी बाबा

सर्वानन्दकारी महोत्सव "श्री श्रीजी महाराज की स्वर्ण जयन्ती"

चालो श्रीनिम्बार्कतीर्थ में, सगला चालो जी, आनन्द होसी जी।।टेर।।
दरसन होसी, प्रवचन होसी, सम्मेलन मोटो होसी जी, सगला चालो जी।।
महाराजश्री के स्वर्णजयन्ती की, आ मंगल वेला आई जी।।
दूर दूर से सब सन्त पधारे, मेलो भररह्यो भारी जी।।
सर्वेश्वर संग राधामाधव विराजत, मन्दिर की छवि न्यारी जी।।
गुरुवर की अलौकिक शोभा, लागे म्हा सबने प्यारी जी।।
सर्वेश्वर गुरु चरणों के दर्शन, करते सब नर-नारी जी।।
प्रभु कृपा से होवे उनकी, इच्छा पूरण सारो जी।।
निम्बार्कनगर की महिमा देखो, लागे अद्भुत प्यारी जी।।
चरणामृत लेने से कट जाये, जीवन को कष्ट भारी जी।।
शंकराचार्य वैष्णवाचार्य पधारे, बापू दर्शन की बलिहारी जी।।
नितप्रति हो यहाँ पर देखो, सम्मेलन आदि भारी जी।।
राधा सर्वेश्वर मंडल की कामना, चिरंजी हो गुरु हमारे जी।।
भव सागर में नाव पड़ी है, पार करो प्रभु म्हारी जी।।

—श्रीराधासर्वेश्वर संकीर्तन मण्डल, किशनगढ़

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पर शत-शत प्रणाम

जगद्गुरु आचार्यवर, जन-जन के कंठहार, भक्तजनों के सुखाधार।
वेद सनातन धर्म संरक्षक, संस्कृति के प्राणाधार।
शिक्षाविद् साहित्यकार, राष्ट्र प्रेम का करते प्रचार।
गो गंगा गीता रक्षक श्रीनिम्बारक के नव अवतार।
श्रीसर्वेश्वर प्रभु श्रीराधामाधव का अष्टयाम सेवा व्रतधार।
अहर्निश विश्व मंगल का चिन्तन भक्तों पर करते कृपा उदार।
ऐसे परम परोपकारी सन्त हमारे आचार्य चरण दीर्घायु हो।
आज उनके स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पर शत-शत प्रणाम हो।

निवेदक :

१. श्रीराधासर्वेश्वर मन्दिर समिति, मदनगंज
२. श्रीगोपालबिहारी मन्दिर, गोपालद्वारा समिति, किशनगढ़
३. श्रीमसानिया बालाजी ट्रस्ट, अराई रोड़, किशनगढ़
४. धार्मिक परोपकारी समिति, मदनगंज
५. श्रीसर्वेश्वर संसद् आनन्दबिहारीजी मन्दिर, त्रिपोलिया जयपुर
६. श्रीनिम्बार्कनिकुञ्जबिहारी मन्दिर, निम्बार्कनगर, हीरापुरा ,,
७. श्रीसर्वेश्वर संकीर्तन मण्डल, जयपुर
८. श्रीनिम्बार्क संकीर्तन मण्डल, जयपुर
९. श्रीनिम्बग्राम सेवा समिति, नीमगांव
१०. श्रीनिम्बार्क सत्संग मण्डल, निम्बार्ककोट अजमेर

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पर आचार्यचरणों की वन्दना एवं मंगलकामना–

१. किशनगढ़ मार्बल ऐसोशियेसन, मदनगंज–किशनगढ़
२. श्रीअग्रवाल समाज, मदनगंज
३. श्रीअग्रवाल नवयुवक मण्डल, मदनगंज
४. मदनगंज व्यापार मण्डल, मदनगंज
५. किशनगढ़ यार्न मर्चण्ट ऐसोसियेशन, मदनगंज
६. किशनगढ़ साईजिंग उद्योग संघ, मदनगंज
७. राजस्थान पावरलूम ऐसोसियेशन, मदनगंज
८. राजस्थान काटन वेस्ट ऐसोसियेशन, मदनगंज
९. नागौर जिला स्वतन्त्रता सैनिक संगठन, परबतसर
१०. ग्राम विकास समिति, रिड़ (नागौर) राज०

स्वामी शैलेन्द्राचार्य सनातन धाम सप्तसरोवर, हरिद्वार

※ मंगलगान ※

श्रीराधासर्वेश्वर के चरणों में शीश झुकाएँ
सब मिलकर मंगल गाएँ ।।टेर।।

स्वर्ण जयन्ती श्रीचरणों की हम सोल्लास मनाएँ । सब मिलकर ....
श्रीसर्वेश्वर प्रभु का मंगल हो,
निम्बार्काचार्य का मंगल हो, निम्वार्कतीर्थ का मंगल हो
आचार्यचरण का मंगल हो, सब भक्तजनों का मंगल हो,
अर्द्धशताब्दी पूर्व सुशोभित किया था इस आचार्यपीठ को,
त्याग, तपस्या से तेजोमय किया निज जीवन को ।
ज्ञान भक्ति से, जन-जन को सरस बनाएँ । सब मिलकर..........
निम्बार्कतीर्थ की आज अलौकिक अद्भुत बनी छटा है ।
गीष्मऋतु में भी भक्ति की छाई मधुर घटा है ।
श्रीजी के पाटोत्सव पर सब देव सुमन बरसाएँ, आओ मिलकर मंगल गाएँ ।
स्वर्ण जयन्ती के इस वैभव को गाने की सामर्थ नहीं,
ये अनुभव आनन्द है भक्तों, जिसका होता अर्थ नहीं ।
आज मनाई स्वार्ण पुनः हीरक भी कभी मनाएँ, सब मिलकर ....

श्रीब्रजभूषणजी भट्ट, किशनगढ़

श्रीराधा सर्वेश्वर जयते स्वर्ण जयन्ती विजयते ।
राधामाधव जयते श्रीवृन्दावन समवर्तते ।
धारण श्रीशंखचक्र सुदर्शन सर्व पाप हरते ।
सकल जगत में निम्वार्कतीर्थ सलेमाबादयते ।
वैभव वैकुण्ठसम सुशोभित यहाँ नित नूतन रते ।
स्वर गुञ्जित ब्रह्मसूत्र वेदपाठ सुसंयुते ।
रमण रासविहारी श्रीरासेश्वरी श्रीराधे ।
शरण चरण श्रीजी की रज जो भक्त सिर लाये ।
रमणरेती वृन्दावन की जाने निज शीष चढ़ाये ।
णमस्कार गुरुदेव यहाँ पुरुषरामपुर साजयते ।
देवाचार्य निम्बार्कपीठाधीश्वर विराजते ।
वार्णवीलास महान संगीतज्ञ निपुण नाद ब्रह्म स्वयं ।
चातुर्य चतुर्वेद निष्ठान्त भागवत पीयूष स्वयं ।
यथायोग्य वे विश्वविजय श्रीसर्वेश्वर जयते ।
जीवेद शरद शतम श्रीनिम्बार्केश्वर विजयते ।
श्रीराम महामन्त्रोच्चार जन्मभूमि भारत जयते ।
जीव समर्पण भाव से जो सेवा में यहाँ आये ।
महाराज उन्हें प्रभु को अंगीकार स्वयं कराये ।
हाथ जोड़कर दण्डवत कर भक्तजन हर्षाये ।
राज राजेश्वर श्रीजी की शरण चलकर आये ।
जब जब संकट आये तब तब उन्हें हटाये ।
श्रीजी की जय हो जय जय हो ब्रजभूषण यह गाये ।

ब्रजभूषण भट्ट

डा० स्वामी श्रीसाक्षीजी महाराज, संसद् सदस्य, मथुरा (उ० प्र०)

राजनैतिक व्यस्तताओं के कारण मैं आपके कार्यक्रम में भाग न ले सका जिसका मुझे खेद है। कार्यक्रम की सफलता के लिए मेरी शुभकामनायें स्वीकार करें।

महामण्डलेश्वर स्वामी श्रीरामकुमारदासजी खाकी, श्रीभगवदाचार्य आश्रम रामधाम, अहमदाबाद

शरीर अस्वस्थ होने से दास महोत्सव में सम्मिलित नहीं हो सकता, अतएव क्षमा चाहता हूँ। श्रीचरण सनातन धर्म संरक्षक हमारे भी वैष्णवाचार्य हैं, अतएव श्रीचरणों का आशीर्वाद चाहिए।

श्रीरामलोचनदास मिश्र, देवाजीत परसौनी (बिहार)

स्वर्णजयन्ती के अवलोकन की चिर संचित आशा लिए शारीरिक अस्वस्थता के कारण उपस्थिति में आशंका है। सम्मेलन का आयोजन निश्चय ही विराट् और आदर्श होगा, ऐसे अवसर में सम्मिलित होने का जिसे सौभाग्य होगा वे धन्य हैं इसी कल्पना में अपनी तुच्छ भावनाओं के हृदय उद्गार व्यक्त कर रहा हूँ।

सत् बार नमन, सत् बार नमन !

मौलिक विचार नूतन भावों से ओत-प्रोत, हे अग्रदूत निम्बार्क पन्त सत् बार नमन।
आध्यात्म गगन की दिव्य ज्योति, वैष्णव जग का उज्ज्वल प्रकाश,
हे नवल प्रेरणा के अनन्त, सत् बार नमन सत् बार नमन।
चिन्मय छवि चेतनता सागर, दिनकर—सा अविरल कर्मप्रवर,
हे शान्त—शुद्ध—आदर्श सन्त, सत् बार नमन, सत् बार नमन।
हो स्वर्णकाल या हीरक—क्षण, हैं पथ पाथेय बहुत थोड़े,
हे चिरजीवी सत्—ज्ञानवंत, सत् बार नमन, सत् बार नमन।
लोचन को शीतलता शिक्षा, देते रहते निज चरण धूल,
हे नवयुग के अज्ञानहन्त, सत् बार नमन, सत् बार नमन।

श्रीहरीकिशन मुछाल, भू० पू० सभापति अ० भा० माहेश्वरी महासभा, इन्दौर

मुझे उपस्थित होकर अत्यधिक आनन्द एवं प्रसन्नता होती किन्तु महेश नवमी पर्व के आयोजन होने से उपस्थित नहीं हो सकूँगा इसका खेद है। समस्त सप्त दिवसीय कार्यक्रम प्रभु कृपा से सम्पन्न होवे व श्रद्धालु भक्तजन इसका लाभ लेवें यही मंगलकामना है।

श्रीप्रेमदासजी रामायणी, महाविरक्त आश्रम अयोध्या

शरीर सहायता में असमर्थ हो रहा है, मधुमेह, रक्तचाप तथा बहुमूत्र आदि अवस्था के अनुकूल ये अवरोध हैं, शारीरिक कष्ट से निम्बार्कतीर्थ आना असुविधाजनक रहेगा। सम्मेलन के सफलता की कामना है।

श्रीवैरागी बाबा, वृन्दावन

आपके उत्सव के पत्र एवं वृन्दावन में आपके भेजे हुए प्रतिनिधि भी मिले किन्तु मेरा शरीर कुछ ठीक नहीं है इसलिए नहीं आ पारहा हूँ। मेरा दुर्भाग्य है कि इतने बड़े सन्त समागम से वंचित रहा, मुझे अपनत्व के नाते क्षमा करावें और अपना पवित्र स्नेह बनाये रखें।

पं० श्रीश्यामसुन्दर शास्त्री, भागवताचार्य, सेवाकुञ्ज वृन्दावन

आप सच्चे अर्थों में आचार्य हैं जो इस प्रकार के कठिन समय में भी विराट् आयोजन करके सनातन धर्म ध्वजा को समुन्नत करने को प्रयत्नशील हैं। श्यामाश्याम के चरणों में आपके सुदीर्घ जीवन, उत्तम स्वास्थ्य एवं इस महान् आयोजन के सफलता की कामना करते हैं।

पं० श्रीकृष्णचन्द्र शास्त्री (ठाकुरजी) श्रीकृष्ण प्रेमसंस्थान, वृन्दावन

सनातन धर्म सम्मेलन के बहाने पूज्य श्री 'श्रीजी' महाराज की सन्निधि का लाभ मिलता परन्तु हमारे सभी कार्यक्रम २ वर्ष पूर्व ही निश्चित हो जाते हैं अतः अन्यत्र व्यस्त होने से उपस्थित नहीं हो सकेंगे। कार्यक्रम के सफलता की अनन्त कामनाओं के साथ।

श्रीद्वारकाप्रसाद मित्तल, अध्यक्ष–हिन्दी विभाग बुन्देलखण्ड कालेज, झांसी

मैं व्यस्त होने के कारण आने में असमर्थ हूँ परन्तु इस महोत्सव की सफलता की मंगल कामना करता हूँ।

श्रीरामनिवास लखोटिया, अध्यक्ष–राजस्थानी अकादमी, दिल्ली

यहाँ दिल्ली में व्यस्त कार्यक्रम होने से सलेमाबाद आना नहीं हो पाएगा। श्री 'श्रीजी' महाराज की स्वर्णजयन्ती पर उन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्रीकिशनलाल सारडा, श्रीबस्तीराम सारडा सद्गुरु श्रीगुरु गंगेश्वरानन्दजी प्रतिष्ठान वेद मन्दिर नासिक

कुछ अपरिहार्य कारणों से हम सम्मेलन में सम्मिलित नहीं हो सकेंगे एतदर्थ क्षमा प्रार्थी हैं। ईश्वर कृपा से आपका कार्यक्रम सफल हो।

श्रीविश्वनाथदास शास्त्री, संसद् सदस्य लोकसभा नई दिल्ली

पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों में व्यस्तता के कारण मैं सम्मेलन में उपस्थित होकर आपका आशीर्वाद न ले सका। इस पावन अवसर पर समिति के सभी पदाधिकारियों सदस्यों एवं भक्तों को साधुवाद देता हूँ।

वैद्य श्रीराम कौशिक, प्रभारी चिकित्सा अधिकारी सालासर

आचार्यपीठाभिषेक अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव पर श्रीगोपाल यज्ञ का आयोजन सम्पन्न हुआ यह जानकर प्रसन्नता हुई। इस आयोजन की समस्त जानकारी रखने वाली स्मारिका का प्रकाशन अपेक्षित है, मंगल कामना सहित।

डा० श्रीगिरिजा व्यास, संसद् सदस्या, अध्यक्षा–अ. भा. महिला कांग्रेस (आई)

अ० भा० महिला कांग्रेस (आई) अध्यक्षा डा० गिरिजा व्यास, संसद् सदस्याजी पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों में व्यस्त रहने के कारण आपके यहाँ २२ मई से २८ मई के कार्यक्रम में शामिल नहीं हो पाई। शुभकामनाओं सहित।

—श्री सी. पी. मेनन, प्रशासनिक अधिकारी

※ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ※

सम्पादकीय–

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज का पट्टाभिषेक–

स्वर्णजयन्ती महामहोत्सव

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) अजमेर–राजस्थान द्वारा समय-समय पर विविध प्रकार के धार्मिक एवं सांस्कृतिक उत्सव-महोत्सव एवं महामहोत्सवों का आयोजन परम पूज्य जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज की सत्प्रेरणा से सम्पन्न होते ही रहते हैं। आचार्यश्री के तत्त्वावधान में सम्पन्न होने वाले इन समस्त आयोजनों का उद्देश्य सार्वभौम सनातन धर्म एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार द्वारा राष्ट्रीय जन-जीवन का आध्यात्मिक उत्थान करना होता है।

शुभ संकल्प–

भारतीय संस्कृति में महापुरुषों की जयन्तियाँ, जैसे—रजतजयन्ती, स्वर्णजयन्ती, हीरक जयन्ती एवं अमृतोत्सव आदि मनाने की प्राचीन परम्परा है। इन जयन्तियों के मनाने का क्रम प्राय: अपने-अपने अनुरूप पारम्परिक हुआ करता है। किन्तु हमारे परम पूज्य आचार्यश्री के पट्टाभिषेक स्वर्णजयन्ती का क्रम विशेष असामान्य, विविध विशेषतायुक्त, सार्वजनीन, अनेक सामयिक आवश्यकताओं के अनुरूप जो बना है, इसमें बहुत बड़ा महत्वपूर्ण रहस्य है। सप्त दिवसीय ऐतिहासिक विराट् सनातन धर्म सम्मेलन की सम्पन्नता में स्वर्णजयन्ती महोत्सव एक शुभ निमित्त बना है। इसका मूल मन्त्र तो पूज्य आचार्यश्री का शुभ सत्य संकल्प एवं सार्वजनीन सच्चिन्तन हो है। हमारे देश के वर्तमान धर्म विहीन भौतिक वातावरण को देखते हुए उसके निवारण हेतु आचार्यश्री के परम पावन मन में लम्बे समय से एक संकल्प हो रहा था कि श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ पर देशभर के धर्माचार्य, सन्त-महात्मा एवं मनीषियों का एक विराट् सम्मेलन हो। यह अतिशयोक्ति नहीं कि जब-जब भी आपश्री के अन्तर्मन में लोक कल्याणकारी संकल्प होता है, वह श्रीसर्वेश्वर राधामाधव प्रभु की परमानुकम्पा से यथा समय किसी भी निमित्त से मूर्तरूप धारण करके महनीय विशाल क्रिया के रूप में परिणत होता ही है। संयोग की बात है कि परिकर वर्ग में एक भावना उद्भूत हुई कि महाराजश्री का ५० वां पाटोत्सव स्वर्णजयन्ती के रूप में मनाया जाय। किन्तु आचार्यश्री ने इस आयोजन के लिये निषेध किया तो प्रार्थना करके आपश्री के ही उक्त संकल्प का स्मरण दिलाने पर आज्ञा हुई कि यदि ऐसा कोई समय के अनुरूप विशेष धार्मिक आयोजन किसी भी निमित्त से हो तो कोई आपत्ति की बात नहीं। यह पूर्व प्रसंग ही अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में मिति ज्येष्ठ शुक्ल १ से ज्येष्ठ शुक्ल ७ दिनांक २२/५/९३ से २८/५/९३ ई० तक सम्पन्न दिव्य एवं भव्य विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का कारण बना। महापुरुषों के सत्य शुभ

संकल्प में निहित एक अप्रकट शक्ति होती है जो समय आने पर अकल्पनीय दिव्य परिणति के रूप में प्रकट होती है और जो राष्ट्र को चिरस्मरणीय चेतना प्रदान करती है।

न भूतो न भविष्यति–

अठारह वर्ष पूर्व इसी परम पावन आचार्यपीठ की तपःस्थली पर पूज्य आचार्यश्री के ही संकल्पानुसार एक कुम्भ पर्व सदृश पञ्च दिवसीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन हुआ था जिसमें देशभर के धर्माचार्य, सन्त-महातमा, मण्डलेश्वर, महामण्डलेश्वर एवं विशिष्ट मनीषियों का आगमन हुआ था। उक्त सम्मेलन की सफलता पर विद्वानों की टिप्पणी थी—ऐसा सम्मेलन तो 'न भूतो न भविष्यति' इस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए किसी दूरदर्शी महानुभाव ने कहा था—'न भूतः' ऐसा ही कहना चाहिए, क्योंकि यह आचार्यपीठ परम पावन तपोधन निम्बार्काचार्यों की तपःस्थली है। अतः भविष्य में होने वाले धार्मिक महाआयोजनों के सम्बन्ध में 'न भविष्यति' ऐसी परिकल्पना करना समुचित नहीं। वास्तव में आज देश के दूषित एवं अशान्त वातावरण की विकट परिस्थिति में उक्त पञ्च दिवसीय सनातन धर्म सम्मेलन की अपेक्षा श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति आचार्यश्री के पीठाभिषेक स्वर्णजयन्ती के मङ्गलमय अवसर पर आयोजित सप्त दिवसीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन की आशातीत सफलता एक महान् आश्चर्य का विषय है।

यतो धर्मस्ततो जयः–

भारत राष्ट्र के जन-जीवन के आध्यात्मिक एवं चारित्रिक उत्थान के लिये यहाँ के धर्माचार्य, सन्त-महात्मा एवं विद्वान् सदा सजग प्रहरी के रूप में कर्तव्य परायण रहे हैं। जब-जब भी आसुरी बल का आध्यात्मिक जगत् पर आक्रमण हुआ, महापुरुषों ने अपने जीवन की सम्पूर्ण शक्ति लगाकर उसका सामना करके राष्ट्र की संस्कृति को बचाने का कार्य किया। संसार में अनन्त काल से देवी और आसुरी शक्तियों का संघर्ष चलता रहा है, जिसका परिणाम 'यतो धर्मस्ततो जयः' रहा है।

हमारा देश जब पराधीन था, तब हमारे धर्म और संस्कृति पर विदेशी आक्रान्ताओं का आक्रमण होता रहा है। किन्तु महान् खेद का विषय है कि देश स्वतन्त्र होने पर भी राजनैतिक कुचक्र के कारण धर्म निरपेक्षता के नाम पर हमारे ही देश के विवेकहीन राजनीतिज्ञों के द्वारा हमारे राष्ट्रीय धर्म, संस्कृति एवं मान–प्रतीकों पर जो योजनाबद्ध प्रहार हो रहा है, उसके निवारण के लिये हमारे धर्माचार्य, सन्त-महात्मा एवं विद्वान् संघटित होकर कटिबद्ध हो रहे हैं। अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ पर आयोजित विराट् सनातन धर्म सम्मेलन भी उक्त संगठित शक्ति का एक उदाहरण है, जिसमें देशभर के सम्प्रदायों के धर्माचार्य, सन्त-महात्मा एवं विद्वानों ने अपनी समन्वित शक्ति का परिचय देते हुए देशवासियों को वर्तमान धार्मिक संकट से बचाने का संकल्प लिया है।

आयोजन की सर्वाङ्गीण व्यवस्था–

इस सप्त दिवसीय विशाल आयोजन की रूपरेखा तैयार होने के साथ ही उसकी सर्वाङ्गीण सफलता के लिए समस्त कार्यभार का विकेन्द्रीयकरण करते हुए विविध विभागों की समितियों का सर्वसम्मत गठन किया गया। समस्त समितियों के कुशल कार्यकताओं ने अपने

उत्तरदायित्व का निर्वाह करने के लिये यथा समय कार्यारम्भ किया। समितियों का विस्तृत विवरण स्मारिका में दिया गया है।

कार्यक्रम का प्रचार-प्रसार आयोजन का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसमें हमारे क्षेत्रीय समाचार पत्रों एवं प्रचार विभाग के विद्वानों का प्रशंसनीय योगदान रहा। इससे अधिक महत्वपूर्ण अंग अर्थ विभाग होता है, क्योंकि—'सर्वे गुणाः काञ्चन माश्रयन्ते' अतः अर्थ समिति के वरिष्ठ कार्यकुशल कार्यकर्ताओं तथा समिति के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, महामन्त्री, मन्त्री, कोषाध्यक्ष आदि पदाधिकारियों के प्रशंसनीय प्रयासों से परम भावुक सम्पन्न भक्तजनों ने मुक्त हस्त से आर्थिक सहयोग के साथ अपने आप को सम्मेलन की सफलता के लिये समर्पित करते हुये अपने पुण्यार्जित धन के सदुपयोग का आदर्श उपस्थित किया जिससे आशातीत अर्थराशि स्वल्प समय में सहज सुलभ हुई।

किसी भी महान् आयोजन की सफलता के लिये जहाँ धन-जन-मन-बुद्धि आदि समन्वित शक्ति का योग मिलना आवश्यक होता है, वहीं महापुरुषों के सद्भावात्मक शक्तियों का सहयोग भी परमावश्यक होता है। हमारे श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के प्रति परम निष्ठावान् भावुक महानुभावों का समन्वित सभी प्रकार का सहयोग तो प्राप्त हुआ ही, किन्तु समस्त धर्माचार्यों के साथ तीनों अनियों के श्रीमहन्तों, चतु सम्प्रदाय के श्रीमहन्तों, विभिन्न खालसाओं के श्रीमहन्तों, महन्तों एवं सन्त-महात्माओं का भी प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहयोग इस आयोजन में अति महत्वपूर्ण रहा। निम्बार्क महासभा के महामन्त्री—महामण्डलेश्वर श्रीव्रजविहारीशरणजी 'राजीव' भी आयोजन के समस्त विभागों की गतिविधियों की सफलना हेतु सदा सर्वत्र सक्रिय रहे। मेवाड़ महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी शास्त्री का यशस्वी एवं ओजस्वी सभा सञ्चालन का चातुर्य भी चिरस्मरणीय रहेगा। धार्मिक महामञ्च पर आप द्वारा सभा सञ्चालन अतीव प्रशंसनीय रहा। सम्मेलन के समय में भगवत्परिचर्या आदि तथा विशिष्ट परामर्शों में महन्त श्रीहरिवल्लभदासजी शास्त्री का सराहनीय सहयोग रहा। इसी प्रकार पूज्य आचार्यश्री परिकरवर्ग में स्वामी श्रीगिरिराजप्रसादजी द्वारा मनोयोग से की गई सेवा, आचार्यपीठ के समर्पित कार्यकर्ता श्रीनवलकिशोरजी व्यास एवं बाबा श्रीमाधवशरणजी ने अपने स्थायी विभागों की सेवा के साथ सम्मेलन की सर्वविध व्यवस्थाओं में रात-दिन एक करके अपनी कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया। मन्दिर में भगवत्सेवा की सुन्दर परिचर्या में संलग्न पु० श्रीरामेश्वरदासजी, पु० श्रीराधामाधवशरणजी आदि अर्चकवृन्दों ने तथा भंडारी श्रीमोहनीशरणजी, दूधघर में श्रीकृष्णदासजी ने एवं स्वास्थ्य व्यवस्था में डा० श्रीगुणवन्तसिंहजी झाला अजमेर तथा वैद्य श्रीवैकुण्ठनाथजी शर्मा मथुरा आदि-आदि महानुभावों ने भी अपनी सुन्दर सेवायें समर्पित की। सम्मेलन की सफलता के लिये यद्यपि समस्त कार्यकर्ताओं ने हार्दिक उत्साह के साथ अपने-अपने कर्तव्य का निर्वाह किया, किन्तु सम्मेलन की समस्त गतिविधियों के सञ्चालन में 'सूत्रे मणिगणा इव' के समान भगवान् सर्वनियन्ता सर्वेश्वर श्रीराधामाधव प्रभु एवं हम सब की श्रद्धा के केन्द्र परम पूज्य आचार्यश्री की ही अलौकिक शक्ति का चमत्कार सर्वत्र परिलक्षित हो रहा था, जो सम्पूर्ण सफलता का मूल था। बाबा श्रीशुकदेवदासजी संगीताचार्य एवं उनके शिष्य श्रीकैलाश अनुज के निर्देशन में कार्यक्रमानुसार संगीत के विविध कार्यक्रमों द्वारा श्रोताओं को जो दिव्य रसानुभूति होती रही वह भी अवर्णनीय थी। दूरदर्शन

धारावाहिक रामायण के निर्माता एवं निर्देशक श्रीरामानन्दजी सागर एवं संगीतकार श्रीरविन्द्रजी जैन तथा धारावाहिक महाभारत के निर्माता-निर्देशक श्री बी० आर० चौपड़ा का भी उक्त आयोजन पर आगमन हुआ। परम पूज्य आचार्यश्री के दर्शन तथा सम्मेलन के प्रभावी आयोजन से प्रभावित होकर उक्त महानुभावों ने जो हार्दिक उद्‌गार व्यक्त किये वे पठनीय एवं मननीय है।

निम्बार्कनगर का निर्माण–

महासम्मेलन में सम्मिलित होने वाले महानुभावों के लिये निम्बार्कनगर एक आश्चर्य का केन्द्र बन गया। वह जंगल में मंगल की उक्ति को सार्थक कर रहा था। कलाकृतियों से सुसज्जित विशाल सभा का महामञ्च आधुनिक दूरदर्शन आदि सुविधाओं से सम्पन्न भव्य पाण्डाल, आवास एवं भोजन के लिए यथा रुचि उत्तम व्यवस्था विशेष प्रशंसनीय थी। भीषण गर्मी के कारण इतने अधिक जन समूह के आने की सम्भावना नहीं थी, साथ ही यह भी अनुमान था कि सात दिनों में जन संख्या उत्तरोत्तर घटती जायेगी। किन्तु अनुमान के विपरीत हुआ और आदि से अन्त तक श्रोताओं की संख्या बढ़ती ही गई। जन समूह ने अपने नगरीय सुख-सुविधाओं को भूल कर पूर्वाचार्यों की पावन तप:स्थली में एक सप्ताह निवास करके जो परमानन्द का अनुभव किया, वह जीवन में चिरस्मरणीय रहेगा।

स्मारिका का प्रकाशन–

इस अभूतपूर्व महान् धार्मिक आयोजन के शुभ परिणाम कों स्थायित्व प्रदान करने तथा सम्मेलन की महत्वपूर्ण उपलब्धि को साहित्यिक रूप प्रदान करने हेतु स्मारिका प्रकाशन का निर्णय लिया गया। वर्तमान परिस्थिति में हमारे धर्माचार्यों एवं विद्वानों के क्या विचार हैं? क्या प्रेरणा है? और उनको हम किस प्रकार चरितार्थ करके अपने कर्तव्य का पालन कर सकते हैं? यह सब इस स्मारिका में पढ़ने को मिलेगा। साथ ही यह भी अवगत होगा कि— अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ तथा परम पूज्य आचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के प्रति हमारे धर्माचार्य एवं मनीषियों के क्या विचार हैं।

इस प्रकाशन का आधार टेप व वी० डी० ओ० रिकार्ड एवं टेप रिकार्ड तथा समय-२ पर डा० श्रीरामप्रसादजी शर्मा द्वारा लिखित कुछ सामग्री है। किन्तु टेप केसिट से प्रतिलिपि करना और उसको साहित्यिक रूप प्रदान करना एक जटिल कार्य है। टेप केसिट से सामग्री को लिपिबद्ध करने का कार्य श्रीअशोककुमारजी शर्मा हाथरस ने अपने कठोर परिश्रम द्वारा करके समस्या का समाधान किया है। साथ ही प्रकाशन योग्य सामग्री तैयार करके स्मारिका का जो रूप प्रस्तुत हो रहा है यह श्रीभँवरलालजी उपाध्याय व्यवस्थापक–श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय के कठोर परिश्रम एवं तपस्या का फल है। कम्पोजीटर ऋषिकुमार शर्मा व मशीन चालक सुवालाल चोधरी निम्बार्कतीर्थ का भी परिश्रम सराहनीय है।

केसिटों से लिपि-प्रतिलिपि करने में अनेक अशुद्धियों का रह जाना स्वाभाविक है, जिससे वक्ताओं के वक्तव्य में वैषम्य आ गया हो, तदर्थ हम क्षमा प्रार्थी हैं। उपयोगिता की दृष्टि से प्रकाशन कैसा रहा, यह तो नीर क्षीर विवेकी विद्वज्जनों का विषय है। जैसा बन पड़ा, गुरुजनों का यह प्रसाद "स्मारिका" के रूप में प्रस्तुत है।

श्रीचरणचञ्चरीक—

दयाशंकर शास्त्री

परमाराध्य सनकादिक संसेव्य–

श्रीसर्वेश्वर प्रभु

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में अद्यावधि विराजमान "श्रीसर्वेश्वर प्रभु" सृष्टिकर्ता श्रीब्रह्मदेव के मानसपुत्र श्रीसनकादिकों के संसेव्य भगवद्विग्रहरूप शालग्राम स्वरूप ठाकुर हैं। श्रीसनकादिकों के द्वारा हरिभक्ति परायण वीणापाणि देवर्षि श्रीनारदजी को इनकी सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पुनः यही सेवा श्रीनारद मुनि से श्रीसुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यजी को द्वापर युग के अन्त में संप्राप्त हुई, जिसको आज ५०९० वर्ष हो चुके हैं। श्रीनिम्बार्क भगवान् ने इन्हीं 'श्रीसर्वेश्वर प्रभु' की सेवा सहित व्रजस्थ श्रीगिरिगोवर्धन के सन्निकट निवास करते हुए तपस्या की थी। उस तपस्थली का नाम 'श्रीनिम्बग्राम' से प्रसिद्ध है। वर्षों पर्यन्त यही स्थान श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय का परम्परागत आचार्यपीठ रहा और श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा भी परम्परा से आचार्यों द्वारा यहीं की जाती रही। इस स्थान का सञ्चालन श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ द्वारा होता है। भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्यजी के पश्चात् 'श्रीसर्वेश्वर प्रभु' उत्तरोत्तरवर्ती सभी पूर्वाचार्यों, द्वादश आचार्य तथा अष्टादश भट्टाचार्यों द्वारा संसेवित होते हुए श्रीसर्वेश्वर प्रभु की यह सेवा जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज को संप्राप्त हुई। इन सभी पूर्वाचार्यों ने व्रज में गोवर्धन, मथुरा, वृन्दावन आदि स्थानों में विराजकर वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार किया। पश्चात् विक्रम की पन्द्रहवीं शताब्दी में निजगुरु श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज की आज्ञा पाकर इन्हीं 'श्रीसर्वेश्वर प्रभु' की सेवा को लेकर जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज ने पुष्कर क्षेत्र के पावन प्रदेश में आकर भगवद्विमुख प्राणियों को सद्धर्म में लगाते हुए वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार किया और श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ की स्थापना की। अतः परम्परागत नियमानुसार 'श्रीसर्वेश्वर प्रभु' श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में ही विराजते हैं और अ० भा० जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर ही इस विश्वव्यापी वृहद् निम्बार्क सम्प्रदाय के एकमात्र आचार्य कहलाते हैं। 'श्रीसर्वेश्वर प्रभु' इन्हीं आचार्यश्री के परमाराध्य ठाकुर हैं।

'श्रीसर्वेश्वर प्रभु' की यह प्रतिमा प्रातःस्मरणीय विद्यातपोनिष्ठ पूर्वाचार्यों द्वारा संसेवित तथा अति प्राचीन होने से अपना विशिष्ट महत्व रखती है। अति सूक्ष्म (गुञ्जाफल सदृश) इस श्रीविग्रह का नित्य प्रति मङ्गला आरती के पश्चात् गोदुग्धादि से श्रीपुरुषसूक्त द्वारा विधिपूर्वक अभिषेक होता है। तदनन्तर श्रीविग्रह के दर्शनों का कार्यक्रम निर्धारित रहता है उस समय यदि सूर्य की किरणों द्वारा अच्छा प्रकाश हो तो भली भाँति दर्शन हो जाते हैं अन्यथा सूक्ष्मदर्शी यन्त्र द्वारा दर्शन होते हैं। इस श्रीविग्रह में एक गोलाकार चक्र दिखलाई पड़ता है उस चक्र के मध्य में दो उर्ध्व (खड़ी) रेखाएं दृष्टिगोचर होती हैं, ये दोनों रेखाएँ प्रियाप्रियतम युगल सरकार श्रीराधाकृष्ण की ही स्वरूपात्मक हैं। इन्हीं रेखाओं में कभी किसी भावुक भक्त को श्रीराधाकृष्ण की झांकी की झलक भी हो जाती है, यह सब तो उन्हीं कृपामय प्रभु की कृपा पर ही निर्भर है।

श्रीविग्रह के वैदिक पुरुष-सूक्त मन्त्रों द्वारा अभिषेक होने पर दर्शनों के पश्चात् आचार्यश्री स्वयं श्रीतुलसीदल समर्पण करते हैं और शृङ्गार आरती उतारते हैं। आरती के पश्चात् श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यकृत 'वेदान्त दशश्लोकी' द्वारा प्रार्थना होती है। उस समय श्री-सर्वेश्वर प्रभु की अनुपम मङ्गल छवि और आचार्यश्री के दर्शनों का सौभाग्य समागत भक्तजनों को संप्राप्त होता है। राजभोग में नैवेद्य समर्पण का नियम भी परम्परागत से यही चला आरहा है कि आचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज ही अपने करकमलों से अपरस में कच्चे नैवेद्य का थाल तैयार करते हैं और वही राजभोग में आता है अन्यथा पक्के नैवेद्य का थाल ही निर्धारित पुजारी रसोईया द्वारा अपरस में निर्मित होकर भोग में आता है। जब कभी आचार्यचरण का धर्म प्रचारार्थ या भक्तजनों के निवेदनानुसार उनके यहाँ किन्हीं विशेष उत्सवों पर बाहर पधारना होता है तब श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा सहित ही पधारना होता है, मार्ग में लक्षित स्थान पर पहुँचने तक सभी सामयिक सेवाएँ विधिपूर्वक सम्पन्न होती हैं तथा निर्धारित स्थान पर जाने पर तो भगवान् के विराजने की व्यवस्था हो जाती है।

इस प्रकार 'श्रीसर्वेश्वर प्रभु' श्रीनिम्बार्क भगवान् के एक परमोपास्य श्रीविग्रह हैं और इनकी महिमा बड़ी ही महान् तथा विलक्षण है। धर्मशास्त्रों में भी सूक्ष्म श्रीशालग्राम प्रतिमा के पूजन का बड़ा भारी फल बताया है। निर्णय सिन्धुकार श्रीकमलाकरभट्टजी ने निर्णय-सिन्धु नामक ग्रन्थ में तृतीय परिच्छेद के पूजा प्रकरण में पद्मपुराण का प्रमाण देते हुए लिखा है—

तत्राप्यामलकीतुल्या पूज्या सूक्ष्मैव या भवेत्।
यथा यथा शिला सूक्ष्मा तथा स्यात्तु महत्फलम्॥

आँवले के बराबर श्रीशालिग्राम की मूर्ति पूजा में हो तो उसका बड़ा भारी फल है और यदि उससे भी ज्यों-ज्यों सूक्ष्म मूर्ति प्राप्त हो त्यों-त्यों और भी महत्फल की देने वाली है।

इस शास्त्रीय वचनानुसार अति सूक्ष्म (गुञ्जाफल सदृश) 'श्रीसर्वेश्वर प्रभु' की यह प्रतिमा प्रातःस्मरणीय तपःपरायण उन पूर्वाचार्यों द्वारा संसेवित तथा अति प्राचीन होने से दर्शन फल में अपना एक विशेष महत्व रखती है। ऐसी प्राचीन और सूक्ष्म प्रतिमा संसार में अन्यत्र उपलब्ध नहीं है।

श्री सनकादिकों से लेकर उत्तरोत्तरवर्ती पूर्वाचार्यों द्वारा संसेवित 'श्रीसर्वेश्वर प्रभु', विश्वव्यापी वृहद् निम्बार्क सम्प्रदाय के एकमात्र आचार्य अ. भा. जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी' महाराज के परमाराध्य ठाकुर हैं।

भगवान् 'श्रीराधामाधवजी' निम्बार्कवीथि पथिक रससिद्ध कवि गीत गोविन्दकार श्री जयदेव कवि के संसेव्य ठाकुर हैं। बंगाल से आकर गोवर्धन की तरहटी में विराजमान हुए और जगदगुरु निम्बार्काचार्य श्रीगोविन्दशरण देवाचार्यजी महाराज द्वारा वि. सं. 1823 में श्री निम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ में विराजमान हुए।
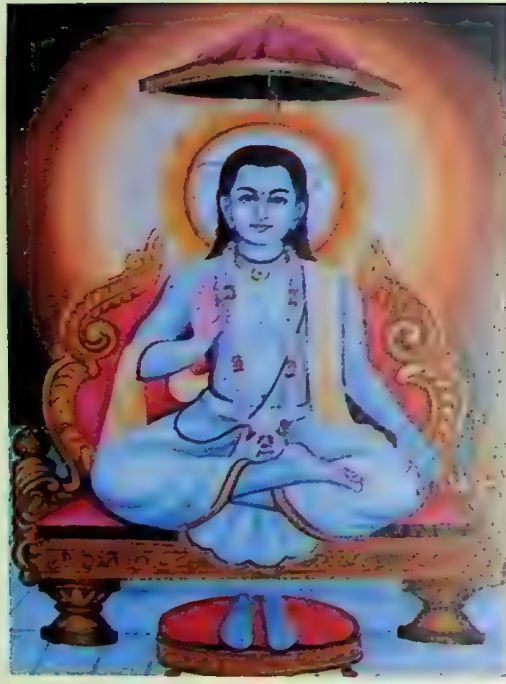
सुदर्शन-चक्रावतार श्री भगवन्निम्बार्काचार्य।

रसिकराजराजेश्वर महावाणीकार जगद्गुरु निम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वर श्री हरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज।
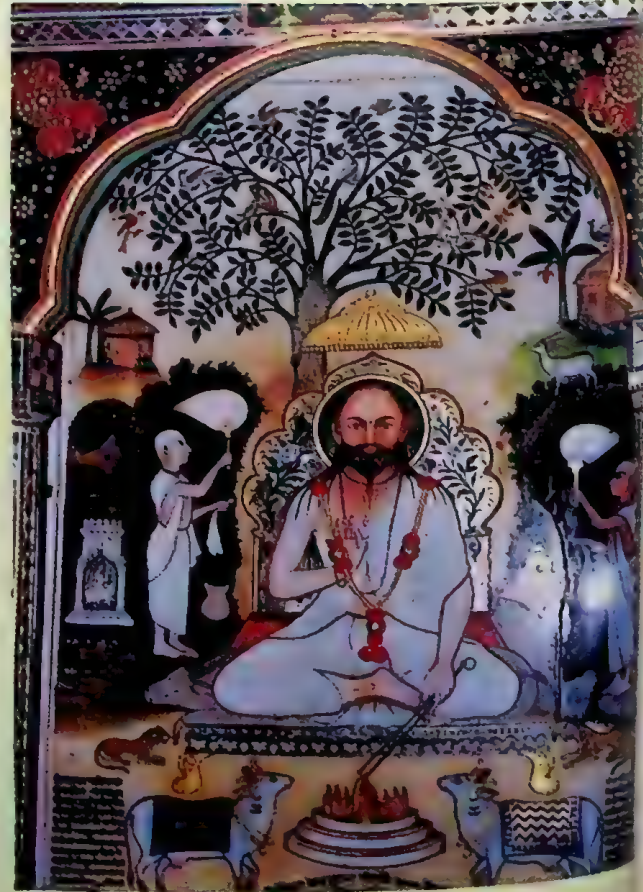
जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर परशुरामसागर वाणीकार श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज।

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ विराजित–

भगवान् श्रीराधामाधवजी

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में अचल रूप से विराजमान भगवान् श्रीराधामाधवजी, निम्बार्क वीथि पथिक रसिक शिरोमणि रससिद्धकवि गीतगोविन्दकार श्रीजयदेव के संसेव्य ठाकुर हैं। बंगाल से आकर व्रजमण्डल में श्रीगोवर्धन की पावन कन्दरा में विराजमान हुए और वि० सं० १८२३ में श्रीराधाकुण्ड के निकट ललिताकुण्ड पर स्थित श्रीनिवासाचार्यजी की पावन बैठक विराज रहे जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी महाराज को स्वप्न में आदेश दिया कि हम श्रीपुष्कर क्षेत्रस्थ श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ (सलेमाबाद) ले चलो। आचार्यश्री ने प्रार्थना पूर्वक निवेदन किया भगवन्! कैसे और किस प्रकार से ले चलें? तब श्रीमाधवजी ने कहा कि अपने रथ में बिठा ले चलो। प्रभु की आज्ञा शिरोधार्य कर आचार्यश्री ने रथ में श्रीमाधवजी को विराजमान किया और रथ गोवर्धन से प्रस्थान किया। पीछे से गोवर्धन के व्रजवासी भक्तों और बंगाली भक्तजनों ने विचार किया कि भगवान् श्रीमाधवजी का व्रज से बाहर जाना ठीक नहीं है, उन्हें पुनः यहीं पधराना चाहिये। यह विचार करके सबके सब संघठित होकर वहाँ से चले। इधर तब तक रथ में विराजमान श्रीमाधवजी भरतपुर पहुँच चुके थे, वहाँ भगवान् की सेवा हो रही थी। पीछे इन आये हुए सभी भक्तजनों ने आचार्यश्री से प्रार्थना की कि "श्रीमाधवजी व्रज में ही विराजें, बाहर न पधारे" ऐसी हमारी सबकी भावना है और इसीलिये विचार करके हम सब यहाँ आये हैं, आप हमारी प्रार्थना स्वीकार करें। आचार्यश्री ने कहा—"श्रीमाधवजी की इच्छा है तो हम क्या कहें।" भरतपुर नरेश से भी सबने अनुरोध किया। नरेश ने भी आचार्यश्री से निवेदन किया। प्रभु का आदेश हुआ है और वे स्वयं अपनी इच्छा से पधारे हैं। उनकी इच्छा के विरुद्ध कुछ भी नहीं हो सकता। आचार्यश्री ने निर्णय दिया कि आप सब रथ को खेंच कर लेजाइये, यदि माधवजी की इच्छा होगी तो पुनः व्रज की ओर पधार जावेंगे। यह निर्णय सुनकर आये हुए सभी व्रजवासियों ने रथ को खेंचा, खूब जोर लगाया, परन्तु रथ तनिक भी हिला तक नहीं। तब आचार्यश्री के रथ में घोड़े जुतवाये। आचार्यश्री ने प्रार्थना की और वह रथ चल पड़ा। सभी दर्शक चकित हो गये जय जयकार की ध्वनि से आकाश गूञ्ज उठा। वि० सं० १८२३ के ज्येष्ठ शुक्ल ४ का वह दिन भरतपुर और व्रजमण्डल के उपस्थित सभी भक्तजनों के हृदय पटल पर बहुत दिनों तक अंकित रहा। इस घटना का उल्लेख कृष्णगढ़ राज्य के इतिहास रजिस्टरों में भी जयलाल कवि ने किया है।

आचार्यपीठ सलेमाबाद के मार्ग में जितने भी नगर और गांव आये सभी स्थानों पर नर-नारियों ने भगवान् श्रीमाधवजी का तथा आचार्यचरणों का हार्दिक स्वागत किया। कृष्णगढ़ के नरेन्द्र और प्रजावर्ग को महान् हर्ष हुआ। आचार्यपीठ के समीपवर्ती गांवों की जनता के हर्ष का तो पारावार ही नहीं रहा। जय जयकार के साथ श्रीमाधवजी का अपूर्व

स्वागत हुआ। पुनीत दिवस वि० सं० १८२३ के ज्येष्ठ शुक्ल १० (गंगादशहरा) को समारोह पूर्वक श्रीसर्वेश्वर प्रभु के सन्निकट श्रीमाधवजी विराजमान हुए।

यह समय अराजकता का था, मुस्लिम शासन कमजोर हो चुका था, अंग्रेज शनैः-शनैः देश को हथिया रहे थे। कई शक्तिशाली फौजी लूटमार कर रहे थे। ऐसी स्थिति में वि० सं० १८३८ में श्रीमाधवजी रूपनगर के किले में पधराये गये। आचार्यपीठ के विशाल मन्दिर को यवन लुटेरों ने ध्वंस कर डाला, तब कुछ दिनों के बाद संगमरमर का यह नया मन्दिर बना, जोधपुर दरबार की ओर से मकराना से संगमरमर पत्थर आया। वि० सं० १८७२ में पुनः श्रीमाधवजी रूपनगर से आचार्यपीठ (सलेमाबाद) पधारे। उसी समय श्रीकिशोरीजी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा भी कराई गई। तब से श्रीराधामाधवजी अचल रूप से अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में विराजमान हैं। तब से अब तक प्रतिवर्ष ज्येष्ठ शु० १० गंगादशहरा को श्रीराधामाधवजी का पाटोत्सव अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न होता है। भगवान् की विविध पुष्पमालाओं से सुसज्जित शृङ्गारयुक्त भव्य झांकी के दर्शन कर भक्तजन तृप्त हो जाते हैं। ऐसी अद्भुत छवि का शायद ही कहीं अन्यत्र दर्शन मिल सके।

❁ राधामाधव राजत रंगभीनें ❁

मेरे प्रान प्यारे राधामाधव राजत रंगभीनें।
गोर सांवरे सरूप, कहि न परत छवि अनूप,
गावत हिय प्रेम उमगि, सरस सुर नवीनें ।। टेक ।।
नव किसोर नव किसोरी, भई न होनी ऐसी जोरी,
आलस सरस बलित ललित, अंसन भुज दीनें।
कबहुँ बिहँसि बात करें, मुस्क्यावनि फूल झरें,
अनुराग उमंग बढी, रति-मदन छवि छीनें ।।
तैसोइ सरद चन्द उदित, प्रफुलित बन देखि मुदित,
बढ़्यो है सुख सार सिन्धु, सखि जन दृग मीनें।
नेति नेति कहत निगम, एक प्रेम ही तैं सुगम,
गोविंदसरन प्रभुता तजि, भये अति आधीनें ।।

—निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी महाराज

भगवान् श्रीनिम्बार्क का वेद-शास्त्र सम्मत सिद्धान्त

लेखक—पं० श्रीदयाशंकर शास्त्री, साहित्याचार्य

भगवान् श्री निम्बार्क का सिद्धान्त एवं सम्प्रदाय समस्त दार्शनिक सम्प्रदायों में प्राचीनतम है। निम्बार्क सिद्धान्त में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें अन्य समस्त दार्शनिकमतवादों का सम्यक् समन्वय हो जाता है। अतः निम्बार्क का सिद्धान्त सर्वाङ्ग परिपूर्ण वेदान्त दर्शन है। क्योंकि श्रुति स्मृति के आधार पर ही धर्माचार्यों ने अपने-अपने सिद्धान्तों की स्थापना की है, किन्तु निम्बार्कोत्तर सिद्धान्तों में श्रुति-स्मृतियों का सर्वाङ्ग में प्रतिपादन न होकर एकदेशीय श्रुति-स्मृतियों के आधार पर सिद्धान्तों की पुष्टि की गई है, और निम्बार्क-सिद्धान्त श्रुति-स्मृतियों के सर्वाङ्ग परिपूर्ण वचनों से परिपुष्ट हुआ है, अर्थात् वेद भगवान् के समस्त द्वैत, अद्वैत परक वचनों का आदर करते हुए उनके समन्वित रूप में अनादि वैदिक स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त प्रतिष्ठित है, जिसके प्रकाशक भगवान् निम्बार्क हैं।

दर्शन शास्त्रों में ब्रह्म, जीव और जगत् के स्वरूपों का विवेचन विस्तार से हुआ हैं। यहाँ संक्षेप में भगवान् निम्बार्क के वेदान्त दर्शन सिद्धान्त का दिग्दर्शन किया जा रहा है।

वेद शास्त्र के अनुसार ब्रह्म चतुष्पाद् है, अर्थात् ब्रह्म के चार स्वरूप हैं। १. ब्रह्म, २. ईश्वर ३. जीव और ४. जगत्।

प्रमाण-पादोऽस्य विश्वाभूतानि, त्रिपादस्यामृतं दिवि।

सम्पूर्ण भूत समूह, अर्थात् समस्त जगत् ब्रह्म का एक पाद है और अन्य तीन पाद-अक्षर, ईश्वर और जीव ये तीन पाद मृत्यु धर्म रहित, चिद्रूप में स्थित हैं।

१. ब्रह्म—सत्, चित् और आनन्द स्वरूप है, वह निर्गुण एवं अक्षर रूप से व्याख्यात है।

२. ईश्वर—वही ब्रह्म जब अचिन्त्य, विचित्र रूप विशिष्ट जगत् की सृष्टि, स्थिति एवं लय करते हैं, तब ईश्वर कहलाते हैं। वही ब्रह्म इस संसार के निमित्त और उपादान कारण हैं।

३. वही ब्रह्म, 'एकोऽहं बहुस्याम' के अनुसार स्वीय चित् अंश को अनन्त रूप से प्रसारण करके अपने स्वरूप से ही अनन्त (अणोरणीयान् महतो महीयान्) के रूप में प्रकाशित जगत् के प्रत्येक अंश में पृथक् पृथक् रूप से अनुप्रविष्ट चिदंश समूह को ही जीव कहा गया है।

४. ब्रह्म के जिन अनन्त रूपों में चिदंश (जीव) प्रविष्ट हुए हैं, उन्हीं अनन्त रूप समूह का नाम ही जगत् है। श्रुति स्मृतियों के अनुसार—

उक्त चारों स्वरूपों में ब्रह्म परिपूर्ण रूप से विराजमान है। अतः ब्रह्म को वेदशास्त्रों ने चतुष्पाद कहा है। अर्थात् उस ब्रह्म के चार स्वरूप होने पर भी वह सर्वदा सर्वत्र पूर्ण रूप से विद्यमान है। यह श्रुति सम्मत है। यथा—

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

वह इन्द्रियातीत कारण ब्रह्म चतुष्पाद होते हुए भी सर्वत्र पूर्णरूप से है, यह कार्यरूप जगत् भी पूर्ण है क्योंकि पूर्णरूप कारण ब्रह्म से कार्यरूप पूर्ण जगत् की अभिव्यक्ति होती है और पूर्ण-

रूप इस कार्यात्मक जगत् के पूर्णत्व को ग्रहण करके प्रलय काल में पूर्ण रूप ब्रह्म ही अवशिष्ट रहता है।

स्वाभाविक द्वैताद्वैत दर्शन—

द्वयो र्भावः द्विता-द्विता एव द्वैतम्, जीव और जगत् से ब्रह्म भिन्न जाना गया, वह द्वैत और जीव और जगत् से ब्रह्म जिस सिद्धान्त से अभिन्न जाना गया, वह सिद्धान्त अद्वैत कहा जाता है। किन्तु श्रुति-स्मृति प्रमाणों से जीव और जगत् से ब्रह्म जिस सिद्धान्त से स्वाभाविक रूप से द्वैत भी और अद्वैत भी अर्थात् भिन्न भी और अभिन्न भी ज्ञात हो, वह स्वाभाविक द्वैताद्वैत या भेदाभेद सिद्धान्त कहा जाता है। भगवान् निम्बार्क का यही द्वैताद्वैत सिद्धान्त है।

दार्शनिक विचार से देखा जाय तो निश्चय होता है कि ब्रह्म जीव और जगत् रूप में प्रकाशित होते हुए भी जब जीव और जगदतीत रूप से वर्तमान है, तब वह जीव और जगत् से भिन्न है, जीव और जगत् जब उसी ब्रह्म का प्रकाशित रूप है, तब जीव और जगत् से वह अभिन्न भी है। अतः ब्रह्म और जीव जगत् में पारस्परिक स्वाभाविक रूप से भेद और अभेद दोनों ही सम्बन्ध हैं। इसी को भेदा-भेद अथवा द्वैताद्वैत सिद्धान्त कहते हैं। भगवान् श्रीनिम्बार्क इसी भेदा-भेद सिद्धान्त के प्रकाशक हैं।

प्रमाण—अविभागोऽपि समुद्रतरङ्गयोरिव, सूर्यवत्प्रभयोरिव तयोर्विभागः स्यात्। ब्रह्मसूत्र भाष्य—२/१/१३

जैसे समुद्र और तरङ्ग अभिन्न होते हुए भी स्वरूपतः भिन्न भी है, एवं सूर्य और सूर्य की प्रभा अभिन्न होते हुए भी भिन्न है। इसी प्रकार जीव और ब्रह्म अभिन्न होते हुए भी स्वरूपतः भिन्न है।

भूविकार बज्रवैदूर्यादिवद् ब्रह्माभिन्नोऽपि क्षेत्रज्ञः स्वरूपतोभिन्न एव। भाष्य–ब्रह्म सूत्र २/१/२२

जैसें वज्र वैदूर्यादि पृथ्वी का विकार होने से पृथ्वी से अभिन्न होते हुए भी स्वरूप से भिन्न है इसी प्रकार जीव ब्रह्म से अभिन्न होते हुए भी स्वरूपतः भिन्न है। इत्यादि प्रमाणानुसार भगवान् निम्बार्क ने ब्रह्म और जीव में नित्य और स्वाभाविक भेदाभेद (द्वैताद्वैत) सम्बन्ध कहा है।

इसी प्रकार जगत् और ब्रह्म में भी भेदाभेद सम्बन्ध प्रमाण सिद्ध है—

"तदनन्यत्वमारम्भणशब्दादिभ्यः" ब्रह्मसूत्र २।१।१४ कारण से कार्य का अभेद है। यथाश्रुति प्रमाण—

कार्यस्य कारणानन्यत्वमस्ति, नत्वत्यन्तभिन्नत्वम्, कुतः? वाचारम्भणं विकारो नामधेयं मृत्तिकेत्येव सत्यम्। "ऐतदात्यमिदं सर्वम्" तत्सत्यम् 'तत्त्वमसि' 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म"

भगवान् निम्बार्क ने और भी जिन विभिन्न प्रमाणों तथा दृष्टान्तों द्वारा कारण ब्रह्म से कार्य जगत् का अभेद सम्बन्ध दिखाया है, उनका उल्लेख यहाँ विस्तारभय से नहीं किया जा रहा है।

"जन्माद्यस्य यतः" प्रकृतैतावत्वंहि प्रतिषेधति ततोब्रवीतिच भूयः" इत्यादि ब्रह्म सूत्र भाष्य में ब्रह्म को जगत् की सृष्टि स्थिति एवं लय कर्त्ता और जगदतीत बताने से ब्रह्म और जगत् में भेद भी कहा गया है। अतएव ब्रह्म और जगत् में भेदाभेद (द्वैताद्वैत) सम्बन्ध है।

जैसे दुग्ध में घृत की अमूर्तरूप से स्थिति है, वैसे ही समस्त वेद-शास्त्रों में द्वैताद्वैत सिद्धान्त की स्थिति निहित (अन्तर्हित) है. उसी का प्रकाशन भगवान् श्रीनिम्बार्क ने लोक हिताय किया। अद्वैत सिद्धान्त के प्रतिष्ठापक भगवान् श्रीशङ्कराचार्य ने भी अपने जीवन की अन्तिम स्थिति में द्वैताद्वैत सिद्धान्त को स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हुये कहा—

सत्यपि भेदापगमे नाथ तवाहं न मामकीनस्त्वम्।
सामुद्रो हि तरङ्गः क्वचन समुद्रो न तारङ्गः॥

हे नाथ, सिद्धान्त में जीव-ब्रह्म का अभेद होने पर भी मैं आपका हूँ, आप मेरे नहीं, अर्थात् मेरे पर आपका सर्वाधिकार है, आप पर मेरा नहीं। यही भगवान् शंकर ने अपने वास्तविक एवं अन्तर्भाव को प्रभु के समक्ष स्पष्ट करते हुए द्वैताद्वैत सिद्धान्त को स्वीकार किया है।

इस प्रकार गम्भीर विचार करने पर सम्पूर्ण भारतीय वाङ्मय में यत्र तत्र सर्वत्र स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त के दर्शन होंगे। भारतीय वाङ्मय के मुकुटमणि श्रीमद्भगवद्-गीता में स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है—

ज्ञान यज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते।
एकत्वेन पृथक्त्वेन वहुधा विश्वतो मुखम् ॥९।१५

साधक गण मुझे ज्ञान यज्ञ के द्वारा यजन करते हुये एक रूप से (अद्वैत भाव से) पृथक् रूप से (द्वैत रूप से) एवं बिविध रूप से उपासना करते हैं।

अन्ये च संस्कृतात्मानो विधिनाभि हितेन ते।
यजन्ति तन्मयास्त्वां वै बहुमूर्त्येकमूर्त्तिकम् ॥ भा० १०।४०।७

अनेक निर्मलान्तः करण उपासक शास्त्र विधि के अनुसार अनेक मूर्ति एवं एक मूर्ति के रूप में आपकी उपासना करते हैं।

अन्तर्यामि जगद्रूपी सर्वसाक्षी निरञ्जनः।
भिन्नाभिन्नस्वरूपेण स्थितो वै परमेश्वरः ॥वृ० ना० पु० ३।२७

वह ब्रह्म अन्तर्यामी जगद्रूपी, सर्वसाक्षी निर्मल एवं परमपावन है। वे भिन्नाभिन्न (द्वैताद्वैत) रूप से सर्वत्र विराजमान है।

द्वैतंचैव तथाद्वैतं द्वैताद्वैतं तथैव च ॥ दक्ष सं. ७/४८

द्वैत, अद्वैत तथा द्वैताद्वैत इस प्रकार के जो मत हैं, उनमें द्वैत या अद्वैत पारमार्थिक नहीं है, द्वैताद्वैत ही पारमार्थिक सर्वमान्य सिद्धान्त है।

गोस्वामी तुलसीदासजी का अपना सिद्धान्त बिशिष्टाद्वैत होते हुए भी उन्होंने पारमार्थिक रूपेण द्वैताद्वैत सिद्धान्त को ही स्वीकार किया है—

गिरा अर्थ जल वीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न।
वन्दी सीताराम पद जाहि परम प्रिय खिन्न ॥

इत्यादि सब शास्त्र वचनों द्वारा यही निष्कर्ष निकलता है कि ब्रह्म और जीव-जगत् में स्वाभाविक द्वैताद्वैत सम्बन्ध है। यही सभी शास्त्रों का सिद्धान्त है।

★★

श्रीहँस भगवान् से वर्तमान आचार्य पर्यन्त–

आचार्य परम्परा

आचार्य नामावली	पाटोत्सव तिथि
१. श्रीहंस भगवान्	कार्तिक शु० ९
२. श्रीसनकादि भगवान्	कार्तिक शु० ९
३. देवर्षि श्रीनारद भगवान्	मा. शी. शु. १२
४. श्रीसुदर्शनचक्रावतार श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य	कार्तिक शु. १५
५. ,, भाष्यकार श्रीनिवासाचार्यजी	माघ शु. ५
६. ,, विश्वाचार्यजी	फाल्गुन शु. ४
७. ,, पुरुषोत्तमाचार्यजी	चैत्र शु. ६
८. ,, विलासाचार्यजी	वैशाख शु. ८
९. ,, स्वरूपाचार्यजी	ज्येष्ठ शु. ७
१०. श्रीमाधवाचार्यजी	आषाढ़ शु. १०
११. ,, बलभद्राचार्यजी	श्रावण शु. ३
१२. ,, पद्माचार्यजी	भाद्रपद शु. १२
१३. ,, श्यामाचार्यजी	आश्विन शु. १३
१४. ,, गोपालाचार्य	भाद्रपद शु. ११
१५. ,, कृपाचार्यजी	मार्गशीर्ष शु. १५
१६. ,, जाह्नवीकार श्रीदेवाचार्यजी	माघ शु. ५
१७. ,, सेतुकाकार श्रीसुन्दरभट्टाचार्यजी	मार्गशीर्ष शु. २
१८. ,, पद्मनाभभट्टाचार्यजी	वैशाख कृ. ३
१९. ,, उपेन्द्रभट्टाचार्यजी	चैत्र कृ. ३
२०. ,, रामचन्द्रभट्टाचार्यजी	वैशाख कृ. ५
२१. ,, वामनभट्टाचार्यजी	ज्येष्ट कृ. ६
२२. ,, कृष्णभट्टाचार्यजी	आषाढ़ कृ. ९
२३. ,, पद्माकरभट्टाचार्यजी	आषाढ़ कृ. ९
२४. ,, श्रवणभट्टाचार्यजी	कार्तिक कृ. ९
२५. ,, भूरिभट्टाचार्यजी	आश्विन कृ. १०

आचार्य नामावली	पाटोत्सव तिथि
२६. श्रीमाधवभट्टाचार्यजी	कार्तिक कृ. ११
२७. ,, श्यामभट्टाचार्यजी	चैत्र कृ. १२
२८. ,, गोपालभट्टाचार्यजी	पौष कृ. ११
२९. ,, बलभद्रभट्टाचार्यजी	माघ कृ. १४
३०. ,, गोपीनाथभट्टाचार्यजी	श्रावण शु. ७
३१. ,, केशवभट्टाचार्यजी	चैत्र शु. ९
३२. ,, गांगलभट्टाचार्यजी	चैत्र कृ. २
३३. ,, केशवकाश्मीरिभट्टाचार्यजी	ज्येठ शु. ४
३४. ,, श्रीभट्टाचार्यजी	आश्विन शु. ४
३५. ,, श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी	कार्तिक कृ. ११
३६. ,, परशुरामदेवाचार्यजी	भाद्रपद कृ. ५
३७. ,, हरिवंशदेवाचार्यजी	मार्गशीर्ष कृ. ७
३८. ,, नारायणदेवाचार्यजी	पौष शु. ९
३९. ,, वृन्दावनदेवाचार्यजी	भाद्रपद कृ. १३
४०. ,, गोविन्ददेवाचार्यजी	कार्तिक कृ. ५
४१. ,, गोविन्दशरणदेवाचार्यजी	कार्तिक कृ. ८
४२. ,, सर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी	पौष कृ. ६
४३. ,, निम्बार्कशरणदेवाचार्यजी	ज्येठ शु. ६
४४. ,, ब्रजराजशरणदेवाचार्यजी	ज्येठ शु. ५
४५. ,, गोपीश्वरशरणदेवाचार्यजी	माघ कृ. ६
४६. ,, घनश्यामशरणदेवाचार्यजी	आश्विन कृ. ६
४७. , बालकृष्णशरणदेवाचार्यजी	चैत्र कृ. १३
४८. ,, राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी वर्तमान आचार्यश्री	ज्येष्ठ शु. २

आद्याचार्य श्रीनिम्बार्काचार्य एवं उनकी तपःस्थली

द्वापर युग के अन्त और कलियुग के आरम्भ में प्रायः वैष्णव धर्म लुप्त सा होने जा रहा था उस समय ऋषि-महर्षियों की प्रबल पुकार सुन श्रीगोलोक विहारी ने अपने कर कमलस्थ चक्रराज श्रीसुदर्शनजी को यह आदेश दिया कि—

सुदर्शन महाबाहो कोटिसूर्यसमप्रभ ।
अज्ञानतिमिरान्धानां विष्णोर्मार्गं प्रदर्शय ।।

हे कोटि सूर्य समप्रभ! महाबाहो ! चक्रराज सुदर्शन ! आप भूतल पर अवतरित होकर अज्ञान रूप घोर अन्धकार में अन्धे हुये किंकर्तव्यविमूढ जनों को मार्ग दर्शन देते हुये वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार करो ।

श्रीहरि का आदेश पाकर चक्रराज श्रीसुदर्शन का प्राकट्य दक्षिण भारत आन्ध्र-प्रदेश वैदुर्यपतन (वर्तमान पैठण) गोदावरी तट पर श्री अरुणाश्रम में युधिष्ठिर शकाब्द ६ कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को सायंकाल मेष लग्न में हुआ । पिताश्री का नाम श्रीअरुणमुनि और माताश्री का नाम श्रीजयन्तीदेवी था । बाल्यकाल का नाम था इनका नियमानन्द । बालक नियमानन्द स्वल्पावस्था में ही अपने माता पिता के साथ व्रजमण्डलस्थ श्रीगोवर्धन गिरि की तलहटी स्थित इस स्थान पर आगये और यज्ञोपवीत होने के पश्चात् अपने पिताश्री अरुणमुनि से वेद वेदाङ्ग का अध्ययन करने लगे । इसी स्थान पर देवर्षि श्रीनारदजी ने आकर आपको विधिवत् पञ्च-संस्कार पूर्वक अथर्ववेदीय पञ्चपदी श्रीगोपालमन्त्रराज की विरक्त वैष्णवी दीक्षा देकर श्रीसनकादि संसेव्य परम्परा संप्राप्त श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा प्रदान करते हुए आजीवन पर्यन्त नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रत का परिपालन कर वैष्णव धर्म के प्रचार-प्रसार की आज्ञा प्रदान की ।

जब जगत्पिता ब्रह्माजी को यह भान हुआ कि भगवान् श्री हरि के आदेश से चक्रराज श्री सुदर्शन अवतार धारण कर भूमण्डल पर आये हैं तब परीक्षा करने हेतु एक दिन दिवा भोजी यति के रूप में उनके इसी आश्रम पर आये और बालक नियमानन्द से मिले । बहुत देर तक बैठ कर परस्पर शास्त्र चर्चा होने लगी । सायंकाल होने आया, भगवान् भास्कर को अस्ताचल की ओर जाते देख यतिराज उठे और प्रस्थान के लिए उद्यत हुये । श्रीनियमानन्द ने कहा-यतिराज ! ठहरिये, उत्थापन भोग आ रहा है जलपान करके ही पधारिये । यतिराज ने कहा—'हम रात्रि में भोजन नहीं पाते ।' बिना जलपान किये अतिथि का आश्रम से चले जाना उचित न जान नियमानन्द ने अपने स्वरूप श्रीसुदर्शनजी का आह्वान किया और समीपस्थ निम्ब वृक्ष पर स्थापित कर सूर्य रूप में उन्हें दिखाते हुए यतिराज से कहा—महाराज देखिये सूर्य देव तो अभी इतने ऊँचे दिखाई दे रहे हैं । अतः सायंकाल में अभी देर है । ब्रह्माजी मोह में पड़ गये और मान लिया कि ठीक है । प्रसाद आगया । प्रसाद पाने का नियम है कि दोनों हाथ, दोनों पैर धोकर

मुख शुद्ध (आचमन) करके प्रसाद पाना चाहिये । इसके लिए ताजा पवित्र जल हो । श्रीनियमानन्दजी की इस हार्दिक भावना को जान चक्रराज श्रीसुदर्शनजी ने अपना प्रखर किरणों के तापमान को भूमि पर बढ़ाया तो पृथ्वी से जल खिचकर ऊपर आ गया और देखते ही देखते एक छोटे से सरोवर में परिणित हो गया । श्रीनियमानन्द ने उसी जल से यतिरूप ब्रह्माजी के हाथ पैर धुना आचमन कराके प्रसाद पवाया । प्रसाद पाकर आचमन कराने के पश्चात् जब श्रीचक्रराज अन्तर्हित हो गये तब ब्रह्माजी को अनुभव हुआ कि गहरी रात व्यतीत होगई है । ज्योंही ब्रह्माजी ने ध्यानमग्न हो देखा तो यह सब लीला चक्ररूप श्रीनियमानन्द की ही प्रतीत हुई । तब तो तत्काल ही यतिराज ने ब्रह्मा रूप में प्रकट होकर प्रणाम करते हुए कहा—आप साक्षात् श्रीसुदर्शन-चक्रावतार ही हैं । आपने मुझे निम्ब वृक्ष पर अर्क (सूर्य) दिखाकर अपना प्रभाव प्रदर्शित किया अत: आज से आप 'श्रीनिम्बार्क' या 'श्रीनिम्बादित्य' नाम से प्रसिद्ध होंगे । तदनन्तर आज्ञा लेकर श्रीब्रह्माजी ब्रह्मलोक पधार गये ।

जहां पर श्रीचक्रसुदर्शन की किरणों द्वारा भूगर्भ से समुद्भुत जो सरोवर जिसमें से कियति रूप श्रीब्रह्माजी के हाथ पैर धुला आचमन कराके प्रसाद पवाया था वह यहां पर 'श्रीसुदर्शन-कुण्ड' के नाम से प्रसिद्ध है । इस कुण्ड के दर्शन, जल से आचमन मार्जनादि करके प्रणाम करने से ही सब आधि-व्याधि दूर हो जाती है ।

जिस निम्ब वृक्ष पर श्रीनियमानन्द (श्रीनिम्बार्क भगवान्) ने श्रीब्रह्माजी को सूर्य दिखाया था वह निम्ब वृक्ष भी प्राचीन मंदिर व श्रीसुदर्शन कुण्ड के मध्य में स्थित है । उसके चारों ओर पक्का चबूतरा बना हुआ है जहाँ नियमित दीपक एवं नित्य पूजा होती है ।

प्राचीन मन्दिर श्रीस्वामीजी महाराज का मन्दिर कहलाता है । इधर के व्रजवासी जन भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्यजी को श्रीस्वामीजी महाराज के नाम से ही कहते हैं । कालान्तर में यहां ग्राम भी बस गया । यह ग्राम भी 'श्रीनीमगांव' के नाम से ही प्रसिद्ध है ।

श्रीनिम्बार्क भगवान् की यह तपस्थली अति प्राचीन होने के कारण बहुत जीर्ण-शीर्ण हो गई थी । सन् १९७० में चौरासी कोसीय ब्रजयात्रा के समय वर्तमान पीठाधीश्वर जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने जब इस स्थल की जीर्ण-शीर्णता देखी तो आपने इसके जीर्णोद्धार की भावना समागत भक्तजनों के समक्ष व्यक्त की । आपकी प्रबल भावना देख उसी समय तत्काल ६० हजार की राशि एकत्रित होगई जो वर्तमान में २५ लाख होकर जीर्णोद्धार के पुण्य कार्य में लग रही है । इस कार्य के लिए एक समिति का गठन किया हुआ है जो "श्रीनिम्बग्राम सेवा मण्डल" के नाम से है । इस कार्य में श्रीभागीरथजी भराड़िया ने भक्तों को साथ लेकर सर्वत्र भ्रमण कर अर्थ राशि एकत्रित की एवं स्वयं श्रीभराड़ियाजी तथा श्रीव्रजमोहनजी शर्मा हाथरस ने इस पुनीत निर्माण सेवा में लग कर निर्माण कार्य कराया जो अत्यन्त प्रशंसनीय है ।

तप:स्थली पर श्रीनिम्बार्कराधाकृष्णविहारीजी के नव निर्मित मन्दिर का निर्माण पूर्ण होने पर अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवा-

चार्यजी महाराज, पीठाधीश्वर अ. भा. निम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) के तत्त्वावधान में वि. सं. २०४४ वैशाख शु. ७ दि. ५ मई १९८७ से वैशाख शु. १४ दि. १२ मई १९८७ पर्यन्त उक्त मन्दिर में भगवान् 'श्रीनिम्बार्कराधाकृष्णबिहारी' "श्रीआचार्य पंचायत" तथा "श्री निम्बार्क भगवान्" के श्रीविग्रहों की प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न हो चुकी है। उक्त मन्दिर की लम्बाई १४३ फुट चौड़ाई ६५ फुट तथा मध्यवर्ती शिखर की ऊँचाई ८० फुट है मन्दिर के निर्माण में अब तक २५ लाख से अधिक की धनराशि व्यय की जा चुकी है।

जीर्णोद्धार कार्य के अन्तर्गत लगभग १५ बीघा भूमि के प्रांगण में विशाल मन्दिर, गोशाला, परकोटा, सड़क, उद्यान एवं तपस्थली के निर्माण का कार्य हुआ है तथा श्रीसुदर्शन कुण्ड का जीर्णोद्धार, विद्यालय, पुस्तकालय, छात्रावास, चिकित्सालय, सन्त निवास, दश:श्लोकी स्तम्भ, शोध संस्थान आदि कार्य अभी निर्माणाधीन है जिन पर लगभग ५० लाख से ऊपर व्यय होने का अनुमान है। इस सम्पूर्ण योजना को सोमनाथ मन्दिर का निर्माण करने वाले सोमपुरा की सम्मति से तैयार किया गया है एवं जीर्णोद्धार का सारा कार्य 'श्रीनिम्बार्क सेवा मण्डल' द्वारा कराया जा रहा है।

यह तप:स्थली गोवर्धन बरसाना रोड़ पर गोवर्धन से पश्चिम की ओर ५ किलोमीटर पर निम्बग्राम में है। यहाँ पहुँचने के लिए नियमित बसें उपलब्ध हैं। दिल्ली से कोसी होकर नन्दग्राम बरसाना मार्ग से भी तथा अलवर-डीग-गोवर्धन एवं भरतपुर से गोवर्धन होकर भी सीधा बस मार्ग है। तथा अलवर--मथुरा बड़ी रेल-लाइन भी बन चुकी है। जिस पर रेल गाडियां आने-जाने लगी है। यह रेल लाइन निम्बग्राम होते हुए मथुरा पहुँची है। इससे और भी सुविधा पूर्वक निम्बार्क तपस्थली निम्बग्राम पहुँचा जा सकता है।

अवलोकन–शान्ति–दायकं सुजनार्थं धृत–मानवाकृतिम् ।
परमाद्भुत–दिव्य–विग्रहं प्रणुमो निम्ब–दिनेश–देशिकम् ।।

जिन्होंने अपने परम प्रिय भावुक भक्तों के लिये ही मानव वपु स्वरूप अवतार धारण किया, जिनके केवल दर्शन मात्र से ही परम शान्ति का अनिर्वचनीय अनुभव हो, उन परम अद्भुत तेजोमय दिव्य विग्रह अशरण शरण श्रीनिम्बार्काचार्य को हम सब प्रणाम करते हैं।

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय का एकमात्र सर्वमान्य आचार्यपीठ–

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

* संक्षिप्त परिचय *

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय वैष्णव चतुः सम्प्रदायों में अनादि वैदिक सत्सम्प्रदाय है। इस सम्प्रदाय की परम्परा श्रीहँस भगवान् से प्रारम्भ होती है। श्रीहँस भगवान् ने प्रकट होकर श्रीसनकादिक महर्षियों की तत्त्वज्ञानात्मक जिज्ञासा की पूर्ति करते हुए उन्हें गोपालतापिनी उपनिषद् के पञ्चपदी विद्यात्मक श्रीगोपालमन्त्रराज का उपदेश कर एक गुञ्जाफल सदृश अति सूक्ष्म दक्षिणावर्ती चक्राङ्कित शालग्राम विग्रह प्रदान किया जो "श्रीसर्वेश्वर प्रभु" नाम से व्यवहृत है। श्रीसर्वेश्वर प्रभु की यही सेवा एवं श्रीगोपालमन्त्रराज का दिव्योपदेश श्रीसनकादिकों ने देवर्षिवर्य्य श्रीनारदजी को प्रदान किया। देवर्षि श्रीनारदजी ने व्रज में श्रीगोवर्धन गिरिराज के निकट निम्बग्राम (नीमगांव) स्थित आश्रम में पधार कर भगवान् श्रीकृष्ण के परमायुध श्रीसुदर्शनचक्रावतार 'श्रीनिम्बार्क भगवान्' को श्रीसनकादि महर्षियों द्वारा प्राप्त श्रीगोपालमन्त्रराज का उपदेश एवं शालग्राम श्रीविग्रह 'श्रीसर्वेश्वर प्रभु' की सेवा प्रदान कर श्रीराधाकृष्ण की उपासना एवं अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रतादि नियमों का विधि पूर्वक उपदेश किया। आज से ५०९० वर्ष पूर्व का यह विस्तृत विवरण साम्प्रदायिक उपासना ग्रन्थों, भविष्योत्तर पुराण, उपनिषद्, श्रीमद्भागवतादि पौराणिक ग्रन्थों में सम्यक् रूप से उपलब्ध है।

श्रीनिम्बार्क भगवान् के पश्चात् द्वादशाचार्य, अष्टादश भट्टाचार्यों की श्रीनिम्बार्काचार्य परम्परा में अनेकों प्रतापी आचार्य हुए जिन्होंने अधिकांशतः भारत के विभिन्न क्षेत्रों में परिभ्रमण करते हुए वैष्णव धर्म का प्रचुर प्रचार किया। उनका किसी एक ही नियत स्थान पर निवास कम ही हुआ करता था। फिर भी अधिकतर वे व्रज में श्रीगोवर्धन के निकट नीमगांव, मथुरा में श्रीनारद टीला एवं श्रीवृन्दावन की पावन कुञ्जों में अपने आराध्य की आराधना के साथ-साथ रसिक जिज्ञासुजनों को अपने अनुपम उपदेशामृत से परितृप्त किया करते थे। यद्यपि आचार्यपीठ की संस्थापना पूर्व से ही है किन्तु आचार्यपीठ का एक ही स्थान पर संस्थापन व्यवस्थित रूप से विक्रम की पन्द्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ३५ वें आचार्यवर्य्य जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज के पट्टशिष्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज ने राजस्थान के पुष्कर क्षेत्र के अन्तर्गत किशनगढ़ के निकट निम्बार्कतीर्थ में किया, जो सम्पूर्ण निम्बार्क सम्प्रदाय का एकमात्र अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ है। यह आचार्यपीठ वैष्णव चतुः सम्प्रदाय का ही नहीं अपितु षड्दर्शन से भी मान्य एवं प्रमाणित है। इसी प्रकार दिल्ली बादशाह एवं भारत के विभिन्न राजा–महाराजाओं ने और विशेषकर राजस्थान के जयपुर, उदयपुर, जोधपुर, बून्दी, बीकानेर आदि समस्त रजवाड़ों, दिल्ली–सम्राटों ने इसी आचार्यपीठ को अपना गुरु स्थान मानते हुए इसे ही निम्बार्क सम्प्रदाय का सवमान्य आचायपीठ माना है।

मन्दिर के बाहर प्रधान द्वार का मनोहर दृश्य एवं अपार जन-समुदाय।

विद्युन्माला से जगमगाता मन्दिर का बाहरी भाग।

आचार्यपीठ के मुख्य द्वार एवं भव्य परकोटे का दृश्य।

श्री[illegible] तीर्थ सरोवर का मनोरम दृश्य।

यज्ञस्थली में आचार्यश्री के सान्निध्य में याज्ञिक विद्वान्, समस्त विद्वान् एवं अपार जन-समुदाय।

श्रीगोपाल महायज्ञ की पूर्णाहुति, याज्ञि[illegible] विद्वानों के साथ सपत्नीक यजमानों [illegible] पूर्णाहुति ।

इस अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के अन्तर्गत निम्बार्क सम्प्रदाय के मठ, मन्दिरादि अनुमानित २० हजार के लगभग हैं जो भारत के सभी प्रान्तों में एवं नेपाल आदि राष्ट्रों में हैं। यद्यपि इन संस्थानों मठ-मन्दिरादि के मठाधीश, महन्तवृन्द उनके संचालनादि कार्यों में स्वतन्त्र हैं किन्तु उनके अभाव किंवा अमर्यादा के करने पर श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ स्वयं या स्वसाम्प्रदायिक मान्य संस्थाओं द्वारा उनके सञ्चालन के लिए पुनः व्यवस्था करती है। इनके अतिरिक्त श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के अधीनस्थ जितने भी मठ-मन्दिर, सत्संग भवन, विद्यालय भवन या अन्य संस्थान हैं उनकी सर्वविध व्यवस्था उक्त आचार्यपीठाधीश्वर जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज ही करते हैं।

वर्तमान पीठाधीश्वर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज श्रीनिम्बार्काचार्य की परम्परा में ४८ वें आचार्य हैं। देश की धार्मिक जनता में आपका भारी सम्मान है, अटूट श्रद्धा है। आपके द्वारा समय-समय पर देश के कोने-कोने में धर्म प्रचारार्थ यात्रायें होती रहती हैं। कुम्भादि पर्वों पर विशाल 'निम्बार्क' नगर के निर्माण द्वारा अनेक प्रभावशाली धार्मिक आयोजन होते रहते हैं, व्रज वृन्दावन, नीमगांव एवं आचार्यपीठ आदि स्थानों पर शिक्षा प्रचार हेतु विद्यालय, छात्रावास आदि सञ्चालित हैं, मासिक एवं पाक्षिक पत्रों के प्रकाशन द्वारा भी विपुलरूप से धर्म प्रचार हो रहा है। सन्त-साधु सेवा के साथ-साथ आयुर्वेदिक औषधालयों द्वारा सर्व साधारण जनता को निःशुल्क औषधि उपचार की भी यथोचित व्यवस्था है।

प्रति वर्ष आचार्यपीठ में आचार्यश्री के तत्त्वावधान में भगवान् के उत्सव महोत्सवों का आयोजन निरन्तर होता रहता हैं। इन उत्सव महोत्सवों में अक्षय तृतीया, श्रीराधामाधवजी का पाटोत्सव, रथयात्रा महोत्सव, गुरुपूर्णिमा महोत्सव, झूलनोत्सव, श्रीकृष्ण जयन्ती महोत्सव, विजयादशमी, शरद्पूर्णिमोत्सव, दीपोत्सव, अन्नकूट तथा फूलडोल आदि महोत्सव परम दर्शनीय होते हैं। इन स्थानीय उत्सवों के अतिरिक्त आचार्यश्री के तत्त्वावधान में ही श्रीराधा जयन्ती महोत्सव श्रीराधा सर्वेश्वर मन्दिर मदनगंज में, श्रीमद्भागवत जयन्ती महोत्सव श्रीनिम्बार्ककोट अजमेर में, तथा श्रीहँस सनकादिक एवं श्रीनिम्बार्क जयन्ती महोत्सव प्रति वर्ष श्रीपरशुराम द्वारा पुष्कर राज में बड़े समारोह पूर्वक मनाये जाते हैं।

इस प्रकार यह निम्बार्काचार्यपीठ शताब्दियों से निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में अवस्थित रहते हुए भारतीय संस्कृति का संरक्षण, सनातन वैष्णव धर्म का प्रचार प्रसार एवं लोकोपकारी कार्यों द्वारा मानव मात्र के कल्याण में संलग्न रह समग्र निम्बार्क सम्प्रदाय की गौरव गरिमा को अक्षुण्ण रूप से सुरक्षित रखते हुए विद्यमान है।

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) के संस्थापक–

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य

श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज

श्रीनिम्बार्काचार्य परम्परा में ३६ वीं परम्परा में पीठासीन अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज का आविर्भाव वि० सं० १४५० के आस-पास राजस्थान के जयपुर राज्यान्तर्गत खंडेला रियासत के 'ठिकरिया' ग्राम में गौड़ विप्रवंश में हुआ। बाल्यावस्था से ही आपका मन सांसारिक मोह-जाल से हट कर भगवद्भक्ति भगवद्दर्शन, महापुरुषों की संगति तथा भजन-कीर्तन में ही लगा रहता था। पूर्व जन्म के इन्हीं प्रबल संस्कारों के फलस्वरूप आपने श्रीकृष्ण जन्मभूमि मथुरा पहुँच कर अनन्त श्रीविभूषित रसिक राजराजेश्वर महावाणीकार श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज से पंच संस्कार पूर्वक अथर्ववेदीय श्रीगोपालतापिनी उपनिषद् में वर्णित निषदोक्त पञ्चपदी श्रीगोपाल मन्त्रराज की विधिवत् वैष्णवी विरक्त दीक्षा ग्रहण की। तदनन्तर मथुरा में ही गुरुचरण सन्निधि में निवास करते हुए भगवत–भागवत सेवा में संलग्न हो गये। गुरु सेवा, सन्त सेवा तथा सतत हरि भजन के कारण तथा त्याग-तपस्या से आपका दिव्य तपोबल उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। भजन के प्रभाव से कई एक वैष्णवी सिद्धियाँ भी आपको हस्तगत हो गई थी।

जहाँ पर आजकल श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ स्थित है वह स्थान आज से पाँच सौ वर्ष पूर्व भयकंर वीहड़ बन था। उस जङ्गल में पद्मपुराणोक्त एक प्राचीन पुष्पों से आच्छादित भव्य आश्रम पिचुमंदार्क (निम्बार्कतीर्थ) था। जिसे एक पैशाचिक सिद्धि सम्पन्न दुष्ट यवन फकीर मस्तिगशाह ने अपने आधिपत्य में कर लिया। उक्त आश्रम के सन्निकट होकर ही द्वारका जाने का प्रधान मार्ग था। उस मार्ग से जो कोई धार्मिक जन यात्रा के लिये निकलते थे तो वह उनके साथ दुर्व्यवहार करते हुये उन्हें कष्ट दिया करता था। यह स्थल निम्बार्कतीर्थ में होने एवं पूर्वाचार्यों के संसर्ग में होने से दुःखित प्रजा ने मथुरा पहुँचकर जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज के चरणों में उपस्थित होकर प्रार्थना की—"एक अतीव प्राचीन स्थल श्रीनिम्बार्कतीर्थ को एक दुष्ट यवन फकीर भ्रष्ट कर रहा है, उस प्रदेश में हिन्दुओं का यातायात बन्द हो चुका है अतः वहाँ की स्थिति के समाधान हेतु एवं उस यवन तान्त्रिक के आतंक से मुक्त कराने के लिए अपने कृपापात्र किसी प्रतापी शिष्य को वहाँ भिजवावें।"

जनता की करुण पुकार सुनकर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज को बड़ा दु.ख हुआ। आपने अपने कृपापात्र शिष्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी को आदेश दिया कि तुम उस दुष्ट यवन को जाकर परास्त करो। कारण तुम्हारे में उसको परास्त करने का पूर्ण सामर्थ्य एवं सिद्धि बल भी है। आचार्यश्री की आज्ञा पाकर कुछ सन्तों को साथ लेकर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी ने वहाँ से प्रस्थान किया। सर्व प्रथम तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज पहुँचकर स्नान किया। वह

यवन यहाँ से १२ कोस की दूरी पर रहता था। एक दिन सन्त मण्डली सहित आप वहाँ पहुँच गये। आये हुए सन्तों को देख वह यवन फकीर अपनी सिद्धियों द्वारा सबको मूर्छित करना चाहा, किन्तु बार-बार प्रयोग करने पर भी वह सफल नहीं हो पाया। उस यवन के पास तीन पैशाचिक सिद्धियाँ थी जिनको श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज ने क्रमशः हरण करली थी। जब उसने सभी प्रकार से अपने आपको असहाय एवं असमर्थ पाया और उसके सम्पूर्ण देह में विद्युत् प्रहार की भाँति जलन पैदा होने लगी तो वह करुणक्रन्दन करते हुए क्षमा-याचना करने लगा। बहुत अनुनय विनय करने पर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी ने उसे क्षमा करते हुए अन्यत्र चले जाने की आज्ञा दी। वह वहाँ से चला गया। किन्तु अन्तिम समय में फिर यहीं आकर उसने इस आश्रम से कुछ दूरी पर अपने शरीर का अन्त किया। जिसकी कब्र अद्यावधि श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ से कुछ दूरी पर दक्षिण दिशा में विद्यमान है।

श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी ने द्वारकामार्ग को निष्कण्टक बनाकर कुछ दिन यहाँ निवास कर पुनः मथुरापुरी की ओर प्रस्थान किया। श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज ने आपके कार्यकौशल तथा सिद्धिबल के प्रभाव को देख परम प्रसन्नता प्रकट की और सब प्रकार से योग्य समझ इन्हें अपने पद पर प्रतिष्ठित करके तथा भगवान् 'श्रीसर्वेश्वर प्रभु' की सेवा देकर अन्तिम बार यही आदेश प्रदान किया कि उसी मरुस्थल प्रदेश में जाकर वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार करो। श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी पुनश्च आचार्यश्री के आदेशानुसार श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा सहित इस मरुस्थल प्रदेश निम्बार्कतीर्थ में आकर भगवद्भक्ति की गङ्गा बहाने लगे। आप यहाँ पर एक पीलू वृक्ष के नीचे रहकर अपनी उपासना एवं नित्य हवन करते थे। यहीं आपने "श्रीपरशुरामसागर" की रचना की। इस विशाल ग्रन्थ की रचना दोहे, चौपाई, छन्द, बरवा छप्पय और पद आदि अनेक छन्दों में हुई है।

श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज बड़े ही प्रतिभा सम्पन्न, उच्चकोटि के सिद्ध आचार्य थे। इनकी कीर्ति और महिमा सर्वत्र फैली हुई थी। राजस्थान में आपके कृपापात्र शिष्यों में जोधपुर राज्यान्तर्गत खेजड़ला ग्राम के सरदार ठाकुर श्रीसियोजी भाटी सवप्रथम शिष्य थे जो कि दिल्ली बादशाह की सेना में उच्च पद पर नियुक्त थे। एक बार बादशाह शेरशाहसूरि बड़े लवाजमे के साथ ख्वाजा साहब के दर्शनार्थ अजमेर आये हुए थे। वहाँ से वापिस लौटते समय श्रीसियोजी भाटी ने संकेत किया कि जहांपनाह यहाँ से कुछ दूरी पर हमारे श्रीगुरुदेव विराजते हैं जो कि बड़े ही परमसिद्ध वैष्णवाचार्य हैं वहाँ दर्शन करने पर मानव की मुराद पूरी होती है। बादशाह ने सहर्ष स्वीकृति दे दी। तदनुकूल सब इन्तजाम हो गया। आगे आकर श्रीभाटीजी ने आचार्यश्री से निवेदन किया कि भगवन्! दिल्लीपति बादशाह आपके दर्शनार्थ आ रहे हैं। बादशाह आये, स्वागत-सम्मान के साथ एक बहुमूल्य दुशाला आचार्यश्री के भेंट कर प्रणामादि कर सामने बैठ गये। आचार्यश्री ने प्रसन्नतापूर्वक भेंट स्वीकार करके अपने चीमटा से उस दुशाले को उठाकर धूनी में रख दिया। यह देख बादशाह का चित्त बड़ा दुःखी हुआ, होना स्वाभाविक ही था। बादशाह की मनोवृत्ति उदास देख आचार्यवर्य्य ने उसी चीमटा से वैसे ही दश-बीस दुशाले निकाल-निकाल कर सामने रख दिये और प्रसन्न मुद्रा में कहा कि—राजन्! हमारा कोई अलग कोई कोष या तिजोरी तो है नहीं, जो कुछ आता है

इसी में धर देते हैं और आवश्यकता पड़ने पर इसी में से निकाल लेते हैं। यह चमत्कार देख बादशाह का मन बड़ा प्रसन्न हुआ और कहने लगा—महाराज ! मैं आपकी महिमा को नहीं पहचान पाया था, क्षमा करिये। यों विनय करते हुए अपनी पुत्र-कामना की अभिलाषा प्रकट की। श्रीस्वामीजी महाराज ने प्रसन्नता पूर्वक शुभाशीर्वाद प्रदान करते हुए धूनी की विभूति दी।

बादशाह के चले जाने पर कतिपय दिनों में ही उसको पुत्र रत्न प्राप्त हुआ जिसका नाम रक्खा गया-सलीम। श्रीस्वामीजी महाराज के इन चमत्कारों को देख कर बादशाह बड़ा प्रभावित हुआ था अतः उसने आश्रम के लिए ६ हजार बीघा जमीन का पट्टा गोचारण हेतु अर्पित किया और आचार्यश्री से निवेदनपूर्वक आज्ञा प्राप्त की कि आपके और हमारे इस इतिहास का सम्बन्ध बना रहे सो मैं चाहता हूँ कि श्रीनिम्बार्कतीर्थ के पास जो बसावट हो उसका नाम 'सलीमाबाद' रखा जावे। इस प्रकार श्रीनिम्बार्कतीर्थ नाम तो प्राचीन है ही किन्तु जो बसावट हुई उसके एक भाग का नाम "सलीमाबाद" पड़ा। बादशाह द्वारा जो ६ हजार बीघा गोचारण हेतु जमीन दी गई थी, वह अंग्रेजी शासन में भी मान्य रही किन्तु देश के स्वतन्त्र होने पर भारत सरकार ने उस भूमि को वन विभाग में ले लिया।

इसी प्रकार श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज की प्रसिद्धि सुनकर एक बाल ब्रह्मचारी "टीकमदास" नामक सन्त सीधे ही घर से चलकर अद्वैतवादी सन्यासी वेदान्ती महात्मा के आश्रम में पहुँच कर उनसे वेदान्त का अध्ययन कर कुछ दिन बाद उनसे आज्ञा ले भ्रमणार्थ निकल पड़े। भ्रमण करते हुए दैवयोग से श्रीनिम्बार्कतीर्थ भी पहुँच गये, यहाँ भगवद् अर्चन, सन्त-सेवा, गो-सेवा, विद्याध्ययन आदि का अवलोकन एवं श्रीस्वामीजी महाराज के दर्शन कर बड़े ही प्रभावित हुए। यह सद्गुरु की खोज में तो थे ही। एक दिन एकान्त में दीक्षा प्रदान करने हेतु आचार्यश्री से प्रार्थना की। श्रीस्वामीजी महाराज ने इनकी भावना देख इन्हें विरक्त दीक्षा प्रदान कर दी और श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय का द्वैताद्वैत सिद्धान्त, उपासना तत्त्व, आचार-विचार और वैष्णव धर्म सम्बन्धी तात्त्विक विचारों से खूब परिपक्व कर दिया।

एक बार यही ब्रह्मचारी महात्मा भ्रमण करते हुए उन्हीं शिक्षा गुरु के स्थान पर जा पहुँचे। इन्हें वैष्णव वेषभूषा एवं कण्ठी तिलक धारण किये हुए देख वे आश्चर्यान्वित हो कहने लगे—यह क्या किया ? ब्रह्मचारी ने प्रसन्नमुद्रा में उत्तर देते हुए कहा—इसी वेषभूषा एवं रहन-सहन में मुझे वास्तविक सुख-शान्ति की उपलब्धि हुई है। तब तो आपके शिक्षा गुरुजी ने एक जल का घड़ा भरकर आपको देते हुए कहा कि जावो यह घड़ा अपने गुरुजी के पास रख देना और मुख से कुछ मत कहना। आपने वह जल का घड़ा लाकर श्रीस्वामीजी महाराज के चरणों में रख दिया और प्रणामादि करके सामने बैठ गये। यह दृश्य देख श्रीस्वामीजी ने भी शक्कर के बतासे मंगवाये और एक-एक बतासा घड़े के जल में डालते गये, थोड़ी ही देर में जल मधुर बन गया। तदनन्तर उन्हीं को वह जल का घड़ा देते हुए कहा कि जहाँ से लाये हो वहाँ ही लेजाकर उनके सामने रख देना और मुख से कुछ नहीं बोलना। श्रीचरणों की आज्ञानुसार वह जल घट लेजाकर वहाँ उनके सामने ही धर दिया गया। महात्माजी ने जल लेकर पीया तो अत्यन्त मधुर लगा। तब वे बोले कि भैया ! हमारा तात्पर्य यह

था कि जब हमने इस पात्र को पूर्ण भर दिया अर्थात् अद्वैतज्ञान से पूर्ण कर दिया तो फिर आपने क्या किया ? देखो यह जल मधुर है, उनका कहना है कि आपने पात्र को पूर्ण तो भर दिया किन्तु माधुर्यरूप भक्तिरस परिपूर्ण नहीं था, हमने उसमें भक्ति का पुट देकर मधुरता का संचार कर दिया है। श्रीस्वामीजी महाराज की कृपा से यही ब्रह्मचारी आगे चलकर "तत्त्ववेत्ताचार्य" के नाम से प्रसिद्ध हुए।

एक दिन एक कुष्ठरोग से पीड़ित व्यक्ति आचार्यश्री के सामने आया और दूर से ही प्रणाम करके बोला—"महाराज मैं कोढ़ी हूँ, प्रभो ! मेरा दुःख दूर करो। आचार्यश्री ने सुधामयी कृपा दृष्टि पूर्वक अवलोकन करने के पश्चात् उसे धूनी की विभूति प्रदान करते हुये कहा कि जाओ श्रीसर्वेश्वर प्रभु तुम्हारा भी कष्ट दूर करेंगे। और आपके दिव्य कृपा प्रसाद से उसका रोग दूर हो गया।

इसी प्रकार एक समय एक वृहद् आयोजन में आचार्यश्री अपने सदुपदेश में बोल रहे थे कि "माया सगी न मन सगो, सगो न यह संसार। परशुराम इस जीव को सगो सु सर्जनहार ॥" इस वैराग्यपूर्ण उपदेश को सुनकर एक जिज्ञासु भक्त ने कहा कि महाराज ! जब ऐसी ही बात है तो फिर आप भी हाथी-घोड़े, छड़ी-छत्र, चँवर और सोने-चाँदी के पात्र आदि इस माया के पीछे-पीछे क्यों घूम रहे हैं। तो आपने प्रसन्नमुद्रायुक्त सहज भाव से ही उत्तर देते हुए कहा कि भाई ! हम क्या करें हम तो नहीं, पर यह माया ही हमारे पीछे-पीछे घूम रही है। जिज्ञासु भक्त को इसका प्रत्यक्ष अनुभव कराने के लिए आप सब कुछ छोड़ एक-दो सन्तों के साथ में श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा लेकर नाग पहाड़ की कन्दरा में एकान्त स्थान में चले गये और वहीं आनन्दपूर्वक "श्रीसर्वेश्वर प्रभु" की सेवा पूजा करने लगे। अभी एक सप्ताह ही नहीं हुआ था कि उधर से एक लखी बनजारा अपने व्यापार की विपुल धनराशि लेकर घर जारहा था कि जल आदि की सुविधा देख जहाँ श्रीस्वामीजी महाराज विराज रहे थे वहीं समीप ही पड़ाव डाल कर स्नान–भोजनादि कार्य में लग गया। थोड़ी ही देर में उधर श्रीसर्वेश्वर प्रभु की शृङ्गार आरती के झालर-घन्टा बजने लगे। बनजारा परम वैष्णव था। सोचा चलो भगवान् के दर्शन कर आवें। पहुँचने पर देखा तो श्रीसर्वेश्वर प्रभु के आगे श्रीस्वामीजी महाराज विराज रहे हैं। वह आपश्री का ही कृपापात्र शिष्य था, बड़ी प्रसन्नता हुई, दण्डवत्प्रणामादि के पश्चात् तुलसी चरणोदक लेकर भगवान् तथा गुरुदेव के चरणों में अर्थराशि भेंट की, जिसमें सोने-चाँदी के पात्र, छड़ी-छत्र, चँवर आदि भी थे। राजभोग प्रसाद भी अपनी ओर से ही करवाया। विपुलमात्रा में वैष्णव सेवा हो रही थी कि उसी समय वह जिज्ञासु भक्त भी आ गये। उन्होंने यहाँ भी पूर्ण वैभव देखा तो अपने मन में बहुत लज्जित हुए और आचार्यचरणों में गिरकर क्षमा मांगी। सच ही है भगवान् के जो सच्चे भक्त होते हैं, माया उनके पीछे दासी की भाँति दौड़ा करती है।

श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज के ऐसे अनेक चरित्र हैं जो श्रीसर्वेश्वर प्रभु से सम्बन्धित हैं। आपको 'श्रीसर्वेश्वर' (शालग्राम) प्रतिमा में युगलकिशोर श्रीराधाकृष्ण के साक्षात् दर्शन होते थे, प्रतिदिन पुष्कर स्नान करने पधारते थे और लौटकर अपना नित्य कृत्य

करते थे। आज भी आचार्यपीठ में आपका भव्य चित्र, योगपीठ, हवन कुण्ड, खड़ाऊ आदि आपकी स्मृति स्वरूप विद्यमान हैं जिनके दर्शन कर भक्तजन कृतकृत्य होते हैं। आपके हवनकुण्ड (धूनी) की आराधना एवं विभूति की प्रसादी से अनेक राजा-महाराजा, जागीरदार तथा भक्तजनों का मनोरथ पूर्ण हुआ है और आज भी हो रहा है। जयपुर नरेश सवाईजयसिंहजी (तृतीय) एवं पीसांगण के राजकुमार श्रीरणछोड़सिंहजी आदि का जन्म होना इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

वैष्णव धर्म की विजय पताका फहराते हुए तथा भगवद्भक्ति का प्रचार-प्रसार करते हुए दीर्घकाल लगभग एक शताब्दी से अधिक इस धराधाम पर विराजमान रहकर आपने श्रीपुष्करराज में इहलीला संवरण की। पुष्कर परिक्रमा में श्रीब्रह्मघाट के पास आपका वह संस्थान "श्रीपरशुरामद्वारा" के नाम से प्रसिद्ध है। जहाँ आपकी समाधि के दर्शन होते हैं। इहलीला संवरण के समय एक ही साथ श्रीनिम्बार्कतीर्थ, श्रीपुष्करराज तथा श्रीवृन्दावनविहार घाट पर इन तीनों स्थानों पर सभी भक्तों को आपके दर्शन हुए हैं आज भी आपके दर्शन जिस पर कृपा होजाती है होते हैं।

श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज का जयन्ती महोत्सव भाद्रपद कृष्ण पंचमी का है। यह उत्सव आचार्यपीठ में बड़े समारोह के साथ ममाया जाता है। अन्यत्र वृन्दावन आदि स्थानों पर भी यह उत्सव अत्यन्त उत्साह के साथ सम्पन्न होता है।

❋ श्रीपरशुराम दोहावली ❋

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी को अधभाग ।
साध समागम प्रसराम, जो करिये बड़भाग ।।
यहै ग्यान सबकौं सुनूं, जाकें मन थिर होय ।
मन थिर राखै प्रसराम, आवागवण न होय ।।
परसराम थिर राखियै, मन गज एकै ठांइ ।
श्रीगुरु अकुंस सीस धरि, बल करि अनत न जांइ ।।
काया खेत किसान मन, वीरज हरि को नांवु ।
साध सबद बिरखा भई, परसा सहज कमांवु ।।
हरि अमृत रस परसराम, सीतल सरस सुवास ।
पीवै सोइ त्रिपत होइ, सबतजि रहै उदास ।।

—जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज

वर्तमान अ० भा० जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री "श्रीजी"

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज का

महनीय व्यक्तित्व एवं कृतित्व

संसार में निरपेक्षता, भगवत्परायणता, शान्ति, समदृष्टि, निर्ममत्व, अहङ्कार, शून्यता और निष्परिग्रह आदि गुणों से सुसम्पन्न मधुर-सरल-स्वभाव वाले प्रतिभाशाली सन्तों को जन्म देने का सौभाग्य किसी भाग्यशाली दम्पति को ही प्राप्त होता है, ऐसे ही भाग्यशाली दम्पतियों में थे निम्बार्कतीर्थ (सलेमावाद) किशनगढ़ के निम्बार्कपरम्परानुयायी परम वैष्णव गौड़ ब्राह्मणवंशीय श्रीरामनाथजी गौड़, जिनकी धर्मपत्नी श्रीस्वर्णलता (सोनीबाई) की पवित्र कुक्षि से विक्रम सम्वत् १९८६ वैशाख शुक्ल प्रतिपदा शुक्रवार दिनांक १० मई १९२९ ई० को प्रातः ५ बजकर ५४ मिनट पर एक भाग्यशाली बालक का जन्म हुआ। कृतिका नक्षत्र में उत्पन्न होने से बालक का नाम "उत्तमचन्द" रखा गया जो पश्चात् "रतनलाल" नाम से प्रसिद्ध हुए। घटना यों हुई कि एक दिन जब माता अपने इस द्विमासीय बालक को पालने में झुला रही थी कि एक अज्ञात तेजस्वी जटाधारी वैष्णव महात्मा भिक्षावृति के लिए उनके पास आये तब माता ने बालक को गोद में उठाये हुए श्रद्धापूर्वक उन्हें भिक्षा प्रदान की। गोद में बालक की प्रसन्नमुद्रा को देखकर महात्मा ने कहा—माता ! तुम्हारा यह बालक अत्यन्त तेजस्वी "रतन" है, यह आगे चलकर एक अच्छे उत्तम पद को प्राप्त करेगा। इस शुभाशीर्वाद को श्रवण कर माताजी प्रसन्न हुई और विचार करने लगी कि अचानक इन अज्ञात महात्मा का पधारना कैसे हुआ, यह तेजस्वी महात्मा कौन थे ? माताजी ने बड़े वृद्ध-पुरुषों से यह भी सुन रखा था कि श्रीस्वामीजी (श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी) महाराज के भक्तों को आचार्यपीठ में तथा श्रीपरशुरामद्वारा पुष्कर में दर्शन हुए हैं इसे स्मरण कर विचार हुआ कि यह महात्माजी हो न हो श्री स्वामीजी महाराज ही थे जो यहाँ दर्शन देने पधारे हैं। माता की मनः सन्तुष्टि के लिए पण्डित श्रीलादुरामजी व्यास सलेमाबाद द्वारा बनवाई गई बालक की जन्मकुण्डली कई प्रतिष्ठित ज्योतिषियों को दिखाई गई। सभी ने बालक के अलौकिक भविष्य की सराहना की और कहा— "यह बालक श्रीमन्त, राजयोग का अधिकारी, सुन्दर व्यक्तित्व वाला, उच्चाभिलाषी, विद्या में निपुण, स्थानधारी होगा और भावी जीवन में मठ-मन्दिर, विद्यालय, कूप-तालाब, बाग-बगीचों का निर्माण करायेगा, विद्यादान करेगा, कुटुम्ब और स्त्री का परित्याग करेगा, शास्त्रज्ञ, सत्यवादी, महामुनि होगा और आचार्यपद प्राप्तकर प्रख्यात महात्मा होगा।" यह सब सुनकर मातृ हृदय को सान्त्वना मिली। यहाँ यह ज्ञातव्य है कि सुयोग्य विद्वान् स्व० पं० श्रीलादुरामजी व्यास द्वारा बनाई गई जन्मकुण्डली का फलादेश आचार्यश्री के जन्म से लेकर आज पर्यन्त ज्यों का त्यों मिलता आरहा है।

"होनहार बिरवान के होत चीकने पात" वाली कहावत के अनुसार बालकपन से ही आपका मन लौकिक खेल खिलौनों में न जाकर स्वाभाविक रूप से धार्मिक कार्यो में ही लगा रहता था। भगवान् श्रीराधामाधवजी की मंगला, शृङ्गार एवं सायंकालीन आरती के दर्शन,

स्तुति संकीर्तनादि में ही प्रवृत्ति रहती थी। बालकपन से ही आप में इन सदाचारपूर्ण सद्-विचारों को देखकर आचार्यप्रवर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज बड़े प्रसन्न होते थे। उस समय में आचार्यश्री की अत्यन्त वृद्धावस्था थी, सम्प्रदाय के विशिष्ट सन्त-महान्त और भक्तगण इसलिये चिन्तित थे कि अब तक भावी उत्तराधिकारी मनोनीत नहीं किया गया था, संकल्पविकल्प चल रहा था उसी समय सन्त-महन्तों के अनुरोध से आचार्यश्री ने पं० श्रीव्रजवल्लभशरणजी, पं० श्रीलाडिली-शरणजी और श्रीनरहरिदासजी की अधिकारी पद पर नियुक्ति की और भावी उत्तराधिकारी भी सोच समझ कर जहाँ तक हो शीघ्र ही नियुक्त करने का विचार प्रकट किया।

स्थानीय विशिष्ट महानुभावों ने एकादश वर्षीय बालक चि० रतनलाल को आचार्यपीठ के भावी उत्तराधिकारी पद पर नियुक्ति का प्रस्ताव आचार्यश्री के समक्ष प्रस्तुत किया। तब आपकी जन्मकुण्डली देख, प्रतिभा सम्पन्न जान आपके माता-पिता से सत्परामर्श कर वि० सं० १९९७ के आषाढ़ शुक्ल २ (रथयात्रा) दिनांक ७ जुलाई १९४० ई. में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज ने आपको विधि विधान पूर्वक पंचसंस्कारयुक्त विरक्त वैष्णवी दीक्षा प्रदान कर "श्रीराधासर्वेश्वरशरण" नाम से विभूषित कर युवराज पद पर नियुक्त कर दिया और आपकी प्रारम्भिक शिक्षा प्रारम्भ कर दी गई। इससे पूर्व आपने स्थानीय प्राथमिक शाला में चतुर्थ कक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। श्रीवियोगीविश्वेश्वरजी को भी वि० सं० १९९९ चैत्र कृष्ण पक्ष में आचार्यश्री ने अधिकारी पद पर नियत किया।

वि० सं० २००० में ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा को प्रातःकाल अपने गुरुदेव अनन्त श्री-विभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज के गोलोकवास होने पर वि० सं० २००० ज्येष्ठ शुक्ल २ दिनांक ५ जून १९४३ को प्रातः ८ बजे १४ वर्ष की अवस्था में आपश्री निम्बार्काचार्य पीठासीन हुए। आपके "चद्दर सत्कार" में अनेक गण्य-मान्य सन्तों, महन्तों, मण्डलेश्वरों, महामण्डलेश्वरों तथा जयपुर, किशनगढ़, उदयपुर, जोधपुर, बीकानेर, बून्दी आदि नरेशों के प्रतिनिधियों ने आपका सत्कार किया।

आपश्री की नाबालिकी में भूतपूर्व आचार्यश्री ने पीठ प्रबन्धार्थ षड्वर्षीय एक ट्रस्ट निर्माण कर दिया था, उसमें महन्त श्रीगङ्गादासजी महाराज स्थलाधीश उदयपुर, महन्त श्रीराधिकादासजी महाराज किशनगढ़-रेनवाल एवं खेजड़ला (मारवाड़) ठिकाने के ठा० सा० श्रीभैरोंसिंहजी आदि महानुभावों के नाम थे। इन ट्रस्टियों की देखरेख में श्रीवियोगीविश्वे-श्वरजी, श्रीनरहरिदासजी, श्रीव्रजवल्लभशरणजी तथा लाड़िलीशरणजी इन चतुष्टय अधि-कारी महानुभावों एवं वयोवृद्ध पुजारी श्रीरघुनाथदासजी, पु० श्रीसर्वेश्वरदासजी, पं० श्रीदेव-कीनन्दजी, श्रीश्यामसुन्दरदासजी, पु० श्रीबालकदासजी प्रभृति द्वारा पीठ का कार्य सञ्चालन व्यवस्थित रूप से होता रहा।

चतुःसम्प्रदाय श्रीमहन्त श्रीधनञ्जयदासजी (काठिया बाबा) तर्कतर्कतीर्थ वृन्दा-वन की देख-रेख में अध्ययन के लिए आपश्री का वृन्दावन पादार्पण हुआ। वहाँ पहुँचने पर

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
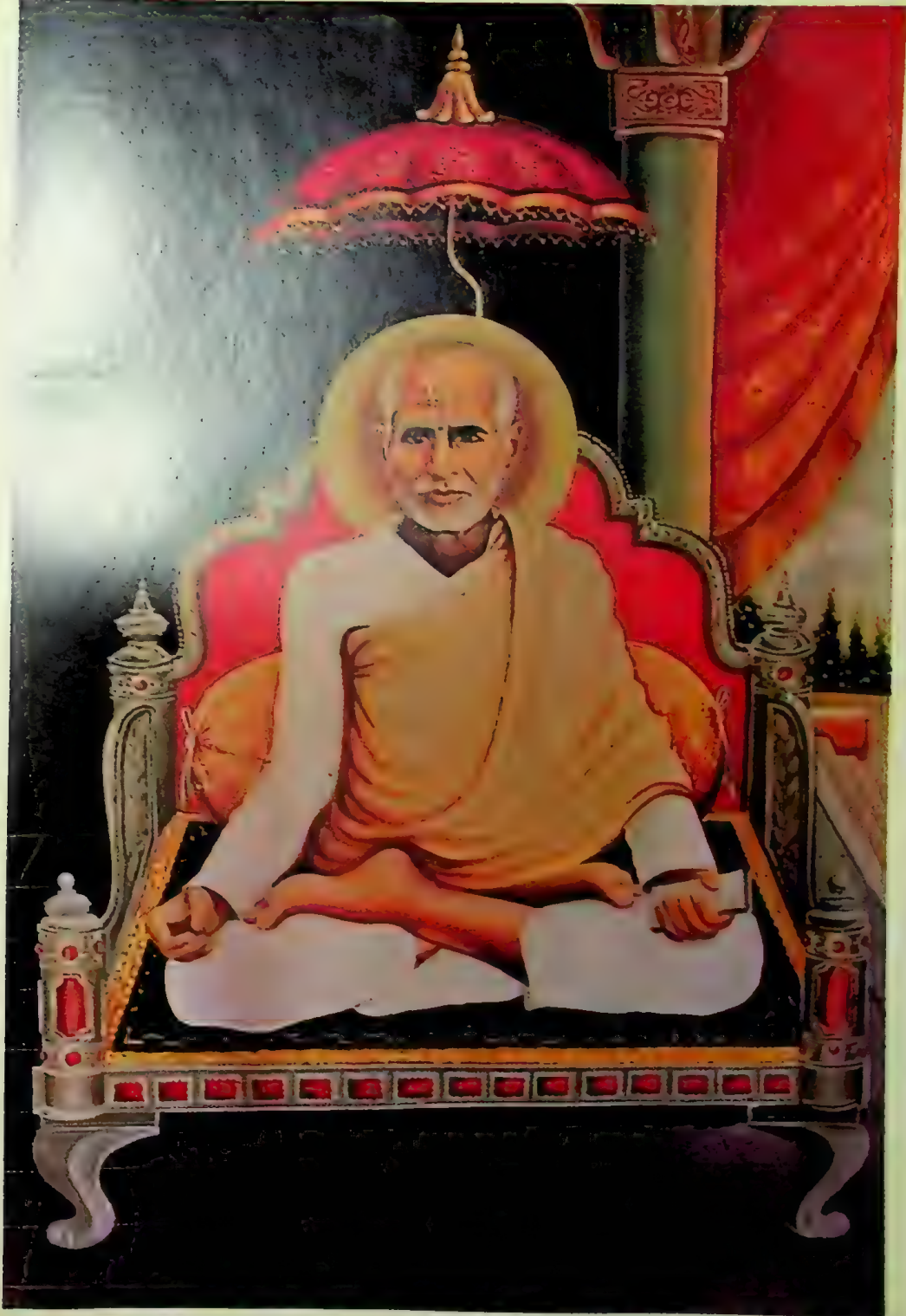
श्री श्रीजी श्रीबालकृष्णशरण देवाचार्यजी महाराज

भक्तजनों द्वारा जब आपकी शोभायात्रा का आयोजन हुआ तो आपने सवारी में बैठने से इस भाव से मना कर दिया कि "जिस वृन्दावनधाम की पावन भूमी पर श्रीप्रियाप्रियतमजू अपने सुकोमल चरणों का स्पर्श कर विहरण करते हैं वहाँ किसी विशेष यान पर बैठकर चलना उचित नहीं है।" इस बाल्यावस्था में वृन्दावनधाम के प्रति इतना अनुराग देखकर सबका हृदय भावविभोर हो गया और जय जयकार के साथ सभी ने पदाति ही श्रीधाम में प्रवेश किया। कुछ दिन वृन्दावन में श्री 'श्रीजी' बड़ी कुन्ज में निवास करते हुए आपने अध्ययन किया तत्पश्चात् श्रीकाठियाजी की देख-रेख में मन्दिर श्रीदावानलविहारीजी में निवास करते हुए पं० श्रीलाड़िलीशरणजी, अ० श्रीव्रजवल्लभशरणजी, श्रीवैष्णवदासजी शास्त्री, श्रीरासविहारीजी गोस्वामी, पं० श्रीसोहनलालजी चतुर्वेदी प्रभृति विद्वान् महानुभावों से संस्कृत भाषा का अध्ययन एवं व्याकरण-न्याय-वेदान्त आदि का विधिवत् अध्ययन किया। इस प्रकार वि० सं० २००० से २००४ पर्यन्त श्रीधाम वृन्दावन में आपका अध्ययनकाल व्यतीत हुआ।

वि० सं० २००१ के श्रावण मास में वृन्दावन से ही पधार कर कुरुक्षेत्र में होने वाले सूर्यसहस्ररश्मि महायाग के अवसर पर आयोजित अ० भा० साधु सम्मेलन में सर्वसम्मिति से आपने सभापति पद को अलंकृत किया। देववाणी संस्कृत में आपने अध्यक्षीय भाषण पढ़ा। इस अवसर पर तत्कालीन पुरीपीठाधीश्वर शंकराचार्य श्रीभारतीकृष्णतीर्थजी महाराज का भी पादार्पण हुआ था। आपको अध्यक्ष पद पर देखकर श्रीशंकराचार्यजी ने अपने प्रवचन में सम्मान पूर्वक कहा था कि—"आज हमें बड़ा गौरव है कि हम अपने इस साधु समाज के बीच जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यजी को इस बाल्यकालीन स्वल्पावस्था में ही अध्यक्ष पद पर देख रहे हैं। आप लोग अवस्था पर विचार न करें तुलसीपत्र या शालग्राम विग्रह छोटे हो या बड़े समान महिमा वाले होते हैं उनके महत्व में कोई अन्तर नही आता।" इस सम्मेलन में आचार्यश्री ने उस बाल्यावस्था में ही आचार्यपीठ सलेमाबाद में वृहद् सनातन धर्म सम्मेलन करने की घोषणा की थी।

वि० सं० २००६ के फाल्गुन मास में सर्व प्रथम आचार्यश्री का श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा सहित श्रीधाम वृन्दावन के कुम्भ पर्व पर पादार्पण हुआ। बड़े समारोह पूर्वक शोभायात्रा का आयोजन किया गया था जो श्रीवृन्दावनधाम के मुख्य-मुख्य स्थानों से होती हुई यमुना पुलिन पर शिविर स्थल पर जाकर सभा के रूप में परिणित हुई। समागत विद्वानों के प्रवचन एवं आचार्यश्री के सदुपदेश श्रवण कर भक्तजन भावविभोर हो गये। कुम्भ की समाप्ति के पश्चात् आपश्री ने अनेक सन्त-महन्त, विद्वानों के साथ जीप द्वारा व्रज के मुख्य-मुख्य स्थानों का दर्शन व अवलोकन किया।

वि० सं० २००७ में द्वितीय आषाढ़ शु० द्वादशी को आचार्यश्री का अपने पूर्वाचार्यो द्वारा जयपुर त्याग दिए जाने के ८५ वर्ष पश्चात् हजारों नर-नारियों के हस्ताक्षरयुक्त जयपुर की जनता के प्रार्थना पत्र आने पर सन्त-महन्त, विद्वद्वर्ग एवं अधिकारी वर्ग की सर्व सम्मति से तथा श्रीसर्वेश्वर प्रभु की चिटों द्वारा प्रदत्त आज्ञा शिरोधार्य कर आपका ट्रेन द्वारा जयपुर

पादार्पण हुआ, प्लेटफार्म पर हजारों नर-नारियों द्वारा जयघोष के साथ पुष्पमालाओं से आपश्री का स्वागत हुआ, विशाल शोभायात्रा निकाली गई दांता हाउस में आचार्यश्री का विराजना हुआ और निर्धारित कार्यक्रमानुसार जयपुर के भक्तों ने अपने-अपने स्थानों पर आचार्यश्री की पधरावनियाँ कराई।

वि० सं० २००९ के कार्तिक मास में श्रीनारदानन्दजी एवं श्रीभास्करानन्दजी द्वारा आयोजित "सार्वभौम साधुमण्डल" के विशेषाधिवेशन पर आचार्यश्री का कानपुर पधारना हुआ। इस आयोजन में उत्तरप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्रीगोविन्दवल्लभजी पंत तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संचालक गुरु गोलवलकरजी, स्वामी श्रीअखण्डानन्दजी महाराज एवं श्रीप्रेमदासजी रामायणी आदि सम्मिलित थे। पञ्च दिवसीय इस आयोजन में आपके सभापतित्व में एक दिन सन्त-महन्त, विद्वानों के प्रवचन एवं आपका शुभाशीर्वादात्मक प्रवचन हुआ जिसकी सभी के द्वारा सराहना की गई।

वि० सं० २००९ के माघ मास में मल्हारगढ़ जि० गुना (म० प्र०) के महन्त श्रीरामगोविन्ददासजी द्वारा आयोजित श्रीविष्णुयाग में श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा सहित सपरिकर आपश्री का मल्हारगढ़ पधारना हुआ। चारों ओर के सन्त-महान्तों का यह विशाल समागम था। यहाँ से बीना महन्त श्रीभगवानदासजी की विशेष प्रार्थना पर बीना पधारना हुआ, सहस्रों भक्तजनों ने आपका स्वागत करते हुए शोभायात्रा का आयोजन किया, रात्रि में प्रवचन आदि कार्यक्रम सम्पन्न कर वहाँ से आपका ललितपुर, दतिया, झाँसी, ओरछा तथा आगरा पहुँचना हुआ, सभी स्थानों पर आपका भव्य स्वागत सत्कार हुआ एवं प्रवचन आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

वि० सं० २०१० में अक्षय तृतीया को मेवाड़ मण्डलेश्वर स्थानाधीश महन्त श्रीगङ्गादासजी द्वारा आयोजित श्रीमद्भागवत सप्ताह तथा श्रीभक्तमाल कथा के आयोजन पर उदयपुर पादार्पण हुआ। इस अवसर पर तीनों अनियों के श्रीमहन्त, व्रजविदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहन्त श्रीधनञ्जयदासजी महाराज तथा एक दिन उदयपुर महाराणा श्रीभोपालसिंहजी का भी पधारना हुआ था।

इसी वर्ष वि० सं० २०१० के माघ मास में श्रीप्रयागराज कुम्भ पर्व पर अधिकारीवर्ग के परामर्शानुसार आपश्री के तत्त्वावधान में "श्रीनिम्बार्कनगर" की संस्थापना हुई। सरकार से भूमि प्राप्तकर विशाल सभा स्थल, श्रीसर्वेश्वर प्रभु का मन्दिर, आचार्यकक्ष, रसोई, भण्डार, सन्त सेवा सदन, औषधालय एवं भक्तों के आवास नल बिजली आदि का निर्माण हुआ। भक्तजनों ने पूरे माघ मास इस निम्बार्कनगर में निवास करते हुए प्रतिदिन श्रीसर्वेश्वर प्रभु की पंचकालीन सेवा, अखण्ड हरिनाम संकीर्तन, सन्त सेवा, समागत सन्त-महन्त-विद्वानों के प्रवचन एवं आचार्यश्री के सदुपदेशामृत का पान किया। इसी कुम्भ से सभी कुम्भों में प्रत्येक कुम्भ के अवसर पर "श्रीनिम्बार्क नगर" का निर्माण होता आरहा है और वि० सं० २०४८ के उज्जैन कुम्भ तक इनकी संख्या १७ हो गई है।

आचार्यपीठाभिषेक के समय आचार्यश्री
ज्येष्ठ शुक्ला 2 द्वितीया, शनिवार, वि.सं. 2000
आयु - 14 वर्ष

श्रीवृन्दावन में अध्ययन के समय आचार्यश्री
(वि.सं. 2001 से वि. सं. 2004)
आयु - 15 वर्ष

...ठ शुक्ल 2 द्वितीया, शनिवार, वि.सं. 2000 को आचार्यपीठासीन के अवसर पर विराजमान आचार्यश्री, आपके दाहिनी ओर स्थित ... श्रीराधिकादासजी रेनवाल बायीं ओर व्रजविदेही चतु-सम्प्रदाय श्रीमहन्त श्रीधनञ्जयदासजी (काठियाबाबा) तर्कतर्कतीर्थश्रीवृन्दावन, ...ी पंक्ति में दाहिनी ओर चँवर लिये म. श्री प्रेमदासजी (काठिया) वृन्दावन तथा बायीं ओर चँवर लिये अधिकारी श्रीनरहरिदासजी
(श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ)

श्रीसर्वेश्वरप्रभु की सेवा में अभिरत आचार्यश्री, वि. सं. 2016 (आयु 31 वर्ष)

इन्दौर में भक्तजनों को उपदेशा करते हुए आचार्यश्री
वि.सं. 2016 (आयु 31 वर्ष)

आचार्यश्री उद्बोधन करते हुए
वि.सं. 2019 (आयु 34 वर्ष)

वि० सं० २०१२ के आश्विन मास में सन्त श्रीकृपालुदासजी द्वारा आयोजित भक्ति सम्मेलन में चित्रकूट पादार्पण हुआ। आपश्री के सभापतित्व में विद्वानों के प्रवचन आदि कार्य सम्पन्न हुए। यहाँ से आपने कामदगिरि की परिक्रमा के अनन्तर सपरिकर स्फटिक शिला, अनुसूया, गुप्त गोदावरी, हनुमानधारा तथा भरतकूप आदि तीर्थ स्थानों की पदाति यात्रा सम्पन्न की। साथ में अधिकारीवृन्द एवं बाबा श्रीमाधुरीशरणजी प्रभृति विशिष्ट महानुभाव थे। इस अवसर पर स्वामी श्रीघनश्यामजी की रासमण्डली भी थी।

वि० सं० २०१३ में भाद्रपद शुक्ल १० से मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष तक श्रीनिम्बार्क स्पेशल ट्रेन द्वारा आपके तत्त्वावधान में अनेक सन्त-महन्त, विद्वद्वर्ग एवं सहस्रों भक्तों द्वारा तीनधाम सप्तपुरी की यात्रा सम्पन्न हुई। इस यात्रा में श्राद्ध पक्ष में गया श्राद्ध, मैसूर में सुप्रसिद्ध दशहरा उत्सव, रामेश्वर में शरद् पूर्णिमोत्सव, बम्बई में दीपावली व अन्नकूट महोत्सव एवं उदयपुर में श्रीनिम्बार्क जयन्ती महोत्सव आदि उत्सव समारोह पूर्वक मनाये गये।

वि० सं० २०१४ में अधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी के गुरुदेव स्व० महन्त श्री-ब्रह्मदासजी महाराज के भण्डारा महोत्सव पर आचार्यश्री का चलानगरस्थ श्रीगोपाल मन्दिर में पादार्पण हुआ। इस अवसर पर ज्येष्ठ शुक्ल ९ को बाबा बजरंगदासजी (अ० श्रीव्रज-वल्लभशरणजी) महाराज का महन्ताई समारोह सानन्द सम्पन्न हुआ। यह स्थान श्रीपरशु-रामदेवाचार्यजी महाराज के शिष्य श्रीपीताम्बरदेवाचार्यजी महाराज ने संस्थापित किया था।

वि० सं० २०१६ से २०२१ तक आचार्यश्री का भारतवर्ष के अनेक प्रदेशों में भ्रमण हुआ, स्थानाभाव के कारण उन सभी स्थानों का उल्लेख करना यहाँ सम्भव नहीं है। वि० सं० २०२२ के माघ मास में दि० २२/१/६६ को विश्व हिन्दु परिषद् के महाधिवेशन में आपश्री का पधारना हुआ। इस महाधिवेशन में सभी मठों के शंकराचार्य और वैष्णवाचार्यों के साथ-साथ धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज का भी पधारना हुआ था।

वि० सं० २०२३ में दि० ७ नवम्बर १९६६ को गोरक्षा महाभियान समिति द्वारा आयोजित गोरक्षा आन्दोलन में सैकड़ों सन्तों को साथ लेकर आपश्री का दिल्ली पधारना हुआ था। इस आन्दोलन में सभी मत मतान्तरों के लगभग पन्द्रह लाख गोभक्तों ने भाग लिया था। दि० १२ दिसम्बर १९६६ को श्रीगोवर्धनपुरीपीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीनिर-ञ्जनदेवतीर्थजी महाराज के गोरक्षार्थ अनशन व्रत के २१ वें दिन उनकी गम्भीर अस्वस्थता के समाचार मिलने पर उनके कुशल समाचार लेने आपश्री का पुरी पधारना हुआ था। वहाँ से लौटते समय सम्बलपुर (उड़ीसा), नागपुर, अमरावती, आकोला, खामगांव, धूलिया, सैन्धवा, इन्दौर आदि विशिष्ट नगरों में जन समुदाय को गोरक्षा पर प्रेरणा देते हुए आपका आचार्यपीठ पहुँचना हुआ था।

वि० सं० २०२५ आश्विन मास में १० सितम्बर १९६८ को श्रीगोवर्धनपुरीपीठा-धीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज के चातुर्मास्य समापन पर ब्यावर में आयोजित गोरक्षा सम्मेलन में आपश्री का पधारना हुआ। इस अवसर पर हुई विशाल शोभायात्रा का वह दृश्य परम अवलोकनीय था।

वि० सं० २०२६ सन् १९७० के फाल्गुन-चैत्र मास में आपश्री ने तीन सौ से अधिक वैष्णव विरक्त सन्तों तथा तीन हजार के लगभग सद्गृहस्थ भक्तों को साथ लेकर व्रज चौरासी-कोसीय पदाति व्रज यात्रा शास्त्रीय विधि विधान से सम्पन्न की। इस यात्रा का सम्पूर्ण वृत्तान्त "श्रीनिम्बार्क" पत्र के "व्रजयात्रा विशेषाङ्क" में प्रकाशित हुआ है। दो सौ पृष्ठों में एक सौ पाँच चित्रों से सुसज्जित इस अंक की न्यौछावर मात्र ११) रु० है।

वि० सं० २०२७ से २०३० के पूर्व व इन वर्षों में आचार्यश्री का धर्मसंघ द्वारा आयोजित विशेषाधिवेशनों में श्रीगंगासागर, मेरठ, आकोला, हैदराबाद, जमशेदपुर आदि स्थानों पर पादार्पण हुआ। सं० २०३० के आश्विन मास में किशनगढ़-रेनवाल के सुप्रसिद्ध स्थान श्रीकृष्णविहारीजी मन्दिर के वर्तमान महन्त श्रीहरिवल्लभदासजी साहित्य दर्शन शास्त्री द्वारा उनके गुरुदेव महान्त श्रीराधिकादासजी महाराज की २१ वीं पुण्यतिथि पर आयोजित भागवत सप्ताह, कलशारोहण, ग्रन्थ विमोचन आदि कार्यक्रमों में किशनगढ़-रेनवाल भी पधारना हुआ था।

वि० सं० २०३१ के चैत्र मास में दि० ३० मार्च से ४ अप्रेल १९७५ पर्यन्त आपश्री के तत्त्वावधान में अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस पञ्च दिवसीय आयोजन में सुदर्शन महायाग, वैष्णव धर्म सम्मेलन, हिन्दु संस्कृति सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, देवस्थान सुरक्षा सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन आदि सम्मेलन सम्पन्न हुए। इस अवसर पर चारों पीठों के जगद्गुरु शंकराचार्य, चतुः सम्प्रदाय पीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीवैष्णवाचार्य, विभिन्न सम्प्रदायों के धर्माचार्य, धर्मसम्राट् श्रीकरपात्रीजी महाराज अनेक सन्त-महन्त, मण्डलेश्वर, महामण्डलेश्वर, अनी अखाड़ों के श्रीमहन्त तथा विश्व विख्यात विद्वान् महानुभाव, विदुषी महिलाएँ एवं श्रेष्ठ कवियों का आगमन हुआ था। समस्त धर्माचार्यों का एकत्रित होकर एक ही मञ्च पर विचार विनिमय करने का भारतवर्ष में यह प्रथम अवसर था। सम्पन्न हुए इन सभी सम्मेलनों का विशद् विवरण पाठक आचार्यपीठ द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ "अ० भा० सनातन धर्म सम्मेलन स्मारिका" में देखें। ४५० पृष्ठों में अनेक रंगीन चित्रों से सुसज्जित इस स्मारिका की न्यौछावर मात्र १५) रु० है।

वि० सं० २०३२ से २०४५ तक व पूर्व आचार्यश्री ने निज आराध्यदेव श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा एवं परिकर सहित देश के विभिन्न भागों में उत्सवों-महोत्सवों, कुम्भ पर्वों, धार्मिक आयोजनों, यज्ञयागादिकों में जयपुर जोधपुर, अजमेर, पुष्कर, भीलवाड़ा, उदयपुर, इन्दौर, पूना, बम्बई, शोलापुर, इचलकरंजो, मद्रास, हैदराबाद, आकोला, नागपुर, अहमदाबाद, दिल्ली, हरिद्वार, इलाहाबाद, बनारस, कलकत्ता, उज्जैन, द्वारका, मथुरा, वृन्दावन प्रभृति अनेक स्थानों व आस-पास के छोटे-बड़े स्थानों पर अनेक बार पधार कर अपने दिव्य सन्देशों द्वारा भारतीय संस्कृति तथा वैष्णव धर्म की जागृति कर धर्मप्राण जनता को अपने सदुपदेशों, शिक्षा-दीक्षा द्वारा मार्गदर्शन प्रदान किया है। वि० सं० २०४७ दि० २१/४/९० से २९/४/९० तक अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में आपके तत्त्वावधान में युगसन्त श्रीमुरारी बापू की नव दिवसीय श्रीरामकथा का आयोजन एक महत्वपूर्ण आयोजन था। नव

श्रीमन्निखिलमहीमण्डलाचार्य, चक्र-चूड़ामणि, सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र, द्वैताद्वैतप्रवर्त्तक, यतिपतिदिनेश, राजराजेन्द्रसमभ्यर्चितचरणकमल, भगवन्निम्बार्काचार्यपीठविराजित, अनन्तानन्त श्रीविभूषित, जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, श्रीनिम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद-किशनगढ़ (अजमेर) राजस्थान।

दिन चली इस कथा में प्रतिदिन हजारों की संख्या में दूर-दूर से आकर रामभक्तों ने कथा श्रवण का जो आनन्द लिया वह अवर्णनीय है। यह आयोजन आज के विभ्रान्त जन-जन को सन्मार्ग दिखाने में अत्यन्त प्रभावशाली सिद्ध हुआ है। आचार्यश्री के आदेशानुसार इस अवसर पर प्रतिदिन आचार्यपीठस्थ मुद्रणालय से दैनिक "श्रीनिम्बार्क" के प्रकाशन द्वारा प्रतिदिन की श्रीरामकथा का विवरण प्रकाशित कर वितरण किया जाता था। द्रष्टव्य है कि 'श्रीनिम्बार्क' पत्र पाक्षिक पत्र है किन्तु आचार्यश्री ने भक्तों की सुविधा के लिए इसे दैनिक निकालने का आदेश दिया, यह आपके धार्मिक विचारों के अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार की भावना का द्योतक है।

इस वर्ष वि० सं० २०५० के ज्येष्ठ मास में दिनांक २२/५/९३से/२८/५/९३ तक आपश्री के आचार्यपीठाभिषेक के अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव स्वर्णजयन्ती महोत्सव के शुभावसर पर अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का वृहद् आयोजन हुआ है। इस आयोजन में भी सं० २०३१ के विराट् सम्मेलन की भाँति विभिन्न स्थानों से विशिष्ट धर्माचार्य, जगद्गुरु शंकराचार्य, जगद्गुरु रामानुजाचार्य, जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य, जगद्गुरु वल्लभाचार्य, षड्दर्शनाचार्य, आचार्य, महामण्डलेश्वर, मण्डलेश्वर, श्रीमहन्त, तीन अनियों के श्रीमहन्त, महन्त, सन्तगण एवं विद्वानों का आगमन हुआ है। दूरदर्शन पर लोकप्रिय धारावाहिक "रामायण" व "श्रीकृष्ण" के निर्माता श्रीरामानन्द सागर एवं "महाभारत" धारावाहिक के निर्माता बी० आर० चौपड़ा, संगीतकार श्रीरवीन्द्र जैन बम्बई को आचार्यश्री के करकमलों द्वारा शाल, रजत सुदर्शनचक्र व प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया है। आकाशवाणी केन्द्र (दिल्ली) के कार्यक्रम-अधिकारी श्रीकैलाशचन्द्रजी वर्मा तथा जोधपुर–बम्बई के प्रख्यात गायकवृन्द एवं भारत के सुप्रसिद्ध कविवृन्द भी इस आयोजन में सम्मिलित थे। उक्त सम्मेलन का समस्त विवरण इस स्मारिका में प्रकाशित है।

वि० सं० २००० से २०५० तक के अर्द्धशताब्दी आचार्यत्वकाल में भ्रमण द्वारा सम्प्रदाय का प्रचार–प्रसार ही नहीं अनेक धार्मिक स्थलों का निर्माण एवं जीर्णोद्धार भी आचार्यश्री के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ है। मदनगंज का भव्य श्रीराधासर्वेश्वर मन्दिर, अजमेर में निम्बार्ककोट का भव्य निर्माण, भगवान् श्रीनिम्बार्क तपःस्थली निम्बग्राम में निम्बग्राम सेवा मण्डल द्वारा श्रीनिम्बार्क राधाकृष्णविहारीजी का भव्य नूतन मन्दिर, आचार्यपीठ के दोनों विद्यालयों के भवन, सत्संग कथा भवन, गोशाला, यज्ञशाला औषधालय, श्रीसर्वेश्वर उद्यान, आचार्यकक्ष, छात्रावास भवन, श्रीराधामाधव चौक, श्रीस्वामीजी महाराज की तपः-स्थली का नया प्रारूप, आचार्य पञ्चायतन स्थापना, बैंक तथा पोस्ट आफिस भवन, गंगासागर पर उद्यान, श्रीहनुमान मन्दिर तथा भव्य अतिथि गृह, श्रीनिम्बार्कतीर्थ सरोवर तथा जमुना-सागर की चहार दीवारी व सभा मञ्च का निर्माण, श्रीनिम्बार्कतीर्थ सरोवर पर श्रीनिम्बार्क महादेव मन्दिर का निर्माण, खातोली मोड़ पर श्रीनिम्बार्क मारुति मन्दिर का निर्माण, श्रीनिम्बार्काचार्य राजकीय प्राथमिक विद्यालय भवन का निर्माण कर सरकार को प्रदान, श्रीपरशुरामद्वारा पुष्कर का नवीन रूप, झीटियाँ स्थान का श्रीगोपाल मन्दिर का नव निर्माण, श्रीविजयगोपालजी मन्दिर एवं श्रीनृसिंहजी मन्दिर निम्बार्कतीर्थ का जीर्णोद्धार, श्रीधाम वृन्दा-

वन में श्री श्रीजी बड़ी कुञ्ज व अन्य सम्बन्धित कुञ्जों में जीर्णोद्धार व निर्माण, हीरापुरा पावर हाउस के पास निम्बार्कनगर जयपुर में श्रीनिम्बार्कनिकुञ्जबिहारीजी के मन्दिर का भव्य नव निर्माण, श्रीगोपालद्वारा किशनगढ़ का जीर्णोद्धार आदि अनेक कार्य आपके आचार्यत्वकाल में सम्पन्न हुए हैं ।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके द्वारा श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, श्रीनिम्बार्क दर्शन विद्यालय एवं वेद विद्यालय इन तीनों विद्यालयों का संचालन हो रहा है जिसमें विद्याध्ययन कर छात्र अनेक धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक क्षेत्रों में प्रवेश कर अच्छे प्रतिष्ठित स्थानों पर रह जीविकोपार्जन कर रहे हैं । इन विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों के आवास, भोजन, वस्त्र एवं पुस्तकों आदि का समस्त व्यय आचार्यपीठ वहन करती है ।

साम्प्रदायिक साहित्य के अभिवर्द्धन में भी आपका योगदान महत्वपूर्ण है । आपके संरक्षकत्व में श्रीसर्वेश्वर प्रेस वृन्दावन में मासिक पत्र "श्रीसर्वेश्वर" एवं श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) से श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय में "श्रीनिम्बार्क" धार्मिक पाक्षिक पत्र का नियमित प्रकाशन हो रहा है । दोनों पत्रों द्वारा अनेक विशेषांकों का प्रकाशन हुआ है, इनमें श्रीनिम्बार्क विशेषांक, श्रीवृन्दावनांक, श्रीयुगलशतकांक, श्रीमहावाणी अंक, श्रीरसोपासना अंक, श्रीनागरीदासजी की वाणी, श्रीव्रजलीलांक, श्रीमद्भगवद्गीता अंक, श्रीशरणागति अंक, श्रीगुरुमहिमांक, विद्यालय अर्द्धशताब्दी अंक, अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन स्मारिका, श्रीनिम्बार्क तपःस्थली अंक, श्रीरामकथा विशेषांक तथा समय-समय पर कुम्भ पर्वाङ्क एवं श्रीपुरुषोत्तममासीय अंकों के प्रकाशन द्वारा श्रीनिम्बार्क साहित्य में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है ।

आचार्यश्री स्वयं संस्कृत, हिन्दी, बंगला एवं राजस्थानी आदि भाषाओं के विद्वान् ही नहीं आयुर्वेद एवं संगीतकला के भी मर्मज्ञ हैं । संस्कृत एवं हिन्दी दोनों भाषाओं में आपने अनेक ग्रन्थों की रचना की है । आपके द्वारा विरचित श्रीनिम्बार्क भगवान् कृत प्रातःस्तवराज स्तोत्र पर 'युग्मतत्त्वप्रकाशिका' तथा पंचस्तवी, श्रीयुगलस्तवविंशतिः, श्रीयुगलगीतिशतकम्, श्रीसर्वेश्वर सुधाबिन्दु, हिन्दु संघटन, भारत-भारती-वैभवम्, श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम्, विवेक-वल्ली, श्रीस्तवरत्नाञ्जलि, उपदेश दर्शन एवं भारत कल्पतरु जिसका भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्रीशंकरदयालजी शर्मा द्वारा विमोचन हुआ है आदि-आदि ग्रन्थ परम उपादेय एवं मनन करने योग्य हैं जो धार्मिक एवं भारतीय संस्कृति की विचारधाराओं के ग्रन्थ हैं ।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" श्रीराधासर्वेश्वरशरण-देवाचार्यजी महाराज अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) निम्बार्क सम्प्रदाय के आचार्यपरम्परानुसार ४८ वें श्रीनिम्बार्काचार्य हैं । सनातन धर्म के क्षेत्र में आज आपका सर्वाधिक वर्चस्व है । आप नैष्ठिक बाल ब्रह्मचारी, परम तपस्वी, प्रकाण्ड विद्वान्, प्रतिभाशाली उपदेशक एवं भारतीय संस्कृति के परमोपासक हैं । श्रीसर्वेश्वर आराधना, गोपालन, सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार, मानव मात्र का कल्याण, सन्तों एवं विद्वानों की सेवा ही आपके जीवन की मुख्य साधनायें हैं । श्रीसर्वेश्वर राधामाधव के श्रीचरणों में अभ्यर्थना है कि वे हमारे कृपालु गुरुदेव श्रीआचार्यचरणों को शतायु प्रदान करें जिससे आपकी निर्मल भक्ति सरिता में अवगाहन कर भक्त समुदाय आप्लावित होता रहे । ★

निज मंदिर में श्रीसर्वेश्वर प्रभु का महादुग्धाभिषेक करते हुए आचार्यश्री, सामने महंत श्रीहरिवल्लभदासजी एवं पुजारी श्रीराधामाधवशरण।

जगद्‌गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज निजमन्दिर में श्रीसर्वेश्वर प्रभु के दर्शन कराते हुए।

भगवान् श्रीराधामाधव, श्रीसर्वेश्वर प्रभु के समक्ष छप्पन भोग की मनोरम झांकी।

मन्दिर के जगमोहन में बालरूप, श्रीकान्त को युवराज पद पर अभिषेक एवं माला धारण कराते हुए आचार्यश्री के सान्निध्य में विराजमान महामण्डलेश्वर महन्त श्रीव्रजविहारीशरणजी राजीव (अहमदाबाद) तथा याज्ञिक विद्वान्।

वयोवृद्ध पुजारी श्रीरामेश्वरदासजी।

बालरूप श्रीकान्त उत्तराधिकारी युवराज के रूप में।

स्वर्णजयन्ती महोत्सव एवं अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के–

आयोजन की पृष्ठभूमि

धर्म प्रधान हमारे देश के धार्मिक क्षेत्र में धर्माचार्यों द्वारा जनकल्याणकारी धार्मिक आयोजनों की मङ्गलमयी परम्पराओं के अन्तर्गत वर्तमान में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री "श्रीजी" श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज की भूमिका प्रमुख ही नहीं, अद्वितीय है। आचार्यश्री का सम्पूर्ण जीवन अनादि वैदिक द्वैताद्वैत सिद्धान्त, सार्वभौम सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार में निरन्तर संलग्न है। देश काल एवं परिस्थिति की आवश्यकता को देखते हुए आपश्री का जो विशिष्ट धार्मिक आयोजनों का संकल्प होता है वह महनीय स्तर के साथ जब साकार होता हुआ अद्भुत विशाल आयोजन के रूप में सफल सम्पन्न होता है तो बड़े-बड़े मनीषी धर्माचार्य, पत्रकार, कलाकार एवं धार्मिक जनता आश्चर्य-चकित हो जाती है। और "धानुरिवेदितं फलैः" भगवान् के संकल्प का अनुमान सृष्टि के कार्य रूप फलों से लगाया जाता है, वैसे ही उक्त सफल आयोजनों से हमारे आचार्यश्री के संकल्प का अनुमान लगाया जाता है। अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) द्वारा सम्पन्न होने वाले महनीय यशस्वी धार्मिक एवं सांस्कृतिक विशाल आयोजनों के मूल में पूज्य आचार्यश्री का ही सत्संकल्प होता है फिर उसकी क्रियान्विति में कोई भी भाग्यशाली निमित्त बन सकता है।

विक्रम संवत् २०३१ (सन् १९७५) में श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ द्वारा एक ऐतिहासिक विशाल अ० भा० सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन हुआ था। उसके कुछ वर्षों के पश्चात् आचार्यश्री "श्रीजी" महाराज का संकल्प हुआ—"श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ पर अब एक विशाल वैष्णव सम्मेलन होना चाहिए।" सामान्य रूप से परिकरवर्ग को उक्त संकल्प की जानकारी हुई। यदा कदा प्रसंग-वश उक्त संकल्प की चर्चा भी होती रही। संयोग-वश परिकर-वर्ग में एक चर्चा चली, आचार्यश्री के पीठाभिषेक के ऐतिहासिक एवं यशस्वी ५० वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। अतः इस स्वर्णिम अवसर पर आचार्यश्री के पट्टाभिषेक स्वर्णजयन्ती महोत्सव का आयोजन होना चाहिए। इस विषय के मुख्य सूत्रपात्र करने वाले थे श्रीदिनेशजी किरण रूपनगर। परिकरवर्ग एवं आचार्यपीठस्थ विद्वत्परिषद् के सदस्यों द्वारा आचार्यपीठ के निकटस्थ भावुक भक्तजनों को उक्त विषय की जानकारी प्रदान करने पर सबके हृदय में स्वर्णजयन्ती महोत्सव मनाने के लिये स्वाभाविक उल्लास भरा भाव जागृत हुआ। उक्त महोत्सव की रूप-रेखा तैयार करने के लिये स्वीकृति हेतु आचार्यश्री से प्रार्थना की गई तो सर्वथा निषेध करते हुए कहा गया कि हमारे लिये स्वर्णजयन्ती महोत्सव मनाने की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि कोई उत्सव महोत्सव करना है तो भगवान् श्रीराधामाधव श्रीसर्वेश्वर प्रभु का ही महोत्सव मनाना चाहिए। पुनः समन्वित रूप से विशेष प्रार्थना के साथ आचार्यश्री को स्मरण दिलाया गया कि आपश्री का ही एक संकल्प है कि–आचार्यपीठ पर एक विशाल सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन होना चाहिए। अतः स्वर्णजयन्ती के निमित्त रूप में उक्त आयोजन की

स्वीकृति प्रदान की जावे। इस पर स्वीकृति प्रदान करते हुए आज्ञा हुई कि—किसी भी निमित्त से यदि आचार्यपीठ पर विशाल धार्मिक आयोजन हो तो हमें कोई आपत्ति नहीं है। इस प्रकार स्वीकृति प्राप्त होने पर श्रीसर्वेश्वर प्रभु के जयघोष के साथ कार्यकर्ताओं के हृदय में अपार हर्षातिरेक की अनुभूति हुई।

आचार्यश्री द्वारा स्वीकृति प्रदान होने पर अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठस्थ विद्वत्परिषद् की ओर से दि० २८/२/९३ को एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें अजमेर, मदनगंज-किशनगढ़, मकराना, जयपुर, ब्यावर, कुचामन, रूपनगर आदि स्थानों के पर्याप्त संख्या में भक्तजन उपस्थित हुए। महन्त श्रीहरिवल्लभदासजी शास्त्री किशनगढ़ रेनवाल की अध्यक्षता में बैठक की कार्यवाही सम्पन्न हुई। बैठक में आगामी ज्येष्ठ शु० २ वि० सं० २०५० को अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज का अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव विशेष समारोह व विविध आयोजनों के साथ मनाने का सर्व सम्मति से निर्णय हुआ तथा कार्य को सुचारु रूप से सम्पन्न कराने हेतु एक समिति का गठन किया गया। इस समिति की बैठक दि० ३/३/९३ ई० को हुई जिसमें इस अवसर पर अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन बुलाने का निश्चय किया गया तथा इसके अन्तर्गत होने वाले विविध आयोजनों की रूपरेखा प्रस्तुत की गई।

दि० २१/३/९३ को आचार्यपीठ में पुनः अनेक सन्त-महन्त, विद्वान् तथा गण्यमान्य भक्त महानुभावों की उपस्थिति में महन्त श्रीबनवारीशरणजी शास्त्री वृन्दावन की अध्यक्षता में सभा का आयोजन हुआ जिसमें महोत्सव समिति के पदाधिकारियों एवं विभिन्न समितियों का गठन किया गया।

दि० ६/५/९३ को महोत्सव समिति के पदाधिकारियों एवं विभिन्न समिति के कार्यकर्ताओं की एक वृहद् सभा पुनः आचार्यपीठ में हुई। महोत्सव समिति के अध्यक्ष श्रीभीमकरणजी छापरवाल इचलकरंजी ने इस सभा की अध्यक्षता की। इसमें सप्त दिवसीय कार्यक्रमों को मूर्तरूप दिया गया तथा आयोजन के सफल सम्पादन का दायित्व समिति के सदस्यों को सौंप दिया गया।

आयोजन का उद्देश्य—

परम पूज्य आचार्यश्री के अन्तर्मानस में इस महान् आयोजन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य था। आज हमारा यह धर्म प्रधान भारतदेश राजनैतिक दृष्टि से स्वतन्त्र होते हुए भी ऐसा लगता है सांस्कृतिक दृष्टि से अभी हम स्वतन्त्र नहीं हैं। दुर्भाग्य-वश इसी देश के राजनैतिक नेताओं एवं शासन ने छद्म धर्म निरपेक्षता के विष से धार्मिक वातावरण को ऐसा दूषित किया है कि—लोग दिग्भ्रान्त होकर हमारी शाश्वत संस्कृति सभ्यता एवं धार्मिक जीवन से पथ भ्रष्ट होकर पतन की पराकाष्टा की ओर अग्रसर हैं। यही कारण है कि आज इस देश का मानव अपने कुल परम्परागत धार्मिक एवं सामाजिक शिष्टाचार को तिलाञ्जलि देकर अपने देव दुर्लभ मानव जीवन की इतिश्री कर रहा है। वर्णाश्रम, भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं कुल परम्परागत सम्प्रदाय पुरःसर वैष्णवता के दर्शन दुर्लभ होते जा रहे हैं। "नहि वैष्णवता कुत्र

सम्प्रदाय पुरः सरा ।" इस प्रकार इस देश का मानव भी आज अपने सामान्य धर्म का भी परित्याग कर दानव बनता जा रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति में समाज के उद्धार एवं पुर्ननिमाण का दायित्व किस पर है ? आज की धर्म निरपेक्ष सरकार या नेताओं तथा अन्य संस्थाओं से उक्त अपेक्षा करना दुराशा मात्र होगा।

जिस देश की राजनीति के सञ्चालन में "धर्मो रक्षति रक्षितः" "सत्यमेव जयते" "जो दृढ़ राखे धर्म को ताहि राखे करतार ।" ऐसे उद्घोषों के साथ धर्म का प्राधान्य था, वहाँ आज भारतीय जन–जीवन से सार्वभौम सनातन धर्म को ही मिटाने की होड़ लगी हुई है। लगता है, आसुरी शक्तियों का यह ताण्डव इस देश के विश्व विख्यात आध्यात्मिकता के स्वरूप को ही विकृत कर देगा। यह एक चिन्ता का विषय है।

इस देश का इतिहास प्रमाण है कि जब जब भी आसुरी शक्तियों के प्रभाव से देश में धर्मग्लानि अधर्माभ्युत्थान की स्थिति उत्पन्न हुई, यहाँ के धर्माचार्य, सन्त–महात्मा व स्व-कर्त्तव्यपरायण विद्वान् ब्राह्मणों ने सजग प्रहरी के रूप में अपने कर्तव्य से इस देश की संस्कृति सभ्यता एवं धर्म को बचाया। आज वैसी ही देश की परिस्थिति बनती जा रही है किन्तु सम्प्रति समाज और धर्माचार्यों के पारम्परिक धर्म सम्बन्ध शिथिल होते जा रहे हैं। जिन पर संस्कृति एवं धर्म रक्षा का दायित्व है, जिनके हाथों में धर्म की बागडोर है, वह वर्ग ही अपने दायित्व से उदासीन रहा तो देश की क्या स्थिति होगी ? देश की वर्तमान ऐसी परिस्थिति में धार्मिक जनता और धर्माचार्यों के पारम्परिक सम्बन्ध दृढ़ता के साथ अपने-अपने दायित्व के प्रति जागृति द्वारा देश को उक्त विकृतियों से बचाने के उद्देश्य से आयोजित यह ऐतिहासिक विराट् सनातन धर्म सम्मेलन निश्चित रूप में धार्मिक जागृति का महत्वपूर्ण कारण सिद्ध होगा। इसी उद्देश्य की पूर्ति को ध्यान में रखते हुए आचार्यश्री ने आयोजन की स्वीकृति प्रदान की।

धर्माचार्यों का आह्वान–

उद्देश्य की सफलता के लिये समस्त धर्माचार्यों का सम्मेलन में पादार्पण नितान्त आवश्यक मानकर उनके आह्वान का आधार केवल निमन्त्रण पत्र व पत्रों को ही नहीं बनाकर देश के कोने-कोने में विराजने वाले समस्त धर्माचार्यों के धर्मपीठों व स्थानों पर जाकर प्रत्यक्ष सम्पर्क करने की योजना बनाई गई। तदनन्तर्गत सन्त-महात्मा एवं विद्वानों के एक शिष्टमण्डल का गठन किया गया। शिष्टमण्डल के सदस्यों के लिये विभिन्न धर्माचार्यों, सन्त-महात्माओं एवं वरिष्ठ विद्वानों के स्थानों पर श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के प्रतिनिधि के रूप में जाकर सम्पर्क साधने का कार्यक्रम बनाया गया। योजना के अनुसार सर्वश्री महन्त बालकदासजी फालेन, रसिक-मोहनजी, स्वामी गिरिराजप्रसादजी, पं० वासुदेवशरणजी उपाध्याय, पं० दयाशंकरजी शास्त्री एवं रामकुमार शर्मा अपने-अपने दायित्व का वहन करते हुए स्वर्णजयन्ती महोत्सव में पधारने के लिये उक्त महानुभावों की स्वीकृतियां लाये। फलस्वरूप सभी सम्प्रदायों के धर्माचार्य, सन्त, महन्त एवं विद्वानों के पादार्पण से उक्त सम्मेलन आशातीत सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

★

स्वर्णजयन्ती महोत्सव के शुभावसर पर आयोजित अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के उद्देश्य पर–

आचार्यश्री का मंगलमय आशीर्वाद

समस्त भक्त समुदाय की भावनानुसार आचार्यपीठाभिषेक अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव पर स्वर्णजयन्ती महोत्सव मनाने का प्रसङ्ग सामने आया । श्रद्धा सम्बलित भक्तों की इस प्रबल भावना को साकार रूप देना उचित समझते हुए इस महोत्सव के उपलक्ष्य में महत्वपूर्ण जन-कल्याणकारी युगानुकूल सनातन धर्म सम्मेलन का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ ।

आज से १८ वर्ष पूर्व सन् १९७५ में भी ऐसा ही विराट् सनातन धर्म सम्मेलन हुआ था, जिसका उद्घाटन तात्कालिक राजस्थान सरकार के मुख्यमन्त्री श्रीहरिदेवजी जोशी ने किया था, जिसमें धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज, जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज गोवर्धनपीठ पुरी, जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीस्वरूपानन्दजी महाराज, ज्योतिष्पीठ, बद्रिकाश्रम एवं चतुःसम्प्रदाय जगद्गुरु वैष्णवाचार्य आदि धर्माचार्यों के सान्निध्य में अनेक गण्यमान्य सन्त-महन्त, विद्वानों के हिन्दू संस्कृति, सनातन धर्म के वैशिष्टय तथा तत्सम्बन्धित उत्पन्न विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु विचार-विमर्श किया था । जन-मानस को वास्तविक धार्मिक प्रेरणात्मक प्रबोधन देने हेतु यज्ञ, भागवत, रामायण, रामलीला, रासलीला आदि धार्मिक आयोजन भी सम्पन्न हुए थे ।

आचार्यपीठ की गरिमानुकूल ऐसे और भी आयोजन अधिकमास, कुम्भपर्व आदि अवसरों पर वृहद्रूप से किये जाते रहे हैं । दो वर्ष पूर्व युगसन्त श्रीमुरारी बापू हरिव्यासी की श्रीरामकथा का आयोजन विराट् ज्ञानयज्ञ के रूप में किया गया था । जिसमें भारत भर के लोग उपस्थित हुए थे ।

परम्परा से यह जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्क सम्प्रदाय का प्रधान धार्मिक केन्द्र रहा है और ऐसे धर्म प्रचार-प्रसार तथा भारतीय संस्कृति के संरक्षणात्मक गतिविधियाँ इसके प्रमुख उद्देश्य रहे हैं जिससे कि जनता को स्वस्थ धार्मिक मार्ग दर्शन मिलता रहे ।

आज के सन्दर्भ में सनातन धर्म सम्मेलन जैसे वृहद् आयोजन की और भी उपयोगिता इसलिए बढ़ गयी है, क्योंकि राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में ऐसी कई ज्वलन्त समस्याएँ उभरकर सामने आ गई हैं जिनका कि सनातन धर्म के मञ्च द्वारा शास्त्रानुकूल समन्वयात्मक समाधान करना परमावश्यक हो गया है । सर्वतोमुखी प्रदूषणों की समस्या है जो मानव मात्र के लिए चिन्ता का विषय है । आज जन साधारण की एक सामान्य प्रवृत्ति हो गयी है कि वे कुत्सित राजनीति एवं कुटिल शासकीय नीति से सशङ्कित होकर धर्माचार्यों का पुनीत मार्ग दर्शन चाहते हैं, इसी दृष्टि से यहाँ आचार्यपीठ में यह महत्वपूर्ण आयोजन नितान्त अपेक्षित है । अतः सर्वथा राजनीति से परे विशुद्ध वातावरण में जन जागरण एवं सामयिक चिन्तन के लिए इस मञ्च का आह्वान किया है । साथ ही धार्मिक प्रचार–प्रसार एवं यज्ञ–अनुष्ठान के सरस आयोजन भी समन्वित किये गये हैं जिनमें प्रवचन, श्रीरासलीलानुकरण, भजन-संगीत आदि प्रमुख हैं ।

अस्तु भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु से हमारी अभ्यर्थना है कि यह वृहद् आयोजन जन-कल्याणकारी हो तथा निर्विघ्नता पूर्वक सम्पन्न हो । ★

परम पूज्य श्री 'श्रीजी' महाराज को–

श्रद्धया समर्पित

राधामाधव पाद पद्म के, रसिक भ्रमर अविकारी हैं।
श्रीचरणों में शत–शत वन्दन, हम अतिशय बलिहारी हैं।।
हे जगद्गुरो ! हे शुद्ध बुद्ध !, हे पूर्णकाम ! हे आप्तकाम !
हे विमल हृदय ! हे सन्तप्रवर !, युग की श्रद्धा वाले प्रणाम ।।

जो सत्य सनातन के सेवक, सबके ही तो हितकारी हैं ।
श्रीचरणों में शत–शत वन्दन, हम अतिशय बलिहारी हैं ।।
स्मित हास्य सुधा से सदा मधुर, है वदन सदा ही पूर्णचन्द्र ।
करुणा बरसाते नयन युगल, शुचि वचन सुधा गम्भीरचन्द्र ।।

राधासर्वेश्वरशरण देव, मंगलमय मंगलकारी हैं ।
श्रीचरणों में शत–शत वन्दन, हम अतिशय बलिहारी हैं ।।
भक्तों के हित जो भावगम्य, बरसाते शुभ उपदेश हैं ।
श्रीसनकादिक परम सेव्यतम, सर्वेश्वर समुपासक हैं ।।

श्री "श्रीजी" महाराज सुशोभित, पीठ निम्बारक जगद्गुरु हैं ।
श्रीचरणों में शत–शत वन्दन, हम अतिशय बलिहारी हैं ।।
राधामाधव पदपंकजप्रिय, सुधा पान कर परम अभय ।
निष्काम कामना केवल बस, हो सत्य सनातन की जय जय ।।

जो उज्ज्वल नील भक्ति सुखकर, ध्यानरत रासबिहारी हैं ।
श्रीचरणों में शत–शत वन्दन, हम अतिशय बलिहारी हैं ।।

–नटवरलाल जोशी, लक्ष्मणगढ़

आचार्यपीठाभिषेक के पचासवें पाटोत्सव के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजन हेतु–

विभिन्न समितियों का गठन

प्रधान संरक्षक–

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज।

संरक्षक मण्डल–

१ श्रीमहन्त श्रीरासविहारीदासजी काठिया वृन्दावन
२ श्रीमहन्त श्रीलक्ष्मीनारायणदासजी काठिया वृन्दावन
३ अधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी वेदान्ताचार्य पञ्चतीर्थ वृन्दावन
४ महन्त श्रीहरिवल्लभदासजी शास्त्री किशनगढ़-रेनवाल
५ मेवाड़ मण्डलेश्वर श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी शास्त्री उदयपुर
६ महन्त श्रीराधावल्लभशरणजी ,,
७ महन्त श्रीपुरुषोत्तमदासजी अजमेर
८ महन्त महाराज श्रीहरिदासजी केलादी घाट नेपाल
९ बाबा श्रीशुकदेवदासजी निम्बार्कपुरम् जयपुर
१० युगसन्त श्रीमुरारी बापू महुवा (गुजरात)
११ महन्त श्रीमुकुन्दशरणजी वल्लभीपुर (गुजरात)
१२ श्रीमहन्त श्रीरूपकिशोरदासजी चैन विहारी मन्दिर वृन्दावन
१३ महन्त श्रीबालकृष्णदासजी लिम्बड़ी (गुजरात)
१४ ,, राधिकादासजी मल्हारगढ़ (म० प्र०)
१५ श्रीमहन्त श्रीललिताशरणजी टोपी कुंज वृन्दावन
१६ महन्त श्रीसर्वेश्वरशरणजी नृसिंहपीठ रायपुर अहमदाबाद

विशिष्ट परामर्श मण्डल–

१ श्रीमहन्त श्रीविश्वम्भरदासजी चारसम्प्रदाय खालसा (राजस्थान)
२ ,, रामलखनदासजी कालापीपल मध्यप्रदेश
३ ,, श्रीचरणदासजी वृन्दावन
४ महन्त श्रीनृत्यगोपालदासजी अयोध्या
५ श्रीमहन्त श्रीसन्तसेवकदासजी (निर्वाणी अनी)
६ ,, वासुदेवदासजी (निर्वाणी अनी)
७ ,, हरिदासजी महाराज (दिगम्बर अनी) नासिक
८ ,, रामचन्द्रदासजी परमहंस (दिगम्बर अनी) अयोध्या
९ ,, प्रेमपुजारीदासजी चित्रकूट (निर्मोही अनी)
१० ,, नन्दरामदासजी अहमदाबाद (निर्मोही अनी)
११ ,, राघवाचार्यजी रेवासा
१२ ,, नारायणदासजी त्रिवेणी जयपुर
१३ महन्त श्रीसुदामादासजी सुदामा कुटी वृन्दावन
१४ ,, हरिदासजी गोरेदाऊजी वृन्दावन

१५ श्रीमहन्त श्रीहरिशरणजी महोत्तरा (म० प्र०)
१६ महन्त श्रीव्रजभूषणदासजी नवागढ (म० प्र०)
१७ महन्त महाराज गोपालमठ, सम्बलपुर (उड़ीसा)

परामर्श मण्डल–

१ श्रीमहन्त श्रीराधेश्यामदासजी मिथिला कुञ्ज वृन्दावन
२ ,, प्रेमदासजी कोकिलावन
३ ,, गर्विलीशरणजी वृन्दावन
४ ,, वासुदेवशरणजी भक्तवत्सल धारीवाल (पंजाब)
५ ,, मुकुन्दशरणजी शास्त्री वृन्दावन
६ महन्त श्रीललिताशरणजी बिहारीजी का बगीचा वृन्दावन
७ ,, तुलसीशरणजी गैंडाकोट नारायण घाट (नेपाल)
८ ,, माधवशरणजी निम्बार्क सत्संग आश्रम (नेपाल)
९ ,, यदुनन्दनदासजी भजन कुटी सेवा संस्थान वृन्दावन
१० ,, लक्ष्मीकान्तशरणजी सनकादिक आश्रम वृन्दावन
११ ,, चतुर्भुजदासजी युगल भवन वृन्दावन
१२ ,, राधाचरणदासजी मीठड़ी
१३ श्रीकौशलकिशोरजी रामायणी मानस किंकर अयोध्या
१४ महन्त श्रीव्रजकिशोरदासजी वाराणसी
१५ ,, युगलशरणजी वंशीवट
१६ श्रीराधाब्रजेशशरणजी अटलवन वृन्दावन
१७ ,, वृन्दावनविहारीदासजी वाराणसी
१८ ,, श्रीमन्नारायणदासजी भक्तमाली बक्सर
१९ म. श्रीविहारीदासजी झांसी
२० ,, ललिताशरणजी लिम्बड़ी (गुज०)
२१ श्रीम. प्राणकृष्णदासजी वृन्दावन
२२ स्वामी श्रीनृसिंहाचार्यजी पुष्कर
२३ म. श्रीप्रेमदासजी थोब
२४ श्रीवृन्दावनबिहारीदासजी काठिया वाराणसी
२५ युवराज स्वामी श्रीश्रीनिवासाचार्यजी डीडवाना

※

२६ श्रीरामेश्वरलालजी फतेहपुरिया अजमेर
२७ ,, प्रहलादकुमारजी जिन्दल ,,
२८ ,, भैरूलालजी राठी (रेडियोजी) मदनगंज
२९ ,, दुर्गाप्रसादजी साबू जोधपुर
३० ,, अमरचन्दजी लटूरिया सेन्धवा
३१ ,, रामगोपालजी अग्रवाल पींगलोदवाले सेन्धवा
३२ ,, चन्दनमलजी राठी अजमेर
३३ ,, नन्दलालजी काबरा ,,
३४ ,, रमेशचन्दजी व्यास परबतसर
३५ ,, रघुनन्दनप्रसादजी बंसल मकराना
३६ ,, नाहरमलजी कोठारी ,,
३७ ,, किशनलालजी अग्रवाल जोधपुर
३८ ,, राधावल्लभजी राठी ,,
३९ ,, रामगोपालजी गाड़ोदिया सुजानगढ़
४० ,, प्रेमनारायणजी अग्रवाल रायपुर (म० प्र०)
४१ ,, श्रीकिशनजी मोदी नीमकाथाना
४२ ,, भागीरथजी भराड़िया सेन्धवा
४३ ,, अश्विनीकुमारजी कानोड़िया मदनगंज

विद्वत्परिषद्–

१ पं. श्रीगोविन्ददासजी 'सन्त' अजमेर
२ ,, मुरलीधरजी शास्त्री प्रेम सरोवर
३ ,, दयाशंकरजी शास्त्री ब्यावर

४ पं. श्रीवासुदेवशरणजी उपाध्याय निम्बार्कतीर्थ
५ ,, वृन्दावनविहारीजी मिश्र भागवत कुञ्ज वृन्दावन
६ ,, बद्रीप्रसादजी शास्त्री पपूरना
७ ,, सीतारामजी श्रोत्रिय जयपुर
८ डा. श्रीरसिकबिहारीजी जोशी नई दिल्ली
९ पं. श्री डा. वासुदेवकृष्णजी चतुर्वेदी मथुरा
१० पं. श्रीवैद्यनाथजी झा वृन्दावन
११ ,, हरिशरणजी शास्त्री ,,
१२ ,, डा. रामप्रसादजी शर्मा मदनगंज
१३ ,, भँवरलालजी उपाध्याय ब्यावर
१४ ,, सत्यनारायणजी शास्त्री अजमेर
१५ ,, राधावल्लभजी शास्त्री कचनारिया
१६ ,, चन्द्रदत्तजी पुरोहित परबतसर
१७ ,, गोकुलचन्दजी भारद्वाज अजमेर
१८ ,, परशुरामजी भारद्वाज निम्बार्कतीर्थ
१९ ,, विश्वामित्रजी व्यास ,,
२० ,, हरिश्चन्द्रजी लाटा ,,
२१ ,, खेमराज केशवशरणजी शास्त्री काठमांडू नेपाल
२२ ,, प्रहलादचन्दजी शास्त्री हरदा (म० प्र०)
२३ ,, श्यामसुन्दरजी संगीताचार्य वृन्दावन
२४ ,, पुरुषोत्तमजी शास्त्री ,,
२५ श्रीशैलेन्द्रजी मुनि हरिद्वार
२६ पं. श्रीबालकृष्णशरणजी मथुरा
२७ ,, गंगादत्तजी कथा भट्ट करोली वाले जयपुर
२८ , ललितमोहनजी ,,
२९ ,, द्वारिकाप्रसादजी पाटोदिया किशनगढ़
३० डा० श्रीप्रेमनारायणजी श्रीवास्तव वृन्दावन
३१ पं. श्रीनारायणप्रसादजी खतिवड़ा वर-गाछी गोग्राह विराटनगर नेपाल
३२ पं. श्रीमुकुन्दशरणजी उपाध्याय सिम-पानी पोखरा (ग० अ०) नेपाल
३३ पं. श्रीबुद्धदेवजी मिश्र धनकोली

सन्त स्वागत व्यवस्था समिति—

१ श्रीमहन्त बालकदासजी फालेन
२ महन्त श्रीयुगलशरणजी आबू
३ ,, रामसेवकदासजी अरड़का
४ ,, दीनबन्धुशरणजी भीलवाड़ा
५ श्रीमहन्त बनवारीशरणजी (नारदजी) वृन्दावन
६ म. श्रीनवलकिशोरजी ,,
७ म. श्रीबनवारीशरणजी जूसरी
८ श्रीनवलविहारीशरणजी व्यास निम्बार्कतीर्थ
९ म. श्रीरामकृपालुशरणजी दादिया
१० म. श्रीमनोहरशरणजी पलसाना
११ श्रीमाधवशरणजी निम्बार्कतीर्थ
१२ ,, दानविहारीशरणजी ,,
१३ ,, हरिशरणजी (पुजारी) निम्बग्राम
१४ ,, रसिकमोहनशरणजी शास्त्री वृन्दावन
१५ ,, श्यामसुन्दरशरणजी निम्बार्कतीर्थ
१६ ,, युगलकिशोरशरणजी मऊ
१७ ,, सन्तदासजी निम्बार्कतीर्थ
१८ म. श्रीबनवारीशरणजी भीलवाड़ा
१९ श्रीछविरमणजी उपाध्याय केलादी घाट
२० ,, कृष्णदासजी निम्बार्कतीर्थ
२१ ,, मोहिनीशरणजी ,,
२२ ,, नृसिंहदासजी धगवाण जम्मूकश्मीर
२३ ,, रसिकमोहनशरणजी भूपालगढ़ खेतड़ी
२४ ,, प्रेमविहारीशरणजी जयपुर
२५ पं. श्रीगोकुलचन्दजी श्रोत्रिय ,,
२६ श्रीजुगलकिशोरजी बाहेती मदनगंज
२७ ,, सुरेशचन्दजी चोधरी ,,
२८ ,, अमरचन्दजी कासट आकोला

२९ श्रीओमप्रकाशजी गोयल मदनगंज
३० ,, युगलकिशोरजी पंसारी ,,
३१ ,, श्यामसुन्दरजी छापरवाल अजमेर
३२ ,, जितेन्द्रकुमारजी मोदी मदनगंज
३३ ,, धन्नालालजी अग्रवाल ,,
३४ ,, अनिलकुमारजी लाखोटिया ,,
३५ ,, सुरेशचन्दजी ईनाणी ,,
३६ ,, यमुनाशरणजी निम्बार्कतीर्थ

अध्यक्ष–

श्रीभीमकरणजी छापरवाल इचलकरंजी

कार्यकारी अध्यक्ष–

श्रीआत्मारामजी अग्रवाल मकराना

उपाध्यक्ष–

१ श्रीकल्याणप्रसादजी सूतवाले जयपुर
२ ,, तेजनारायणजी मानधनिया मकराना बम्बई
३ ,, नवलकिशोरजी गार्गीया ब्यावर
४ ,, बंकटलालजी बाहेती इचलकरंजी
५ ,, सुरेशजी केला नासिक
६ ,, लक्ष्मीनारायणजी रांधड़ नागपुर
७ ,, राजगोपालजी तोषनीवाल बीजापुर
८ ,, बसन्तकुमारजी अग्रवाल सैन्धवा
९ ,, ताराचन्दजी अग्रवाल मकराना
१० ,, रामपालजी सोनी भीलवाड़ा
११ ,, बाबूलालजी नवाल भीलवाड़ा
१२ ,, विमलकुमारजी तोतला बम्बई

स्वागताध्यक्ष–

श्रीजुगलकिशोरजी तोषनीवाल बीजापुर

उप–स्वागताध्यक्ष–

१ श्रीसुखदेवजी मून्दड़ा सम्बलपुरवाले बम्बई
२ ,, मुकुन्दशरणजी गोयल जयपुर
३ ,, राधेश्यामजी लोहिया ,,
४ ,, मनोहरलालजी बाहेती मदनगंज
५ ,, आशारामजी काबरा बम्बई
६ ,, रामेश्वरलालजी तोषनीवाल ,,
७ ,, बिरदीचन्दजी लाहोटी भुसावल
८ ,, रामनिवासजी राठी अहमदाबाद
९ ,, स्वामी कन्हैयालालजी वृन्दावन
१० ,, स्वामी श्रीरामजी ,,
११ ,, गोपाललालजी काबरा बोरावड़ वाले जयपुर
१२ ,, रतनलालजी बाल्दी रिड़
१३ ,, नन्दलालजी मून्दड़ा हरमाड़ा

महामन्त्री–

श्रीराधेश्यामजी ईनाणी मदनगंज

मन्त्री–

१ श्रीशंकरलालजी बंसल अजमेर
२ ,, कैलाशचन्दजी काबरा मकराना
३ ,, ब्रजमोहनजी छापरवाल कुचामन
४ ,, सत्यनारायणजी राठी इन्दौर
५ , डी. सी. वी. किरण रूपनगर
६ ,, कालीचरणजी खण्डेलवाल अजमेर

कोषाध्यक्ष–

१ श्रीजयनारायणजी अग्रवाल बबाइचा
२ ,, दुर्गालालजी अग्रवाल मदनगंज
३ ,, जुगलकिशोरजी बाहेती ,,
४ ,, ओमप्रकाशजी झँवर ,,
५ ,, रामनिवासजी दरगड़ ,,
६ ,, रामस्वरूपजी चौधरी ,,

मन्दिर अर्चक सेवा समिति–

१ पुजारी श्रीरामेश्वरदासजी निम्बार्कतीर्थ
२ ,, राधामाधवशरणजी ,,

मन्दिर दर्शन सेवा समिति–

१ श्रीत्रिलोकचन्दजी मुसद्दी वृन्दावन

२ श्रीमांगीलालजी राठी इन्दौर
३ ,, बंकटलालजी बंग धूलिया
४ ,, लक्ष्मीकान्तजी पोद्दार बम्बई

स्वागत समिति

१ श्रीश्यामसुन्दरजी कामदार मदनगंज
२ ,, मोहनलालजी गोयल जयपुर
३ ,, गंगासहायजी रेला जयपुर
४ ,, रामनिवासजी राठी इन्दौर
५ ,, नन्दलालजी बाल्दी इचलकरंजी
६ ,, रामनिवासजी मून्दड़ा इचलकरंजी
७ ,, गोपालकृष्णजी छापरवाल बम्बई
८ ,, प्रकाशचन्दजी बाहेती ,,
९ ,, सत्यनारायणजी राठी सुजानगढ़
१० ,, सीतारामजी मन्त्री अजमेर
११ ,, मुरारीलालजी वर्मा (मथुरा वाले) अजमेर
१२ ,, एम. के. जैन मदनगंज
१३ ,, उत्तमचन्दजी छाजेड़ मदनगंज
१४ ,, गोपालजी सोनी ,,
१५ ,, शंकरलालजी अग्रवाल (गोंद वाले) ,,
१६ ,, लक्ष्मीनारायणजी राठी हरदा
१७ ,, शिवबगसजी अग्रवाल रूपनगर
१८ ,, दिनेशजी हेडा अजमेर
१९ ,, श्यामसुन्दरजी मन्त्री पुष्कर
२० ,, ओमप्रकाशजी खण्डेलवाल मदनगंज
२१ ,, मूलचन्दजी भाटिया दिल्ली
२२ ,, रामनिवासजी दरगड़ मदनगंज
२३ ,, कल्याणजी अग्रवाल (पींगलोद वाले) मदनगंज
२४ ,, कन्हैयालालजी झँवर ,,
२५ ,, किशनलालजी अग्रवाल लोहे वाले मदनगंज
२६ ,, घनश्यामदासजी चौधरी किशनगढ़ शहर
२७ श्रीमदनलालजी सोमानी किशनगढ़ शहर
२८ ,, रामजसजी बाल्दी अजमेर
२९ ,, गोविन्दप्रसादजी मणियार नागपुर
३० ,, मोहनलालजी साबू अजमेर
३१ ,, सत्यनारायणजी (टाइल वाले) ,,
३२ ,, गोपालकृष्णजी सेठी जालना
३३ ,, रामनिवासजी लखोटिया अजमेर
३४ ,, ओंकारजी मुनीम वृन्दावन
३५ ,, वैद्य वैकुण्ठनाथजी शर्मा मथुरा
३६ ,, श्रवणकुमारजी अग्रवाल मदनगंज
३७ ,, माणकचन्दजी राठी ,,
३८ ,, ओमप्रकाशजी मेनावत ,,
३९ ,, ठा. उम्मेदसिंहजी धोली
४० ,, रामगोपालजी पारीक चला
४१ ,, हनुमानप्रसादजी मानधनिया बम्बई
४२ ,, गौरीशंकरजी धूत मकराना
४३ ,, कमलजी रांधड़ ,,
४४ ,, छोटूजी गूजर ,,
४५ ,, सत्यनारायणजी चण्डक दिल्ली
४६ ,, रामनिवासजी लखोटिया ,,
४७ ,, हँसराजजी मिश्रा अजमेर
४८ ,, रमेशचन्दजी हेडा ,,
४९ ,, ओमप्रकाशजी राठी बडौदा
५० ,, अशोककुमारजी पाटनी मदनगंज
५१ ,, विष्णुदत्तजी राठी ,,
५२ ,, घनश्यामजी पुरोहित ,,
५३ ,, पारसमलजी बाकलीवाल ,,
५४ ,, प्रदीपकुमारजी चौधरी ,,
५५ ,, ओमप्रकाशजी पाराशर पुष्कर वाले मदनगंज
५६ ,, बाबूलालजी गुप्ता मदनगंज
५७ ,, सीतारामजी हेडा भीवण्डी
५८ ,, राधेश्यामजी छापरवाल भदूण मदनगंज
५९ ,, रमेशचन्दजी टवानी ,,

६० श्रीमोहनलालजी बियाणी नागपुर
६१ ,, कल्याणमलजी भराड़िया ब्यावर
६२ ,, रासासिंहजी रावत, सांसद अजमेर
६३ ,, जगजीतसिंहजी-भूतपूर्वविधायक मदनगंज
६४ ,, गोपीकिशनजी राठी केकड़ी
६५ ,, रविसिंहजी जोधपुर
६६ ,, सुरेशचन्दजी काबरा ,,
६७ ,, मदनलालजी कासट कलकत्ता
६८ ,, बंशीलालजी सामरिया रायला
६९ ,, जयनारायणजी सोमानी ब्यावर
७० ,, भगवानदासजी हेडा ब्यावर
७१ ,, जयनारायणजी जेथलिया ,,
७२ ,, ठा. विजयसिंहजी मकराना
७३ ,, व्रजेशजी डांगरा सांभरवाले
७४ ,, मुरलीधरजी मोदी मदनगंज
७५ ,, रामविश्वासजी गोयल बबाइचा
७६ ,, व्रजमोहनजी व्यास मकराना
७७ ,, मांगीलालजी अग्रवाल मदनगंज
७८ ,, जयनारायणजी जाजू ब्यावर
७९ ,, वल्लभदासजी झालानी जयपुर
८० ,, चन्द्रमोहनजी गुप्ता दिल्ली
८१ ,. विजयप्रकाशजी शर्मा अडिंग
८२ ,, हरिश्चन्द्रजी सुरेन्द्रजी गोलेछा जयपुर
८३ ,, अवरोल सा. कृष्णानगर, मथुरा
८४ ,, रामशरणदासजी महावन हाथरस
८५ ,, रामनारायणजी कोगटा जलगांव
८६ ,, रङ्गजी चण्डक अमरावती
८७ ,, चिरंजीलालजी कामदार कलकत्ता
८८ ,, मुरलीधरजी भट्टड़ मदनगंज
८९ ,, शम्भुदयालजी कामदार बम्बई
९० ,, व्रजमोहनजी राठी इन्दौर
९१ ,, मदनलालजी बियाणी महू
९२ ,, रामेश्वरलालजी खेतावत अजमेर
९३ ,, रमेशचन्दजी सोनी ,,
९४ श्रीगोपीकिशनजी भिया अजमेर
९५ ,, भागचन्दजी चौधरी ,
९६ ,, बालकिशनजी छापरवाल इचलकरंजी
९७ ,, रामपालजी मन्त्री पुष्कर
९८ ,, घनश्यामजी अग्रवाल बोरावड़-जयपुर
९९ ,, हनुमानप्रसादजी शर्मा मदनगंज
१०० ,, व्रजमोहनजी गुप्ता ,,
१०१ ,, रामस्वरूपजी जेथलिया थांवला
१०२ ,, ज्ञानचन्दजी पोकरणा बाघसूरी
१०३ ,. रामनारायणजी गूजर नसीराबाद
१०४ ,, रतनलालजी मानधना ,,

अर्थ समिति–

१ सर्वश्री भीमकरणजी छापरवाल इचलकरंजी
२ जुगलकिशोरजी तोषनीवाल बीजापुर
३ राधेश्यामजी ईनाणी मदनगंज
४ कल्याणमलजी सूतवाले जयपुर
५ रामेश्वरलालजी फतेहपुरिया अजमेर
६ सूरजमलजी मानधना मकराना
७ व्रजमोहनजी छापरवाल कुचामन
८ भैरूलालजी राठी मदनगंज
९ सत्यनारायणजी राठी इन्दौर
१० घनश्यामजी आगीवाल मदनगंज
११ घनश्यामदासजी अग्रवाल सूतवाले ,,
१२ सत्यनारायणजी गोयल ,,
१३ घनश्यामदासजी अग्रवाल पींगलोद वाले मदनगंज
१४ श्यामसुन्दरजी छापरवाल अजमेर
१५ मदनलालजी सोमानी अजमेर
१६ गोपालकृष्णजी छापरवाल बम्बई
१७ टीकमचन्दजी तोषनीवाल ,,
१८ नोरतमलजी बाहेती ,,
१९ लक्ष्मीकान्तजी पोद्दार ,,
२० बालकिशनजी काबरा ,,
२१ तेजनारायणजी मानधना ,,

२२ श्रीगणेशनारायणजी भराड़िया बम्बई
२३ राधेश्यामजी कासट ,,
२४ रामप्रतापजी बाहेती इचलकरंजी
२५ बालकिशनजी छापरवाल ,,
२६ रामेश्वरलालजी तापड़िया लोहारदा
२७ शंकरलालजी तापड़िया ,,
२८ हरिप्रसादजी काबरा मानवत
२९ हीरालालजी नांवधर सतारा
३० रामप्रसादजी भंवर सूरत
३१ रामनिवासजी राठी इन्दौर
३२ मांगीलालजी राठी ,,
३३ रामअवतारजी जाजू ,,
३४ गोविन्दप्रसादजी भराड़िया सैन्धवा
३५ गोरधनदासजी माजूम वाले जयपुर
३६ मुकुन्दशरणजी गोयल ,,
३७ घनश्यामदासजी पोद्दार ,,
३८ राम बाबू मूर्ति वाले ,,
३९ विमलजी हीरापुरा ,,
४० पं. गोविन्दसहायजी सोढाला ,,
४१ गंगास्वरूपजी शर्मा ,,
४२ सीतारामजी शर्मा पुजारी दौसा
४३ रामगोपालजी चौधरी अहमदाबाद
४४ बिरदीचन्दजी कासट सोलापुर
४५ काशीरामजी गोयल बालोतरा
४६ पुरुषोत्तमजी गोयल ,,
४७ रामगोपालजी गोयल ,,
४८ नवलकिशोरजी गार्गीया ब्यावर
४९ कल्याणमलजी भराड़िया ,,
५० मदनलालजी कासट कुचामन
५१ फकीरचन्दजी जम्मू
५२ बिहारीलालजी पोद्दार पुरुलिया
५३ शिवकुमारजी मुसद्दी कलकत्ता
५४ श्यामसुन्दरजी बेरीवाला ,,
५५ हीरालालजी काबरा ,,
५६ श्रीवल्लभजी छापरवाल हैदराबाद
५७ नारायणदासजी बाहेती ,,
५८ श्रीसत्यनारायणजी कचोलिया पूना
५९ लक्ष्मीनारायणजी कोगटा जलगांव
६० रामनिवासजी राठी परबतसर
६१ नथमलजी मणियार नागपुर
६२ मोहनलालजी मून्दड़ा शाहपुरा
६३ मिलापचन्दजी ओसवाल भैरून्दा
६४ घीसालालजी टाक नरायना
६५ लक्ष्मीनारायणजी भट्टड़ पंढरपुर
६६ नेमीचन्दजी पुजारी चला
६७ नवरतनमलजी मालपानी मकराना
६८ दीनदयालजी सोमानी बाल्टीवाला जयपुर
६९ ओमप्रकाशजी गुप्ता जम्बू तवी
७० जगदीशप्रसादजी जाजू ब्यावर
७१ श्रीकिशनजी राठी हरदा
७२ घनश्यामजी तोषनीवाल बीजापुर
७३ चांदकरणजी लखोटिया मदनगंज

आचार्यश्री महल सेवा समिति–

१ श्रीब्रजमोहनजी छापरवाल कुचामन
२ नवलविहारीशरणजी व्यास निम्बार्कतीर्थ
३ ओमप्रकाशजी शर्मा (जयपुर) ,,
४ मुरारीलालजी वर्मा अजमेर

कार्यालय समिति–

१ श्रीरामस्वरूपजी चौधरी मदनगंज
२ हरिप्रसादजी भँवर निम्बार्कतीर्थ
३ राधाकिशनजी कालानी मदनगंज
४ रामगोपालजी बाल्दी रिड़
५ सूरजनारायणजी चौधरी मदनगंज
६ हीरालालजी चौधरी मानवत
७ नाथूलालजी यादव जयपुर
८ बंशीलालजी शर्मा सैन्धवा
९ बद्रीप्रसादजी मून्दड़ा मदनगंज
१० भागचन्दजी बाहेती ,,
११ अशोककुमारजी कामदार ,,
१२ रमेशचन्दजी अग्रवाल (वकील) ,,

१३ श्रीराजेन्द्रकुमारजी शर्मा उज्जैन
१४ सुशीलजी गोरेचा ,,
१५ आर. के. कपूर ,,

पाटोत्सव समिति–

१ श्रीनवलविहारीशरणजी व्यास निम्बार्कतीर्थ
२ ब्रजमोहनजी छापरवाल कुचामन
३ डा. रामप्रसादजी शर्मा मदनगंज
४ मांगीलालजी राठी इन्दौर
५ राजगोपालजी तोषनीवाल बीजापुर
६ टीकमचन्दजी तोषनीवाल बम्बई

पाण्डाल व्यवस्था समिति–

१ श्रीगौरीशंकरजी मून्दड़ा अजमेर
२ स्वामी गिरिराजजी वृन्दावन
३ प्रेमसागरजी शर्मा मदनगंज
४ ब्रजमोहनजी रांदड़ मकराना
५ विमलकुमारजी तोतला बम्बई
६ गोविन्दप्रसादजी कालानी ,,
७ गणेशनारायणजी भराड़िया बम्बई
८ बंशीलालजी बाल्दी इचलकरंजी
९ अशोककुमारजी खण्डेलवाल मदनगंज
१० ब्रजमोहनजी फोफलिया शोलापुर
११ गोपालजी मून्दड़ा इन्दौर
१२ ब्रजमोहनजी राठी ,,
१३ सत्यनारायणजी अग्रवाल (पालड़ी वाले) अजमेर
१४ मोहनलालजी बियाणी नागपुर
१५ नागरमलजी सोमानी कुचामन
१६ सत्यनारायणजी राठी सुजानगढ़
१७ गोविन्द गोपालजी साबू कुचामन
१८ घीसालालजी शर्मा मदनगंज
१९ रमेशकुमारजी खण्डेलवाल ,,
२० महेन्द्रकुमारजी गंगवाल ,,
२१ नवयुवक मण्डल निम्बार्कतीर्थ
२२ श्रीओमप्रकाशजी गोयल (भारत टेन्ट हाउस) मदनगंज
२३ अनिलकुमारजी वैष्णव ,,
२४ गोपाललालजी काबरा ,,
२५ रामलालजी परासिया

भोजन प्रसाद व्यवस्था समिति–

१ श्रीघनश्यामदासजी आगीवाल मदनगंज
२ मिश्रीलालजी भांगडिया पनवेल
३ सीतारामजी पांड्या हरियाजूण
४ रामगोपालजी झंवर सिणगारा
५ प्रभुलालजी काबरा मदनगंज
६ विनोदकुमारजी बाँगड़ ,,
७ केशरीचन्दजी माल ,,
८ रामरतनजी न्याती ,,
९ बंशीलालजी कामदार ,,
१० कृष्णगोपालजी राठी केकड़ी
११ दामोदरप्रसादजी लट्टूरिया करकेड़ी
१२ हरिप्रसादजी झंवर ,,
१३ ब्रजबल्लभजी राठी रिड़
१४ गोपाललालजी काबरा मदनगंज
१५ छीतरमलजी अग्रवाल ,,
१६ मुरलीधरजी अग्रवाल निम्बार्कतीर्थ
१७ रामेश्वरलालजी कालिया करकेड़ी
१८ देवकीनन्दनजी लखोटिया मदनगंज
१९ मदनलालजी सोमानी अजमेर
२० सुरेशचन्दजी बियाणी मदनगंज
२१ मोहनप्रकाशजी काबरा ,,
२२ सत्यस्वरूपजी अग्रवाल ,,
२३ बंशीलालजी काबरा ,,
२४ शिवराजजी काबरा ,,
२५ कानमलजी शर्मा ,,
२६ सर्वेश्वर गोपालजी दरगड़ ,,
२७ भागचन्दजी अग्रवाल ,,

समन्वय समिति अध्यक्ष–

१ श्रीरामेश्वरलालजी फतेहपुरिया अजमेर

प्रचार-प्रसार समिति–

१ श्री डी. सी. वी. किरण रूपनगढ़
२ भँवरलालजी उपाध्याय ब्यावर
३ जनार्दनजी शर्मा पुष्कर
४ गंगाधरजी अणु ,,
५ राधेश्यामजी शर्मा अजमेर
६ कमलजी जोशी सांभर
७ शिवकुमारजी गोयल पिलखुवा (दिल्ली)
८ विश्वदेवजी शर्मा अजमेर
९ ऋषिकुमारजी जासरावत निम्बार्कतीर्थ
१० स्वरूपचन्दजी कोठारी मदनगंज
११ नीरजजी आर्य ,,
१२ सत्यनारायणजी पथिक निम्बार्कतीर्थ
१३ सुवालालजी चौधरी ,,
१४ सत्यनारायणजी बाहेती अजमेर
१५ रामस्वरूपजी मून्दड़ा शाहपुरा
१६ ईश्वरचन्दजी शर्मा मदनगंज
१७ भँवरसिंहजी मेहता ,,
१८ राधामोहनजी राठी ,,

सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति–

१ स्वामी श्रीशिवदयालजी वृन्दावन
२ ,, गिरिराजजी ,,
३ ,, वेदरामजी ,,
४ श्यामसुन्दरजी बिड़ला मेड़ता
५ मुरारीलालजी अजमेर (मथुरा वाले)
६ नवयुवक मण्डल निम्बार्कतीर्थ
७ चन्द्रबिहारीजी माजूम वाले जयपुर
८ रमेशचन्दजी छापरवाल मकराना

यज्ञ संयोजक समिति–

१ पं० श्रीगोविन्ददासजी 'सन्त' अजमेर
२ पं० वासुदेवशरणजी उपाध्याय निम्बार्कतीर्थ
३ पं० विश्वामित्रजी व्यास निम्बार्कतीर्थ
४ राजगोपालजी तोषनीवाल बीजापुर
५ सूरजनारायणजी चौधरी मदनगंज
६ इन्दरचन्दजी भँवर सिणगारा

सभा (मञ्च) संयोजक समिति–

१ मेवाड़ महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त श्री मुरलीमनोहरशरणजी उदयपुर
२ डा. श्रीवासुदेवकृष्णजी चतुर्वेदी मथुरा
३ पं० श्रीदयाशंकरजी शास्त्री ब्यावर
४ पं० हरिशरणजी उपाध्याय वृन्दावन
५ डा० प्रेमनारायणजी श्रीवास्तव ,,

सुरक्षा व्यवस्था समिति–

१ ठा. श्रीसर्वेश्वरसिंहजी तित्यारी
२ मानसिंहजी ,,
३ ठा. गोकुलसिंहजी भामोलाव
४ ठा. सूरजसिंहजी तित्यारी
५ ठा. मदनसिंहजी ,,
६ सुमेरसिंहजी निम्बार्कतीर्थ
७ ठा. तेजसिंहजी बांसड़ा

विद्युत्-प्रकाश व्यवस्था समिति–

१ श्रीगंगास्वरूपजी अकाउण्टटेन्ट जयपुर
२ श्रीनन्दकिशोरजी गोयल मदनगंज
३ दामोदरप्रसादजी व्यास जयपुर
४ जगदीशप्रसादजी शर्मा निम्बार्कतीर्थ
५ गिरधारीलालजी शर्मा ,,
६ रमेशजी गहलोत उज्जैन
७ हरिसिंहजी तित्यारी

यातायात व्यवस्था समिति–

१ श्रीरामनिवासजी बंग मदनगंज
२ मदनलालजी मून्दड़ा अजमेर
३ रामनिवासजी राठी परबतसर
४ ठा. मानसिंहजी निम्बार्कतीर्थ
५ प्रभुलालजी ,,

पत्राचार समिति (महल कार्यालय)—

१ डा. श्रीरामप्रसादजी शर्मा — मदनगंज
२ पं. श्रीदयाशंकरजी शास्त्री — ब्यावर
३ पं. श्रीवासुदेवशरणजी उपाध्याय — निम्बार्कतीर्थ
४ शिवप्रकाशजी व्यास — किशनगढ़
५ रसिकमोहनशरणजी एम. ए. — वृन्दावन
६ पं. नवलकिशोरजी व्यास — निम्बार्कतीर्थ

डाक व दूरसंचार व्यवस्था समिति—

१ श्रीसन्तोषचन्द्रजी पंवार — ब्यावर
२ जगदीशप्रसादजी राठी — मदनगंज
३ श्रोमप्रकाशजी खण्डेलवाल — मदनगंज
४ नोरतमलजी वर्मा — निम्बार्कतीर्थ
५ रामेश्वरप्रसादजी वैष्णव — रूपनगर

आवास व्यवस्था समिति—

१ श्रीब्रजमोहनजी शर्मा — निम्बग्राम
२ सत्यनारायणजी कन्दोई — जयपुर
३ चांदकरणजी लखोटिया — मदनगज
४ लक्ष्मीनारायणजी राठी — हरदा
५ नटवरलालजी रांदड़ — मकराना
६ बद्रीप्रसादजी मून्दड़ा — मदनगंज
७ राकेशकुमारजी ईनाणी — ,,
८ अनिलकुमारजी लखोटिया — ,,
९ हरिकिशनजी छापरवाल — ,,
१० श्यामसुन्दरजी दरगड़ — ,,
११ सुखदेवजी बंसल — ब्यावर
१२ श्रोमप्रकाशजी हेडा — जयपुर

जल व्यवस्था समिति—

१ बाबा श्रीमाधवशरणजी — निम्बार्कतीर्थ
२ श्रीराधेश्यामजी बियाणी — मदनगंज
३ घनश्यामजी शास्त्री — निम्बार्कतीर्थ
४ हरिश्चन्द्रजी यादव — ,,
५ रामेश्वरजी चौधरी — ,,
६ देवीलालजी पटवारी — नरवर
७ श्रीगोपीकिशनजी पटवारी — कुचील
८ किशनगोपालजी मालपानी — मदनगज
९ सम्पतराजजी पाराशर — नरवर
१० कावड़ संघ — मीठड़ी

महिला समिति—

१ प्रो. श्रीमति शान्तिदेवी शर्मा — वनस्थली
२ श्रीमती ब्रजलता अग्रवाल
३ श्रीमती कुसुम चतुर्वेदी — जयपुर
४ श्रीमती ईश्वरी भटनागर — वृन्दावन
५ श्रीमती सावित्री पाण्डे — अजमेर
६ श्रीमती लीला वर्मा — अजमेर (धर्मपत्नी श्रीमुरारीजी)
७ श्रीमती कमलादेवी — अजमेर (धर्मपत्नी श्रीबालकृष्णजी)
८ श्रीमती भगवतीदासी — अजमेर
९ श्रीमती कान्ताबाई — नरवर
१० श्रीमती किशोरकँवर — गोठियाना
११ श्रीमती उर्मिला पोद्दार — बम्बई
१२ श्रीमती गीताबाई अग्रवाल — सैन्धवा
१३ श्रीमती शशी अग्रवाल — मदनगंज (धर्मपत्नी श्रीश्रवण बाबू)
१४ श्रीमती सावित्री चौधरी — मदनगंज
१५ श्रीमती भगवतीदेवी झँवर — ,,
१६ डा. श्रीमती चन्द्रा बोस — ,,
१७ श्रीमती प्रेमदेवी पाटोदी — ,,
१८ श्रीमती मंजु टवानी — ,,
१९ श्रीमती सन्तोष बियाणी — ,,
२० श्रीमती शशी माहेश्वरी — ,, (धर्मपत्नी डा. माहेश्वरी)
२१ श्रीमती मंत्री — मदनगंज
२२ श्रीमती सन्तोषकुमारी — राया
२३ श्रीमती इन्दु एबरोल — मथुरा
२४ श्रीमती शकुन्तला पाराशर — नरवर
२५ श्रीमती लीलादेवी शर्मा — अजमेर

सफाई व्यवस्था समिति–

१ श्रीसुभाषजी शर्मा मदनगंज
२ जब्बरजी पटवारी ,,
३ नकुलसिंहजी ,,
४ सज्जनकुमारजी ,,
५ नाथूलालजी ,,
६ ओमप्रकाशजी ,,
७ श्रीचन्दजी ,,

चिकित्सा समिति–

१ डा. श्रीगुणवन्तसिंहजी झाला अजमेर
२ वैद्य श्रीबालमुकुन्दजी शर्मा निम्बार्कतीर्थ
३ वैद्य श्रीधरणीधरजी उपाध्याय ,,
४ वैद्य श्रीछगनलालजी सिद्धपुर
५ डा. श्रीकैलाशचन्दजी माहेश्वरी मदनगंज
६ ,, आशीष बोस ,,
७ ,, बी. एल. राठौड़ अजमेर
८ वैद्य श्रीरामनिवासजी शर्मा करकेड़ी
९ ,, भँवरलालजी शर्मा खातोली
१० ,, छगनलालजी शास्त्री चारणावास
११ ,, हनुमानप्रसादजी निम्बार्कतीर्थ
१२ ,, धनाधीशजी रतनगढ़
१३ ,, रामेश्वरलालजी कुचामन
१४ ,, रामेश्वरलालजी परबतसर
१५ ,, प्रज्ञावर्धनजी अजमेर
१६ ,, हरिश्चन्द्रजी ,,
१७ श्रीबाबूलालजी शर्मा पुष्कर
१८ श्रीमोहनलालजी शर्मा ,,
१९ श्रीनन्दकिशोरजी पाण्डे ,,
२० श्रीमहेशकुमारजी व्यास निम्बार्कतीर्थ
२१ डा. श्रीश्यामसुन्दरजी अग्रवाल जयपुर
२२ वैद्य श्रीप्रभुदयालजी शर्मा कुचील
२३ वैद्य श्रीवैकुण्ठनाथजी आयुर्वेदाचार्य मथुरा
२४ श्रीदुर्गालालजी शर्मा करकेड़ी
२५ श्रीनाथूलालजी व्यास निम्बार्कतीर्थ

भोजन व प्रसाद वितरण कार्यकर्ताओं की नामावली–

१ श्रीगोविन्दजी दाधीच निम्बार्कतीर्थ
२ मुरलीमनोहरजी वर्मा ,,
३ महेन्द्रजी जासरावत ,,
४ सुशीलजी ओझा ,,
५ मनोहरसिंहजी ,,
६ बजरंगसिंहजी ,,
७ धरणीधरजी उपाध्याय ,,
८ हरीजी यादव ,,
९ हीरालालजी यादव ,,
१० पन्नालालजी यादव ,,
११ माणकचन्दजी सोनी ,,
१२ मदनमोहनजी जासरावत ,,
१३ उमेशजी जासरावत ,,
१४ मुकेशजी शर्मा ,,
१५ रमेशकुमारजी जासरावत ,,
१६ कमलजी जांगीड़ ,,
१७ दिलीपजी टांक ,,
१८ गणेशजी जाट ,,
१९ हीरालालजी जाट ,,
२० श्यामलालजी जांगीड़ ,,
२१ विवेकानन्दजी शर्मा ,,
२२ सुमेरसिंहजी खातोली
२३ सर्वेश्वरजी दाधीच निम्बार्कतीर्थ
२४ वीरेन्द्रसिंहजी ,,
२५ बालमुकुन्दजी गौड़ ,,
२६ रमेशजी गौड़ ,,
२७ महर्षि दाधीच समाज ट्रस्ट किशनगढ़ शहर
२८ विष्णुप्रकाशजी सैन्धवा
२९ सुरेशचन्द्रजी चौधरी किशनगढ़
३० श्रीगोपालजी कावरा ,,
३१ देवकीनन्दनजी लखोटिया ,,
३२ श्रीमती नारायणीदेवी यादव ,,

★

स्वर्णजयन्ती महोत्सव एवं अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के–

-: सप्त दिवसीय कार्यक्रम :-

ज्येष्ठ शुक्ल १ शनिवार सं. २०५० दिनांक २२–५–९३ ई०–

मंगलाभिषेक एवं उद्घाटन कार्यक्रम—

१. ध्वजारोहण एवं भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु का महाभिषेक
श्रीराधामाधव भगवान् की विशेष अर्चना (प्रातः ९ से ११ बजे तक)

२. जलयात्रा एवं श्रीगोपाल महायज्ञारम्भ (११ से १ बजे तक)

३. उद्घाटन कार्यक्रम अपराह्न (५ से ७ बजे तक)

४. रात्रि सत्र—प्रवचन एवं संगीत (९ से १२ बजे तक)

ज्येष्ठ शुक्ल २ रविवार सं. २०५० दिनांक २३–५–९३ ई०–

१. यज्ञ मण्डप—देव पूजन, जप, हवन एवं पाठपारायणादि-दैनिक कार्यक्रम (प्रातः ९ से १२ बजे और अपराह्न ३ से ५ बजे तक)

२. मन्दिर—मंगला आरती, अभिषेक, शृङ्गार आरती, राजभोग, सन्ध्या आरती, स्तुति संकीर्तनादि दैनिक कार्यक्रम ।

३. सभा मण्डप—प्रथम सत्र : (पूर्वाह्न ११ से २ बजे तक)
आचार्यपीठाभिषेक, अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव समारोह

४. सभा मण्डप—द्वितीय सत्र : (अपराह्न ५ से ७ बजे तक)
हिन्दू संस्कृति सम्मेलन :

विचारणीय बिन्दु
१. धर्म का स्वरूप
२. धर्म और राजनीति का पारस्परिक सम्बन्ध

प्रश्नावली समाधान
१. धर्मनिरपेक्षता का अर्थ क्या धर्मशून्यता नहीं है ?
२. धर्मान्तरण को कैसे रोका जाये ?

५. सभा मण्डप—रात्रि सत्र : (९ से १२ बजे तक)
प्रवचन तथा भक्ति संगीत आदि कार्यक्रम

ज्येष्ठ शुक्ल ३ सोमवार सं. २०५० दिनांक २४–५–९३ ई०–

१. यज्ञ मण्डप— दैनिक कार्यक्रम पूर्ववत् ।

२. मन्दिर— दैनिक कार्यक्रम पूर्ववत् ।

३. रासलीलानुकरण— (अपराह्न २ से ५ बजे तक)

४. सभा मण्डप—प्रथम सत्र : (प्रातः ८ से १२ बजे तक)
हिन्दू संस्कृति सम्मेलन :

बिचारणीय बिन्दु
१. राष्ट्रीय सन्दर्भ में गोरक्षा ।
२. देवालय सुरक्षा ।

प्रश्नावली समाधान १. केन्द्रीय सरकार द्वारा सम्पूर्ण भारत में गोहत्या निषेध कानून लागू करने के लिए जनमत संग्रह की मांग आवश्यक क्यों नहीं ?
२. अयोध्या में श्रीराम मन्दिर निर्माण पर उपस्थित वाधा का सर्व-सम्मत निराकरण कैसे हो ?
३. व्यावसायिक क्षेत्र में उत्पादचिह्नांकन (ट्रेडमार्क) विज्ञापन, कलारूपांकन (डिजायन) आदि में भगवत् स्वरूपों तथा नामांकनों का प्रयोग क्या उचित है ?

५. सभा मण्डप—द्वितीय सत्र : (अपराह्न ५ से ७ बजे तक)

हिन्दू संस्कृति सम्मेलन :

विचारणीय बिन्दु १. वैष्णव धर्म का सार्वभौम स्वरूप ।

प्रश्नावली समाधान १. भारतीय संस्कृति में शिखा, सूत्र, चन्दन, तुलसी, रुद्राक्ष आदि की शास्त्रीय प्रामाणिकता व वैज्ञानिकता क्या है ?

६. सभा मण्डप—रात्रि सत्र : (९ से १२ बजे तक)

प्रवचन एवं भक्ति संगीत :

ज्येष्ठ शुक्ल ४ मंगलवार सं. २०५० दिनांक २५–५–९३ ई०—

१. यज्ञ मण्डप दैनिक कार्यक्रम पूर्ववत्

२. मन्दिर दैनिक कार्यक्रम पूर्ववत्, विशेष आयोजन पुष्प-कुञ्ज (फूल बंगला) तथा पूर्वाचार्यवर्य जगद्विजयी श्रीकेशवकाश्मीरि भट्टाचार्यजी महाराज का पाटोत्सव ।

३. रासलीलानुकरण (अपराह्न २ से ५ बजे तक)

४. सभा मण्डप—प्रथम सत्र (प्रातः ८ से १२ बजे तक)

विश्व शान्ति सम्मेलन :

विचारणीय बिन्दु १. विश्व में अशान्ति के कारण और उनका निराकरण ।
२. विश्वशान्ति के सन्दर्भ में भारतीय संस्कृति की देन ।
३. राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में वर्तमान समस्याएँ ।

प्रश्नावली समाधान १. भारत में समान नागरिकता होने पर भी समान संविधान सिद्धान्त मान्य क्यों नहीं ?
२. मादक द्रव्य एवं मद्यनिषेध सम्बन्धी सरकारी नीति में विरोधाभास क्यों ?

ग्रन्थ समर्पण जगद्विजयी श्रीकेशवकाश्मीरि भट्टाचार्य विरचित 'क्रम-दीपिका' के हिन्दी भाषानुवाद अभिनव प्रकाशन का समर्पण ।

५. सभा मण्डप—द्वितीय सत्र : (अपराह्न ५ से ७ बजे तक)

विश्व शान्ति सम्मेलन :

विचारणीय बिन्दु दूषित पर्यावरण ।

प्रश्नावली समाधान — दूरदर्शन एवं चलचित्रों से आगत सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय प्रदूषण को कैसे रोका जाये ?

६. सभा मण्डप—रात्रि सत्र : (९ बजे से १२ बजे तक)

प्रवचन एवं सुगम संगीत।

ज्येष्ठ शुक्ल ५ बुधवार सं. २०५० दिनांक २६-५-९३ ई०-

१. यज्ञमण्डप — दैनिक कार्यक्रम पूर्ववत्

२. मन्दिर — दैनिक कार्यक्रम पूर्ववत्

३. रासलीलानुकरण — (अपराह्न २ से ५ बजे तक

४. सभा मण्डप—प्रथम सत्र : (प्रातः ८ से १२ बजे तक)

शिक्षा सम्मेलन :

विचारणीय बिन्दु —
१. वैदिक शिक्षा का महत्व एवं वेद के सस्वर पठन-पाठन की समस्या।
२. शिक्षा में संस्कृत एवं संस्कृति की अनिवार्यता।

प्रश्नावली समाधान —
१. आधुनिक शिक्षा नीति में नैतिक शिक्षा का समावेश क्यों नहीं ?
२. क्या भारतीय आयुर्वेद विज्ञान एवं चिकित्सा प्रतियोगी परीक्षा में पूर्व निर्धारित संस्कृत पाठ्यक्रम पर्याप्त नहीं है ?
प्रस्ताव—प्रस्तुति एवं निर्णय।

५. सभा मण्डप—द्वितीय सत्र : (अपराह्न ५ से ७ बजे तक)

शिक्षा सम्मेलन :

विचारणीय बिन्दु — राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का स्वरूप।

प्रश्नावली समाधान — क्या वर्तमान में हिन्दू संस्कृति की सुरक्षा एवं राष्ट्रीय एकता के लिए संस्कृत भाषा का अध्ययन-अध्यापन आवश्यक नहीं ?

६. सभा मण्डप—रात्रि सत्र : (९ से १२ बजे तक)

प्रवचन एवं काव्य गोष्ठी।

ज्येष्ठ शुक्ल ६ गुरुवार सं. २०५० दिनांक २७-५-९३ ई०-

१. यज्ञमण्डप — दैनिक कार्यक्रम पूर्ववत्

२. मन्दिर — दैनिक कार्यक्रम पूर्ववत्

३. रासलीलानुकरण — (अपराह्न २ से ५ बजे तक)

४. सभा मण्डप—प्रथम सत्र : (प्रातः ८ से १२ बजे तक)

महिला सम्मेलन :

विचारणीय बिन्दु —
१. भारतीय संस्कृति में नारी का गौरव।
२. नारी शिक्षा।
३. नारी जीवन की वर्तमान समस्याएँ।

प्रश्नावली समाधान
१. नारी गौरव के निरन्तर ह्रास के लिए क्या वह स्वयं उत्तरदायी नहीं है।
२. दूरदर्शन चलचित्र एवं समाचार पत्रों आदि के विज्ञापनों में नारी चित्रों का प्रयोग तथा व्यापारिक मोडलिंग (रूप प्रतियोगिता), क्या मातृ शक्ति का अपमान नहीं है ?
प्रस्ताव प्रस्तुति एवं निर्णय।

५. सभा मण्डप—द्वितीय सत्र : (अपराह्न ५ से ७ बजे तक)

संगीत सम्मेलन :

विचारणीय बिन्दु
१. संगीत का भारतीय स्वरूप।
२. शास्त्रीय एवं सुगम संगीत।
प्रस्ताव प्रस्तुति एवं निर्णय।

६. सभा मण्डप—रात्रि सत्र : (९ से १२ बजे तक)

प्रवचन एवं भक्ति संगीत।

ज्येष्ठ शुक्ल ७ शुक्रवार सं. २०५० दिनांक २८–५–९३ ई०–

१. पूर्णाहूति (१२ बजे)

२. विशिष्ट अर्चना-श्रीस्वरूपाचार्यजी महाराज का पाटोत्सव।

३. सभा मण्डप—प्रथम सत्र : (प्रातः ८ से १२ बजे तक)

शास्त्रीय आचार पद्धति एवं मर्यादाएँ।

४. रासलीलानुकरण (मध्याह्न २ से ५ बजे तक)

५. सभा मण्डप—द्वितीय सत्र : (अपराह्न ५ से ७ बजे तक)

सम्मेलन की उपलब्धि पर प्रकाश।

६. सभा मण्डप—रात्रि सत्र : समापन समारोह– (८ से १२ बजे तक)

१. आचार्यश्री को अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पण करने की घोषणा।
२. स्वर्णजयन्ती वर्ष में व्रजदासी भागवत के पूर्ण प्रकाशन की घोषणा।
३. आचार्यश्री का आशीर्वचन।
४. स्वर्ण जयन्ती महोत्सव समिति द्वारा धर्माचार्यों एवं विशिष्ट महानुभावों का सम्मान एवं अभिनन्दन।
५. आभार प्रदर्शन।

सप्त दिवसीय अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन में–

विचारणीय प्रश्नावली

१. धर्म निरपेक्षता का अर्थ क्या धर्म शून्यता नहीं है ?

२. भारत में गोहत्या निषेध कानून के लिए जनमत संग्रह की मांग आवश्यक क्यों नहीं ?

३. व्यावसायिक क्षेत्र में उत्पाद चिह्नांकन (ट्रेडमार्क) विज्ञापन कला रूपाङ्कन (डिजायन) आदि में भगवत्स्वरूपों तथा नामाङ्कनों का प्रयोग क्या उचित है ?

४. अयोध्या में श्रीराममन्दिर निर्माण पर उपस्थित बाधा का सर्वमान्य निराकरण कैसे हो ?।

५. भारतीय संस्कृति में शिखा, सूत्र, चन्दन, तुलसी, रुद्राक्ष आदि की शास्त्रीयता और वैज्ञानिकता का महत्व क्या है ? ।

६. भारत में समान नागरिकता होने पर भी समान संविधान सिद्धान्त मान्य क्यों नहीं ? ।

७. मादक द्रव्य एवं मद्य निषेध सम्बन्धी सरकारी नीति में विरोधाभास क्यों ?

८. धर्मान्तरण को कैसे रोका जाय ?

९. दूरदर्शन एवं चलचित्रों से आगत सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय प्रदूषण को कैसे रोका जाय ?

१०. आधुनिक शिक्षा नीति में नैतिक शिक्षा का समावेश क्यों नहीं ?

११. क्या भारतीय आयुर्वेद विज्ञान एवं चिकित्सा प्रतियोगी परीक्षा में पूर्व निर्धारित संस्कृत पाठ्यक्रम पर्याप्त नहीं है ?

१२. क्या वर्तमान में हिन्दु संस्कृति की सुरक्षा एवं राष्ट्रीय एकता के लिए संस्कृत भाषा का अध्ययन–अध्यापन आवश्यक नहीं ?

१३. क्या दूरदर्शन–चलचित्र–समाचारपत्रादि के विज्ञापनों में नारी पोस्टरों का प्रयोग तथा मॉडलिंग मातृ शक्ति का अपमान नहीं है ?

१४. नारी गौरव के निरन्तर ह्रास के लिए क्या वह स्वयं उत्तरदायी नहीं है ?

सप्तदिवसीये अ० भा० विराट् सनातनधर्मसम्मेलने—

समाधेया: प्रश्ना:

१. धर्मनिरपेक्षताया अर्थ: किं धर्मशून्यता नास्ति ?

२. भारते गोहत्यानिषेधनियमाय किं जनमतसंग्रहस्यावश्यकता नास्ति ?

३. व्यावसायिकक्षेत्रे निर्मितवस्तुषु चिह्नांकने, विज्ञापने, कलारूपाङ्कने च भगवत्स्वरूपाणां नाम्नां च प्रयोग: किमुचित: ?

४. अयोध्यायां श्रीराममन्दिरनिर्माणे समुपस्थिताया बाधाया निराकरणं कथं स्यात् ?

५. भारतीयसंस्कृतौ शिखा–सूत्र–चन्दन–तुलसी–रुद्राक्षादीनां शास्त्रीयत्वं वैज्ञानिकत्वं च किमस्ति ?

६. भारतें समाननागरिकतायां सत्यामपि संविधानसिद्धान्तस्य समानमान्यता कथं न ?

७. मादकद्रव्यमद्यनिषेधस्य शासकीयनीतौ विरोधाभास: कथम् ?

८. धर्मान्तरणं कथमवरोधनीयम् ?

९. दूरदर्शनात् चलचित्रेभ्यश्चागतं सांस्कृतिकं राष्ट्रीयं च प्रदूषणं कथं निवार्येत ?

१०. आधुनिकशिक्षानीतौ नैतिकशिक्षाया: समावेश: कथं न ?

११. भारतीयायुर्वेदविज्ञाने चिकित्साप्रतियोगिपरीक्षायां च पूर्वनिर्धारित: संस्कृतपाठ्यक्रम: किमपूर्ण: ?

१२. वर्तमाने हिन्दूसंस्कृते: सुरक्षायै राष्ट्रियैकतायै च संस्कृतभाषाया अध्ययनाध्यापने किं नावश्यके ?

१३. दूरदर्शन–चलचित्र–समाचारपत्रादि–विज्ञापनेषु नारीचित्राणां प्रयोग: व्यापारिक प्रतियोगिता (मोडलिंग) च किं मातृशक्तेरवमानना न ?

१४. नारीगौरवस्य निरन्तर–ह्रासाय किं सा स्वयमुत्तरदायिनी न ?

स्वर्णजयन्तो महोत्सव एवं अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन में समागत–

विशिष्ट सन्त–महन्त महानुभाव

जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीनिश्चलानन्दजी महाराज	गोवर्धनपीठ पुरी
,, ,, श्रीवासुदेवानन्दजी महाराज	ज्योतिष्पीठ, बद्रिकाश्रम
जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्रीहर्याचार्यजी महाराज	अयोध्या
,, रामानन्दाचार्य स्वामी श्रीरामेश्वरानन्दजी महाराज	अहमदाबाद
,, रामानुजाचार्य स्वामी श्रीवासुदेवाचार्यजी महाराज	अयोध्या
,, रामानुजाचार्य स्वामी श्रीघनश्यामाचार्यजी महाराज	डीडवाना
,, वल्लभाचार्य गोस्वामी श्रीवल्लभलालजी महाराज	सूरत
,, दादु सम्प्रदायाचार्य श्रीहरिरामाचार्यजी महाराज	नरेना
,, रामस्नेही सम्प्रदायाचार्य स्वामी श्रीरामकिशोरदासजी महाराज	शाहपुरा
युवराज स्वामी श्रीश्रीनिवासाचार्यजी महाराज	नागोरिया मठ, डीडवाना
स्वामी श्रीवामदेवजी महाराज	वृन्दावन
महामण्डलेश्वर स्वामी श्रीहरिनारायणानन्दजी महाराज	दिल्ली
स्वामी श्रीमुक्तानन्दजी सरस्वती	—
श्रीमहन्त श्रीनृत्यगोपालदासजी महाराज	अयोध्या
चतु:सम्प्रदाय श्रीमहन्त व्रजविदेही श्रीरासविहारीदासजी काठिया	वृन्दावन
मेवाड़ महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी शास्त्री	उदयपुर
महन्त श्रीहरिवल्लभदासजी शास्त्री	किशनगढ़-रेनवाल
बाबा श्रीशुकदेवदासजी संगीताचार्य, भागवत विशारद, निम्बार्कभूषण	श्रीनिम्बार्कपुरम्, जयपुर
महन्त श्रीवृन्दावनविहारीदासजी काठिया	सुखचर
अधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी वेदान्ताचार्य पञ्चतीर्थ	वृन्दावन
श्रीमहन्त श्रीसन्तसेवकदासजी महाराज निर्वाणी अनी	अयोध्या
,, श्रीहरिदासजी महाराज दिगम्बर अनी	नासिक
,, श्रीनन्दरामदासजी महाराज निर्मोही अनी	अहमदाबाद
महामण्डलेश्वर श्रीव्रजविहारीशरणजी 'राजीव' निम्बार्कभूषण	अहमदाबाद
महन्त श्रीराधिकादासजी महाराज	मल्हारगढ़
महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त श्रीरामकुमारदासजी महाराज	—
,, श्रीरामकिशनजी महाराज	दिल्ली
,, श्रीओउम्चैतन्यजी महाराज	भरतपुर
,, डा० श्रीरमनदासजी महात्यागी	बनारस
,, श्रीभगवानदासजी	दिल्ली
,, श्रीरामदासजी महाराज	दियावाड़

श्रीमहन्त श्रीबालकृष्णशरणजी महाराज	लीम्बड़ी (गुजरात)
,, श्रीबनवारीशरणजी शास्त्री	वृन्दावन
,, श्रीललिताशरणजी महाराज	लीम्बड़ी (गुजरात)
,, श्रीहरिदासजी महाराज	गोरे दाऊजी मन्दिर, वृन्दावन
,, श्रीबालकदासजी महाराज	फालेन
महन्त श्रीपुरुषोत्तमदासजी महाराज	मेयो कालेज, अजमेर
,, राधावल्लभशरणजी महाराज	उदयपुर
,, विष्णुशरणजी महाराज	नृसिंह मन्दिर, अजमेर

महन्त श्रीराधाकिशनदासजी	डूंगरपुर
,, दीनबन्धुशरणजी	भीलवाड़ा
,, गोपालदासजी	सांगानेर
,, बनवारीशरणजी	भीलवाड़ा
श्रीमहन्त श्रीरामदासजी	गंगवाना
महन्त श्रीराधाचरणदासजी	मीठड़ी
,, बनवारीशरणजी	जूसरी
,, भगवानदासजी	पलवल
,, सेवकदासजी	अयोध्या
,, वृन्दावनविहारीशरणजी	कलकत्ता
,, मीठारामजी	उदयपुर
,, गोपालानन्दजी	बीलखा (जूनागढ़)
,, हरिदासजी	डाकोर
,, जगन्नाथ मन्दिर	अहमदाबाद
,, सत्यनारायण मन्दिर	उदयपुर
,, रामशरणजी	सिद्धपुर
,, श्रीधराचार्यजी	अहमदाबाद
,, रामकिशोरदासजी काठिया	
,, नवलकिशोरदासजी	वृन्दावन
,, सर्वेश्वरदासजी	विमलकुण्ड
,, पीताम्बरदासजी	निमोल
,, भगवतीशरणजी	दिगरना
,, गोविन्ददासजी	बलाडा
,, मोहनदासजी	रायपुर
,, घनश्यामशरणजी	भगवानपुरा
,, राधाकृष्णदासजी	पालड़ी
,, मगनीरामदासजी	जैतारण

महन्त श्रीमदनमोहनदासजी	दौराई
,, देवराजदासजी	धाराजी
,, राममुनिजी उदासीन	पुष्कर
,, गोकुलदासजी	,,
,, स्वयंप्रकाशजी	रेण
,, रामदासजी	छोटी नागफनी, अजमेर
,, बाबा जगदीशदासजी	चित्रकूट
,, चेतनदासजी	गोवर्धन
,, जगदेवदासजी	लावा
,, मनोहरदासजी	पलसाना
,, नरसिंगदासजी	कामवन
,, लाडलीशरणजी	अहमदाबाद
,, व्रजविहारीदासजी	,,
,, सर्वेश्वरशरणजी	,,
,, रामसेवकदासजी	अरड़का
,, वासुदेवजी खाकिया बाबा	अयोध्या
,, राधारामदासजी	भीलवाड़ा
,, सागरदासजी	हमीरगढ़
,, नारायणदासजी	अजमेर
,, मधुसूदनदासजी	अहमदाबाद
,, भरतदासजी	उदयपुर
,, नरहरिदासजी	वीर चौराहा
,, वासुदेवदासजी	चित्रकूट
,, दयानिधिदासजी	पुरी (उड़ीसा)
,, प्रेमशरणजी	जयपुर
,, रामदासजी	उज्जैन
,, विश्वम्भरदासजी नागा	नासिक

स्वर्ण जयंती महोत्सव एवं अ० भा० सनातन धर्म सम्मेलन में

※ समागत विद्वत्समुदाय ※

डा० श्रीखेमराजकेशवशरणजी शास्त्री	काठमांडू (नेपाल)
,, श्रीमनुदेवजी भट्टाचार्य	सम्पूर्णानन्द वि० वि०, वाराणसी
,, प्रभाकरजी शास्त्री	राज० वि० वि०, जयपुर
,, रसिकविहारीजी जोशी	दिल्ली
शास्त्रार्थ पंचानन श्रीप्रेमाचार्यजी	दिल्ली
पं० श्रीकेशवदेवजी शास्त्री	सम्पादक "अनन्त सन्देश," वृन्दावन
,, हरिशरणजी उपाध्याय	वृन्दावन
,, विश्वनाथजी मिश्र	जैन विश्व भारती, लाडनू
पं० श्रीवैकुण्ठनाथजी शर्मा वैद्य	मथुरा
मुनि श्रीशैलेन्द्राचार्यजी कथा प्रवक्ता	सप्तसरोवर, हरिद्वार
पं० श्रीभैरवानन्दजी व्यापक रामायणी	अजीतगढ़
,, द्वारकाप्रसादजी पाटोदिया	बम्बई
,, घनश्यामशरणजी	केलादी घाट (नेपाल)
,, प्रहलादचन्द्रजी शास्त्री	हरदा
वैद्य पं० श्रीधनाधीशजी शास्त्री	रतनगढ़
,, श्रीरामेश्वरजी	कुचामन
पं० श्रीनथमलजी व्यास	परबतसर
,, चन्द्रदत्तजी पुरोहित	,,
,, दयाशंकरजी शास्त्री	ब्यावर
,, सीतारामजी श्रोत्रिय	जयपुर
,, नटवरलालजी जोशी	लक्ष्मणगढ़
डा० विमलाकुमारी भास्कर	रोहतक

समागत विशिष्ट महानुभाव :–

श्रीरामानन्दसागर, श्रीसुभाषसागर दूरदर्शन धा० "रामायण" व "कृष्णा" के निर्माता, बम्बई
श्रीबलदेवराजजी चौपड़ा, दूरदर्शन धारावाहिक, "महाभारत" के निर्माता, बम्बई
संगीतकार श्रीरविन्द्रजी जैन, बम्बई
श्रीभैरूंसिंहजी शेखावत मुख्यमन्त्री राजस्थान सरकार जयपुर
श्रीहरिशंकरजी भाभड़ा अध्यक्ष—विधान सभा राजस्थान जयपुर
श्रीललितकिशोरजी चतुर्वेदी उच्च शिक्षामन्त्री राजस्थान सरकार जयपुर
सांसद श्रीरासासिंहजी रावत अजमेर
भाजपा प्रदेशाध्यक्ष श्रीरामदासजी अग्रवाल जयपुर
पूर्व विधायक श्रीजगजीतसिंहजी किशनगढ़
किशनगढ़ नरेश श्रीमान् ब्रजराजसिंहजी किशनगढ़

सम्मेलन में समागत संगीत कलाकार

श्रीरासोजी तबला वादक — वृन्दावन
,, दिनेशचन्द्र शांडिल्य बंशीवादक — आगरा
,, सुरेशचन्द्र शर्मा संगीताचार्य — अलीगढ़
,, अशोक शर्मा तबला वादक — हाथरस
,, रामकुमार शर्मा गायक — लाडनूँ
,, दिनेशचन्द्र गौड़ — रामसर
,, छैलबिहारी वर्मा — करौली
,, कैलाश पीयूषा अनुज — दिल्ली
श्रीगोयल साहब — जोधपुर
श्रीमती सरस्वती देवी — जयपुर
श्रीमती नलिनी माथुर — ,,
श्रीअनुराधा शर्मा — मथुरा
श्रीसर्वेश्वर सत्संग मण्डल मदनगंज-किशनगढ़
,, श्रुति शाडोलीकर — बम्बई
श्रीमती स्मृति ओढ़कर — ,,
श्रीरमेश एवं श्रीमती प्रेम
श्रीमती पलमा जोशी — लखनऊ
श्रीगोपालजी बंशीवाले — वृन्दावन
,, ऋषिकुमार गायक भक्ति संगीत — ,,
,, त्रिगुणातीत जैमिनी सितार वादक — ,,
पञ्चवर्षीय बालक अर्चित व्यास एवं नववर्षीय बालिका तनूजा व्यास — निम्बार्कतीर्थ

सम्मेलन में समागत कविवृन्द

श्रीसत्यनारायण सत्येन — इन्दौर
,, डा० उर्मिलेश — बदायु
,, निर्भय हाथरसी — हाथरस
,, जगदीश सोलंकी — कोटा
कु० ममता शर्मा — आगरा
श्रीविष्णु सक्सेना — अलीगढ़
श्रीराजेन्द्र राजन — सहारनपुर
, राजवीर क्रान्तिकारी — अमरोहा
,, प्रो. रमेश गुप्ता चातक — उज्जैन
,, अब्दुल गफ्फार — केकड़ी
श्रीमती प्रभा ठाकुर — किशनगढ़

०- मङ्गल कामना -०

कल्याण हो विश्व का नाथ सदा, मति पावन हो खल दुष्टन की।
सब जीवन में सद्भाव बढ़ैं, शुभ मार्ग में हो प्रवृत्ति मन की॥
अति निर्मल प्रेम परस्पर हो, रुचि हो सबके हित चिन्तन की।
बस आप में नित्य प्रवेश करें, निष्काम मती हम सब जन की॥

※ श्रीसर्वेश्वरो जयति ※

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

के आचार्यपीठाभिषेक अर्द्धशताब्दी महोत्सव पर आयोजित–

अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन

एवं

श्रीगोपाल–महायाग

शुभारम्भ

[मिति ज्येष्ठ शुक्ल १ शनिवार सं० २०५० दिनांक २२–५–९३]

सप्त दिवसीय अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का—

शुभारम्भ

(मिति ज्येष्ठ शुक्ल १ शनिवार सं० २०५० दि० २२-५-९३ ई०)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरण-देवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के आचार्यपीठाभिषेक के अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव समारोह पर आयोजित अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के सप्त दिवसीय कार्यक्रम की घोषणा के साथ ही महोत्सव समिति के कार्यकर्ताओं ने सभी विभागों के कार्यों का शुभारम्भ कर दिया था। निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) स्थित विशालकाय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ को विद्युत् झालरों से इस तरह भव्य बनाया गया था कि रात्रि होते ही गीता सन्देश, कमल, कलश जैसे विद्युत् चित्र सजीव हो रहे थे। पीठ को विविध रूप से सजाया गया था। विशिष्ट सन्त-महात्माओं के लिए आचार्यपीठ एवं निम्बार्कतीर्थ स्थल पर आवासीय व्यवस्था थी व भक्तजनों के लिए बी० आई० पी० टैन्ट, स्विस कॉटेज, ई० पी० टैन्ट एवं छोलदारियां लगाकर दश हजार आगन्तुकों के रहने की व्यवस्था की गई थी। भोजन व्यवस्था के लिए कच्चे-पक्के दोनों प्रकार के भोजन की व्यवस्था कम दरों पर की गई थी। जगह-जगह पानी की व्यवस्था के लिए नल लगा दिये गये थे जिनमें चौबीसों घण्टे लगातार जल वितरण की व्यवस्था थी। शीतल जल की व्यवस्था प्याऊओं द्वारा की गई थी। छाया के लिए जगह-जगह छोलदारियाँ लगी हुई थी, मंच के पास की भूमि पर व्यापारी लोग अपनी-अपनी वस्तुओं के विक्रय हेतु दुकानें लगाये हुए थे, जिनमें भोजन सामग्री, सभी प्रकार के पूजा का सामान व धार्मिक पुस्तकें उपलब्ध थी। सम्मेलन के लिए विशाल पाण्डाल का निर्माण किया गया था जिसमें ५० हजार से अधिक लोगों के बैठने की व्यवस्था थी। ज्येष्ठ मास की तपन होने पर भी पांडाल खुला होने तथा पंखों को पर्याप्त व्यवस्था होने से गर्मी का अनुभव नहीं हो रहा था। दर्जनों क्लोज सर्किट टी० वी० लगाई गई थी ताकि श्रद्धालुजन ठीक तरह से कार्यक्रम देख सुन सकें। मंच पर भगवान् श्री राधा कृष्ण एवं श्रीनिम्बार्काचार्य के विशाल चित्र तथा शङ्ख चक्र सहित तिलक के चित्र लगाये गये थे। आने जाने वाले मार्गों में व सड़कों पर 'श्रीराधे' नाम से सुसज्जित ध्वजाएँ एवं रंग बिरंगी पताकाएँ लगी हुई थी।

पूर्व निर्धारित सप्तदिवसीय कार्यक्रमानुसार प्रतिदिन मन्दिर में प्रातः मङ्गलाआरती शृङ्गार आरती, राजभोग आरती, उत्थापन, संध्या आरती, स्तुति संकीर्तनादि व शयन आरती का दैनिक कार्यक्रम विधिवत् चलता रहता था। सभा मण्डप में प्रातःकालीन एवं सायंकालीन प्रवचन तथा मध्याह्न में वृन्दावन निवासी स्वामी श्रीशिवदयालजी गिरिराजप्रसादजी की रासमण्डली द्वारा रासलीलानुकरण होता था। गोशाला के पास यज्ञ मण्डप में अनेक विद्वानों द्वारा जप, हवन एवं पाठपारायण चलते थे। इस सम्मेलन में १० लाख से अधिक लोगों ने संत-दर्शन व प्रवचन श्रवण का लाभ उठाया। सम्मेलन में भिन्न-भिन्न स्थानों से अनेक सन्त-महान्त विद्वानों के अतिरिक्त राजस्थान, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, आसाम व नेपाल तक के भक्तों का विशाल संख्या में निरन्तर आना-जाना बना हुआ था।

श्रीगोपाल महायाग का आयोजन

अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का शुभारम्भ विश्वकल्याणाभिप्रेरित "श्रीगोपाल महायाग" से हुआ। ज्येष्ठ शुक्ल १ शनिवार सम्वत् २०५० दिनांक २२/५/९३ ई० को भगवान् भास्कर के मङ्गलमय उदय के साथ ही प्रातः ७ बजे सर्वतः सुसज्जित यज्ञशाला की पावन अवनि पर मांगलिक वाद्यों व याज्ञिक विद्वानों के वेद पाठ के साथ श्रीगणपति पूजन से यज्ञ का शुभारम्भ हुआ। रङ्ग-बिरङ्गी ध्वजा पताकाओं से सुसज्जित यज्ञ स्थली अनायास ही भक्तजनों का मन मोह रही थी। कुण्ड मण्डपादि की आकर्षक सज्जा यज्ञ स्थली की छटा को भव्य बनाये हुई थी, सम्पूर्ण वातावरण मनमोहक लग रहा था। ऐसे सुन्दर वातावरण में ब्राह्मणवरण एवं प्रारम्भिक देव पूजन के पश्चात् जलयात्रा की तैयारी हुई।

यह जलयात्रा प्रातः ८ बजे यज्ञ के सभी विद्वान् एवं सपत्नीक यजमान तथा १२१ सौभाग्यवती महिलाओं के साथ यज्ञ स्थल से निम्बार्कतीर्थ के लिए प्रस्थान हुई। जिसमें सबसे आगे घोड़ी पर निशान, फिर घोड़ी पर नगाड़ा, फिर क्रमशः ढोल, सुरई, बैण्डबाजा तथा संकीर्तन मण्डलियों के साथ जयघोष करते हुए अपार जन समूह चल रहा था। निम्बार्कतीर्थ सरोवर पर पहुँच कर विधिवत् वेदमन्त्रों द्वारा वरुण पूजन एवं कलशार्चन के अनन्तर पुनः वहाँ से जलयात्रा यज्ञस्थल के लिए रवाना हुई और मुख्य मार्ग से होती हुई यज्ञशाला पहुँची। यज्ञ मण्डप के मुख्य द्वार का पूजन होकर मण्डप प्रवेश हुआ। मण्डप प्रवेशान्तर देव स्थापन, पूजन, जप, पाठ आदि कार्यक्रम प्रारम्भ हुए।

पूर्वाह्न ११ बजे से १ बजे तक मन्दिर में श्रीसर्वेश्वर प्रभु का महाभिषेक एवं श्री-राधामाधव भगवान् की विशेष अर्चना आचार्यश्री के करकमलों द्वारा समस्त याज्ञिक विद्वानों के मन्त्रोच्चारण के साथ सम्पन्न हुई। भारी संख्या में भावुक भक्तों ने इस मनोरम भगवदर्चन कार्यक्रम के दर्शन का लाभ प्राप्त किया। तदनन्तर राजभोग आरती होकर भगवत्प्रसाद का विशाल आयोजन हुआ।

दिनांक २३ मई को प्रातःकाल भद्रसूक्त (शान्ति पाठ) गणपति मातृका नवग्रह वास्तु पूजनादि के पश्चात् आचार्यश्री के सान्निध्य में मध्याह्न अभिजित मुहूर्त में अरणी मन्थन द्वारा अग्निदेव का प्राकट्य होकर अग्नि स्थापन हुआ तथा प्रधान पूजन होकर हवन आरम्भ हुआ। पश्चात् प्रतिदिन नियमानुसार जप और उसके दशांश की आहुतियां चलती रही। इस प्रकार सवालाख पुरश्चरण व एक लाख अस्सी हजार आहुतियों द्वारा यह मांगलिक अनुष्ठान एक सप्ताह तक चला। और दिनांक २८ मई को मध्याह्न में वैदिक मन्त्रों से जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के करकमलों द्वारा पूर्णाहुति किये जाने के साथ ही श्रीगोपाल महायाग का समापन हुआ। इस सप्त दिवसीय यज्ञायोजन में प्रतिदिन हजारों श्रद्धालुओं ने यज्ञ परिक्रमा का लाभ उठाया।

श्रीगोपाल महायाग के विद्वज्जनों की नामावली

यज्ञाचार्य—

पं. श्रीसत्यनारायणजी शास्त्री अजमेर

कुण्डमण्डपाचार्य—

पं. श्रीगोकुलप्रसादजी भारद्वाज अजमेर

ब्रह्मा—

पं. श्रीमुरलीधरजी शास्त्री प्रेमसरोवर बरसाना

उपाचार्य—

पं. श्रीश्रीनारायणजी शर्मा गरुडवासी-चाकसू

द्रष्टा—

पं. श्रीराधावल्लभजी शास्त्री कचनारिया

वैदिक—

१ पं. श्रीसिद्धिशंकरजी शास्त्री अजमेर
२ ,, परशुरामजी भारद्वाज निम्बार्कतीर्थ
३ ,, कृष्णचन्द्रजी शास्त्री नसीराबाद
४ ,, दिनेशचन्द्रजी शास्त्री किशनगढ़-रेनवाल

जापक—

१ पं. श्रीशंकरलालजी व्यास निम्बार्कतीर्थ
२ ,, विश्वामित्रजी व्यास ,,
३ ,, गंगासहायजी शर्मा फादेडा (जयपुर)
४ ,, रामनाथजी शर्मा अजमेर
५ वैद्य श्रीहनुमत्प्रसादजी मिश्र निम्बार्कतीर्थ
६ श्रीविहारीलालजी व्यास पुष्कर
७ ,, दामोदरजी व्यास निम्बार्कतीर्थ
८ पं. श्रीहरिश्चन्द्रजी लाटा ,,
९ श्रीनाथूलालजी व्यास ,,
१० श्रीचिरञ्जीलालजी शर्मा अजमेर
११ ,, नाथूलालजी शर्मा ,,
१२ ,, व्रजमोहनजी शर्मा ,,

भागवत पाठ—

पं. श्रीमुकुन्दशरणजी उपाध्याय ब्यावर

गीता विष्णुसहस्रनामपाठ—

पं. श्रीअनन्तश्यामजी व्यास ब्यावर

रामायण पाठ—

पं. श्रीरामेश्वरप्रसादजो पञ्चोली दौसा

सुदर्शनकवच पाठ—

पं. श्रीहरिमोहनजी उपाध्याय नेपाल

गोपालसहस्रनाम पाठ—

१ पं. श्रीनरेन्द्रकुमारजी शास्त्री देवपुरी
२ ,, सत्यनारायणजी शास्त्री दादिया
३ ,, बद्रीप्रसादजी शर्मा रघुनाथपुरा
४ ,, सत्यनारायणजी शास्त्री कुराड
५ ,, सोहनलालजी व्यास इन्दौर
६ ,, पूनमचन्दजी पाराशर परबतसर
७ ,, बनवारीलालजी व्यास निम्बार्कतीर्थ
८ ,, उपेन्द्रनाथजी चतुर्वेदी हाथरस
९ श्रीगोपालशरणजी उपाध्याय वृन्दावन
१० पं. श्रीरामकृष्णजी शास्त्री नांदला (अजमेर)
११ ,, राधेश्यामजी व्यास बग्गड (नागौर)
१२ ,, नरेशकान्तजी भारद्वाज अजमेर
१३ ,, छगनलालजी शर्मा चौमू
१४ ,, बजरंगलालजी कोटोंली
१५ ,, कल्याणसहायजी डीडवाना
१६ ,, रामगोपालजी मिश्र अरांई
१७ ,, रामसहायजी शास्त्री हीरापुरा (जयपुर)
१८ श्रीरामावतारजी शास्त्री निवाई (टोंक)
१९ ,, भँवरलालजी शर्मा दांतडा
२० ,, नाथूरामजी शर्मा हथीज (सीकर)
२१ , व्रजेशकुमारजी भारद्वाज अजमेर

विशिष्ट विद्वान्—

पं. श्रीगोविन्ददासजी 'सन्त' अजमेर

यजमानों की नामावली—

१ श्रीराजगोपालजी तोषनीवाल बीजापुर
२ ,, घनश्यामजी तोषनीवाल ,,
३ ,, बंकटलालजी बंग धूलिया
४ ,, गणेशजी भराड़िया बम्बई
५ ,, नन्दलालजी अग्रवाल बालोतरा

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

— ध्वजारोहण —

एवं

उद्घाटन—समारोह

[मिति ज्येष्ठ शुक्ल १ शनिवार सं० २०५० दिनांक २२-५-९३]

अध्यक्ष :

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

उद्घाटक :

स्वामी श्रीवामदेवजी महाराज

वृन्दावन (उ० प्र०)

अध्यक्ष—धर्म संसद्, दिल्ली

अध्यक्ष-महोत्सव समिति :	स्वागताध्यक्ष :	स्वागत महामन्त्री :
श्रीभीमकरण छापरवाल	**श्रीजुगलकिशोर तोषनीवाल**	**श्रीराधेश्याम ईनाणी**
इचलकरंजी (महाराष्ट्र)	बीजापुर (कर्नाटक)	किशनगढ़ (राज.)

ध्वजारोहण व उद्घाटन समारोह

अखिल भारतीय सनातन धर्म सम्मेलन समारोह के उद्घाटन हेतु आमन्त्रित परम-श्रद्धेय वीतराग स्वामी श्रीवामदेवजी महाराज के आगमन पर उनका भव्य स्वागत किया गया। भगवान् श्रीराधामाधवजी के दर्शनोपरान्त अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के साथ में बैण्डबाजों की मंगलध्वनि तथा गगनभेदी जयघोष के साथ स्वामी श्री वामदेवजी महाराज ने सभामण्डप में प्रवेश किया। सर्वप्रथम 'श्रीनिम्बार्क भगवान् की जय' और 'जय जय श्रीराधे' के जयघोषों के बीच पूज्य आचार्यश्री ने अपने करकमलों द्वारा ध्वज पूजन एवं ध्वजारोहण किया। तालियों की गड़गड़ाहट के मध्य इस ध्वजारोहण के साथ ही सप्त दिवसीय स्वर्ण जयन्ती महोत्सव कार्यक्रम विधिवत् शुभारम्भ हो गया।

सभा मञ्च पर समागत धर्माचार्यों एवं सन्त-महात्माओं के समासीन होने पर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज की अध्यक्षता में समारोह का शुभारम्भ हुआ। मञ्च पर उपस्थित देशभर से आये प्रमुख सन्तों ने आचार्यश्री का माल्यार्पण कर स्वागत किया। तत्पश्चात् स्वर्णजयन्ती महोत्सव समिति के अध्यक्ष श्रीभीमकरणजी छापरवाल, कार्यकारी अध्यक्ष श्रीआत्मारामजी अग्रवाल, स्वागताध्यक्ष श्रीजुगलकिशोरजी तोषनीवाल, महामन्त्री श्रीराधेश्यामजी ईनाणी तथा प्रचारमन्त्री श्री डी० सी० वी० किरण तथा उपाध्यक्ष श्रीकल्याणमलजी सूतवालों ने मञ्च पर विराजमान श्री 'श्रीजी' महाराज, स्वामी श्रीवामदेवजी महाराज एवं दादू सम्प्रदायाचार्य स्वामी श्रीहरिरामाचार्यजी महाराज नरायना का माल्यार्पण कर स्वागत किया।

समागत विद्वानों के द्वारा सामूहिक रूप से वैदिक मङ्गलाचरण किया गया। पं० श्रीसीतारामजी श्रोत्रिय, पं० श्रीराधावल्लभजी शास्त्री द्वारा पौराणिक मङ्गलाचरण एवं श्री यमुनाशरणजी (सूरदासजी) पं० श्रीविश्वामित्रजी व्यास एवं मुनि शैलेन्द्राचार्यजी द्वारा संगीतात्मक मङ्गलाचरण हुआ। तत्पश्चात् सन्त शिरोमणि परम वीतराग स्वामी श्रीवामदेवजी महाराज ने अपने करकमलों द्वारा भगवद्चित्रों पर माल्यार्पण करते हुए दीप प्रज्वलित कर समारोह का उद्घाटन किया।

उद्घाटन समारोह के इस पावन अवसर पर मञ्च पर प्रमुख सन्तों में श्रीमहन्त श्रीहरिदासजी महाराज दिगम्बर अनी नासिक, श्रीमहन्त श्रीसन्तसेवकदासजी महाराज निर्वाणी अनी अयोध्या, श्रीमहन्त श्रीनन्दरामदासजी महाराज निर्मोही अनी अहमदाबाद, महामण्डलेश्वर श्रीव्रजविहारीशरणजी 'राजीव' अहमदाबाद, श्रीमहन्त श्रीहरिवल्लभदासजी शास्त्री किशनगढ़-रेनवाल, अधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी वेदान्ताचार्य पञ्चतीर्थ श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ एवं श्री श्रीजी मन्दिर वृन्दावन, आदि-आदि अनेक प्रमुख सन्त-महन्त विराजमान थे। मेवाड़ महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी शास्त्री उदयपुर समारोह के कार्यक्रम का संचालन कर रहे थे। उद्घाटनोपरान्त स्वर्णजयन्ती महोत्सव के स्वागताध्यक्ष श्रीजुगलकिशोरजी तोषनीवाल बीजापुर, स्वागत मन्त्री श्रीराधेश्यामजी ईनाणी मदनगंज-किशनगढ़ एवं महोत्सव समिति के अध्यक्ष श्रीभीमकरणजी छापरवाल इचलकरंजी (महाराष्ट्र) ने अपने-अपने स्वागत भाषण का वाचन किया। जो क्रमशः आगे प्रकाशित किये जा रहे हैं।
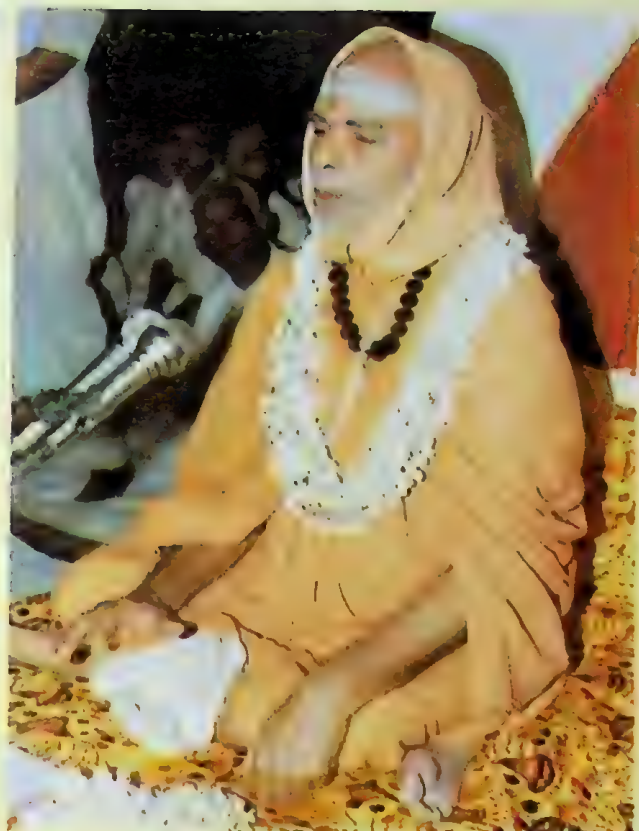
स्वर्णजयन्ती महोत्सव के शुभारंभ पर ध्वजारोहण करते हुए आचार्यश्री।

उद्घाटन भाषण करते हुए वीतराग स्वामी श्रीवामदेवजी महाराज।

अ.भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए श्रीवामदेवजी महाराज।

मञ्च पर सिंहासनासीन आचार्यवृन्द – बायें से – अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीरामेश्वरानन्दजी महाराज (अहमदाबाद) जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर स्वामी श्रीवासुदेवानन्द सरस्वतीजी महाराज, जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज (निम्बार्कतीर्थ–सलेमाबाद) जगद्गुरु श्रीरामानुजाचार्य श्रीवासुदेवाचार्यजी महाराज (अयोध्या) जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीहर्याचार्यजी महाराज (अयोध्या) सन्त शिरोमणि श्रीमहन्त श्रीनृत्यगोपालदासजी महाराज (अयोध्या)।

पाण्डाल पर प्रवचन श्रवण करते हुए असंख्य पुरुष एवं महिला समाज।

स्वर्णजयन्ती महोत्सव एवं अ० भा० सनातन धर्म सम्मेलन के–

स्वागताध्यक्ष–श्रीजुगलकिशोर तोपनीवाल का

* स्वागत भाषण *

प्रातः स्मरणीय जगद्गुरु शंकराचार्य, चतुःसम्प्रदाय जगद्गुरु वैष्णवाचार्य, विभिन्न सम्प्रदायाचार्य, वन्दनीय महामण्डलेश्वर, मण्डलेश्वर, श्रीमहन्त, सन्त–महात्मा, समादरणीय विद्वद्वृन्द, समुपस्थित सज्जन महानुभाव एवं मातृशक्ति !

आज हमें श्रीसर्वेश्वर प्रभु की महती कृपा से आचार्यचरणों के पीठाभिषेक-अर्द्ध-शताब्दी पाटोत्सव पर स्वर्णजयन्ती महोत्सव एवं सनातन धर्म सम्मेलन आयोजित करने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आज की इस पावन वेला में श्रीचरणों के वात्सल्यमय अनुग्रह की प्रत्यक्ष अनुभूति से हमारा रोम-रोम उल्लसित है तथा हम सब श्रीचरणों में शत-शत नमन करते हैं।

पुण्य भूमि भारत की वन्दना करते हुए देववृन्द कहते हैं कि भगवत्कथा, उत्सव-महोत्सव, सन्त-समागम, यज्ञ-अनुष्ठान, जप-तप-दान आदि देवदुर्लभ पुण्यकर्म विविध अवतार धर्मप्राण भारतवर्ष में ही सुलभ है। वीर प्रसूता यह मरुधरा, शक्ति, भक्ति एवं विरक्ति की त्रिवेणी है, जिसके इस अञ्चल में कोटि-कोटि तीर्थों के गुरु पुष्करराज विद्यमान हैं, जहाँ सदियों से ऋषि-महर्षि जन कल्याण की मङ्गल साधना में निरत रहे हैं। आज उसी क्रम में पद्म पुराणोक्त ऐतिहासिक इस निम्बार्कतीर्थ में यह विराट् सनातन धर्म सम्मेलन राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की ज्वलन्त समस्याओं के निराकरणार्थ निर्णायक विचार प्रदान करने हेतु आयोजित हुआ है।

वर्तमान समय में मानव ने अध्यात्मरहित भौतिक सुख साधनों की अपरिमित उपलब्धि की है, जिससे मानव जीवन भावना शून्य पशुवत् होता जा रहा है। सत्य, अहिंसा, करुणा, सदाचार, आदि की उदात्त भावनाओं के अभाव में मानव सर्वतोभावेन अशान्त है।

ऐसी परिस्थिति में सर्वविध शान्ति के लिए मानव मात्र धर्माचार्यों, सन्त-महात्माओं एवं मूर्धन्य विद्वानों से दिशा निर्देशन प्राप्त करने के लिए उत्कण्ठित है।

यह अत्यन्त गौरव का विषय है कि अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वर श्री "श्रीजी" महाराज ने विश्व मङ्गल की पवित्र भावना से इस महान् सम्मेलन एवं श्रीगोपाल महायाग का सङ्कल्प किया है। आपश्री की सङ्कल्पसिद्धि के प्रति हम सब कृतज्ञ होकर सफलता का शुभाशीर्वाद चाहते हैं।

पूज्य धर्माचार्यों, सन्त-महात्माओं तथा समागत अतिथियों का यथोचित सेवा सत्कार सम्पन्न होना इस ग्रामस्थ पीठस्थल पर अत्यन्त श्रमसाध्य है, अतः असुविधाओं एवं त्रुटियों के लिए करबद्ध क्षमा प्रार्थना है।

इस सम्मेलन को लोकहितकारी बनाने के लिए भगवान् सर्वेश्वर श्रीराधामाधव प्रभु से मङ्गलमय प्रार्थना है।

जय श्रीसर्वेश्वर ! जय भारत !!

स्वागत महामन्त्री : श्रीराधेश्याम ईनाणी का

– स्वागत भाषण –

प्रातः स्मरणीय भगवत्स्वरूप समस्त धर्माचार्यचरण ! परमपूज्य सन्त महन्त, श्रीमहन्त, मण्डलेश्वर, महामण्डलेश्वर ! समादरणीय विद्वज्जन एवं आत्मीय महानुभाव !

देववृन्द वन्दित भारत धर्म-प्राण देश है। यह विश्वगुरु पद पर प्रतिष्ठित रहा है। इस पावन धरती पर जब-जब भी धर्म की हानि हुई है तब भक्तवत्सल भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु ने स्वयं अथवा पार्षदादि के रूप में प्रकट हो इसका उद्धार किया। वर्तमान समय में भी धार्मिक-राजनैतिक-सामाजिक सभी क्षेत्रों में आडम्बर-अनाचार-भ्रष्टाचार आदि व्याप्त है। महाविनाशकारी आतङ्कवाद से राष्ट्रीय जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। अतिवृष्टि-अनावृष्टि, अकाल-अभाव, दुर्भिक्ष-भूखमरी, दरिद्रता-महँगाई-बेरोजगारी-बेबसी से हम सभी संत्रस्त हैं।

प्रलयंकारी वैज्ञानिक विभीषिका से सम्पूर्ण विश्व अशान्त है, मानवता प्रदूषित पर्यावरण से आक्रान्त है। भौतिकवाद ने जीवन को नीरस और भावशून्य बना दिया है। इस संकट की निवृत्ति का एकमात्र उपाय है भारतीय संस्कृति के अनुकूल जन-जन में धार्मिक भावना, सदाचार, वेदादिशास्त्रों के प्रति निष्ठा जागृत कर विश्व को नई दिशा देना।

अतः सभी समागत धर्माचार्य, विद्वान्-विचारक, दार्शनिक जननेता एकत्रित होकर विचार विमर्शपूर्वक ऐसा सरलतम मार्ग निकालें जिससे पुनः भारतीय जन जीवन में सुख शान्ति की स्थापना हो, राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में आज की ज्वलन्त समस्याओं का समुचित समाधान हो, इसी महत्वपूर्ण उद्देश्य से पूज्यपाद अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वर श्री "श्रीजी" महाराज के आचार्यपीठाभिषेक-अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव-स्वर्णजयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में यहाँ पर यह सप्त दिवसीय अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया है, जिसके पुनीत उद्घाटन समारोह में मैं आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ। ज्येष्ठ मास के भीषण ताप से तप्त मरुधरा का यह अञ्चल विषम जलवायु से युक्त है तथा यहाँ आपके योग्य सुख सुविधा की व्यवस्था समुचित नहीं हो पायी है। अतः आपसे विनम्र क्षमा प्रार्थना है। हम श्रीसर्वेश्वर भगवान् से पुनः पुनः मंगलकामना करते हैं कि यह सम्मेलन जन-जीवन में अभीष्ट उपलब्धियाँ लाने में सफल हो।

जय श्रीसर्वेश्वर। जय भारत ॥

महोत्सव समिति के अध्यक्ष : श्रीभीमकरण छापरवाल का

-: स्वागत भाषण :-

परमपूज्य धर्माचार्यचरण, सम्माननीय महामण्डलेश्वर-मण्डलेश्वर, सन्त-महन्त ! आदरणीय विद्वद्वृन्द, समागत श्रद्धास्पद महानुभाव !

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ।

भारत की पावन धरित्री पर जब-जब भी आसुरी शक्तियाँ प्रबल होती हैं और दैवी शक्तियों का ह्रास होने लगता है तब-तब ही अखिल ब्रह्माण्डनायक सर्वनियन्ता सर्वेश्वर श्रीहरि अपने व्यूहों-पार्षदों सहित श्रीराम कृष्ण रूप में अवतीर्ण होकर अधर्म का सर्वविध शमन एवं धर्म का पुनरुत्थान करते हैं ।

इस प्रकार अपनी लीलाभूमि यह भारत उन्हें अत्यन्त प्रिय है । देवगण भी यहाँ जन्म लेने को लालायित होते हैं । जहाँ आज आप और हम बैठे हुए हैं यह स्थल भी अति प्राचीन है । पद्मपुराण के अध्याय १५८ में वर्णित निम्बार्कतीर्थ नाम से यह प्रख्यात है । पद्म-पुराण के अनुसार भयंकर कोलाहल दैत्य के भय से सूक्ष्म रूप धारण कर शंकर ने बिल्व वृक्ष में, विष्णु ने पीपल में, और सूर्य ने निम्ब वृक्ष में आश्रय लिया था । निम्ब वृक्ष में सूर्य ने जिस स्थान पर आश्रय लिया वह निम्बार्कतीर्थ कहलाया । यही वह स्थल है । यहाँ पर भक्ति भागी-रथी की अजस्रधारा निरन्तर प्रवाहित है । सृष्टिकर्ता ब्रह्मा की यज्ञस्थली पुष्कर क्षेत्र की इस पावन धरा को भक्तिमती मीरा ने अपनी रसमयी अनन्य प्रेमाभक्ति से आप्लावित किया है । यह भी हमारे जन्म-जन्मान्तरों के पुण्य का फल है कि ऐसे धर्म, ज्ञान, भक्ति के त्रिवेणी स्वरूप प्रदेश में अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ स्थित है, जिसे वर्षों से सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार के प्रमुख केन्द्र होने का गौरव प्राप्त है ।

हमारे पूज्य आचार्यचरण हमारी अमूल्य निधि हैं । आपश्री के विगत ५० वर्ष के आचार्यत्व में इस आचार्यपीठ ने अनेक लोक कल्याणकारी धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्य सम्पादित किये हैं । आज से १८ वर्ष पूर्व आयोजित सनातन धर्म सम्मेलन से जन-मानस इतना अधिक प्रभावित हुआ कि कई बार श्रीचरणों में ऐसा सम्मेलन पुनः आयोजित करने की प्रार्थनाएँ की गई ।

श्रीचरणों की अनुपम सत्प्रेरणा से आचार्यपीठ तथा श्रीगोपालद्वारा किशनगढ़ का जीर्णोद्धार, निम्बार्कतीर्थ सरोवर का पुनर्निर्माण, आद्याचार्य तपःस्थली निम्बग्राम, श्रीनिम्बार्क गोपीजनवल्लभ मन्दिर निम्बार्ककोट अजमेर, श्रीनिम्बार्कनिकुञ्जविहारी मन्दिर निम्बार्कनगर जयपुर, श्रीनिम्बार्क मारुति मन्दिर मङ्गलरेडी (खातोली मोड़) आदि-आदि विशाल देव स्थानों का नव निर्माण एवं कुम्भादि पर्वों में निम्बार्कनगर उत्सव, महोत्सव तथा युगसन्त श्रीमुरारी बापू द्वारा श्रीरामकथा आदि के आयोजन विशेषतया उल्लेखनीय हैं ।

इतना ही नहीं आचार्यश्री ने सतत साहित्य साधना से परम्परागत भक्तिभावना, सदाचार, राष्ट्रभक्ति तथा युगसमीचीन चेतना को उजागर किया है । आपश्री के ग्रन्थ 'भारत-भारती वैभवम्' एवं 'भारत कल्पतरु' को राष्ट्रीय स्तर का सम्मान मिला है । इसी क्रम में आपकी नीति-रीति, भक्ति, उक्ति से पूर्ण अभिनव रचना 'विवेकवल्ली' का इस अवसर पर विमोचन भी उल्लेखनीय है । आपश्री ने स्वधर्मामृतसिन्धु, नित्यकर्मपद्धति एवं क्रमदीपिका जैसे उपासनापरक दुर्लभ ग्रन्थों का पुनः प्रकाशन कराया है एवं वर्तमान में व्रजदासी भागवत जैसे विशाल ग्रन्थ का सर्व प्रथम-प्रकाशन कराने का सर्वतोमुखी कार्य सम्पादित कर रहे हैं यह आध्यात्मिक क्षेत्र में वहुत बड़ी उपलब्धि है ।

श्रीचरणों के श्रीनिम्बार्क चरित का फिल्माङ्कन तथा भगवतलीला गायन के केसेट आदि कार्यों से भक्त समुदाय को सदाचारपूर्ण आधुनिक दृश्य श्रव्य की अपूर्व सुविधाएँ मिली हैं । किं बहुना आचार्यपीठ का यह स्वर्णिम युग है, जिसका स्वर्ण जयन्ती समारोह मनाने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ है ।

आज राष्ट्र के समक्ष उपस्थित ज्वलन्त प्रश्नों को पूज्य धर्माचार्यों एवं विशिष्ट विद्वानों के विचारार्थ इस विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के मञ्च पर रखने का स्वर्णिम सुअव-सर हमें श्रीगुरुचरणों की कृपा से ही प्राप्त हुआ है ।

आपको इस क्षेत्र में ऐसी ग्रीष्म ऋतु में आह्वान करना हमारा कष्टदायी प्रयास है, पर स्वर्णजयन्ती पाटोत्सव मनाने की भक्तों की उदात्त भावना ने हमें प्रेरित किया । एतदर्थ विनशतापूर्वक क्षमायाचना के साथ हम आपका हार्दिक स्वागत करते हैं ।

जय सर्वेश्वर ! जय भारत !!

सम्मेलन के उद्घाटक स्वामी श्रीवामदेवजी महाराज का–

उद्घाटन भाषण

श्रीसर्वेश्वर प्रभु के मङ्गलात्मक स्मरणानन्तर स्वामी श्रीवामदेवजी महाराज ने सनातन धर्म की व्याख्या करते हुए कहा कि सनातन ईश्वर की सनातन वेदवाणी के द्वारा सनातन जीव कल्याण के लिए जो दिव्य उपदेश है उसको सनातन धर्म कहते हैं। जिसकी विशेषता है कि आज सारी सम्प्रदायों के सन्त एक साथ एक मञ्च पर उपस्थित होकर अपने धर्म की रक्षा और स्वरूप को लेकर विचार करते हैं। हमारे देश में अनेक प्रकार के धर्मों का स्वरूप, अनेक उपासनाओं का स्वरूप प्रचलित है। सनातन धर्म की अनेक शाखायें होते हुए सबकी सब हमको परमेश्वर को प्राप्त कराने के लिए है। कोई भी शाखा बड़ी या छोटी नहीं है। किसी भी शाखा का सिद्धान्त स्वीकार करके हम कल्याण को प्राप्त कर सकते हैं। हमारे धर्म की दूसरी विशेषता है, सब लोग सुखी हों, सब लोग रोग रहित हों और सब लोग सुन्दर-सुन्दर धार्मिक पदार्थों को देखें ऐसी कामना करता है। मुस्लिम समाज के अन्दर स्त्री मस्जिद में जाकर नमाज नहीं पढ़ सकती तथा पति द्वारा तीन बार तलाक कहने पर उसे त्याग दिया जाता है लेकिन सनातन धर्म की उदारता है कि यहाँ मनुष्य और स्त्री को समान अधिकार दिया गया है। हमारे यहाँ माताओं के सम्मान की विशेषता है जिसमें सबसे बड़ा उत्सव साल भर में अट्ठारह दिन का भगवती-देवी का होता है। महाभारत में कहा गया है कि दूसरे धर्मों के प्रति जो धर्म कटुता रखता है वह धर्म नहीं है, कुधर्म है। इस उपदेश के कारण यहाँ यहूदी आया उसने अपनी साधना अपनायी और जब उनका देश इजराइल स्वतन्त्र हो गया तो यहाँ से जाकर उन्होंने यह कहा कि सारे यूरोप के अन्दर हमको प्रताड़ना मिली, सारे संसार के अन्दर हमको अपमान मिला लेकिन भारतवर्ष में जो सुविधा और सम्मान मिला सारे विश्व के अन्दर नहीं प्राप्त हुआ। आगे आपने कहा—हमको किसी भी धर्म से किसी प्रकार का कोई अलगाव अथवा द्वेष नहीं है परन्तु सनातन धर्म को यदि कोई तलवार के बल पर नष्ट करना चाहे तो हम महाराणा प्रताप एवं शिवाजी की तरह तलवार उठाये बिना नहीं रह सकते, चाहे श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी की तरह अपने पुत्रों को चिनवाना पड़े, चाहे समर्थ गुरु रामदासजी महाराज की तरह अन्याय के विरोध में संघर्ष करना पड़े। इस देश की धार्मिक परम्पराओं एवं संस्कृति को बदलने के लिए सन् २५ से ही इरादेबन्द कोशिशें की जारही हैं, तथा नेहरु, गाँधी, इन्दिरा गाँधी, और रावजी आदि सभी प्रधानमन्त्री इस देश को इस्लामिक राष्ट्र बनाने में सहायक हुये हैं। १५ अगस्त सन् १९४७ को मस्जिदों एवं मन्दिरों का जैसा स्वरूप था वैसा ही रहेगा, यदि किसी ने उसमें ननू नच की तो तीन साल की सजा और दस हजार रुपये जुर्माना हो सकता है, यह कानून बन चुका है, जिसने कि राम-कृष्ण जन्मभूमि और काशी विश्वनाथ के मन्दिर पर तो हमारी जुबान ही बन्द कर दी है।

कानून के रूप में अब तक बिल पास कर यह लिखा है कि जहाँ रामलला हैं वह स्थिति जैसी की तैसी रहेगी और मस्जिद एवं मन्दिर उससे हटकर के बनेगा। ऐसी स्थिति में

हमारे धर्माचार्य एक ओर नया न्यास बनाने के लिए जहाँ-तहाँ साधु सम्मेलन करते हैं, यह बड़े आश्चर्य की बात है। ये सारी की सारी कड़ियाँ इस देश को इस्लामिक राष्ट्र बनाने की है। इस देश में अल्पसंख्यक यदि सुरक्षित नहीं है तो बताइये कि ढ़ाई करोड़ से ये बारह करोड़ कैसे हो गये, फिर भी अपनी सुरक्षा के लिए इस देश में राष्ट्र संघ की सेना को बुलाने की माँग करते हैं, इस बात को कहने की आज किसी भी नेता में तनिक भी सामर्थ्य नहीं है। अपनी जनसंख्या बढ़ाकर इस देश के ऊपर इस्लामिक राष्ट्र की छाया लाने का प्रयास किया जा रहा है जिसका कि जीता जागता उदाहरण बम्बई बम काण्ड है, यदि हिन्दुस्तान-पाकिस्तान का युद्ध हुआ तो बम्बई की तरह अन्य महानगरों में भी इस तरह विस्फोट कर दिया जायगा। अर्थात् पूरे देश को बारूद के ऊपर रख दिया है, यह सारा दोष इस देश के नेताओं का है जो इस्लामिक राष्ट्र बनाने का प्रयास कर रहे हैं और इसी प्रयास हेतु वह कांग्रेस में सम्मिलित हुये हैं कि वह इतना बड़ा उपद्रव खड़ा कर देंगे इस देश में कि पाकिस्तान मे लड़ना या युद्ध करना ही भूल जायेंगे और यह देश इस्लामिक राष्ट्र बनेगा यह उनकी भावना है। सन् १९२६ के अन्दर जब दयानन्दजी के शिष्य श्रद्धानन्दजी को अपनी बन्दूक की गोली से अकुलरसीद नाम के मुसलमान ने मार दिया तब अब्दुलकलाम ने यह बात कही थी कि इस देश को यदि अब्दुलकलाम जैसे सौ मुसलमान मिल जाय तो इस देश को इस्लामिक बना दूँगा। इसीलिए वह कांग्रेस में सम्मिलित हुए। मौलाना गौजूदी ने साफ लिखा है, मुसलमान राष्ट्रीय नहीं हो सकता और जो राष्ट्रीय है वह मुसलमान नहीं हो सकता, तो फिर बताइये कि यहाँ के लोग कैसे प्रेम करें। आप ये न समझना कि स्वामीजी मुसलमानों के द्वेष की बात कहते हैं, द्वेष की कोई बात नहीं है। यहाँ छागला हुआ है, जो यह कहता था कि मैं हिन्दू हूँ और मजहब से मुसलमान हूँ हम उसका आदर करते हैं। अब्दुलकलाम आजाद ने उस वक्त सात हजार मकतबों की नींव डाली तथा जब छागला शिक्षामन्त्री बना तो नेहरुजी से उसने कहा कि आप जो ये स्वतन्त्र रूप से मकतब और मदरसे चलाते हैं ये साम्प्रदायिकता के अड्डे हैं, इनमें आप और स्कूलों के पाठ्यक्रमों को भी रखिये, तो नेहरुजी ने उत्तर दिया कि आप मन्त्री पद से स्तीफा दे दीजिये। इन बातों को देखते हुए मैं छागला का बहुत सम्मान करता हूँ। इसी तरह मैं सरमतशाह, मियांमीर, असफाक उल्ला, रसखान और अब्दुल रहीम खान खाना तथा जो राष्ट्र भक्त मुसलमान हैं मैं हृदय से उनका बहुत बड़ा सम्मान करता हूँ, मुसलमानों से द्वेष नहीं। जो इस देश की संस्कृति को इस्लामिक संस्कृति में बदलना चाहते हैं उनसे हमारा नैतिक युद्ध है द्रोह नहीं। और इस नैतिक युद्ध को हम लड़ेंगे, चारों धर्म, चारों आश्रम धर्म की रक्षा के लिए शस्त्र उठाओ यह हमारी शास्त्रीय आज्ञा है। वेद ने जिस कार्य को करने की आज्ञा दी है वह ही धर्म है, शास्त्र के अनुसार कार्य करना ही धर्म है। कुमारिल भट्ट ने सबका उल्लेख और निराकरण किया है। किन्तु हमारे धर्म की वास्तविक परिभाषा एवं लक्षण जो भागवत् में दिया है वह हो है। वेद ने जिस कार्य को करने की आज्ञा दी है वह धर्म है और जिसे न करने की आज्ञा दी है वह कुधर्म है। इसके विषय में महाभारत में भीष्मजी की एक कथा आती है कि भीष्मजी अपने पितरों का उद्धार करने के लिए गयाजी गये और वहाँ अपने पितरों हेतु उन्होंने पिण्डदान बनाये, बनाकरके जैसे ही उठाने के लिए तैयार हुये तो उस फल्गु नदी में से एक हाथ निकला, उस हाथ में एक सोने का कंगन था, भीष्मजी देखते हैं कि ये तो पिताजी

श्रीशन्तनुजी का हाथ है और याचना कर रहे हैं माँग रहे हैं कि मेरे लिए जो पिण्ड बनाया है उसे मुझे दे दो, किन्तु भीष्मजी विचार करते हैं कि मुझे क्या करना चाहिए ? एक ओर तो साक्षात् पिता अपने पिण्डों को मांगने के लिए आये हैं और हाथ पसार रहे हैं दूसरी ओर शास्त्रीय आज्ञा है कि पिण्डों को वेद मन्त्रों द्वारा डाब के ऊपर रखा जाय तो पितरों को मिलेगा नहीं तो नहीं मिलेगा । इसमें आपकी बुद्धि तो यह ही निर्णय करेगी कि जब साक्षात् पिता मांग रहे हैं तो उनके हाथ में क्यों न रख दिया जाय, लेकिन भीष्मजी ने सोचा कि धर्म का तो शास्त्र निर्णय करता है जो शास्त्र को त्याग कर कार्य करता है, अपने अनुसार बर्तता है वो धर्म पालन नहीं कर सकता, इसलिए मुझे अपनी बुद्धि से नहीं शास्त्र बुद्धि से काम लेना चाहिये । अतः उन्होंने पिता के हाथ पर न रख कर पिण्डों को डाबों के ऊपर रख दिया । उसी समय आकाशवाणी हुई शन्तनुजी महाराज बोले, पितर देवता बोले कि धन्य हो भीष्म, तुम धर्म के स्वरूप को जानते हो क्योंकि धर्म तो शास्त्र की दृष्टि से पालन होगा । हमारा शास्त्र संसार के शास्त्रों में वैज्ञानिक शास्त्र है । हमारी मोटी-मोटी परम्पराओं के उपर सारे संसार का वैज्ञानिक विचार करता है, खोज करता है कि हिन्दू पीपल को क्यों पूजता है, केला को क्यूँ पूजता है, तुलसी की पूजा क्यों करता है, हमारी मातायें यूँ क्यों कहती हैं कि अभी दोंनों दिन मिल रहे हैं हम तुम्हें रोटी नहीं देंगे हम जब दिया जला लेंगे तब रोटी देंगे, हिन्दू शौच-पेशाब के बाद हाथ-पैर क्यों धोता है, गऊ को माता क्यों कहता है इत्यादि खोज करके इनमें वैज्ञानिक चमत्कार भी पाये हैं, इसलिए एक अंग्रेज ने लिखा है कि दुनिया के अन्दर जब कभी पूरी तरह खरा उतरेगा तो हिन्दू धर्म उतरेगा और कोई धर्म वैज्ञानिक नहीं । अतः हमको अपना शास्त्रीय रीति–रिवाज, पहनना-ओढ़ना, खाना-पीना इत्यादि नहीं छोड़ना चाहिये । लेकिन हम धीरे-धीरे उनको छोड़ते चले जा रहे हैं और छोड़ने का सबसे बड़ा कारण बना इस धर्मप्राण देश के अन्दर धर्म निरपेक्षता की आवाज, ४६ वर्ष से इस देश ने जिनको देवता माना था, रक्षक माना था ऐसे नेहरु और गांधी को शरण में देश चला गया और उनके द्वारा इस देश को धर्मनिरपेक्ष घोषित कर दिया तो भ्रमित हिन्दू अपने धर्म को छोड़ता चला गया । इसका कारण है कि वह यह कहते हैं कि हम हिन्दू-मुसलमान नहीं मानते हम तो मानवता को मानते हैं अतः भारतीयों को जो एक बहकावे का उपाय किया गया है, धर्म निरपेक्षता । इससे हमारे धर्म के संस्कार समाप्त होते चले जारहे हैं । हमें विश्वास है कि अब महात्माओं के अन्दर जो एक जागृति है उससे हम इस देश के अन्दर धर्म निरपेक्षता के नारे को मिटा करके छोड़ेंगे । मेरा और हमारे सब सन्तों का यह विश्वास है कि हमारी समवेत शक्ति के बिना कोई रामजन्मभूमि का मन्दिर नहीं बना सकता सरकार की कोई ताकत नहीं कि वह अपना न्यास बना करके मन्दिर बनवाले, हमारा पूरा विश्वास है और इसी प्रयास में हम लगे हुये हैं । अत्यन्त प्रसन्नता है कि श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में वर्तमान श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री "श्रीजी" महाराज के पीठासीन के ५० वर्ष पूर्ण होने पर उनके पाटोत्सव के उपलक्ष्य में यहाँ अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का पवित्र आयोजन अवश्य ही फलदायी होगा तथा हमारे देश में व्याप्त विभिन्न विषम समस्याओं के सम्बन्ध में सम्मेलन में समागत धर्माचार्यों, सन्त-महात्माओं, विद्वज्जनों द्वारा अपने गहन चिन्तन से सुखद समाधान भी होगा ऐसा हम विश्वास करते हैं –बोलो श्रीकृष्ण भगवान् की जय । ★

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर–

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज का

आशीर्वादात्मक प्रवचन

संसार के यावन्मात्र जितने भी चराचर प्राणी हैं उन समस्त प्राणियों को प्रभु अपनी त्रिगुणात्मक माया के द्वारा अपने-अपने कर्मों में प्रवृत्त करते रहते हैं। प्रभु की माया बड़ी अद्भुत है, विलक्षण है. इसी का संकेत किया है, आचार्यप्रवर श्रीनिम्बार्क भगवान् ने अपने वेदान्त कामधेनु दशश्लोकी में—"अनादिमायापरियुक्तरूपम्" प्रभु की जो अनादि माया है जो अनन्त, अचिन्त्य, अनिर्वचनीय माया है उस माया से प्राणी अपने स्वरूप का सम्यक् परिज्ञान नहीं कर सकता है। यह जो भी कुछ आज यहाँ पर दृश्य उपस्शित होरहा है यह उन्हीं अनन्तकोटिब्रह्माण्डाधिपति भगवान् श्रीसर्वेश्वर की अचिन्त्य माया का ही स्वरूप है। मानव अपनी इच्छा के द्वारा, अपनी क्रियाओं के द्वारा किसी कार्य का शुभारम्भ करना चाहे तो वह अत्यन्त दुरूह है। श्रीसर्वेश्वर प्रभु जो अनुग्रहविग्रहस्वरूप हैं वे जब स्वयं चाहते हैं, इच्छा करते हैं तब संसार का सृजन कर देते हैं। इसी क्रम में यह जो भी कुछ यहाँ पर इस श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में, निम्बार्कतीर्थ में इस परम सुरम्य क्षेत्र में आज आनन्द का स्वरूप आप सब अवलोकन कर रहे हैं उन भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की माया का ही एक स्वरूप है।

आज के अठारह वर्ष पूर्व यहीं इस सुरम्य प्रांगण में हुए अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन में हमारे धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज ने जब रासपञ्चाध्यायी का क्रम से रस वर्षण किया था, तो कोटि-कोटि भगवद्जनों ने यहाँ पर एकत्रित होकर के उस रसामृत में अभिषिक्त होकर अद्भुत अनिर्वचनीय लोकोत्तर आनन्द प्राप्त किया था। हम सोच रहे थे कि स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज के बाद इस प्रकार का रस और जिस प्रकार स्वामी करपात्रीजी महाराज धार्मिक क्षेत्रों में सर्वत्र विचरण-संचरण करके महनीय उपदेश करते थे, मार्गदर्शन प्रदान करते थे, आज उस प्रकार का पथ प्रदर्शक आज हमारे सामने कौन हैं, कौन ऐसी विभूति है जो स्वामी करपात्रीजी महाराज के बाद ऐसी दिव्य प्रेरणा दे सके। यह विचार मन्थन हृदय में अनवरत चल रहा था किन्तु आज यहाँ ऐसा लग रहा है कि स्वामी करपात्रीजी महाराज ही श्रीवामदेवजी के रूप में प्रकट हो गये हैं और उन्हीं की भाँति हमारे धर्म के गूढ़तम तत्त्वों का परिवर्णन करते हुए आज हमारे सामने जो विषम समस्यायें हैं, राष्ट्र के सामने, सनातन धर्म, वैदिक धर्म के सामने, उन समस्याओं के समाधान के निमित्त आप कृत संकल्प हैं, दृढ़ प्रतिज्ञ हैं। ऐसे महान् विभूति जहाँ विराजमान हैं और उनके अन्तःकरण में दिव्य भाव धर्म की रक्षा के लिए, गोमाता की रक्षा के लिए, राष्ट्र की रक्षा के लिए, देव मन्दिरों पर होने वाले आक्रमणों की रक्षा के लिए, धर्म ग्रन्थों की रक्षा के के लिए अनवरत चिन्तना है, उसे सर्वेश्वर प्रभु निश्चय ही परिपूर्ण करेंगे इसमें कोई सन्देह नहीं है।

हमारी संस्कृति हिन्दू समाज की ही नहीं, समस्त प्राणीमात्र की मंगलकामना चाहती है। "सर्वे कुशलिन सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्" के अनुसार भारतीय संस्कृति का यह उपदेश संसार के समग्र प्राणियों की मंगल-कामना के लिए है। यहाँ तक कि हमारे यहाँ तो अपनी दन्त शुद्धि के लिए किसी वृक्ष की शाखा ग्रहण करने से पूर्व व्यक्ति उससे क्षमा याचना करता है। जिस संस्कृति में इतनी उदात्त भावना है, इतना शुद्ध निर्मल विचार है वह संस्कृति किसी का अहित कैसे सोच सकती है। किन्तु यदि हमारी हिन्दु संस्कृति पर, हमारे वैदिक धर्म पर, हमारे शास्त्रों पर, हमारे मन्दिरों पर, हमारी गोमाता पर, मातृवर्ग पर यदि कोई कुठाराघात करता है, अत्याचार-दुराचार करता है, तो उसका निराकरण करना हम सबका परम कर्तव्य है।

आज यह जो स्वरूप सनातन धर्म सम्मेलन का आपके सामने आया है, यह कैसे प्रकट हुआ यह तो उस प्रभु की लीला ही है। हम सबों के हृदय में जो धारणाएँ, भावनाएँ, उत्कण्ठाएँ, उत्पन्न होती हैं वह सब उन्हीं प्रभु की प्रेरणा का एकमात्र फल है। पीठ के वरिष्ठ परिकरजन हमारे पास आये और भावना प्रकट की कि आपश्री का इस वर्ष ५० वां पाटोत्सव है, प्रतिवर्ष वैसे तो कुछ न कुछ उत्सव होता ही है, इस वर्ष अच्छे रूप में कोई बड़े कार्यक्रम के साथ यह उत्सव हो ऐसी हम सब की भावना है, रूपनगर के कार्यकर्ता श्रीदिनेश किरण भी आये उन्होंने भी यही भावना प्रकट की। हमको तो कुछ स्मरण भी नहीं था कि यह कौनसा पाटोत्सव है, इन्होंने जब कहा तो हमने निषेध कर दिया कि भगवान् का प्रतिवर्ष जैसा उत्सव होता है वही होगा, विशेष उत्सव हो ऐसी इसमें क्या बात है। निषेध करने पर इन लोगों ने दुःख का सा अनुभव किया और गुप्त रूप से भक्तों को जहाँ-तहाँ पत्र डालकर अपना मन्तव्य प्रकट किया। भक्त लोग एकत्रित हो गये और इस क्षेत्र के महन्त श्रीहरि-वल्लभदासजी शास्त्री किशनगढ़-रेनवाल की अध्यक्षता में उपस्थित होकर के हमारे सामने उपस्थित हुए, हमने जब पूर्ण निषेध कर दिया तो उन्होंने भाव प्रकट किया कि हम तो चाहते हैं कि पाटोत्सव के सन्दर्भ में पुनः आचार्यपीठ पर एक विराट् सनातन धर्म सम्मेलन हो जैसा अठारह वर्ष पूर्व हुआ था। जब हमने उनके यह भाव सुने तो समस्त भक्तों से कहा कि अब हम निषेध नहीं करते, यदि अर्जुन को निमित्त करके सारे संसार के प्राणियों को गीता का उपदेश होता है, ऐसे ही यदि हमको निमित्त करके यहाँ पर विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का महनीय समायोजन होता है और समस्त धर्माचार्यप्रवर, सन्त-महात्मावृन्द एवं विद्वज्जन पधारते हैं, भक्तिमती मातायें पधारती हैं तो आनन्द के साथ यह आयोजन किया जाय। आज सर्वेश्वर प्रभु के कृपा प्रसाद से भगवद् भक्तों की समिति का निर्माण होकर के उसका शुभा-रम्भ हुआ। पूर्व में हृदय में बड़ी वेदना हो रही थी कि ज्येष्ठ मास के भीषण ताप में कैसे कार्यक्रम होगा, परन्तु इन विभूतियों का जो स्वाभाविक सारल्य है जिन्होंने ग्रीष्म का संकट सहन करके प्रखर तीव्र ताप में अपने-अपने संस्थानों, मठों, देवालयों से पधार कर अपने उपदेशों की रसवृष्टि करने का अनुग्रह कर सबको जो उपदेश दान करेंगे उस उपदेश को प्राप्त करके सभी कृतकृत्य हो जायेंगे। आचार्यप्रवर, अनेक सन्त-महन्त महानुभावों के दर्शन करने का सौभाग्य आप लोगों को यहाँ प्राप्त होगा, यह पुष्करराज का क्षेत्र है जो समस्त कोटि-कोटि तीर्थों के गुरु हैं, राजा

[शेष पृष्ठ ९२ पर]

दादूसम्प्रदायाचार्य श्रीहरिरामाचार्यजी महाराज, नरायना का–

पावन-प्रवचन

परम आदरणीय श्री 'श्रीजी' महाराज, माननीय श्रीवामदेवजी महाराज अन्य सन्त-महात्मागण, समुपस्थित सज्जनों। हमारे लिए बडे उल्लास का दिन है जो कि श्री 'श्रीजी' महाराज के पीठाभिषेक का ५० वां पाटोत्सव स्वर्णजयन्ती यहाँ मनाया जा रहा है यह भी इतिहास की एक विशेषता होगी कि ५० वर्ष तक अपने तपोमय साधना के द्वारा और लोक कल्याण की शुद्ध भावना लिए हुये इस पीठ पर बैठ कर ५० वर्ष पूर्ण किये और भक्तों द्वारा ये स्वर्णजयन्ती पाटोत्सव इतने समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। श्री 'श्रीजी' महाराज के इस सौम्य, तेजस्वी आकृति, सौम्य स्वभाव, तीव्र तपस्या, तीव्र साधना और आपका महान् वैदुष्य, इन कारणों से हम बहुत ही प्रभावित हैं और हम हार्दिक श्रद्धा श्री 'श्रीजी' महाराज के प्रति रखते हैं। श्री 'श्रीजी' महाराज का सम्बन्ध और इस स्थान व पीठ का सम्बन्ध दादू पीठ से बहुत लम्बा रहा है। दादूजी महाराज के समय में यहाँ श्रीपरशुरामजी महाराज इस पीठ पर आसीन थे, तभी से इस स्थान से सम्बन्ध बराबर चलता आ रहा है। हमारा इतिहास बतलाता है कि जब दादूजी महाराज नरैना में रहते थे तो अपने शिष्यों को प्रेरणा देते थे कि यहाँ एक पवित्र निम्बार्कतीर्थ, जहाँ निम्बार्काचार्यजी महाराज रहते हैं उनके दर्शन आपको अवश्य करना चाहिए और उनकी आज्ञा से शिष्य यहाँ आते थे। हमारा सौभाग्य रहा है कि श्री 'श्रीजी' महाराज के साथ में भी हमारा बहुत बड़ा सम्बन्ध रहा। श्री 'श्रीजी' महाराज का ये ५० वां पाटोत्सव स्वर्णजयन्ती के रूप में मनाया जा रहा है ये हमें पूर्ण विश्वास है कि इसी स्थान पर इन्हीं भक्तों के द्वारा आगामी हीरक जयन्ती भी इससे अधिक समारोह के साथ में मनाई जायेगी जिसे शायद हम नहीं देख पायेंगे परन्तु हीरक जयन्ती तो मनेगी। हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि श्री 'श्रीजी' महाराज को इतनी लम्बी आयु दे कि इस पाटोत्सव का सौ वर्ष पूरा करके अर्द्ध शताब्दी समारोह भी हम अपने नेत्रों से देख लें और श्री 'श्रीजी' महाराज जैसे योगीराज के लिए यह असम्भव नहीं है यदि चाहें तो सौ वर्ष पूर्ण करके अपने सान्निध्य में शताब्दी समारोह भी यहाँ मनाया जा सकता है ये आपकी इच्छा के ऊपर है।

आज का युग बहुत विकट आ गया है। भौतिक युग के भौतिक विज्ञान की चकाचौंध में फँसा हुआ प्राणी उसमें उलझकर मानव धर्म को दिनों-दिन भूलता जा रहा है और अपनी प्रसन्नता और सुख को तिलाञ्जलि देता जा रहा है। पहले जमाने में भौतिक सुखों को तिलाञ्जलि देकर बड़े-बड़े राजा, महाराजा यहाँ के ऋषि-मुनियों के पास उनके चरणों में जा करके ये पूछते थे कि भगवन् सुख और समृद्धि का रास्ता हमें बतलाइये और वह यह प्रेरणा देते थे कि केवल भौतिकता में सुख नहीं है सुख की अनुभूति तो केवल आध्यात्मिक सहयोग के साथ में ही प्राप्त हो सकती है। दिनों-दिन आध्यात्मिकता का ह्रास होता जा रहा है। भौतिकता बढ़ रही है, मनुष्य भौतिक भोगों में फँस-फँस कर के आहार, निद्रा, आदि ये सांसारिक भोगों में लीन होकर प्राणी अपने मानवधर्म को खोता हुआ पशुवत् व्यवहार करता

हुआ पशुवृत्ति को धारण कर चुका है। भगवान् ने धर्म और अधर्म की व्याख्या करते हुए, धर्म और अधर्म के लक्षणों पर अच्छी तरह प्रकाश डाल दिया है जिसमें दो शक्तियाँ इस संसार में बतलाई है एक आसुरी शक्ति और दूसरी दैविक शक्ति, दैवी सम्पदा है और आसुरी सम्पदा है। दैवी सम्पदायुक्त व्यक्ति धर्म को समझता है वह श्रेष्ठ पुरुष माना जाता है। आसुरी शक्ति से युक्त प्राणी मानवता को खो देता है और दानव बन जाता है। मानव मानवधर्म का पालन करता हुआ भगवान् की ओर बढ़ता है और दानवता को लेकर के प्राणी निरन्तर नीचे गिरता हुआ नारकीय योनियों के अन्दर भटकता फिरता है। भगवान् ने स्पष्ट कह दिया है कि दैवी-गुण व्यक्ति का मैं इस मृत्यु संसार से उद्धार कर देता हूँ और जो आसुरी शक्ति से सम्पन्न प्राणी है वह आसुरी योनियों के अन्दर चले जाते हैं। परन्तु आजकल दैवी गुण हमारे अन्दर से विलीन होते जा रहे हैं। परमात्मा से हम दूर होते जा रहे हैं और आसुरी सम्पदा को लेकर के निरन्तर असुर बनते जा रहे हैं। आजकल हमारे नेताओं के मुँह से केवल धर्मनिरपेक्षता और साम्प्रदायिकता ये दो शब्द ही बराबर निकल रहे हैं, परन्तु आजतक यह कोई नहीं बतला सका है कि धर्मनिरपेक्षता क्या है और साम्प्रदायिकता क्या है। यदि धर्मनिरपेक्षता का नाम धर्म हीनता है तब तो यहाँ मानव का राज्य ही नहीं रहेगा, दानव ही राज्य करेंगे और यही प्रक्रिया निरन्तर चली आ रही है। इस विषय में श्रीवामदेवजी महाराज ने बहुत ही अच्छा प्रकाश डाल दिया है। सुकृत और पुण्य हमारे लिए धर्म है और पाप और दुश्कर्म हमारे लिए अधर्म है। धर्म का पालन करने वाले प्राणी का कभी भी अनिष्ट नहीं होता। भगवान् ने स्वयं कह दिया है कि धर्म और कर्तव्य का पालन करने वाले प्राणी की कभी भी दुर्गति नहीं होती। सन्तों ने तो और भी स्पष्ट शब्दों में कहा है कि—"दादू सुकृति मारग चालता बुरा न कबहुँ होय, अमृत ढ़ाका प्राणियां मुन्या न सुन्या कोय।" धर्म तो हमारा अमृत है इसको सेवन करने वाला प्राणी कभी भी मरने वाला नहीं है। और धर्म क्या है यह तो अभी वामदेवजी महाराज ने कह ही दिया है कि वेद भगवान् की जो आज्ञा है वो ही धर्म है, अर्थात् वेद भगवान् की आज्ञा का पालन करना ही धर्म है। केवल भौतिक सुखों में फँस-फँस कर के प्राणी अपने कर्तव्य और धर्म को भूल कर अधर्म पूर्वक संसार के आनन्दों में लीन रहने वाला प्राणी महान् महामूर्ख कहलाता है। लोग कहते हैं रहना नहीं देश विराना है, हम यहाँ पर रहने वाले नहीं हैं हम जाने वाले हैं, जब जाने वाले हैं तो यहाँ रहना नहीं है यहाँ की सुख समृद्धि को जुटाने के लिए हम पाप करें और जहाँ हमें जाना है वहाँ के लिए कोई मार्ग प्रशस्त न करें, कोई उपाय न करें तो आखिर हमारी क्या गति होगी, कहाँ जायेंगे, हमारे लिए कहाँ स्थान है। प्राणी के लिए जो धर्म और अभ्युदय बतलाया है साधनों की उपलब्धि और पारमार्थिक उपकार अर्थात् इस लोक में भी आनन्द पूर्वक रहना और परलोक में भी आनन्द पूर्वक रहना यही बुद्धिमानी मानी गई है। जहाँ हमें रहना नहीं है वहाँ इतना संभार किया अनेक पाप किए, अपराध किए, इतना संभार इकट्ठा और जहाँ जाना है वहाँ के लिए कोई उपाय नहीं किया तो इससे बढ़कर हमारे लिए मूर्खता क्या होगी। संसार में न हम कुछ लेकर आये हैं न कुछ हमें ले जाना है, जब कुछ लेकर के नहीं आये तो हमारा कुछ भी नहीं था यहाँ जो कुछ है ले जा नहीं सकेंगे। जिस वस्तु में ममत्व रखते हैं वह हमारी वस्तु नहीं है, प्रभु ने हमें दिया है प्रभु ही लेने वाला है प्रभु ही देने वाला है इस प्रभु को समझकर के प्रभु की सेवा को समझते हुए दो ही काम संसार के

अन्दर बतलाये गये हैं पर उपकार, सुकृति और परमात्मा का नाम ये दो चीज ही संसार के अन्दर बतलाई गयी है। आजकल धर्म को लोप करने का प्रयत्न किया जा रहा है, बड़े-बड़े पढ़े-लिखे, अपने को योग्य समझने वाले, अपने को विद्वान् समझने वाले, अपने को बुद्धिमान् समझने वाले प्राणी भी धर्म की व्याख्या को नहीं समझ सके हैं। मानवधर्म को नहीं समझ सके हैं और इस प्रकार आधुनिक युग में पले प्राणी, आधुनिक शिक्षा को प्राप्त किए हुए प्राणी धर्म को भूलते जा रहे हैं और दूसरों को भी भुलाते जा रहे हैं, गुमराह करते जा रहे हैं, इसलिए आप सब लोगों को इन सन्त-महात्माओं के चरणों का आश्रय लेना चाहिए इन्हीं की सेवा में रहते हुए हम सच्चे धर्म को समझें और धर्म को समझकर के उसका पालन करें यह ही एक रास्ता रह गया है। जो कोई सन्तों के त्याग और तपस्यापूर्ण चमत्कारिक सत्संग में आयेगा उसका कल्याण होगा यदि सन्तों का आशीर्वाद हमें प्राप्त नहीं हुआ, महापुरुषों का, श्री 'श्रीजी' महाराज जैसे महापुरुष-तपस्वियों का यदि हमें आशीर्वाद प्राप्त नहीं हुआ तो हमारा कभी भी कल्याण होने वाला नहीं हैं. इससे अधिक हम क्या कहें हम तो श्री 'श्रीजी' महाराज के दीर्घायु की कल्पना करते हुए भगवान् मे प्रार्थना करते हैं कि आपको दीर्घायु बनावें और इसी तरह से आयोजनों का सम्मेलन होता रहे और इसी तरह से प्राणियों को प्रेरणा मिलती रहे। ※

आशीर्वादात्मक प्रवचन— [शेष पृष्ठ ८९ का]

से कहीं अधिक गुरु की महिमा होती है, उसी तीर्थगुरु के मंगलमय अंक में यह निम्बार्कतीर्थ है जो पौराणिक तीर्थ है, पद्मपुराण के १५८ वें अध्याय में निम्बार्कतीर्थ के महात्म्य का वर्णन है, आज से १८ वर्ष पूर्व यहाँ हुए अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन में जगद्गुरु शंकराचार्य पुरीपीठाधीश्वर श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज ने घोषणा की थी कि इसका जो परम प्राचीन नाम है निम्बार्कतीर्थ वही प्रचलित हो, आज उसका पुनः स्मरण हो रहा है, यद्यपि हमने बहुत चेष्टा की, कि उनका यहाँ पधारना हो, किन्तु उनका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं है, वाराणसी में वे इस समय स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। स्वामी करपात्रीजी महाराज जिनका आज हम इन प्राकृतिक नेत्रों से दर्शन करने में सक्षम नहीं हैं किन्तु स्वामी वामदेवजी के रूप में करपात्रीजी का हमें प्रत्यक्ष दर्शन होरहा है, इसी प्रकार हमारे तीनों अनियों के श्रीमहन्त आचार्यप्रवर, महामण्डलेश्वर, अनेक सन्त-महन्त, विद्वज्जन, संगीतज्ञ कोई कहीं से कोई कहीं से यहाँ पधारे हैं, बम्बई से श्रीरामानन्दजी सागर जिनके द्वारा रामायण का जो दिव्य पावनतम चरित्र दूरदर्शन के माध्यम से जनमानस को देखने को मिला वे, संगीतसम्राट् श्रीरवीन्द्रजी जैन तथा महाभारत सीरियल के निर्माता श्रीबलदेवराजजी चोपड़ा भी यहाँ पधारेंगे और भी अनेक महान् विभूतियों का यहाँ आगमन हो रहा है। हमारे समिति के कार्यकर्ता, अध्यक्ष, मन्त्री, स्वागताध्यक्ष और समस्त कार्यकर्तागण हैं वे सब सेवा भाव से कार्यरत हैं। वे यह अवश्य ध्यान रखें आचार्यप्रवर, सन्त-महात्मा या भगवद्भक्त जो भी पधारें उनकी सेवा में त्रुटि न हो, इसका ध्यान अधिक से अधिक रखा जाय, त्रुटि रहने पर हमको जो अन्तःकरण में कष्ट होगा, अतः ऐसी सुन्दर व्यवस्था हो जिससे ऐसे कष्टानुभूति का अवसर ही न आवे। सभी के निवास की व्यवस्था, भगवत्प्रसाद की व्यवस्था, जल आदि की व्यवस्था में त्रुटि न रह जाए इसका ध्यान रखें इसके लिए आप सबों से हम अपने भाव प्रकट करते हुए अपने भावों को यहीं विराम दे रहे हैं। ★

।। श्रीसर्वेश्वरो जयति ।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज

के

आचार्यपीठाभिषेक अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव पर आयोजित

स्वर्णजयन्ती–समारोह

[मिति ज्येष्ठ शुक्ल २ रविवार सं० २०५० दिनांक २३–५–९३]

अध्यक्ष :

स्वामी श्रीवामदेवजी महाराज

वृन्दावन (उ० प्र०)

मुख्य अतिथि :

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य पुरीपीठाधीश्वर

स्वामी श्रीनिश्चलानन्दजी महाराज

पुरी (उड़ीसा)

परम पूज्य आचार्यश्री का मङ्गलाभिषेक

यह सप्त दिवसीय महामहोत्सव का महनीय ग्रायोजन ग्रनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्वार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के ग्राचार्यपीठाभिषेक ग्रर्द्धशताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में ग्रायोजित किया गया था। महोत्सव में ग्रायोजित विविध कायंक्रमों में पूज्य ग्राचार्यश्री का मङ्गलाभिषेक एक महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट अंग था। इस मंगलमय ग्रभिषेक के दर्शनार्थ श्रद्धालु भक्तजन, सन्त-महात्मा एवं विद्वज्जन ग्रपार संख्या में समुपस्थित थे। पाण्डाल एवं पाण्डाल का परिकर खचाखच भरा हुग्रा था। सुसज्जित मञ्च पर समस्त धर्माचार्य, श्रीमहन्त महन्त एवं मण्डलेश्वरादि ग्रपने-ग्रपने ग्रासनों पर ग्रासीन हो चुके थे। मञ्च के मध्य पूज्य ग्राचार्यश्री का सिंहासन विशेष रूप से सजाया गया था। समिति के समस्त पदाधिकारी-कार्यकर्ता, ग्राचार्यपीठस्थ विद्वत्परिषद् के समस्त विद्वानों के द्वारा वैदिक मन्त्र पाठ के साथ पूज्य ग्राचार्यश्री को मञ्च पर पधराया गया। ग्राचार्यश्री के सिंहासनारूढ़ होते ही हर्षातिरेक के साथ जयघोषों से गगन गूञ्ज उठा। ५१ विशिष्ट विद्वानों के द्वारा श्रीदयाशंकर शास्त्री के संयोजन में भद्रसूक्त मन्त्रों के पाठ के साथ मङ्गलाभिषेक का शुभारम्भ हुग्रा। देव पूजन के पश्चात् दुर्वाङ्कुर एवं मङ्गल कलश लिये हुए पं. श्रीहरिशरणजी शास्त्री उपाध्याय व पं. श्रीसीतारामजी श्रोत्रिय ग्रभिषेक कर रहे थे, साथ ही पं० श्रीवासुदेवशरणजी उपाध्याय एवं पं० श्री विश्वामित्रजी व्यास चँवर डुलाते हुए इस दृश्य की शोभा में चार चाँद लगा रहे थे। इस ग्रद्भुत दृश्य का दर्शन कर जनसमूह भाव विभोर होकर जयघोषों से मङ्गलाभिषेक की शोभा बढ़ा रहा था। ग्रभिषेक का ग्रायोजन सम्पन्न होने के पश्चात् मेवाड़ मण्डलेश्वर श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी शास्त्री के संयोजन में माल्यार्पण का कार्यक्रम प्रारम्भ हुग्रा। मञ्चासीन धर्माचार्यों, महामण्डलेश्वरों, मण्डलेश्वरों, तीनों ग्रनी के श्रीमहन्तों, महन्तों, सन्त-महात्माग्रों, विद्वत् परिषद् के समस्त विद्वानों, समिति के पदाधिकारियों एवं विशिष्ट भक्त महानुभावों द्वारा ग्राचार्यश्री को माल्यार्पण किया गया। तदनन्तर दादू सम्प्रदायाचार्य स्वामी श्रीहरिरामाचार्यजी महाराज नरायना, युवराज स्वामी श्रीश्रीनिवासाचार्यजी महाराज, जगद्गुरु रामानुजाचार्य नागोरिया मठ डीडवाना, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्रीरामेश्वरानन्दजी महाराज ग्रहमदाबाद, महन्त श्रीहरिवल्लभदासजी शास्त्री किशनगढ़-रेनवाल, महामण्डलेश्वर स्वामी श्रीहरिनारायणानन्दजी महाराज, महामन्त्री भारत साधु समाज दिल्ली, महामण्डलेश्वर श्रीव्रजविहारीशरणजी 'राजीव' महामन्त्री-ग्र० भा० निम्बार्क महासभा ग्रहमदाबाद, मेवाड़ महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी शास्त्री उदयपुर, ग्रधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी वेदान्ताचार्य पञ्चतीर्थ वृन्दावन, पं० श्रीखेमराजकेशवशरणजी उपाध्याय काठमाण्डू नेपाल, पं० श्री हरिशरणजी उपाध्याय प्राचार्य-श्रीनिम्बार्क संस्कृत महाविद्यालय वृन्दावन. डा० श्रीरामप्रसादजी शर्मा किशनगढ़ ग्रादि महानुभावों द्वारा ग्राचार्यश्री के मंगलाभिषेक पर मंगलमयी कामनाएँ प्रस्तुत की गई। स्वर्णजयन्ती महोत्सव समिति की ग्रोर से समिति के ग्रध्यक्ष श्रीभीमकरणजी छापरवाल द्वारा पूज्य ग्राचार्यश्री के करकमलों में रजत

निर्मित सुदर्शनचक्र प्रतीक समर्पित किया गया। इसी क्रम में मथुरा निवासी वैद्य श्रीवैकुण्ठनाथजी शर्मा द्वारा आचार्यश्री ने अपने गुरुदेव अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज का नव निर्मित विग्रह प्राप्त किया। मंगलाभिषेक का यह कार्यक्रम ३ घण्टे तक चला, हजारों श्रद्धालुओं ने साष्टांग दण्डवत् कर श्रद्धा भाव से पूज्य आचार्यश्री को भेंट समर्पित की। महिलाओं का श्रद्धा भाव विशेष रूप से देखने योग्य था। इस अवसर पर सांसद श्रीरासासिंहजी रावत, पूर्व विधायक श्रीजगजीतसिंहजी किशनगढ़, श्रीविजयसिंहजी मकराना सहित कई उच्च प्रशासनिक अधिकारी भी सम्मिलित थे।

अभिनन्दन समर्पण समारोह–

सुरभारती में समुल्लिखित अभिनन्दन पत्र स्वागत समिति द्वारा आचार्यश्री के करकमलों में समर्पित किया गया, जिसका वाचन श्रीदयाशंकरजी शास्त्री ने किया एवं समर्पण स्वागताध्यक्ष श्रीजुगलकिशोरजी तोषनीवाल ने किया। नेपाली भाषा में लिखित अभिनन्दन पत्र नेपाल निम्बार्क वैष्णव मण्डल (नेपाल) द्वारा समर्पित किया गया, जिसका वाचन पण्डित श्रीवासुदेवशरणजी उपाध्याय ने किया एवं समर्पण पं० श्रीछविरमणजी (घनश्यामशरणजी) उपाध्याय केलादी घाट (नेपाल) द्वारा किया गया। यज्ञाचार्य पं० श्रीसत्यनारायणजी शास्त्री अजमेर द्वारा रचित संस्कृत पद्यात्मक जीवन-वृत्त स्वयं ने समर्पण किया। इसी क्रम में महामण्डलेश्वर, मण्डलेश्वर, तीनों अनी के श्रीमहन्त एवं अन्य श्रीमहन्त, सन्त-महात्माओं के द्वारा सामूहिक रूप से अभिनन्दन पत्र महन्त श्रीव्रजविहारीशरणजी 'राजीव' द्वारा प्रदान किया गया। श्रीसर्वेश्वर संसद् एवं जयपुर के भक्तों की ओर से देवनागरी में लिखित अभिनन्दन पत्र पं० श्रीसीतारामजी श्रोत्रिय द्वारा वाचन एवं समर्पण किया गया। तत्पश्चात् थाल में सुसज्जित आरती का सामूहिक आयोजन अतीव भाव भक्ति के साथ सम्पन्न हुआ।

मुख्य अतिथि अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य पुरीपीठाधीश्वर स्वामी श्रीनिश्चलानन्दजी महाराज का उद्बोधन एवं स्वामी श्रीवामदेवजी महाराज का अध्यक्षीय प्रवचन हुआ। अन्त में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज का आशीर्वादात्मक सदुपदेश के पश्चात् समिति के कार्यकारी अध्यक्ष श्रीआत्मारामजी अग्रवाल मकराना ने आभार प्रदर्शित किया।

अपराह्न ३ बजे से ४-३० बजे तक वृन्दावन की सुप्रसिद्ध स्वामी श्रीशिवदयालजी गिरिराजप्रसादजी की रासमण्डली द्वारा श्रीरासलीलानुकरण सम्पन्न हुआ।

सायंकालीन सभा में धर्म का स्वरूप, धर्म और राजनीति का परस्पर सम्बन्ध, धर्मनिरपेक्षता का अर्थ क्या धर्म शून्यता नहीं तथा धर्मान्तरण कैसे रोका जाय आदि विषयों पर विद्वानों के प्रवचन हुए तथा रात्रि में आकाशवाणी के कलाकारों द्वारा भक्ति संगीत का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

निखिलमहीमण्डलाचार्यचक्रचूडामणि--सर्वतन्त्रस्वतन्त्रयतिपतिदिनेशानां, नित्यनिकुंजविहारि—सर्वेश्वर-श्रीराधामाधव--युगलोपासनलीलानां तदीयललितलीलाचिन्तनशीलानां, स्वाभाविक-द्वैताद्वैतसिद्धान्त-प्रचार-प्रसार-परायणानां, धर्मरक्षणैकजीवनानां, उपासनापरक-प्राचीनदुर्लभ-सद्ग्रन्थप्रकाशनव्रतानां, रसोपासन-धार्मिक-राष्ट्रीय-सामाजिक-प्रेरणाप्रदनूतनसाहित्यसर्जकानां, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी-कुम्भ—पुरुषोत्तममासादिपावनपर्वसु विविधयाग—सम्मेलनसदनुष्ठान-राम-लीला-रासलीला-संगीतादिकार्यक्रमायोजकानां, न्याय-व्याकरण-वेदान्तायुर्वेद-साहित्यादिशास्त्र-मर्मज्ञानां, संगीतादि-विशिष्टकलाकौशलानां, सकलकला-कलाप-विचक्षणानां, भगवदाराधनभूत-प्राचीनजीर्णमंदिरोद्धारकाणां, नूतनमन्दिरनिर्मापकाणां, विद्यालयौषधालय-गोशाला-मुद्रणालय-पुस्तकालयादिविविधपारमार्थिकसंस्था-संचालकानां, तितिक्षा-करुणा--सौहार्दादिसाधुत्वगुणभूष-णानां, वांछाकल्पतरूणां, कृपासिन्धूनां वैष्णवाचार्यशिरोमणीनां, प्रातः स्मरणीयानामनन्त-श्रीसमलंकृतानां जगद्गुरुनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर—

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराजानां

पावनकरकमलयोः श्रीचरणानामेवाचार्यपीठाभिषेक-स्वर्णजयन्ती-महोत्सवोपलक्ष्ये समायोजित-सनातनधर्मसम्मेलने सम्प्रति धर्माचार्याणां, विशिष्टमहानुभावानां, मूर्धन्यविदुषां, कलाविदां श्रद्धासंवलितधार्मिकजनानां समुपस्थितौ मंगलाभिषेक-स्वस्तिवाचनपूर्वकं समर्पितमिदं --

-०- अभिनन्दन–पत्रम् -०-

प्रातः स्मरणीया !

भारतभूमिर्भगवतो नारायणस्यावतारलीलास्थली, तपःपूतमहर्षीणां साधनस्थली, भक्तिज्ञानवैराग्याणामाधारभूता त्याग-शौर्य चरित्रवतां जन्मभूमिर्वर्तते । जयन्तु ते मनीषिणो यैः स्वदिव्यानुभूतेः साकाररूपमनन्तज्ञानविज्ञानकोषजातं विपुलशास्त्रवैभवं मानवाय प्रदत्तम् । एवं विधायाः शास्त्रसम्पदः संरक्षणस्य सदुपयोगस्य च दायित्वं श्रीचरणसदृशेभ्यो धर्माचार्येभ्यः समर्पितम् । कस्मिंश्चिद् विशिष्टे नक्षत्रयोगे महत्वशालिनां महानुभावानामस्यां धरायामावि-र्भावो भवति । ते हि सामान्यमानववद् व्यवहरन्तोऽपि लोकोपककारिकार्येषु सर्वाग्रगण्या भवन्ति तेषां सर्वोऽपि व्यवहारः सर्वेषां प्राणिनां मङ्गलकारी जायते । एतादृशेषु धर्माचार्येषु विशिष्टं स्थानं वहन्तोऽत्रभवन्तो निखिलमहीमण्डलाचार्यचक्रचूडामणयः सर्वतन्त्रस्वतन्त्रा यतिपतिदिनेशाः प्रातःस्मरणीयाः अनन्तश्रीविभूषितजगद्गुरुश्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वरश्रीराधासर्वेश्वरशरण-देवाचार्य–श्री "श्रीजी" महाराजा अतितरां विजयन्ते ।

आचार्यचरणाः !

श्रीसुदर्शनचक्रावतारैराद्यनिम्बार्कपादैर्दक्षिणभारतस्य गोदावरीतीरभूमिं स्वाविर्भा-वेनालङ्कृत्योत्तरभारतस्य यमुनापुलिनवर्तिनीं श्रीकृष्णस्य लीलाभूमिमाश्रित्य चिरं तपः स्वाध्यायौ सम्पादितौ । तदनन्तरं देवर्षेर्नारदाल्लब्धदीक्षैस्तीर्थयात्राव्याजेन सम्पूर्णां भारतभुवं

परिक्रम्य सनातनवैष्णवधर्मस्य, सदाचारस्य, स्वाभाविकद्वैताद्वैतसिद्धान्तस्य, श्रीराधाकृष्णोपासनायाश्च सर्वत्र प्रवर्तनं विहितम्। ततः प्रभृति लोके निम्बार्कसम्प्रदायस्य ख्यातिः सञ्जाता। तदनुग्रहादेव सम्प्रति तदीयान् भूरि गुणान् दधानाः पुष्करक्षेत्रान्तर्गतेऽस्मिन्नेव निम्बार्कतीर्थे लब्धजन्मानोऽस्माकमाचार्यचरणाः कैशोरे वयसि, अनन्तश्रीविभूषितजगद्गुरुश्रीनिम्बार्काचार्यश्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराजेभ्यः परम्परागतं जगद्गुरु–श्रीमन्निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वरत्वमधिगतवन्तः श्रीचरणानामाचार्यत्वकाले सनातनधर्मस्य सर्वतोमुखी प्रचुरप्रसारः सञ्जातः। एतदस्माकं कृते महद् गौरवमस्ति।

तितिक्षादिगुणालंकाराः !

"तितिक्षवः कारुणिकाः सुहृदः सर्वदेहिनाम्। अजातशत्रवः शान्ताः साधवः साधुभूषणाः"। इति कपिलोक्तास्तितिक्षादयो गुणाः श्रीचरणेषु पूर्णरूपेण समुपलभ्यन्ते। यतो हि, अपकारकेषु क्षमा, दीनेषु करुणा, सकलप्राणिषु सहृदयत्वं, अहितेष्वपि हितचिन्तनं, सत्यपि विरोधे सर्वदा परमशान्तरूपेणावस्थानमित्यादयः स्वाभाविकाः सद्गुणा भूषणानीवालङ्कुर्वन्ति श्रीचरणान्। तथा च वैष्णवानां ये धर्मा औदार्यं, दयार्णवता, बाह्याभ्यन्तरशुचित्वं, सत्यपि विपुलवैभवे निस्पृहत्वं, निरन्तरमिष्टचिन्तनमित्यादयो धर्मा श्रीचरणेष्वनपायिनो वर्तन्ते। किं बहुना "आचार्यं मां विजानीयादिति भगवद्वचनानुसारं साक्षात् भगवत्स्वरूपा आचार्यचरणा अस्माकं कृते। अत एव यो जनः श्रद्धया यदा श्रीचरणशरणं प्राप्नोति तदा तस्य जीवनं नितान्तं" पावनं कृतकृत्यं च भवतीति सर्वैरनुभूयते।

धर्मरक्षणैकव्रताः !

आचार्यपीठमधिष्ठायाचार्यपादैः पूर्वाचार्यसरणिमनुसृत्य तीर्थयात्राव्याजेन समग्रां भारतभूमिं प्रदक्षिणीकृत्य सद्धर्मोपदेशेन सर्वत्र धार्मिक-समुद्बोधनं विहितम्। अस्मिन्नेवक्रमे व्रजयात्राप्रसङ्गे गोवर्धनं निकषा निम्बग्रामस्थितायाः श्रीनिम्बार्कतपःस्थल्या जीर्णोद्धारस्य सङ्कल्पः कृत आसीत्, तदनुसारं तत्र जीर्णोद्धारपूर्वकं श्रीनिम्बार्कराधाकृष्णविहारिमन्दिरस्य भव्यं नवनिर्माणं च सम्पादितम्, यदद्य व्रजमण्डलस्यानुपममैतिहासिकं संस्थानं सञ्जातम्। कुम्भादिपर्वसु, सनातनधर्मसम्मेलनेषु च हिन्दूसंस्कृति-गोरक्षा-शिक्षा-देवस्थानसुरक्षा-महिला-संगीतादीनि सम्मेलनानि समायोज्य, विविधधर्माचार्यान् समन्वयीकृत्य सदुपदेशैः, कथाप्रवचनैर्विविधयज्ञानुष्ठानैश्च निरन्तरं धर्मरक्षणं विधीयत इति श्रीचरणानां धर्मसंरक्षणव्रतं स्वाभाविकं राजते।

विविधकलाकलापविचक्षणाः !

श्रीचरणा आयुर्वेदचिकित्साविज्ञानस्य गहनचिन्तनेन विशिष्टानपि चिकित्सकान् विस्मापयन्ति रस-भाव-गुणालङ्कारपूर्णाभिः संस्कृतहिन्दीकाव्यरचनाभिर्वाग्देवताभण्डारवैभवमभिवर्द्धयन्ति। दूरदर्शन–दूरश्रवणसाधनीभूतेन दृश्यश्रव्यचित्राङ्कनेन सदाचारसंवलितं श्रीनिम्बार्कचरितं सम्पाद्याधुनिककलाविदां कौशलमतिशेरते। नानाविधवाद्यसंगीतादिललितकलानैपुण्येन निखिल-संगीतज्ञानां भावसाम्राज्ये नितरां विभ्राजन्ते।

पूज्यचरणाः !

श्रीचरणानामाचार्यताभिषेकस्य पञ्चाशद्वर्षपूर्तौ समायोजितोऽयं "स्वर्णजयन्ती-महोत्सवः" न केवलं निम्बार्कसम्प्रदायस्यापितु सर्वस्यापि सनातनधर्मजगतः कृते प्रमोदावहो वर्तते । श्रीचरणानां सङ्कल्पसिद्धिः परमप्रसिद्धा । यादृशः संकल्पो हृदये समुदेति स एव वाचोच्यते, यश्च वाचा निगद्यते स एव क्रियया साध्यते । अत एव "मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनामित्युक्तिः श्रीचरणेषु पूर्णतया सङ्गच्छते । अन्ततः, आचार्यचरणानां वात्सल्यमयमनुग्रहं कामयमाना वयमस्मिन्महोत्सवे मङ्गलाभिषेकस्वस्तिवाचनपूर्वकं निरामयदीर्घायुष्याय भगवन्तं श्रीसर्वेश्वरं प्रार्थयन्तः श्रीचरणानां करकमलयोरभिनन्दनरूपमिमं भावकुसुमस्तवकं समर्पयाम इति ।

श्रीमच्चरणकमलचञ्चरीकाः—

स्वर्णजयन्तीमहोत्सवसमितेः

विद्वत्परिषदश्च समस्तसदस्याः

अखिलभारतीयश्रीनिम्बार्काचार्यपीठम्

निम्बार्कतीर्थ–सलेमाबाद

मिति-ज्येष्ठ शुक्ल २ रविवार

वि० सं० २०५०

दिनाङ्क २३ मई १९९३ ई०

।। श्रीरामकृष्णाभ्यां नमः ।।

रामो धर्म तनुः कृष्णो लीला पुरुष उत्तमः ।
तौ नमामो जगद्वन्द्यौ धर्मरक्षार्थमीश्वरो ।।

निखिलमहीमण्डलाचार्यचक्रचूड़ामणि, सर्वतन्त्रस्वतन्त्रयतिपतिदिनेश, वैष्णवचतुःसम्प्रदायान्तर्गत स्वाभाविकद्वैताद्वैतसिद्धान्तप्रवर्तक श्रीनिम्बार्काचार्य परम्परागत जगद्गुरु अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर **श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज** के आचार्यपीठाभिषेक–अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव स्वर्णजयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित, सप्त दिवसीय अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के शुभावसर पर, भारतवर्षीय विभिन्न सम्प्रदायाचार्यों के धर्माचार्य, मण्डलेश्वर, महामण्डलेश्वर, निर्वाणी-निर्मोही-दिगम्बर अनी के श्रीमहन्त, महन्त, सन्त-महात्माओं द्वारा श्रीनिम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के पावन कर कमलों में सादर समर्पित—

※ अभिनन्दन–पत्र ※

पूज्य जगद्गुरु !

आपश्री के पीठाभिषेक स्वर्णजयन्ती महोत्सव पर समागत हम सब चतुःसम्प्रदायी वैष्णव अत्यन्त हर्षित हैं । आज आपके बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न प्रतिष्ठित वर्चस्व से सम्पूर्ण सनातन धर्म जगत् गौरवान्वित है ।

सद्धर्मरक्षक !

आपश्री ने विगत् ५० वर्षों में सनातन धर्म, संस्कृति एवं सभी भारतीय परम्पराओं को अक्षुण्ण रखने के लिए अनेक बार ऐसे विराट् धार्मिक अनुष्ठान एवं सम्मेलन आयोजित किये हैं जो इतिहास में स्वर्णाक्षरों में उल्लेखनीय रहेंगे ।

वन्दनीय आचार्यवर्य !

आज इस मङ्गलमय अवसर पर भगवान् श्रीसर्वेश्वर राधामाधव प्रभु से सर्वादिष्ट निवृत्ति पूर्वक सर्वविध अभ्युदय एवं चिरायुष्य के लिए अभ्यर्थना करते हैं ।

गुणग्राही अभिनन्दनकर्ता—

श्रीमहन्त हरिदास दिगम्बर अनी अखाड़ा नासिक, श्रीमहान्त सन्तसेवकदास निर्वाणी अनी अयोध्या हनुमानगढ़ी, श्रीमहन्त नन्दरामदास अ. भा. निर्मोही अनी अखाड़ा अहमदाबाद, महन्त हरिवल्लभदास शास्त्री रेनवाल, मेवाड़ महामण्डलेश्वर श्रीमहान्त मुरलीमनोहरशरण शास्त्री उदयपुर, अध्यक्ष अ. भा. निम्बार्क महासभा, अ. व्रजवल्लभशरण वेदान्ताचार्य पंचतीर्थ वृन्दावन, महामण्डलेश्वर श्रीव्रजविहारीशरण 'राजीव' श्रीनृसिंह पीठ (महामन्त्री श्रीनिम्बार्क महासभा) अहमदाबाद, श्रीमहन्त बनवारीशरण शास्त्री वृन्दावन, महन्त बनवारीशरण जूसरी, श्रीमहन्त कन्हैयादास काठिया, महन्त पुरुषोत्तमदास अजमेर, महन्त पीताम्बरदास निम्बोल, महन्त ललिताशरण लीम्बड़ी, महन्त मनोहरशरण पलसाना, महन्त राधाकृष्णदास डूंगरपुर, महन्त प्रेमदास थोब, महन्त दीनबन्धुदास भीलवाड़ा, श्रीमहन्त राधावल्लभशरण म. कुण्ड उदयपुर, श्रीशुकदेवशरणजी महाराज संगीताचार्य, महन्त गोपालदास सांगानेर, बाबा माधवशरण निम्बार्कतीर्थ, नवलविहारीशरण निम्बार्कतीर्थ ।

समारोह स्थल—अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ—सलेमाबाद
पुष्करक्षेत्र, अजमेर (राजस्थान)
शुभमिति—ज्येष्ठ शुक्ल २ रविवार वि० सं० २०५० दिनांक २३/५/९३ ई०

निखिलमहीमण्डलाचार्यचक्रचूडामणि सर्वतन्त्रस्वतन्त्र यतिपतिदिनेश अनन्त श्रीविभूषित
जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

को पचासौं आचार्यपीठाभिषेक को 'स्वर्णजयन्ती महोत्सव'

का उपलक्ष्य मा सादर समर्पित

अभिनन्दन—पत्र

आचार्यशिरोमणे !

अनादि वैदिक सत्सम्प्रदाय प्रवर्तक आद्यश्रीनिम्बार्काचार्यजी वाट दिग्दर्शित सर्व-शास्त्र सम्मत स्वाभाविक द्वैताद्वैत दार्शनिक सिद्धान्त र प्रेमविशेषलक्षणा भक्तिभागीरथीको भास्वर धारा भूतलमा प्रवाहित गर्ने परम्परामा सुदीर्घकाल पछि आचार्यश्री ने प्रकट हुनुभई विश्वभरमा व्यापकरूपले वैष्णवता को प्रचार-प्रसार गर्न कृतसंकल्प देखिनु भयेको छ ।

सनातनधर्मैकप्राण !

आचार्यश्री वाट समय-समयमा सम्पन्न भएका सनातन धर्म प्रचार सम्बन्धी महान् आयोजनहरू कसै वाट परोक्ष छैनन् । वर्तमान समयमा संपद्यमान अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन पनि आफै आफमा एक अनुपम अभूतपूर्व विशाल आयोजन हो ।

शास्त्रोद्धारपरायण !

निम्बार्क वैष्णव-सनातन धर्मका आधारभित्ति दुर्लभ ग्रन्थ हरूको प्रकाशन गर्नु, अतिव्यस्ततामा पनि स्वयं भक्तिसाहित्य र भारतको गौरवगाथा प्रकट गर्ने साहित्यको रचना गर्नु, आचार्यश्रीको अप्रतिहत प्रतिभाको फल हो र यो एक धर्माचार्यको दायित्वको निर्वाह पनि हो ।

वैष्णवधर्मभास्कर !

आचार्यश्री वाट भएको सनातन वैष्णवता र आचार संहिताको पावन प्रचार वाट यस्तो कुन व्यक्ति होला, जो हृदयतः प्रभावित न होस् । दिगन्तव्यापी बहुआयामी अभियानहरु यसका ज्वलन्त उदाहरण छन् । आचार्यश्रीले भारतमाता झैं नेपालमा पनि निम्बार्क वैष्णव-सनातन धर्म को व्यापक प्रचार गर्नु भएका अनन्तश्री सार्वभौमाचार्य श्रीभगवतशरणदेवाचार्य-जो महाराज, यस आचार्यपीठ र आचार्यश्री प्रति प्रगाढ श्रद्धावनत हुनुहुन्थ्यो र आचार्यश्रीको पनि उहां प्रति अगाध आत्मीयता छ, जो शब्द वर्ण्य न भएर अनुभूतिगम्यमात्र छ । हामी यस तादात्म्य भाव वाट परिचित छौं । उता श्रीभगवतशरणदेवाचार्यजी को जन्मशताब्दी मनाउने उद्देश्य लिएका हामी आज आचार्यश्रीको पचासौं पीठासीनताको स्वर्ण-जयन्ती-समारोहमा नेपालका निम्बार्क वष्णवहरुका तफ वाट अभिनन्दन गन पाउँदा आनन्दित छौं ।

सिद्धसंकल्पात्मन् !

आचार्यश्रीको संकल्प सिद्ध छ । यही कारण हो आज हामीले अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत गर्ने भव्य आयोजनहरु देखन पाएका छौं । आचार्यश्री अखिल भारतका एकमात्र श्री-निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर हुनुहुन्छ र सो कुरालाई हामी नेपालका लगभग सवा लाख निम्बार्क वैष्णव हरुले स्वीकार गर्दछौं ।

हामी हौं हजुरका—

नेपालस्थ निम्बार्कीय मठाधीश, महन्त एवं विद्वत्समुदाय

मिति—ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया संवत् २०५० ज्येष्ठ १० गते रविवार

※ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयतेतराम् ※

तत्र भवतां भवतां श्रीमतां निखिलमहीमण्डलाचार्य-चक्रचूडामणीनां, सर्वतन्त्रस्वतन्त्र-यतिपति-दिनेशानां, निरवद्यविद्याविद्योतितान्तः करणानां, अशेषसद्गुणगणसमाश्रयाणां, भारतीय संस्कृति-संस्कृतसंरक्षणपरायणानां, अनतिसाधारणवाग्वैदुष्यवैभवविभूषितानां, अतिगहन-तमवेदवेदाङ्गीयनिबद्धदर्शनविमर्शनदर्शितनिरतिशयशेमुषीविलासानां, – अनादिवैदिक-सनातनधर्मप्रत्यवतिष्ठमानवादिवारणकण्ठीरवाणां, शिष्यप्रशिष्यप्रख्यापितकीर्तिकलापानां, अखण्डभूमण्डलमण्डनायमानवैदिकवैष्णवधर्मप्रचार-प्रसारबद्धपरिकराणां, पञ्चषष्ठितमोऽब्देप्रविविशूणां, विद्याज्ञानवयोवृद्धानां, अनवरतलोकोपकारनिरतहृदयानां, सहजसौजन्यदानदया-दाक्षिण्यादिगुणगणालङ्कृतानां, श्रीयुगलब्रह्मपादारविन्दमकरन्दास्वादकपरममनोमधुपानां, सततशास्त्रानुशीलनशुद्धमनस्सुमनस्सुविराजितसुरसरस्वतीसेवाहेवाकिनां, हैयङ्गवीनमसृण-हृत्पटलानां, पण्डितमण्डलीमूर्धन्यानां, विश्वोपकारतत्पराणां, यमनियमादियोगाङ्गानुष्ठान-परिपूतान्तःकरणानां, सततपरमात्मचिन्तनविमलस्वान्तानां, स्वाभाविक द्वैताद्वैतसिद्धान्त—

प्रतिष्ठापक—श्रीमज्जगद्गुरु-श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यपीठाधिष्ठितानां

अर्द्धशताब्द्यपगते पञ्चाशत्तमे पाटोत्सवावसरे स्वर्णजयन्तीसमारोहात्मके समायोजिते प्रशस्ति सुमनोऽञ्जलि समर्पणक्षणे

अखिलभारतीय विराट् सनातन धर्मसम्मेलने

पुष्करपुण्यक्षेत्रे निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबादे महर्षिवर्य श्रीसनकादिसंसेवित श्रीसर्वेश्वरप्रभुसन्निधौ पुण्यश्लोकश्रीजयदेवसमाराधितश्रीभगवच्छ्रीराधामाधवमङ्गलमन्दिरपरिसरे सुविराजमानानां

अनन्तानन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य–

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराजानां

करसरोरुहेषु सादरं, सगौरवं, सभक्तिकश्रद्धञ्च मिलिन्दायतां

※ अभिनन्दन-पत्रमिदम् ※

जगद्वन्द्याः विविधविद्याधनवदान्यधन्याः ! पूज्य श्रीआचार्यचरणाः !

सुरसरस्वतीसेवाव्रतिनः पुण्यपुष्करारण्यपरिसरेऽत्र समवेतानामयुतायुतानां भगवच्छ्रीराधामाधवदिव्यपादारविन्दयोर्भक्तिभागीरथीनिर्मल-सलिलावगाहने निमग्नानां पुरस्तात् श्रीमद्गुणगणार्णवस्मरणपराः हर्षातिरेकान्विताः वयं केवलं तत्र भवतां श्रीमतां दिव्यावदानानुरणनपरायणमेवस्वान्तःकरणमाकलय्य कानिचिद्भावावेशसमर्पकानिपद्यानि श्री "श्रीजी" कराम्भोजयुगलसेवायामुपायनी कुर्मः ।

"आचार्यवान् पुरुषो वेद आचार्याऽयेव विद्याविदिता साधिष्ठं प्रापत्" प्रतिपादयतीति श्रुत्यनया रीत्या शास्त्रार्थप्रवचनपटुः स्वीयाचारव्यवहारादिभिः परेषामप्याचारादिप्रवर्त्तको यो भवति महात्मा स एव महापुरुष इति सिद्धान्तसरणिमनुसृत्य आशैशवादेव वेदब्रह्मणोऽनवरत-समाराधनेन न केवलं स्वात्मानमेवोपकृतमपितु महीतलस्थमानवमात्रं ज्ञानमार्गं मोक्षमार्गं चोपदिशन् श्रीहंससनकादिप्रवर्त्तितवैष्णवधर्मसंस्कृतेरक्षुण्णप्रचारप्रसारद्वारा यत्रतत्र सहस्रसंख्याकेषु देवमन्दिरेषु श्रीविग्रहाणां विद्यालयानां भक्तिकेन्द्राणां प्रतिष्ठापनद्वारा प्रत्यक्षमेव सत्यापितः परमाराध्यश्रीसर्वेश्वरवदनारविन्दविनिःसृतः सुदृढसमुद्घोषः यत्—"धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगेयुगे" इति संसाधयन्नन्यदपि भगवद्वचः सत्यापितं यत् "यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानि-

र्भवति भारत । अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।। इत्यप्यहो श्रीमत्पादानां श्लाघनीयता एवैतेन सुसिद्धमेव यत् "विष्णोरंश महात्मनः।"

सततपः पूतविग्रहाः, पुण्ययशोधनाः द्वैताद्वैतसिद्धान्तप्रतिपादनपटवः !

परमविश्रुतवैदिक वैष्णवब्राह्मणकुले स्वनामधन्य पं० श्रीरामनाथशर्मणां सहधर्मिण्यां श्रीमतीस्वर्णलतायां दशमई ऊनविंशत्ख्रैस्तेऽब्दे 'उत्तमचन्द्रे' त्याभिधानेन 'रत्नलाले' तिख्यातनाम्ना च जनिमवाप । ततः पूर्ववर्ति जगद्गुरुपदवीभाजां प्रातर्वन्द्यानन्तश्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्याणां चरणशरणं सम्प्राप्य चतुर्दशाब्दे वयसि पंचमजून पंचचत्वारिंशत्तमे ईस्वीयेऽब्दे ह्यष्टचत्वारिंशत्तमं जगद्गुरुश्रीनिम्बार्काचार्यपदमलंचक्रुरिति । अनन्तरं च वृन्दाविपिन निवासं विधाय विद्वत्तल्लजानां प्रकाण्डपण्डितानामन्तेवासित्वमवाप्य वेद-व्याकरण-साहित्य-न्याय-वेदान्तादीनि शास्त्राणि यथाविधि समधीतानि । 'विद्या ददाति विनयं' इत्युक्तरीत्या श्रीमन्तः साक्षान्नयविनयविषयावताराः राराजन्तेऽत्र, सततपश्चरणाच्चापि श्रीमतां निरभिमानताऽपि दरीदृश्यते परमश्लाघ्यतमैव ।

अयं महान् प्रमोदावसरः यदद्यानेकशास्त्रनिष्णातानां भूर्लोके भारतवसुन्धरायां सर्वत्र स्वधर्मध्वजसमुज्जृम्भायमाणानां, अव्याहतगतीनां द्विजकुलावतंसानां पण्डितमण्डलीषु-पञ्चाननमिवावगाहमानानां, वेद-ज्ञान-भक्ति-तपोमूर्त्तीनां अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराजानां सुमनस्विनां मानसैः सुमनोभिरभिनन्दनार्थं सबहुमानं कुशलस्वास्थ्य श्रेयोऽभ्युदयाञ्जलिमर्पयामः ।

करुणावरुणालयाः, ह्यनन्तश्रीकाः, जगद्गुरवः !

अमरभारतीसमाराधनेऽनवरतसुदृढैकनिष्ठचित्ताः, धर्मध्वजधारणधौरेयाः, नाना-[निगमागमनिचयपारदृश्वानः सुरुचिररचनारचयितारः, राष्ट्रपतिसम्मानेन बहुमानिता विद्वत्कवयः श्रुति-वेदान्तोपनिषन्मर्मवेत्तारः, शास्त्रार्थकण्ठीरवाः, कुशाग्रशेमुषीकाः, निर्जरभारती-साहित्यसमृद्धिमनुतिष्ठन्तः सत्यसनातनधर्ममभिवर्धयन्तश्च सुदीर्घायुष्यमवाप्नुयुरिति सर्वजगद-भिन्ननिमित्तोपादानकारणमनन्ताचिन्त्यस्वाभाविकगुणशक्त्यादिभिर्बृहत्तमं ब्रह्मेन्द्र—शिवादि-वन्दितं करुणावरुणालयं नित्यनिकुञ्जविहारिणं श्रीराधासर्वेश्वरप्रभुमभ्यर्थयामहे वयं सततमिति।

सर्वेश्वरो यस्य कण्ठे हृदये च निरन्तरं । विराजते तस्य यशो वर्णने न क्षमा वयम् ।।
प्रार्थयामो वयं सर्वे श्रीमन्तं करुणामयं । श्रीसर्वेश्वरसेवायां रतिःस्यान्नो भवे भवे ।।
अद्य धन्याः वयं सर्वे धन्यं च पुष्कराजिरं, भवादृशां सतां सङ्गो नाल्पपुण्येन लभ्यते ।।

समर्पकाः—

कल्याणप्रसाद अग्रवालः, अध्यक्ष—श्रीसर्वेश्वरसंसदः तत्सदस्याश्च जयपुरम्
अध्यक्षः—श्रीनिम्बार्कनिकुञ्जविहारीमन्दिरं सेवासमितिस्तत्सदस्याश्च हीरापुरा ।
चन्द्रविहारी सोढानी माजूमवाला, प्रधानमन्त्री—श्रीसर्वेश्वरसंसदः
संयोजकः—श्रीनिम्बार्कसत्सङ्गमण्डलं तत्सदस्याश्च जयपुरम् ।

श्रीमत्पदाम्भोजमकरन्द पिपासवः—
श्रीवत्स-सुदर्शन-भास्कराचार्याः
जयपुरं—राजस्थानम्
वि० सं० २०५०
दि० २३ जून १९९३ ईस्वीयाः

विनीतोऽकिञ्चनः—
सीतारामशास्त्री श्रोत्रियः निम्बार्कभूषणः
उपसंरक्षकः-श्रीसर्वेश्वरसंसद् जयपुरम्
प्रोफेसरः-राजस्थान संस्कृत कालेजः ब्रह्मपुरी
शिक्षामन्त्रीः-अ.भा.श्रीनिम्बार्काचार्यपीठम्, निम्बार्कतीर्थम्

जगद्गुरूणां श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्याणां श्री 'श्रीजी' महाराजानां

स्वर्णजयन्तीमहोत्सवे पठित–

संक्षिप्तजीवनेतिवृत्तम्

प्रणेता – आशुकविः सत्यनारायणः शास्त्री (अजमेर)

शत्रूणां वज्रदण्डः सुकृतशुभतरोः शोभनः षण्डदण्डो
वादिप्रत्यर्थिचण्डः कृतविविधभवव्याधिबाधाविखण्डः ।
शोणाम्भोजाभतुण्डो गुरुवृषतरणेः सद्दृढ़ः कूपदण्डः
पापानां कालदण्डो भुवि जयतुतमां श्रीजिपादाब्जदण्डः ॥१॥

शान्तो दान्तो विमलहृदयः कुन्दकन्दर्पकान्ति—
र्वीतक्रोधः सकरुणमनाः सत्तपस्वी यशस्वी ।
धर्मक्षेत्रे विहितविविधश्लाघ्यकर्मा मनस्वी
राधासर्वेश्वरशरणदेवः सदा जीवताद्वै ॥२॥

अवगीतगिरासुरालयाः कृतसंगीतलयामरालयाः ।
उरुदर्शनकिल्विषञ्जया विजयन्तामनिशं दयोदयाः ॥३॥

माधुर्य्यसौशील्यसदार्जवादि-गुणप्रसूनावलिशालिसौम्यः ।
निम्बार्कधामाऽपि सुधांशुधामा जीयाज्जगत्यां तुलसीसुदामा ॥४॥

(युग्मकम्) निम्बार्कतीर्थे महिते सलीमाबादान्यनामप्रथिते वसन्तौ ।
सौशील्यसद्भाववृतौ सुसौम्यौ सुधार्म्मिकौ सात्त्विकवेशभाजौ ॥५॥

रामाभिरामो द्विजरामनाथः सुवर्णजा स्वर्णलता रमेव ।
आस्ताविमौ सत्पितरौ वरेण्यावेषां सदाराधितराधिकेशौ ॥६॥

विक्रम १९८६ संवत्—

रसवसुग्रह — चन्द्रसुवत्सरे सवृषमाधवमासिसितेदले ।
उषसि काव्यदिने प्रतिपत्तिथौ जनिमवाप च कार्तिकभेऽर्भकः ॥७॥

नक्षत्रनामोत्तमचन्द्र आसीत्तथाऽन्यनामाऽस्य च रत्नलालः ।
विधाय लोके वरधर्मकर्मैषोऽन्वर्थनामाऽभवदत्र बालः ॥८॥

आसीदयं रत्नवदत्र लोके लालेषु सर्वेष्विति रत्नलालः ।
अन्वर्थनामा मुहुरेष जातः सदाचरन्साधुसमाजमध्ये ॥९॥

स्वमातुरंकस्थशिशौ स्वबाल्ये समागतोऽत्राऽतिथिसाधुरेकः ।
उवाच संवीक्ष्य हृदि प्रसन्नो जायिष्यते रत्नवदेष लोके ॥१०॥

तस्मिन्प्रयाते समवाप्तभिक्षे प्रत्ताशिषिप्रांशुतपस्विसूर्य्ये ।
लोकोभिथोऽब्रूतभवेदयं वै प्राक्कालिकः कश्चनदेशिकाद्यः ।।११।।

परशुरामवरः प्रतिभात्ययं निखिलदेशिकवर्य्यगणाग्रणीः ।
जननदा हृदि चिन्तयतिस्म मे जनुरभूत्सफलं गुरुदर्शनात् ।।१२।।

सदैव संकीर्तनमानसस्य क्षुत्तृड्विहीनस्य च तुष्टिभाजः ।
न चाऽस्य चेतो रमते वयस्यबालैः समं क्रीडनकेषु जातु ।।१३।।

श्रीराधिकामाधवयोः प्रदोषे प्रगे च नीराजनदर्शनाय ।
देवालयं याति सदैव गेहादयं स्वसद्मन्यपिदेवपूजी ।।१४।।

१—लाल इत्यत्र चुरादिगणीयलालयतेर्धातोः कर्मणि घञ् प्रत्यये कृते लाल्यते पाल्यते मात्रा जनैर्वा इति लालः । लालः इति बालः (लाला) लालेषु रत्नं इति लालरत्नं यथा कविरत्नं, परमत्र मयूरव्यंसकत्वात्कृते समासे यथा व्यंसकोमयूर इति मयूरव्यंसक इव रत्नशब्दस्य परनिपाते कृते रत्नलाल इति शब्दो निष्पद्यते इत्याशयः ।

प्रागेष आसीच्छयितोऽधिशय्यं हरिस्तदोपेत्य जगादचैनम् ।
गृहाण चेन्मोदकमत्तुमिच्छा ? प्रत्तं मया संज्वरिणे सुमिष्टम् ।।१५।।

पश्चाद्धरिः सोऽन्तरधत्ततूर्णं ततोऽयमम्बामगदत्ससम्भ्रम् ।
निशम्यवृत्तं मुमुदे सुवृत्तं माताऽपि बालोऽपि गतज्वरोऽभूत् ।।१६।।

भूयो हरिं स्वप्न उपागतं ते प्रावोचदायाहि सकृद्वचः सः ।
उपेत्य संभुज्य गतश्रमोऽयमयान्निशि स्वप्न उपैच्च पूर्तिम् ।।१७।।

हनुमते सुन्दरकाण्डपाठेऽनुष्ठीयमाने सहसैव वृत्तम् ।
प्राप्तं प्रमोदास्पदराजकीयं दृढाध्वनिर्माणकरं विचित्रम् ।।१८।।

एवंविधानेकविचित्रलीलाभागस्य सज्जीवनवृत्तमस्ति ।
निशम्यलोकोमुदमेतिनित्यं साश्चर्यचेताः स्तुतितत्परःसन् ।।१९।।

सम्पादिता धार्मिककृत्ययज्ञ — देवालयारामजलाशयाश्च ।
निम्बार्कतीर्थोद्धरणेनसार्धं स्वजीवने नोकति तानि ? विद्यः ।।२०।।

अनेकसद्धार्मिकयज्ञदेवालयप्रतिष्ठासु पादार्पणं च ।
स्वजीवने श्रीजिवरैर्विधाय सत्कृत्यजातं समपादिलोके ।।२१।।

प्रयागयागप्रतिमाद्यनेककुम्भीयवैतानिकमण्डपेषु ।
श्री श्रीजिपादैः स्वपदं निधाय विशालशोभातिशयो वितेने ।।२२।।

जीर्णोद्धारः पुराणानां नवीनानां सन्निर्मितिः ।
विहितोऽनेकत्र श्रीजीभिः प्रासादानां च भारते ।।२३।।

निम्बग्रामे शैलगोवर्धनस्य पुण्यालोकोपत्यकासंस्थितेऽस्मिन् ।
निम्बादित्यस्योत्तमं दिव्यभव्यं देवागारं निर्मितं श्रीजिपादैः ।।२४।।

प्रागेभिः समपादि विराट्सनातनाख्यसम्मेलः ।
सबुधाचार्यसुसाधुभिः पुण्ये निम्बार्कसत्तीर्थे ॥२५॥

विक्रम २००० संवत्—

वियन्नभोव्योमविलोचनाक्षि-सद्वै क्रमाब्देऽक्षितिथौ सुकाले ।
सज्ज्येष्ठमासे धवलेदलेऽयं निम्बार्कपीठं समलंचकार ॥२६॥

(युग्मकम्) सारल्यसौशील्यगुणार्णवाश्च विदांगुणज्ञा वररत्नबोधाः ।
साधुत्वसल्लक्षणसन्निसर्गा गभीरपाथोधिहृदोऽतिधीराः ॥२७॥

निष्कैतवा निर्मलसद्विचारा विमृश्यकर्त्तार इमे वदान्याः ।
पात्रेषु विश्राणितवित्तवासोऽन्धसोऽनिशं कीर्त्तिमवाप्नुयुर्वै ॥२८॥

लोके सदैषां वरधार्मिकध्वजो दोधूयतामारविचन्द्रमुल्लसन् ।
इमेऽपि सत्कर्मपरायणा बुधाः स्युः कीर्त्तिभक्तिधृतिधर्मशालिनः ॥२९॥

चिरायुरासाद्य विसीमकालं सदाऽऽचरन्तो वृषराशिकर्म ।
मोमुद्यमानाः स्थितिमादधाना जेजीयमाना विलसन्तु सन्तः ॥३०॥

निम्बार्कपीठे परितस्थुषां च नैम्बार्कधर्माचरणेरतानाम् ।
पञ्चाशदब्दावधिरैदनेहा जगद्गुरुणां वरदेशिकानाम् ॥३१॥

जगद्गुरुश्रीजिमहात्मनां वरो महोद्भवः "स्वर्णजयन्त्यभिख्यः" ।
सम्पाद्यमानो बुधसाधुसेवकैराविष्णुलोकं जयताज्जगत्याम् ॥३२॥

निरामयो निर्विपदो निराधिः समृद्धिसंपन्निसुसौख्यशाली ।
सद्धर्मचेतोरुचिरप्रमादी लोकोऽधिविश्वं भवतादजस्रम् ॥३३॥

श्रीसत्यनारायणनामभाजिना संक्षिप्तमेतद्गुरुवृत्तवर्णनम् ।
व्यधायि किञ्चिज्ज्ञजनेन कोविदा ! नैम्बार्कसद्भक्तिहितावहं वरम् ॥३४॥

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य–

श्री "श्रीजी" महाराज के भावनात्मक उद्गार

परम भावुक भक्त महानुभावों, श्रीसर्वेश्वर प्रभु के परमानुग्रह से अभी-अभी इस मङ्गलमय अद्भुत आयोजन का शुभारम्भ वेद मन्त्रों द्वारा हुआ। आयोजन समिति के समस्त विभागों के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं के हार्दिक उत्साह एवं सक्रिय सहयोग से ही यह विशाल आयोजन सम्पन्न हो रहा है। सभी कार्यकर्ताओं की भूमिका प्रशंसनीय है।

प्रारम्भ में समस्त धर्माचार्यों, सन्त-महात्माओं, महामण्डलेश्वरों एवं प्रमुख भक्त महानुभावों के निकट स्वल्प समय में आयोजन का सन्देश-निमन्त्रणपत्रादि देश एवं विदेश में भेजने का कार्य अतीव दुष्कर प्रतीत हो रहा था, किन्तु यह कार्य श्रीसर्वश्वर संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य श्रीवासुदेवशरणजी उपाध्याय ने कठिन परिश्रम द्वारा रात-दिन एक करके सम्पन्न किया। इसी प्रकार डा० श्रीरामप्रसादजी शर्मा का भी उक्त कार्य में सम्मिलित योग रहा, जिसके फलस्वरूप समय से पूर्व सर्वत्र आयोजन का सन्देश प्रसारित हो सका।

इस शुभ अवसर पर हम यह भी व्यक्त करना उचित समझते हैं कि हमारे निम्बार्क सम्प्रदाय के उद्भट विद्वान् ब्रह्मचारी पं. श्रीवैष्णवदासजी शास्त्री ने ७० वर्ष पूर्व श्रीमद्भगवद्गीता पर एक निम्बार्क दर्शन सम्मत हिन्दी में व्याख्या लिखी थी, जिस पर वाराणसी के तत्कालीन समस्त प्रमुख विद्वज्जनों ने भूरि-भूरि प्रशंसात्मक सम्मतियाँ लिखी थी। हम ४८ वर्ष पूर्व श्रीशास्त्रीजी से वेदान्त का अध्ययन कर रहे थे। एक दिन चर्चा के अन्तर्गत श्रीशास्त्रीजी की इच्छा के अनुसार हमने उक्त ग्रन्थ को प्रकाशित करने की भावना व्यक्त की थी, किन्तु लम्बे समय से यह कार्य सम्पन्न नहीं हो पाया। श्रीसर्वेश्वर प्रभु के कृपा प्रसाद से सम्प्रति उक्त ग्रन्थ का आचार्यपीठ से प्रकाशन श्रीदयाशंकरजी शास्त्री के सम्पादन सहयोग से सम्पन्न हो गया है।

इसी प्रकार आचार्यपीठ से श्रीनिम्बार्क भगवान् का एक सुन्दर चरित्र का वी० डी० ओ० कैसेट तयार कराने का संकल्प हुआ, एतदर्थ श्रीरामानन्द सागर से सम्पर्क करने पर अवगत हुआ कि इस कार्य पर अत्यधिक राशि व्यय होगी। यह कार्य अति व्यय साध्य समझ कर हमने आचार्यपीठ द्वारा उक्त कार्य को सम्पन्न करने की दृष्टि से एक कैमरा मंगवाकर हमारे ओमप्रकाश शर्मा एवं गिरधारी जासरावत तथा वृन्दावन की रासमण्डली के स्वामी श्रीशिवदयालजी गिरिराजप्रसादजी के महान्श्रम साध्य सहयोग से भगवान् निम्बार्क का चरित्र तैयार हो गया। यह कार्य श्रीसर्वश्वर प्रभु के परमानुग्रह से सम्पन्न हुआ। निम्बार्क जगत् के लिये यह एक ऐतिहासिक काय हुआ है आप सब इसको अवलोकन कर हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।

हमारे किशनगढ़ महारानी श्रीमती बांकावतीजी (श्रीव्रजदासीजी) द्वारा श्रीमद्भागवत पर हिन्दी छन्दों में अनुवाद किया गया, जो बड़ा ही विलक्षण है, इसका अवलोकन कर आप भाव-विभोर हो जायेंगे। उक्त ग्रन्थ के प्रकाशन की भी चेष्टा की जारही थी। लम्बे समय

अधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी वेदान्ताचार्य पञ्चतीर्थ सम्मेलन में अपना भाव व्यक्त करते हुए। सिंहासन पर विराजमान आचार्यश्री।

मञ्च पर विराजमान अनी अखाड़ा के श्रीमहन्त एवं सन्त दायें से श्रीमहन्त कन्हैयादासजी महन्त श्रीपुरुषोत्तमदासजी (अजमेर), निर्वाणी अनी के श्रीमहन्त श्रीसन्तसेवकदासजी (अयोध्या), नर्मोही अनी के श्रीमहन्त श्रीनन्दरामदासजी (अयोध्या), दिगम्बर अनी के श्रीमहन्त श्रीहरिदासजी (नासिक), अधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी वेदान्ताचार्य (वृन्दावन), महन्त श्रीवनवारीशरणजी (जूसरी) एवं अनेक सन्त, महन्त, महानुभाव।

मञ्च पर समासीन – स्वर्णजयन्ती महोत्सव समिति के अध्यक्ष – श्रीभीमकरणजी छापरवाल (इचलकरंजी) स्वागताध्यक्ष – श्रीजुगलकिशोरजी तोषनीवाल (बीजापुर) महामंत्री – श्री राधेश्यामजी इनाणी (मदनगंज) कार्यकारी अध्यक्ष – श्रीआत्मारामजी अग्रवाल (मकराना) एवं अन्य सन्तगण।

मञ्च में आचार्यश्री के समक्ष विराजमान, श्रीनिम्बार्कमहासभा के प्रधानमंत्री, भक्तिभागीरथी के सम्पादक, महामण्डलेश्वर महन्त श्रीव्रजविहारीशरणजी राजीव (अहमदाबाद) संगीताचार्य वीतराग बाबा श्रीशुकदेवदासजी निम्बार्कपुरम् (जयपुर) महन्त श्रीगोपालदासजी (सांगानेर) एवं श्रीनवलविहारीशरणजी व्यास (निम्बार्कतीर्थ)

अखिल भारतीय श्रीरामस्नेहीपीठाचार्य अनन्तश्री स्वामी श्रीरामकिशोरदासजी महाराज (रामधाम, शाहपुरा) सनातन धर्म पर अपना उद्बोधन देते हुए।

श्रीदादूपीठाचार्य स्वामी श्रीहरिरामजी महाराज धर्म के स्वरू अपना उद्बोधन देते हुए।

से यह विचार सफल नहीं हो सका। किन्तु प्रसन्नता का विषय है कि हमारे भक्तप्रवर श्रीव्रज-मोहनजी छापरवाल ने उक्त ग्रन्थ के प्रकाशन सेवा का भार ले लिया और आचार्यपीठ से ही प्रकाशन का शुभारम्भ होगया है।

यह एक अद्भुत उदाहरण है कि विश्व की किसी नारी ने और फिर एक राजमाता ने राजमहलों में बैठकर जिसका सृजन किया, जिस साहित्य को प्रकट किया, जो बड़ा ही विलक्षण है यह धार्मिक साहित्य अद्वितीय है, जो शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है।

आशुकवि पं० श्रीसत्यनारायणजी शास्त्री (अजमेर) यज्ञाचार्य ने एक 'निम्बार्क-उदय' नामक ग्रन्थ का संस्कृत में प्रणयन किया है। उसका भी अभी यहाँ विमोचन होने वाला है।

आज यहाँ इस परम मङ्गलमय आयोजन में अनेक सन्त-महात्मा पधारे हुए हैं, जो एक से एक विलक्षण हैं, यहाँ पर जिस ओर दृष्टि डालें, सब ओर अनेक विभूतियों के दर्शन हो रहे हैं, सबका संकेत करना असम्भव है। भक्तिमती माताओं के भाव भक्ति का वर्णन करने के लिये तो हमारे शब्दकोष में कोई शब्द ही नहीं हैं।

यहाँ इस अभावग्रस्त अरण्य प्रदेश में आपको कोई नगरीय सुख–सुविधा उपलब्ध नहीं है, पर जैसा भी कष्ट है, ताप, परिताप है, हम समझते हैं कि आप अपने अन्तःकरण में किसी प्रकार के दुःख का अनुभव नहीं करके इस सारे उत्सव को आप सब अपने समवेत सह-योग से सफल करेंगे, ऐसा विश्वास है। आप सब की समवेत सेवाएँ इसी प्रकार निरन्तर सप्त द्विवसीय अवधि में प्राप्त होती रहेगी और यह सब आपके आनन्दवर्द्धन के रूप में हो एवं समस्त भक्तवृन्द आनन्दसागर में आप्लावित होकर के अपने जीवन को सफल करें। इन्हीं भावनाओं के साथ हम अपने शब्दों को यहीं विराम देते हैं।

अ० श्रीव्रजवल्लभशरणजी वेदान्ताचार्य पंचतीर्थ, वृन्दावन के उद्‌गार

आचार्यचरणों के पट्टाभिषेक अर्द्धशताब्दी पर आयोजित विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के अवसर पर आप हम सब यहाँ एकत्रित हुए हैं और आनन्द ले रहे हैं। लेना और देना यह क्या है। यह फूल मालाएँ हैं, अभी थोड़ी देर में यह मुरझा जायेंगी, सूख जाएँगी। आचार्यचरणों में हमको वह चीज अर्पण करनी चाहिए जो अजर अमर रहे। इसी प्रकार लेना भी चाहिए। बहुत से लोग आये हैं, इसलिए आये हैं कि हमको हजार–पाँच सौ रुपया मिलेगा, लो, हाथ लगे सो लो, लेकिन वे कब तक रहेंगे। जब तक सन्तोष रूपी धन नहीं आयेगा सब व्यर्थ है, ये सब जायेंगे। लेने व देने को ज्ञान रूपी धन कहा जाता है, वह जब तक जीवन रहता है साथ रहता है। ज्ञान अर्पण करने के लिए होता है, रखने के लिए नहीं, इसलिये ज्ञान रूपी धन लो और दो।

श्रीसर्वेश्वर भगवान् की कृपा हुई आप आचार्यपीठ में विराजमान हुए और फिर क्या—'सर्वे सुखावहं" सबको राजी किया। हम कहते चालाकी करते हो, धोखा देते हो, इसको भी राजी उसको भी राजी, सबको राजी कैसे करेंगे, कोई तो निराश होगा ही सब राजी नहीं हो सकते। लेकिन गजब का काम कर दिया, इनने सबको राजी किया, आचार्यपीठ पर विराजमान होकर।

श्रीमहन्त श्रीहरिदासजी महाराज के उद्‌गार

आज बहुत बड़े आनन्द का दिन है। हमारे महन्तजी महाराज मेवाड़ के मालिक हैं आपने अभी कहा कि ऐसा आयोजन भविष्य में होगा नहीं, ऐसी बात नहीं है, महाराजश्री की आज्ञा से इससे भी लम्बा-चौड़ा आयोजन हम लोगों की जिन्दगी के सामने हो सकता है। दो बात कहूँगा। निम्बार्काचार्य महान् वामन द्वारे इनसे निकले वे करते हैं गुणगान। सोलह अखाड़े जो कि कुम्भों की व्याख्या करते हैं कुम्भ के अखाड़े हैं। ये क्या हैं, ये रक्षक हैं, महा-बलवान हैं और महाराजश्री की आज्ञा से प्राणों की आहुति देने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं और तैयार रहेंगे।

युवराज स्वामी श्रीश्रीनिवासाचार्यजी महाराज

नागोरियामठ, डीडवाना के

प्रेरणाप्रद उद्‌गार

आप लोग परम सौभाग्यशाली हैं कि तितिक्षु और कारुणिक महात्माओं की सन्निधि में विराजमान हैं। आज की सभा के विषय हैं कि धर्म का क्या स्वरूप है, धर्म और राजनीति का क्या सामञ्जस्य होना चाहिए। क्या बताया जाय, प्रायः लोग क्या मानते हैं कि ईश्वर के कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुंसमर्थ, जो परमात्मा है उसकी उपासना करने के मार्ग को धर्म कहते हैं यह ठीक है और उपासना करने वाले लोग अपने-अपने सम्प्रदाय से ईश्वर की प्रार्थना उपासना करते हैं उसको धर्म मानते हैं सबके हृदय में यह बात है। शास्त्र भी इसका अनुमोदन करते हैं कि तिलक लगाना, माला पहनना, माला जपना इत्यादि भगवद् स्तुति, भगवत् कीर्तन भगवत् परायण रहने के साधन धर्म हैं, ये तो देखने में भी आते हैं ये दर्शनात्मक धर्म हैं। जैसे आप यहाँ हमें देख रहे हैं हम आपको देख रहे हैं, पर धर्म ऐसे दिखता नहीं है, धर्म का स्वरूप तो गुणात्मक है। बाल्मीकीय रामायण के अयोध्या काण्ड के प्रथम और द्वितीय सर्ग में महामानव के लक्षण हैं वही मानव धर्म है। आज हम लोग हमारी राष्ट्रीय समस्याओं को इस लिए नहीं सुलझा पा रहे हैं कि हर मनुष्य का धर्म विकृत हो चुका है। बाप-बेटे से लड़ रहा है पत्नि-पति से लड़ रही है, गुरु से चेला और चेले से गुरु लड़ रहा है, अध्यापक छात्र को पढ़ाता नहीं, छात्र गुरु से पढ़ता नहीं। इन समस्याओं का निराकरण यदि करना है तो भगवान् राम और महाराज युधिष्ठिर के चरित्रों को सुनना होगा और मानना होगा। आज विश्व विद्यालयों में, विद्यालयों में, शिक्षालयों में इस भारतीय शासन ने धर्म को पढ़ाना ही बन्द कर दिया है ऐसी स्थिति में ऐसी सभाओं में ही आचार्य महापुरुषों के प्रयत्न से यदा-कदा हमारे मस्तिष्क में धर्म सम्बन्धी बातें सुनने का अवसर मिलता है। हर व्यक्ति के नित्य का जीवन भगवान् राम के द्वारा बताये हुए मार्ग से युक्त नहीं होगा तो हम धर्म को कुछ नहीं समझ सकेंगे। इसलिए हर बालक-बालिका, स्त्री-पुरुष को इस सनातन धर्म के विषय को भली प्रकार से समझना चाहिए। श्रीमद्भागवत में देवर्षि नारद ने महाराज युधिष्ठिर को मानव धर्म निरूपण के नाम

से जो उपदेश दिया है उसमें ब्राह्मणों के धर्म, क्षत्रियों के धर्म, वैश्यों और सेवकों के धर्म, नारी के धर्म, ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ के व सन्यासी के धर्मों का विस्तृत विवरण हुआ है वह सबको पढ़ना पड़ेगा, सुनना पड़ेगा, अगर आप पढ़ना नहीं चाहते, सुनना नहीं चाहते केवल टी० वी० ही देखना है तो, न तो स्वयं सुधरोगे और न समय ही तुम्हें सुधार सकेगा। आगे भगवान् राम के चरित्र सम्बन्धी उदाहरण देते हुए आपने माता-पिता-भ्राता व नारी धर्म पर प्रकाश डाला।

★

आचार्य खेमराजकेशवशरणजी शास्त्री नेपाल के उद्‌गार

परम श्रद्धेय आचार्यचरणों के समक्ष आप सब बैठ करके सत्संग का, धर्म के सम्बन्ध में चर्चा का अमृत पान कर रहे हैं। सनातन धर्म का जो स्वरूप है। इसका स्वरूप क्यों सनातन बना, इसकी संज्ञा क्यों सनातन हुई और इसका सनातन किस पर टिका हुआ है, इस पर मैं थोड़ा प्रकाश डालूंगा। सबसे पहले सोचने की बात यह है कि विश्वभर में जितने भी धर्म हैं सभी का कोई न कोई संस्थापक है, तिथि है दिनांक है, एक समय है कि अमुक समय पर यह स्थापित हुआ था, इतनी आयु का है। सभी धर्मों की अपनी-अपनी आयु है उम्र है परन्तु इस वैदिक सनातन धर्म की कोई उम्र नहीं कोई आयु नहीं, स्थापना का कोई दिन नहीं और इसकी स्थापना करने वाला कोई एक व्यक्ति नहीं, यही इस धर्म का, महान् धर्म की सनातनता का मूल कारण है।

दूसरा इसका कारण है कि हमारे इस धर्म ने हमें प्रभु का उपासक, ईश्वर का उपासक बनकर जीने की शिक्षा दी है। जिन प्रभु ने हमें जीवन दिया, हम मनुष्य होकर जीने का सौभाग्य प्राप्त कर धरती पर आये, उन प्रभु के प्रति कृतज्ञ बनें। उस प्रभु के उपासक बनकर जीयें। जिसने परमात्मा के चरणों में कृतज्ञता नहीं निभाई, जीवनदाता श्रीसर्वेश्वर को अपना आराध्य नहीं बनाया उनके समक्ष अपना शीश नहीं झुकाया, वह दोष का भागी हो जाता है यह बहुत बड़ा अवगुण है। भगवान् ने हमें जीवन ही नहीं दिया जीने का सहारा भी दिया है। जीभ, आँख, नाक, कान, हाथ-पैर दिए। इस प्रकार के परम सुन्दर उपयोगी उपकरण देकर प्रभु ने जो जीवन दिया है उनके प्रति कृतज्ञ बनने की शिक्षा हमारे धर्म ने दी। जो सनातन है उस सनातन की आराधना करने की शिक्षा हमारा धर्म देता है, इसलिए इसका नाम सनातन धर्म है। भगवान् सनातन है इसका कहाँ निरूपण है, भगवद्‌गीता के दर्शन योग को पढ़ें, अर्जुन हाथ जोड़कर भगवान् से कहते हैं—हे प्रभो आप सनातन हो। तीसरा कारण है हमारे धर्म ने हमारी आत्मा को सनातन बताया है। यह पाञ्चभौतिक शरीर तो प्रकृति का विकार है, प्रकृति का अंश है पर हम तो प्रभु के अंश हैं। प्रभु ने अपने श्रीमुख से कहा है जीवात्मा मेरा अंश है, मूलरूप में आनन्द स्वरूप है और वह सनातन है। सनातन आत्मा का निरुपण करने वाला धर्म होने के कारण इसका नाम सनातन धर्म पड़ा। सारे संसार के आज जितने भी आध्यात्म साधना लिप्सु साधक आगे आ रहे हैं किसी भी चमड़ी के, किसी भी रंग के, किसी भी देश के, किसी भी भाग के, इसी आकर्षण के कारण आ रहे हैं कि इसमें आत्मा को सनातन रूप में प्रतिपादित की है इसका मुख्य कारण यह है कि भगवान् के और हमारे बीच का जो

सम्बन्ध है वह सनातन है। वह सम्बन्ध इतना गहरा इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि मानते या न मानते हुए भी भगवान् की स्नेहभरी गोद में हम पल रहे हैं। क्षण-क्षण उनकी दी हुई हवा में हम सांस लेते हैं, उनके दिए हुए प्रकाश का सहारा लेकर जीते हैं उनके दिए हुए अन्न से अपना पेट भरते हैं, ऐसा हमारा उनका अविच्छेद सम्बन्ध है। इसलिए बताया गया कि प्रभु को समर्पण करके पाओगे तो वह अमृतमय भोजन होगा। अकेले ही बनाया और अकेले ही प्रभु को याद किये बिना पा लिया तो वह पापमय होगा। भगवान् से सम्बन्ध जोड़कर जीओगे तो तुम्हारी यात्रा परिक्रमा बनेगी, हर चेष्टा साधना बनेगी, पूजा बनेगी, यह शिक्षा हमारे धर्म ने दी है, यह चौथा कारण है। पांचवां कारण यह है कि इन सारी साधनाओं को जिस परम पावन मूल ग्रन्थ में निर्देश किया है वह वेद स्वयं सनातन हैं और सनातन वेद से जुड़ी हुई, सनातनात्मा से जुड़ी हुई सारी शिक्षाएँ सारे आदर्श मानव मात्र के लिए परम ग्राही हैं। इसलिए पाश्चात्य देशों के सारे चिन्तक-विचारक इस ओर अभिमुख हो रहे हैं और उद्घोष कर रहे हैं कि जीवन के आदर्शों के बारे में सामाजिक आदर्शों के बारे में और जीवन की जो सुन्दरतम व्याख्या है उसके बारे में हिन्दुओं को सिखाने के लिए हमारे पास कोई चीज है, हमें ऐसा नहीं लगता। तो इतना बड़ा धर्म जिसके हम अनुयायी हैं यह वही सनातन धर्म है।

परम पूज्य जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज ने अपने इस परम पावन काल में ५० वर्ष की साधना अवधि में जो महान् कार्य करके अपनी परम कल्याणमयी सेवा अर्पित की है उसके प्रति सभी जागरूक हिन्दुत्व प्रेमी आचार्यश्रीचरणों में श्रद्धावनत होकर आभार ज्ञापन करते हैं कृतज्ञता जताते हैं। इन्हीं शब्दों के साथ हम अपना ये वक्तव्य विसर्जित कर रहे हैं।

※

स्वामी श्रीहरिनारायणानन्दजी महाराज का पावन उद्बोधन

[महामन्त्री – भारत साधु समाज, दिल्ली]

आप जिस महान् धार्मिक समारोह में उपस्थित होकर देश के विभिन्न भागों से पधारे हुए साधु-महात्माओं के दर्शन प्रवचन से लाभ उठा रहे हैं, इसका सम्बन्ध एक ऐसे आध्यात्मिक महापुरुष के जीवन से जुड़ा हुआ है, जिन्होंने अपनी सारी आध्यात्मिक शक्ति को धार्मिक जनता की सेवा के लिये समर्पित किया है, वे जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज हैं जिन्होंने ५० वर्ष पूर्व अ० भा० निम्बार्काचार्यपीठ पर समासीन होकर अपने महनीय मङ्गलमय कृतित्व एवं व्यक्तित्व से सनातन धर्म जगत् को उपकृत करके धर्माचार्यों का एक परम पावन आदर्श स्थापित किया है।

आज श्री 'श्रीजी' महाराज के भव्य स्वर्णजयन्ती समारोह के शुभ अवसर पर अपने राष्ट्र के उन धर्माचार्यों के दर्शन और प्रवचन से आप लाभान्वित हो रहे हैं, जिन्होंने धर्म और संस्कृति के स्वरूप पर विवेचन किया है, उसे समझा है और अपने जीवन में आत्मसात् किया है।

हमारा धर्म विश्व के किसी भी धर्म से घृणा की शिक्षा नहीं देता है। धर्म की व्याख्या करते हुए भारतीय महर्षियों ने कहा —'यतोऽभ्युदयनिःश्रेयस्सिद्धिः स धर्मः।' अर्थात्

मनुष्य जीवन में जिससे लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार के सुखों की प्राप्ति हो वह धर्म है। धर्म का अर्थ केवल भगवान् की उपासना करना मात्र नहीं है, अपितु जो व्यक्ति जिस क्षेत्र में कार्य करता है, वह उस कार्य को पूर्ण निष्ठा और भक्ति पूर्वक करे। ज्ञान के साथ भक्ति का समन्वय नहीं होगा तो धर्म लूला-लंगड़ा और अन्धा बन जायेगा। अतः ऋषि मुनियों ने कहा है कि धर्म के पालन के लिए श्रद्धावान् बनो। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्।' यह हमारी संस्कृति एवं हमारा धर्म है।

हमारी संस्कृति का निर्माण निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज जैसे तपस्वी धर्माचार्यों के जीवन दर्शन से बना है। ऐसे महापुरुषों का जीवन अपने लिए नहीं, समाज, देश एवं धर्म के लिए है। हम आज देश के धर्माचार्यों, विभिन्न सम्प्रदाय के सन्त-महात्माओं के एक मञ्च पर दर्शन करके विशेष आनन्द का अनुभव कर रहे हैं, यही अनेकता में एकता के दर्शन का स्वरूप है। हमारे सम्पूर्ण शास्त्रों तथा पुराणों का सार तत्त्व एक ही है—

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम्॥

हमारी यह परम्परा रही है कि हम सब धर्मों की भावना का आदर करें, किन्तु साथ ही अपनी संस्कृति, धर्म एवं अपने राष्ट्र के गौरव की पहचान भी आवश्यक है। अतः भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है—'स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।'

आज हमारी संस्कृति एवं धर्म पालन में उपेक्षा के कारण राष्ट्रीय चरित्र में गिरावट आ रही है, सार्वजनिक जीवन, राजनैतिक जीवन, प्रशासनिक जीवन में नैतिक मूल्यों का बड़ी तेजी से ह्रास होता जारहा है और यदि उसे रोका नहीं गया और जिनके हाथों में सत्ता की बागडोर है, उनमें यदि आध्यात्मिक बुद्धि का विकास नहीं हुआ तो, मानव जाति विनाश के कगार पर खड़ी है। उक्त समस्या के समाधान के लिये निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज के तत्त्वावधान में इस समारोह का आयोजन किया गया है जिससे देश-विदेश के लोगों को यहाँ के धर्माचार्यों एवं साधु-सन्तों का आध्यात्मिक सन्देश भेजा जाय। इस दृष्टि से इस आयोजन का बहुत बड़ा महत्व है।

राजनीति हमारा क्षेत्र नहीं है, किन्तु राजनीति जब हमारे धार्मिक क्षेत्र में हस्तक्षेप करती है तो हमें उसका निरोध करना हमारा कर्तव्य है। यह जानकर दु.ख हुआ कि राजस्थान में राज्य सरकार एक कानून द्वारा धार्मिक स्थानों, मठ एवं मन्दिरों पर अपना अंकुश लगाना चाहती है। भारत साधु समाज इसका डटकर विरोध करेगा। यदि उक्त कानून बन गया तो राज्य सरकार के कर्मचारियों एवं अधिकारियों पर भ्रष्टाचार के आरोप तो लगते ही रहते हैं, उसी प्रकार धार्मिक संस्थानों के सञ्चालन में भी उक्त दोष का आना सम्भव है। अतः इसके निराकरण के लिये ५ सदस्यों की एक समिति का गठन किया जायेगा। उक्त विषय में छानबीन करके यदि आवश्यकता हुई तो महामहिम राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री से बात कर धार्मिक स्थानों की प्रतिष्ठा एवं गरिमा की रक्षा की जायेगी। इसमें समस्त हिन्दू समाज के सहयोग की अपेक्षा होगी।

राजस्थान की भूमि पवित्र और वीर भूमि है इसकी पवित्रता और वीरता की रक्षा के लिए धार्मिक जीवन के संरक्षण की बड़ी आवश्यकता है। इसी प्रकार रामजन्मभूमि मन्दिर आन्दोलन एक राष्ट्रीय आन्दोलन है, इसकी सफलता के लिए सबके सहयोग की अपेक्षा है।

निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज के प्रति मैं अपनी श्रद्धा और निष्ठा पूर्वक भारत साधु समाज की ओर से हार्दिक अभिनन्दन अर्पित करता हूँ। आपश्री का जीवन सदा धर्म व संस्कृति की रक्षा के लिये समर्पित रहा है। आशा है इसी प्रकार इस आचार्यपीठ के द्वारा देश और विदेश के मानव समाज को धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक प्रेरणा प्राप्त होती रहेगी।

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज का–

आशीर्वादात्मक प्रवचन

समुपस्थित समस्त सन्त-महात्मा, विद्वद्वृन्द तथा परमभावुक भक्त महानुभाव, भक्तिमती मातायें ! जब मुरली का मधुर निनाद सर्वत्र परिव्याप्त हो जाता है तो उसकी रसमय दिव्य धारा सर्वत्र प्रवाहित हो जाती है और अनन्त-अनन्त भक्तजन उस रसामृत को पान करके अनन्त आनन्द का अनुभव करते हैं। जो अभी एक अद्भुत समारोह यहाँ हुआ, ५० वां पाटोत्सव। यह उत्सव किसी व्यक्ति विशेष का नहीं है, यह अखिल भारतवर्षीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ का महामहोत्सव है, हम तो उस पीठ की सेवा करने वाले, सोहनी सेवा करने वाले एक चरणकिंकर हैं। यह सौभाग्य हमको मिला, यह कोई हमारे युग-युगान्तरों के पुण्यों का प्रभाव नहीं है यह तो प्रभु की अनन्त कृपा का ही प्रसाद है कि इस सेवा का सौभाग्य हमें मिला। परन्तु सेवा धर्म बड़ा कठिन है, जिस विधा से, जिस मर्यादा से, जिस भावना से उसको सम्पन्न करना चाहिए उसमें हमसे भी कितनी ही त्रुटियां हुई हैं। जितने भी हमारे धर्म के स्वरूप हैं उनमें यदि कोई सबसे कठिनतम कोई कार्य है तो वह सेवा कार्य है। इन माताओं को इसका अनुभव है। सेवा समिति के सदस्यगण जो यहाँ पर सेवा कार्य में लगे हुए हैं वे भी अनुभव करते होंगे कि हमारी सेवा से सब सन्तुष्ट हैं कि नहीं। जितने भी समागत महानुभाव हैं वे हमारे अतिथि हैं उनकी हर प्रकार से सेवा करने में वे सक्षम हैं कि नहीं, कहना बहुत कठिन है। सेवा धर्म अत्यन्त गहन है इसलिये सेवा धर्म को सबसे उत्कृष्ट माना गया है।

आचार्यपीठ की सेवा करने का सौभाग्य हमको साढ़े ग्यारह वर्ष की अवस्था में मिला और चौदह वर्ष की अवस्था में वि० सं० २००० में आचार्यपीठ पर आसीन होने का सौभाग्य मिला, जिसको आज ५० वर्ष होते हैं। पाटोत्सव क्या है यह आचार्यपीठ का महामहोत्सव है जिसमें आप सब भी सम्मिलित हैं और उस उत्सव में एक हम भी सदस्य हैं। अभी हमारे गुरुदेव विग्रह स्वरूप के आपने दर्शन किए। हमारे महाराजश्री के श्रीविग्रह की यह सुन्दर प्रतिमा वैद्यप्रवर श्रीवैकुण्ठनाथजी आयुर्वेदाचार्य मथुरा ने निर्माण कराकर हमें भी उसके दर्शन कराये, हमें असीम आनन्द का अनुभव हुआ। इस प्रकार का सौभाग्य मिलना बहुत कठिन है।

इस पाटोत्सव के सन्दर्भ में अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का समायोजन है, विशिष्ट विभूतियों के मंगलमय उपदेश श्रवण का सौभाग्य आपको मिला है, रासलीला के दिव्य दर्शन, संगीत के मर्मज्ञ बाबा श्रीशुकदेवदासजी तथा उनके परम कृपापात्र श्रीकैलाशजी वर्मा अनुज आकाशवाणी दिल्ली के अधिकारी तथा लखनऊ, बम्बई और जोधपुर से भी संगीत के कलाकार आये हुए हैं रात्रि में इनके रसमय संगीत का आस्वादन आप सबको प्राप्त होगा। यह कायक्रम रात्रि में होगा। आप सब उसमें सम्मिलित होवें। इन्हीं शब्दों के साथ हम अपनी वाणी को अभी यहाँ विराम देते हैं। -o-

रामस्नेही सम्प्रदायाचार्य श्रीरामकिशोरदासजी महाराज का

-:- पावन प्रवचन -:-

श्री 'श्रीजी' महाराज का यह स्वर्णिम महोत्सव सनातन धर्म सम्मेलन के लिए, इतने महापुरुषों के आह्वान के लिए निमित्त बना। जैसे सूर्यनारायण बाहर के नेत्रों को मदद करते है, रोशनी देते हैं, वैसे ही ये सन्तरूपी सूर्य अन्तर की दिव्यता दिव्य रोशनी प्रदान कर मानव जीवन को दिव्य बनाने में सहकार प्रदान करते हैं। सन्तों का जीवन उज्ज्वल जीवन होता है, महत् जीवन होता है, पुण्यश्लोक अवध नरेश महाराज भागीरथ ने हिमालय से भगवती विष्णुपदी श्रीगंगाजी को भारत की भूमि पर लाने का अथक परिश्रम किया। माँ गंगा धरती पर पधारी, उनके पूर्वजों का तो उद्धार हुआ ही लेकिन आज तक अनन्तजनों का माँ गंगा उद्धार करती हैं। गंगा जल का बड़ा महत्व है ऐसे ही सन्त जीवन भी महत्वमय है हमारे श्री 'श्रीजी' महाराज ने अपने जीवन में दैवी सम्पदाओं की स्थापना की, जनमानस में आस्तिकता का संचार किया, प्रभु चरणों से प्यार करने की प्रेरणा दी, तो ये सन्त का आदर्श जीवन है, उज्ज्वल जीवन है, पावन जीवन है उस जीवन से हमको कुछ सीखना चाहिए।

एक वृद्धा माताजी थी गो-सेवा उसके घर में थी, हमेशा हनुमानजी महाराज की पूजा करती गाय का घी निकालती और वह घी से एक जाडा रोटा बनाकर और उसके ऊपर खूब घी डालती थोड़ा बूरा डाल देती और हनुमानजी के भोग लगाती और कहती महाराज आज तो मेरे हाथ-पांव ठीक चल रहे हैं तो मैं आपको ये भोजन निवेदन कर रही हूँ लेकिन जब मेरे हाथ-पांव न चलें तो आप मेरे को रोटी देना, साथ में वह भोले हृदय से यह भी निवेदन कर दिया करती थी। उसका एक लडका था उसकी शादी हो गई बहूरानी घर में आ गई, दो-चार साल बहू को हो गये माताजी के रोज के इस कार्यक्रम को वह देखती बड़ी नाराज होती, इस मंहगाई के जमाने में यह इतना घी हनुमानजी को देती है। अपने पति देवता से कहा कि देव दया करो अपनी माताजी को समझाओ हनुमानजी को रोट चढ़ाना बन्द कर दे। पति ने कहा कि माँ की कृपा से हमको दाल-रोटी मिल रही है जीवन सुखी है कोई चिन्ता नहीं है, ये कोई पाप थोड़ा ही करती है, ये तो पुण्य कर रही है। ऐसे ही एक-दो साल और निकल गये एक दिन बहू ने कहा कि आप अपनी माताजी को गंगा स्नान तो करालाओ, बड़ा पुण्य मिलेगा। मातृदेवो भव पितृदेवो भव आचार्यदेवो भव ये जो हमारी वेद वाणी है

उसका आप बड़ा आदर करते हैं आपकी इज्जत होगी और आपकी माताजी का आपको आशीर्वाद मिलेगा। लेकिन वहू की अन्दर की इच्छा ये थी कि माताजी वापस नहीं आनी चाहिये। माताजी को तो हनुमानजी का पक्का भरोसा था। बच्चा उन्हें ले गया और गंगाजी में स्नान कराया ५-१० दिन वहाँ रहे, एक दिन बच्चे ने कहा माँ मैं जरा बाजार में जाकर आता हूँ आप बैठिये, प्लेटफार्म पर माताजी को बिठा दिया और वो गया सो गया ही गया अपने घर के लिए रवाना हो गया वापस आया ही नहीं। सायंकाल हो गई सूर्यनारायण अस्ताचल की ओर जा रहे हैं माताजी ने हनुमानजी को भी याद किया बेटे को भी याद किया हनुमानजी महाराज आ गये एक लड़के के रूप में और कहा कि माताजी पधारो कहां चलना है तो माताजी ने कहा मेरा बेटा नहीं आया, तब हनुमानजी ने कहा मैं भी तो आपका बेटा हूँ क्यों चिन्ता कर रही हो चलो। हनुमानजी ने माताजी की सारी व्यवस्था कर दी। देव श्रद्धा में विराजमान है श्रद्धावान् को सब कुछ मिलता है, इष्टदेव का स्मरण बहुत आवश्यक है, हनुमानजी ने बड़ी कृपा कर दी और माताजी का जीवन बड़ा सुखी हो गया। तो आप देखो कि यदि इष्ट शक्ति जीवन में होगी, भगवान् के चरणों का पूरा विश्वास होगा, सन्त चरण में विश्वास होगा तो उससे जीवन मंगलमय होगा, सुख-शान्तिमय होगा। तो ये आज का भव्य समारोह सचमुच हम सबके लिए बहुत बड़ा प्रेरणा स्रोत है जीवन में बहुत बातें जानने को मिलती है, इन दिव्य महापुरुषों की दिव्य वाणी से कितने-कितने पवित्र शब्द, विद्वानों के कितने उज्ज्वल धारा के पवित्र बोल ये सब हमारे जीवन साधना को उज्ज्वल बनाते हैं, इसलिए आप सब लोग भी सचमुच में बड़े भाग्यशाली हैं जो ऐसे पवित्र समारोह में इतना त्याग कर समय समर्पित कर रहे हैं, और कुछ न कुछ श्रवण का लाभ ले रहे हैं। ये श्रवण साधना श्रवण भक्ति बहुत उच्चकोटि की भक्ति है हमारे मेवाड़ उदयपुर सम्भाग के श्रीमुरलीमनोहरशरणजी महाराज हमारा उनका तो बहुत स्नेह वर्षों से है आज से नहीं, तो आप भी इसमें उपस्थित हैं और मंच सञ्चालन का, एक सेवा का बहुत बड़ा कार्यक्रम सञ्चालित कर रहे हैं बड़ी प्रसन्नता है भगवान् श्रीसर्वेश्वर की अनुकम्पा से आपका जीवन भी हमारे देश के मंगल के लिए मंगलमय हो, सुख-शान्तिमय हो और हमारे आचार्य श्री "श्रीजी" महाराज का जीवन सुख-शान्तिमय हो और स्वस्थ जीवन हो और दीर्घ जीवन हो, आपके जीवन से हम सब लोगों को अपने जीवन में कुछ न कुछ अच्छी प्रेरणायें प्राप्त होती रहे। हमारे श्रीशंकराचार्यजी महाराज पुरीपीठ से पधारे हुये हैं और श्रीवामदेवजी महाराज का तो विरक्त सन्तों में बहुत बड़ा सम्मान है आपने देश में घूम-घूमकर बहुत कार्यक्रम किये हैं सनातन धर्म के फैलाव का, रक्षण का और उसके प्रति श्रद्धा जागृति करने का बहुत कार्यक्रम है आपका, तो आप भी यहाँ पधारे आपके दर्शन से बड़ा आनन्द लाभ मिला। रामजन्मभूमि का दिव्य कार्यक्रम भी आपके प्रबल पुरुषार्थ में संलग्न है, भगवान राम मर्यादा पुरुषोत्तम आपके पुरुषार्थ को सफलता प्रदान करें यही मेरी शुभकामना है।
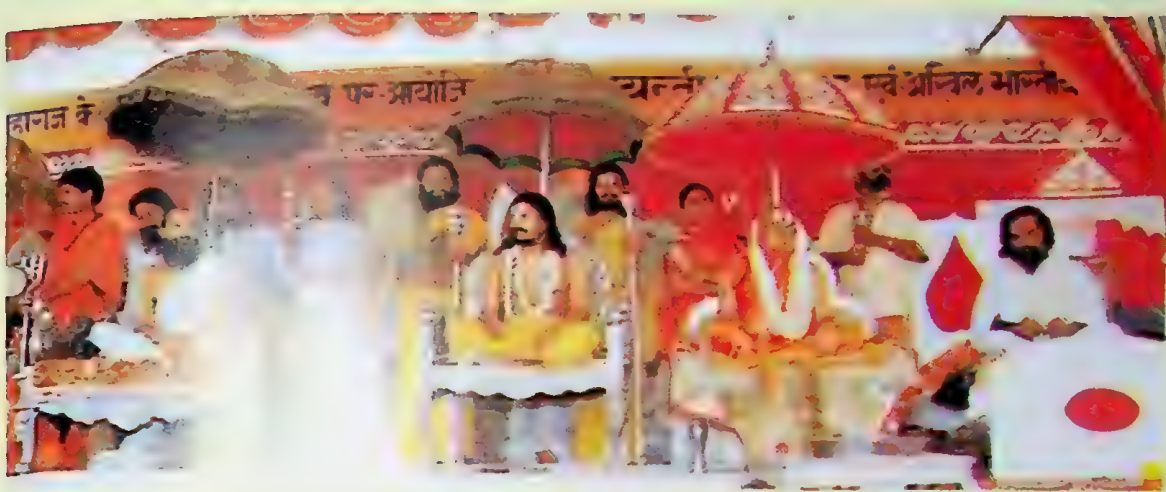
रूप से समासीन अनेक धर्माचार्यवृन्दों का भव्य-दर्शन।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य पुरीपीठाधीश्वर स्वामी श्रीनिश्चलानंदसरस्वतीजी महाराज (पुरी) सनातन धर्म पर सारगर्भित उपदेश प्रदान करते हुए।

सनातन धर्म पर अपने विचार प्रस्तुत करते महन्त श्रीहरिवल्लभदासजी महाराज (बड़ा मन्दिर किशनगढ़ रैनवाल)।

अनन्त श्रीविभूपित जगद्गुरु बल्लभाचार्य गोस्वामी श्रीबल्लभरायजी महाराज (सूरत) सनातन धर्म पर विवेचन प्रस्तुत करते हुए।

रामानुज सम्प्रदाय के प्रसिद्धपीठ-नागोरिया मठ के-युवराज स्वामी श्री श्रीनिवासाचार्यजी महाराज (डीडवाना) सनातन धर्म पर प्रवचन करते हुए।

सभामञ्च पर आचार्यपीठाभिषेक – अर्द्धशताब्दी महोत्सव पर पूज्य आचार्यश्री का अभिषेक। दूर्वाङ्कुर लिए खड़े दायें पं. श्रीहरिशरणजी उपाध्याय – प्राचार्य, श्रीनिम्बार्क संस्कृत महाविद्यालय (वृन्दावन) बायें – पं. श्रीसीतारामजी श्रोत्रिय पूर्व प्राचार्य, जयपुर बैठे हुए बायें – पं. श्रीगोकुलप्रसादजी भारद्वाज (अजमेर) पं. श्रीदयाशंकरजी शास्त्री (ब्यावर) दायें पं. श्रीखेमराज केशवशरणजी उपाध्याय (नेपाल) पीछे की ओर खड़े पं. श्रीवासु[illegible]शरण[illegible] उपाध्याय, प्राचार्य श्रीस[illegible] संस्कृत महाविद्यालय (श्री निम्बा[illegible]र्यपीठ) पं. श्रीविश्वामित्रजी [illegible] निम्बा[illegible] एवं अन्य सन्तवृन्द।

समिति के पदाधिकारीगण से आचार्यश्री रजत निर्मित श्रीनिम्बार्कसुदर्शन महाचक्र को प्राप्त करते हुए।
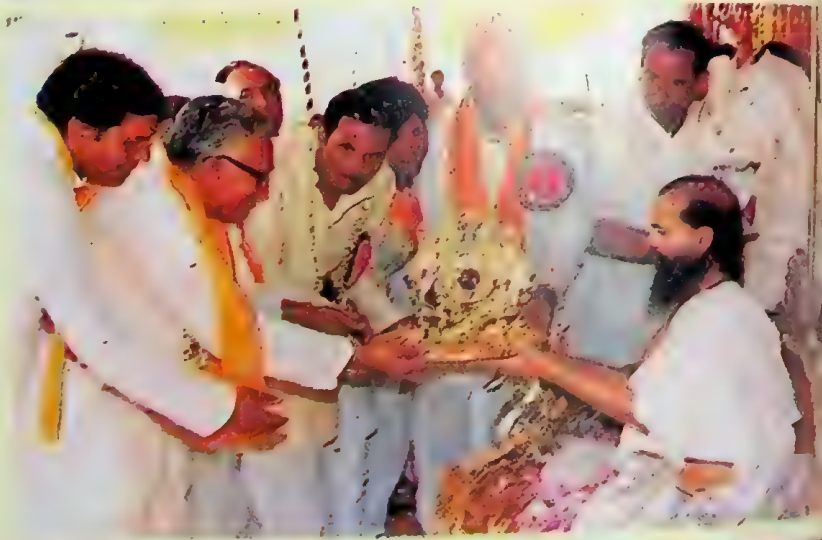
अनन्त श्रीविभूपित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी' श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज के नवनिर्मित विग्रह को आचार्यश्री वैद्य श्रीवैकुण्ठनाथजी शर्मा (मथुरा) से प्राप्त करते हुए। साथ खड़े उनके सुपुत्र श्रीमन्नुजी।

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के वयोवृद्ध महन्त श्रीराधावल्लभदास महाराज (वाईजी राजकुण्ड-उदयपुर) महाराजश्री को [illegible] समर्पित कर स्वागत करते हुए।

सभा संचालक मेवाड़महामण्डलेश्वर–

श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी शास्त्री का प्रेरणादायी उद्‌बोधन

बन्धुओं ! अपने लिए कितना बड़ा गौरव है, आज यहाँ श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में इस पावन-महोत्सव पर हमारे सनातनधर्मजगत् के प्रायः सभी धर्माचार्य, सन्त-महात्मा, विद्वान् पधारे हुए हैं उन्हीं में अन्तर्राष्ट्रीय रामस्नेही सम्प्रदाय के आचार्य परम श्रद्धेय श्रीरामकिशोरजी महाराज गत कई वर्षों से अस्वस्थ होते हुये भी शरीर बिल्कुल कष्ट पर है तो भी इस निम्बार्कतीर्थ में आयोजित होने वाले सनातन धर्म सम्मेलन में आप सबको आशीर्वाद देने, हम सबको मार्गदर्शन देने पधारे। श्रीरामकिशोरजी महाराज राजस्थान के ही नहीं पूरे राष्ट्र में रामस्नेही परम्पराओं के सर्वश्रेष्ठ महान् आचार्य हैं, और श्रीमद्-भागवत के अद्‌भुत वक्ता हैं। श्रीमद्‌भागवत की जब सप्ताह होती है तो हजारों की संख्या में लोग एक साथ बैठ कर आचार्यश्री से श्रीमद्‌भागवत का जो रसामृत है उसका पान करते हैं। हम श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के सारे भक्तजन, सारी मातायें और हम सब लोग भगवान् श्रीसर्वेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि महाराज श्रीरामकिशोरजी को अपना दीर्घ जीवन प्रदान करें, सुन्दर स्वास्थ्य प्रदान करें और आपके द्वारा इस राष्ट्र की, इस देश की भारतीयता की, मानव जाति की ऐसी उत्तम से उत्तम सेवा हो कि सारे राष्ट्र के लोग एक श्रेष्ठ मार्ग की तरफ एक सनातन पथ की तरफ अग्रसर हो सकें। पूज्य श्री 'श्रीजी' महाराज स्वयं श्रीरामकिशोरजी महाराज के स्वास्थ्य के लिए सदा चिन्तित रहते रहे हैं, मुझे कई बार महाराजश्री ने पूछा, तो आज हम सब लोग इस बात के लिए गौरवान्वित हुये कि महाराजश्री का स्वास्थ्य ठीक नहीं होते हुए भी ऑक्सीजन से चलते हैं ऑक्सीजन साथ में है। आज की दुनिया में बड़े-बड़े गृहस्थी, बड़े-बड़े लोग भी जब ऑक्सीजन की स्थिति में होते हैं तो घर से बाहर कदम नहीं बढ़ाते तब कितनी दूर ज्येष्ठ के गहन ताप में पूज्य श्रीरामकिशोरजी महाराज आपके लिए हमारे लिए श्री 'श्रीजी' महाराज को अपनी सद्‌भावना, शुभकामना देने के लिए पधारे, इससे बड़ा कोई दर्शन किसी सन्त का नहीं हो सकता। श्रीसर्वेश्वर प्रभु से प्रार्थना है कि वे महाराज श्रीरामकिशोरजी को सुस्वास्थ्य प्रदान करें और दीर्घ जीवन प्रदान करें। ठाकुरजी की ओर से तो कोई चिन्ता की बात नहीं लेकिन इस देश के गौरव, राष्ट्र के गौरव ऐसे आचार्य ऐसे सन्त इस देश में विराजने चाहिये, ये मंगलकामना करता हुआ महाराजश्री के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। वीतराग स्वामी श्रीवामदेवजी महाराज केवल सन्त नहीं हैं भारतीय जाति के विश्वास हैं, भारतीय जाति की निष्ठा हैं, भारतीय जाति के उद्‌घोष हैं, वे भी नौ दशक पूरा करने के बाद अब अपनी जाग्रति में अपनो तेजस्विता, अपनी ऊर्जा में अपनी चेतनायें इस राष्ट्र को न केवल अयोध्या प्रकरण अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र की जो सनातन वैदिक परम्परायें हैं उनको एक ध्वज प्रदान करने, एक विजय वैजयन्ती प्रदान करने के लिए ये भी पग-पग पर, गाँव-गाँव में, घर-घर में, शहर-शहर में अपनी यात्राओं का एक उद्‌घोष दे रहे हैं। आज के कार्यक्रमों में स्वामी श्रीवामदेवजी महाराज का आशीर्वाद प्रवचन होगा उसके बाद जगद्‌गुरु शंकराचार्य पुरीपीठा-धीश्वरजी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त होगा। श्री 'श्रीजी' महाराज के आशीर्वाद होंगे और

उसके बाद लखनऊ, बम्बई, दिल्ली और जोधपुर से आये हुए बड़े-बड़े संगीत भक्ति संगीत के कलाकार उच्चश्रेणी के बहुत श्रेष्ठ आर्टिस्ट जो बहुत ही कष्ट पाकर बहुत ही तकलीफ करके स्वागत समिति के अनुरोध से हमारे बीच आये हैं आप जब इनका संगीत सुनेंगे, इनकी ध्वनि आपके कानों में पड़ेगी वह आपको आनन्द में डुबो देगी, अभी ज्ञान और कर्म की जो गंगा है यमुना है उसको बहाने के लिए मैं पूज्य श्रीवामदेवजी महाराज के चरणों में निवेदन करता हूँ। पूज्य वामदेवजी महाराज—

卐

स्वामी श्रीवामदेवजी महाराज के प्रेरणाप्रद उद्गार

श्री 'श्रीजी' महाराज की कृपा से उनके भक्तों के द्वारा समायोजित इस सनातन धर्म सम्मेलन में हम सब लोग आकर के एकत्रित हुये हैं और अनेक विद्वानों और महात्माओं के वक्तव्यों का श्रवण कर रहे हैं। अभी श्रीरामानुजाचार्यजी महाराज ने कहा था कि युधिष्ठिर का कीर्तन करने से, नाम कीर्तन करने से मनुष्यों के धर्म की वृद्धि होती है कितनी सुन्दर बात है। इस देश में जब अंग्रेज आये और उन्होंने ईसवी सन् चलाया जो आज १९९३ है। ईसवी सन् तो यहाँ चला दिया लेकिन भारतीयों का भी तो कोई सम्वत् चलाना चाहिये इसलिए साथ में एक हमारे यहाँ पर शालीवाहन शक् सम्वत् नाम से जो सम्वत् चलता है उस सम्वत् को साथ में रखा। जो बड़े आफिसों में काम करने वाले लोग हैं वो इस बात को जानते हैं कि उनको ईसवी सन् १९९३ के साथ-साथ शक् सम्वत् १९१५ भी लिखना पड़ता है, उन्होंने हमारा विक्रम सम्वत् क्यों नहीं रखा, इसलिए नहीं रखा कि यदि वो विक्रम सम्वत् रख देते तो ईसाई सभ्यता हमारी सभ्यता से ५७ वर्ष छोटी हो जाती। इसलिए ईसाई सभ्यता के गौरव को रखने के लिए उन लोगों ने वि० सं० नहीं रखा। शालीवाहन शक् सम्वत् रखा जो कि ईसाई सभ्यता से ७८ वर्ष छोटा है अर्थात् ७८ वर्ष छोटे हैं हम ईसा से। इस प्रकार उन्होंने अपनी संस्कृति का गौरव रखा। भारतवर्ष के स्वतन्त्र होने पर जो नेता आये उनकी संस्कृति यह रही कि मजहब से मुसलमान, शिक्षा से ईसाई, और हिन्दू बाईचान्स। इस प्रकार की संस्कृति वालों के हाथ हमारे देश की शासन सत्ता आई। यदि इस देश की संस्कृति के गौरव रखने वाले लोगों के हाथ में सत्ता आती तो हमारे ज्योतिष् शास्त्र के अन्दर जो युधिष्ठिर सम्वत् चलता है जो ४००० वर्ष से पहले का है, ईसवी सन् के साथ में युधिष्ठिर सम्वत् रखते जिससे धर्म की वृद्धि भी होती। लेकिन इन नेताओं की तो संस्कृति ही दूसरी थी। विक्रम सम्वत् भी नहीं रखा। आपने सनातन धर्म की विशेषतायें भी सुनी जिसमें पाँच विशेषता हैं— सनातन ईश्वर, सनातन जीव, सनातन ईश्वर और जीव का सम्बन्ध तथा सनातन वेद के द्वारा सनातन उपदेश, ये पाँच बातें सुनीं, इनका यदि हम एक वाक्य बनावें तो सनातन ईश्वर से सनातन सम्बन्ध वाला जो जीवात्मा उसके लिए सनातन वेद के द्वारा जो सनातन उपदेश हैं वो हमारा सनातन धर्म है। हमारी संस्कृति तो दधीचि की हड्डियों से निकली है, हमारी संस्कृति रन्तिदेव की करुणा से निकली है, हमारी संस्कृति तो शिवाजी महाराज के बलिदान से निकली है, इसलिए उसकी जड़ें बहुत गहरी हैं लेकिन इस गहरी संस्कृति वाली जड़ के अन्दर अंग्रेजों ने बड़ी सावधानी से मट्ठा चुआ है। आपने 'चाणक्य' चलचित्र देखा होगा, घास का सत्यानाश

करने के लिए उसने उसकी जड़ों में मट्ठा डाला था। इसलिए सबसे पहले अंग्रेजों ने यहाँ पर एक कलक्टर अंग्रेज मैक्समूलर को वेदों के संशोधन का काम दिया और उसके कान में यह फूँक लगा दी कि इस देश का निवासी वेद शास्त्र को ईश्वर का वाक्य मानता है इसलिए इसको मनुष्य की कृति सिद्ध करो। मैक्समूलर ने उसको मनुष्यों के द्वारा बनाया हुआ सिद्ध किया। वेद जो हैं काल से कवलित नहीं हैं, सीमित नहीं हैं लेकिन उसको सीमित कर दिया कि ये वेद कोई तीन-चार हजार वर्ष पूर्व का है। आजकल पढ़े-लिखे बालक संस्कृत से एम० ए० देते हैं तो सब वेदों को मनुष्यों का बनाया हुआ कहते हैं लेकिन वेद का पुस्तक स्वयं क्या कहता है कि प्रलय से बचे हुये भगवान् से ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद और पुराण उत्पन्न हुये, उस परमात्मा का निःश्वास ही वेद है। हम लोगों की इस मान्यता को अंग्रेजों ने समाप्त किया और इस प्रकार ही देश के अन्दर ४६ वर्ष के समय में धर्म की जड़ों में मट्ठा चुआने का काम स्वतन्त्रता की सत्ता ने किया है। इसलिए ऐसी सरकारों के समय में धर्म के उत्थान की बात तब तक नहीं हो सकती जब तक हमारे धर्माचार्य लोग इस सरकार के शासन को उठाकर के दूर नहीं फेंक देते। इसी के साथ-साथ जो श्रीरामजन्मभूमि की बात आपने अभी श्रवण की। हम मन्दिर वहाँ चाहते हैं जहाँ हमारे रामलला की मूर्ति आज स्थापित है वहीं गर्भगृह बने ऐसा हम मन्दिर चाहते हैं। हमारा धर्म किसी से घृणा नहीं सिखाता और यहाँ तक है कि हम तो जब लड़ते हैं तो घृणा और द्वेश से नहीं लड़ते हैं। अपने कर्तव्य के ऊपर बलिदान करना सीखे हैं और हम क्या सीखे हैं गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने हमें सिखाया है कि अपने कर्तव्य के लिए मेरा स्मरण करो और युद्ध करो। हमारा तो धर्मशास्त्र इतना बड़ा है कि यदि धर्म के ऊपर शंका आवे तो चारों वर्ण और चारों आश्रम भी शस्त्र उठाकर खड़े हो सकते हैं। आज हम धर्म पर संकट मानते हैं, धर्म निरपेक्षता के द्वारा हमारे धर्म की जड़ों के अन्दर मट्ठा डाला जा रहा है। इसी के साथ-साथ मैं एक बात और भी कहता हूँ कि मस्जिद अयोध्या की सीमा के बाहर ही कहीं बने और वह बाबरी मस्जिद के नाम से नहीं बने। श्रीहरिनारायणानन्दजी महाराज ने भी कहा है कि मस्जिद अयोध्या की सीमा के बाहर बने और केवल मस्जिद के नाम से बने, बाबरी मस्जिद के नाम से न बने तो हमको कोई आपत्ति नहीं। सरकार मुस्लिम सम्प्रदाय के लिए तो इतनी उदार है कि केरल के स्कूलों के अन्दर शुक्रवार की छुट्टी कर दी है जो राष्ट्रीय परम्परा थी रविवार के दिन सारे ही विद्यालयों के अवकाश की, उस राष्ट्रीय परम्परा का उल्लंघन करके वहाँ पर शुक्रवार की छुट्टी कर दी है। धर्म स्थानों पर पंजाब के सिख और हिन्दू यदि जाते हैं पाकिस्तान में तो उनको चार आने की भी सहायता नहीं मिलती और मुसलमान लोग हज करने के लिए जाते हैं उन पर १८-२० करोड़ रुपया खर्च होता है प्रतिवर्ष, और अब उन्होंने इन्दौर में हाईकोर्ट में रिट कर दी कि हमारा खर्चा थोड़ा है तो ४० करोड़ रुपया होगया उनके लिए। मुल्ला-मौलवी मस्जिदों के ऊपर रहते हैं इनकी वेतनवृद्धि समाज कल्याण मन्त्रालय से की जाती है। दूसरी बात न्यास की है मन्दिर निर्माण के लिए सरकार नया न्यास बनाने की बात करती है। जिस न्यास को आप लोगों ने करोड़ों रुपया दिया है वही न्यास जनता का न्यास है और ५ लाख गाँवों में से लाखों धर्म शिलायें जिस न्यास के लिए दी है वही जनता का न्यास होगा कि नहीं होगा ? उस न्यास

के द्वारा बनाया हुआ मन्दिर जनता का होगा कि सरकार के न्यास के द्वारा बनाया मन्दिर जनता का होगा और जनता के सवा-सवा रुपये का बनाया हुआ वह मन्दिर तभी होगा कि जब उस न्यास के द्वारा बनाया जायगा। हमने उस समय घोषणा की थी कि हम रामजन्मभूमि मन्दिर बनाने के लिए किसी एक सेठ का आह्वान करें तो देश के अन्दर अपना नाम कमाने के लिए ऐसे बहुत से सेठ हैं कि जिनके नाम से मन्दिर बनाया जा सकता है लेकिन हम डालमिया का या बिड़ला का तथा अन्य किसी का मन्दिर बनाना नहीं चाहते, वह तो जनता का मन्दिर बनेगा और सवा-सवा रुपये से बनेगा यह कह करके हम लोगों ने सवा-सवा रुपया जनता से मांगने की अपील की है, इसलिए आपके सवा रुपये का हम मन्दिर बनाना चाहते हैं हम सरकार का मन्दिर नहीं बनाना चाहते, हम सरकार के द्वारा न्यास बनाया हुआ और फिर जो है राजा और रहीसों से धन मांग करके जो मन्दिर बनायेगा उसको हम स्वीकार नहीं करते, हम तो सवा रुपये का मन्दिर स्वीकार करेंगे। मन्दिर के लिए रामजन्मभूमि न्यास के द्वारा एक हजार वर्ष की आयु वाला पत्थर मंगवाया जा रहा है और वह पत्थर बहुत कुछ आ गया है और अब तक उस पर चार सौ कारीगर लोग उसके गढ़ने के लिए लगे हुये थे लेकिन अब विश्वहिन्दू परिषद् का जो द्रव्य है जो पैसा है वो सील कर देने के कारण केवल १०० कारीगर इस समय उस पर काम कर रहे हैं इस तरह से मन्दिर का काम तो चल रहा है। आज बड़े-बड़े लोग ये कहते हैं कि भगवान् सर्व व्यापक है उनको सीमाओं में मत बांधो। हम यों कहते हैं कि अग्नि सर्वव्यापक है चौदह भुवनों के अन्दर भी व्यापक है यदि कोई मूर्ख मनुष्य यह कहे कि भाई इसे चूल्हे में संकुचित मत करो इसको लट्टू में संकुचित मत करो तो क्या तुम्हारी रोटी बनेगी, ये प्रकाश होगा, ये तो तुम्हारे चूल्हे में संकुचित करने पर ही सब कुछ काम कर रही है इस लट्टू में संकुचित होकर ही अग्नि सब कुछ काम कर रही है, इसलिए हमारा राम दशरथनन्दन राम है हमारा राम दशरथ के घर में जन्म लेने वाला राम है हमारा कृष्णनन्दनन्दन राम है, हमारा कृष्ण जो है वसुदेवजी के यहाँ काराग्रह में जन्म लेने वाला राम है इस प्रकार से हम उनको एक देशीय मानकर उनकी व्यापकता को नष्ट नहीं होने देंगे। इसलिए ये सारी की सारी जो भ्रामक बातें हैं इनसे आप लोगों को भ्रमित नहीं होना है। हम कांग्रेस के विरोधी बिल्कुल नहीं हैं, हम मुसलमानों के विरोधी नहीं हैं। मैंने कितने ही राष्ट्रभक्त मुसलमानों की बात कल आप लोगों को सुनायी है। हमारा मुसलमानों से कोई किसी प्रकार का द्वेष नहीं है। हम रफीक अहमद किदवई का हृदय से स्वागत करते हैं, अब्दुलकलाम आजाद का नहीं करते हैं। हम सरमद साहब के निजामुद्दीन औलिया और अश्फक उल्ला के गीत गाते हैं और गायेंगे और उनके स्मारक बनायेंगे उनके नाम से मार्ग होंगे लेकिन औरंगजेब के नाम से नहीं। औरंगजेब के नाम से मार्ग हैं वो समाप्त किये जायेंगे। हमारी संस्कृति ये है कि अन्यायी का विरोध करना चाहिये इसलिए हम अन्याइयों के सामने अपना सिर नहीं झुकायेंगे, जो इस देश की संस्कृति को नष्ट करना चाहते हैं जो इस देश के अन्दर एक वर्ग को विशेषतायें देकर के दूसरे वर्ग को अपमानित और उत्तेजित करके इस देश के अन्दर कलह करना चाहते हैं उन लोगों के साथ में हमारा कोई समझौता नहीं, और साथ में ये भी बात कहते हैं कि हिन्दू राष्ट्र था और हिन्दू राष्ट्र है और हिन्दू राष्ट्र रहेगा, मैं अंग्रेजी पढ़े लिखे उन लोगों से कहता हूँ कि

जो ये कहते हैं कि ये एक राष्ट्र कभी नहीं रहा। उन लोगों के दिमाग में अंग्रेजियत और अंग्रेजियत की परिभाषायें घुस रहो है हमारे यहाँ राष्ट्र उस भूमि के क्षेत्र का नाम नहीं है जो किसी एक शासक के द्वारा शासित होता हो उस क्षेत्र का नाम हमारे यहाँ पर राज्य है। अंग राज्य, बंग राज्य, कलिंग राज्य, केरल राज्य, पाञ्च राज्य इत्यादिक बहुत से राज्य थे लेकिन राष्ट्र एक भारत ही था, राज्य अनेक होने पर भी राष्ट्र एक भारत ही था। दूसरे देशों के अन्दर जो राज्य है सो ही राष्ट्र है लेकिन इस देश के अन्दर सदा राज्य से राष्ट्र की कल्पना और धारणा अलग रही है, क्यों अलग रही है कि केरल, पाञ्च, चोल, अंग, बंग, कलिंग, उग्रसेन इत्यादि जितने देश थे और राज्य थे और उन राज्यों के राजाओं की सेना एक सीमा से दूसरी सीमा में नहीं जा सकती थी लेकिन हिन्दू संस्कृति जिसके अन्दर वेदों का, पुराणों का, गुरुग्रन्थ साहब का एवं जो है जैन और बौद्धों के विचारों का एवं रामायण के साथ-साथ रैदास और मीराबाई के भजनों का और उसी के साथ-साथ में रहीम और रसखान के भजनों का और उन्हीं के साथ हमारे जो ज्ञानदेव, एकनाथ, दक्षिण के तुकाराम इत्यादि सन्तों की वाणियों का सम्मान है जिस संस्कृति के अन्दर, उस संस्कृति के पैरों को किसी राज्य की सीमा ने नहीं रोका। संस्कृति के प्रचारक हर जगह जाते थे इसलिए इस राष्ट्र की एक हिन्दू संस्कृति उसको वैदिक संस्कृति कहा गया, उसको आर्य संस्कृति कहा गया, उसको अब हम हिन्दू संस्कृति नाम देने में गौरव समझते हैं उस संस्कृति वाला राष्ट्र जो था वो हिन्दू राष्ट्र है पहले भी था और आज भी है और आगे भी रहेगा। लेकिन आपके मन में एक प्रश्न उत्पन्न होगा कि जब है, और था और रहेगा तो अब आपको घोषणा करने की क्या जरुरत पड़ी है, हमको यह आवश्यकता पड़ गई है कि अंग्रेजों ने इस देश की संस्कृति को हिन्दू संस्कृति न मान कर मिलीजुली संस्कृति मानी और उसी के आधार पर इसके दो हिस्से हो गये, पाकिस्तान बन गया इसमें से अब आज की यह ४६ वर्ष की संस्कृति जो कहती है कि हम शिक्षा से ईसाई हैं मजहब से मुसलमान और हिन्दू बाईचान्स हैं वो संस्कृति इस देश की मिलीजुली संस्कृति मानती है लेकिन मैं आपसे एक बात कहता हूँ कि हम कबूतरों को दाना डालते हैं हमारी संस्कृति यही है और दूसरी संस्कृति यह है कि कबूतर मिल जाय तो उसको मार कर खा जाती है इन दोनों का मेल-जोल कैसे हो सकता है। इसलिए जो मिलीजुली संस्कृति की घोषणा हो रही है इस घोषणा को प्रताड़ित करने के लिए आज हम यह कहते हैं कि हमारा देश हिन्दू संस्कृति वाला देश है और इसीलिए यह हिन्दू राष्ट्र है और हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा को हम जागृत करके छोड़ेंगे। ये हमारे सन्तों का संकल्प है। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपसे एक अनुरोध करता हुआ कि जिन बालकों ने गोली चलने पर जय श्रीराम कहकर के अपने प्राणों का परित्याग किया है उनकी आत्मा को प्रसन्न करने के लिए उनके मुख से निकले हुए इस जय श्रीराम मन्त्र को आप प्रेमपूर्वक एक बार अच्छी तरह से मुट्ठी बाँधकर देखो, ये जो पंजा है ये समर्पण का है, विघटन का है और ये मुक्का जो है ये संगठन का है आक्रमण का है इसलिए मुट्ठी बांधकर करोगे काम जब काम चलेगा, तैयार हो जाओ, जय श्रीराम।

जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीनिश्चलानन्दजी महाराज का

—* पावन प्रवचन *—

हिन्दू संस्कृति का तात्पर्य है सनातन संस्कृति। सनातन संस्कृति के अनुसार कमनीय, वरणीय, सगुण, निर्गुण, उभयविध भगवत् तत्त्व की प्राप्ति में ही जीवन की सार्थकता सन्निहित है, उपनिषदों का उद्घोष है कि बिना त्याग के अभ्यवहित पूर्वक क्षणपर्यन्त यदि भगवत् तत्त्व को जान लिया, प्राप्त कर लिया तब तो जीवन सार्थक हुआ कदाचित् देह-त्याग के अभ्यवहित पूर्वक क्षण पर्यन्त कमनीय, वरणीय, सगुण, निर्गुण, उभयविध भगवत् तत्त्व को नहीं जाना, नहीं प्राप्त किया तो जीवन निरर्थक गया। प्रामाणिक रीति से विचार करने पर यह जगत् वरण करने योग्य सिद्ध नहीं होता है। जीव जगत् का वरण करके कृतार्थ हो सकता है, निहाल हो सकता है, तृप्त हो सकता है यह सम्भव ही नहीं है ऐसी स्थिति में हमारी मनोवृत्ति भगवत् तत्त्व में जब तक नहीं रमती तब तक हमारे जन्म के गर्भ से कर्म और कर्म के गर्भ से जन्म निकलते ही रहेंगे। अनादिकाल से पूर्व देह के परित्याग पर्यन्त यदि आप हम कृतार्थ होते तो हमारा आपका जन्म ही क्यों होता। भगवत् गीता का सिद्धान्त है—देह त्याग के अव्यवहित पूर्वक क्षण में जिस प्रकार का चिन्तन होता है उस चिन्तन के अनुरूप ही व्यक्ति को नवीन देह की प्राप्ति होती है इसका अर्थ यह है कि भगवत् कृपा से हमको आपको दिव्य चक्षु की प्राप्ति हो और हम आप संकल्प करें कि हमारे द्वारा त्यागे गये शरीरों का हमें दर्शन प्राप्त हो। अब तक जितने शरीरों को हमने शव बना दिया है उनका दर्शन प्राप्त हो तो आप विश्वास करें एक-एक व्यक्ति के द्वारा त्यागे गये शरीरों से कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड फट जायेंगे। हमारे आपके द्वारा त्यागे गये शरीरों से ही हमारा आपका एक विराट् स्वरूप प्रस्तुत हो जायेगा इससे सिद्ध होता है असच्चिदानन्दरूप जगत् सच्चिदानन्द स्वरूप जीवात्म तत्त्व को कभी भी कृतार्थ करने में समर्थ नहीं है अतः अपनी मनोवृत्ति को जहाँ तक बन सके कमनीय, वरणीय, सगुण, निर्गुण, उभयविध भगवत् तत्त्व में समाहित करने का प्रयास करना चाहिये। एक ध्यान देने की बात है अभी धर्म की बात कही गई वाचस्पति मिश्र भामतीकार महोदय ने और भगवत्पाद शंकराचार्य जैसे महापुरुषों ने बताया कि धर्म भव्य अर्थात् भाव्य या अनुष्ठेय होता है अनुष्ठान के द्वारा धर्म की सिद्धि होती है। मोटा सा दृष्टान्त ले लीजिये सत्य बोलना धर्म है इसकी जानकारी प्राप्त हो जाने पर भी धर्म की सिद्धि तब तक नहीं होगी जब तक हम सत्य नहीं बोलेंगे यह बात सत्य है इस प्रकार धर्म अनुष्ठेय होता है, भव्य होता है अथवा भाव्य होता है। लेकिन दर्शन शास्त्रों में सिद्ध तत्त्व के अर्थ में भी धर्म का प्रयोग हुआ है धर्म केवल भाव्य या भव्य ही नहीं होता अपितु भूत भी होता है अर्थात् सिद्ध भी होता है। कठोपनिषद् में और माण्डूक कारिका में आत्मा के अर्थ में धर्म पद का प्रयोग हुआ है बहुत से माण्डूककारिका के समीक्षकों को समीक्षा होती है कि बौद्ध आगम से प्रवाहित होकर माण्डूक्य कारिकाकार गौड़ पादाचार्य महाराज ने आत्मा के अर्थ में धर्म पद का प्रयोग किया है लेकिन वस्तुस्थिति यह है कि मूल कठोपनिषद् में धर्म पद का प्रयोग आत्मा के अर्थ में हुआ है इसका अभिप्राय कि दार्शनिक परिधि के बाहर धर्म को करना उचित नहीं है। जीवन में सदाचार की प्रतिष्ठा हो

यह तो आवश्यक है लेकिन भगवत् तत्त्व के विज्ञान के लिए उपासना पद्धति को अपनाना, भगवत् तत्त्व में मनोवृत्ति को रमाने के लिए भक्ति मार्ग को अपनाना भी धर्म की सीमा के बाहर नहीं है। मनु आदि धर्म शास्त्रों का अध्ययन करने पर यह सार प्राप्त होता है कि जिस प्रवृत्ति के गर्भ से प्रवृत्ति ही निकलती चली जाय उस प्रवृत्ति की सराहना भारतीय संस्कृति में नहीं है प्रवृत्ति का पर्यावसान निवृत्ति में होना चाहिये इसी अभिप्राय से मीमांसकों ने धर्म शास्त्रों के मनीषियों ने परिसंख्याविधि की बात कही है। तो प्रवृत्ति का पर्यावसान वृत्ति में होना चाहिए और निवृत्ति का पर्यावसान निवृत्ति अर्थात् परमानन्द स्वरूप भगवत् तत्त्व की प्राप्ति में होना चाहिये तब हमारा आपका जीवन सार्थक हो सकता है। श्रीमद्भागवत के प्रारम्भ में ही भगवान् वेदव्यास ने भौतिकवाद और अध्यात्मवाद की विभाजक रेखा को प्रस्तुत करते हुये कहा—हम भारतीय संस्कृति को मानने वाले व्यक्तियों के यहाँ जीविका की उपेक्षा नहीं की जाती परन्तु ध्यान रखिये जीविका जीवन के लिए हमारे यहाँ है न कि जीवन जीविका के लिए है। जीविका के द्वारा जीवन की प्राप्ति हो सकती है लेकिन जीवन की सार्थकता नहीं हो सकती। जीविका जीवन के लिए है और जीवन है जीवनधन जगदीश्वर की प्राप्ति के लिए। अतः हम आप अपनी मनोवृत्ति को भगवत् स्वरूप में रमाने का प्रयास करें। चाहे पूर्व मीमांसक हो, उत्तर मीमांसक हो, वैशेषिक हो, नैयायिक हो, योगी हो, सांख्यवादी हो धर्म के स्वरूप निर्धारण में इन दार्शनिकों में कोई विधान विधि मतभेद है ही नहीं। वर्णाश्रम धर्म को ही शैवों के दर्शनों ने और दर्शन शास्त्र के पारखी मनीषियों ने धर्म माना है। ऐसी स्थिति में धर्म को लेकर हमारे किसी भी दर्शन शास्त्र के प्रणेता महर्षियों में कोई भी विभाग नहीं हैं। उत्तर मीमांसा के आचार्य जिनको लेकर भक्ति और ज्ञान सम्प्रदाय की प्रसिद्धि है उन आचार्यों में भी धर्म को लेकर कोई विभाग नहीं है चाहे हमारे श्रीमाधवाचार्य हों, चाहे हमारे श्रीरामानुजाचार्य हों, चाहे हमारे श्रीनिम्बार्काचार्य हों, चाहे हमारे श्रीवल्लभाचार्य हों, चाहे हमारे श्रीशंकराचार्य हों वर्णाश्रम धर्म को ही इन समस्त आचार्यों ने धर्म स्वीकार किया है साथ ही साथ वर्णाश्रम धर्म की परिभाषा उन समस्त आचार्यों की दृष्टि में यही है कि हम सनातन धर्मियों के यहाँ जन्म नियन्त्रित वर्ण है और वर्ण नियन्त्रित आश्रम है इसका अतिक्रमण नहीं करना चाहिये। जहाँ जन्म नियन्त्रित वर्ण व्यवस्था, वर्ण नियन्त्रित आश्रम व्यवस्था और कर्म व्यवस्था है उसी को हम सनातन धर्म कहते हैं। जिन मनु आदि धर्म शास्त्रों के आधार पर भारतवर्ष में रामराज्य और धर्मराज्य की स्थापना हुई उसके सम्बन्ध में आज के मनचले नेताओं ने भ्रामक विचार प्रस्तुत किया है। अभी हमने विरक्त शिरोमणी महाराजश्री के मुखारविन्द से दार्शनिक ढंग से एक उत्तर सुना हम आपको दूसरे ढंग से उसी बात की ओर ध्यान आकृष्ट कर रहे हैं प्रायः आजकल लोग कहते हैं हिन्दू धर्म बहुत उदार है फिर मन्दिर बनाने की चर्चा क्यों करते हो ईश्वर तो व्यापक है जब हिन्दू धर्म उदार है तो अमुक वर्ण, अमुक आश्रम की चर्चा क्यों करते हो। स्त्री पुरुषगत भेद की चर्चा भी क्यों करते हो! सज्जनों! हम गीता इत्यादि धर्म शास्त्रों का विधिवत् प्रामाणिक सब सम्प्रदाय परम्परा से अनुशीलन करने वाले हैं मनचले आधुनिक शिक्षित-दीक्षित व्यक्तियों का कोई भी अनर्गल प्रलाप हमको प्रभावित नहीं कर सकता है हम उदारता के नाम पर हृदय की क्षुद्र दुर्बलता को प्रोत्साहित करने वाले नहीं हैं। एक बात हम कह दें कि भगवत्गीता के प्रथम अध्याय का आप अनुशीलन

कीजिये, बिना किसी टीका-टिप्पणी के आपको यही परिलक्षित होगा कि दूसरे अध्याय से १८ वें अध्याय तक श्रीकृष्णचन्द्र परमानन्दकन्द सुधासिन्धु मदनमोहन ने अर्जुन को जो उपदेश देकर अपने मन्तव्य अर्थात् सिद्धान्त को व्यक्त किया है उसकी अपेक्षा गीता के प्रथम अध्याय में अर्जुन ने अपने मन्तव्य या सिद्धान्त को व्यक्त किया वह अधिक उदार है। कोई भी व्यक्ति गीता को पढ़कर इसी निष्कर्ष पर पहले पहुँचता है कि श्रीकृष्णचन्द्र के द्वारा प्रस्थापित सिद्धान्त मत की अपेक्षा अर्जुन के सिद्धान्त मत में अधिक उदारता की सिद्धि होती है लेकिन अर्जुन की वह उदारता अर्जुन के शरीर को जला रही थी, इन्द्रियों को झुलसा रही थी और भगवान् ने उस उदारता का अंकन करते हुये कहा—उदारता के नाम पर क्षुद्र हृदय की दुर्बलता को मत पालो तुम उसका परित्याग कर दो और अर्जुन ने विधिवत् भगवान् श्यामसुन्दर के द्वारा प्राप्त दृष्टिकोण के अनुसार आत्म निरीक्षण करके कह दिया, हाँ मैं उदारता के नाम पर हृदय की क्षुद्र दुर्बलता को पालने जा रहा था लेकिन मुझे कृपणता रूपी दोष ने जकड़ रखा है अर्जुन ने अपनी उदारता को कृपणता स्वीकार कर ली। सज्जनों ! अर्जुन और अशोक की विभाजक रेखा क्या है, यदि अशोक की श्रद्धा इसी सनातन धर्म के प्रति होती, श्रीकृष्ण जैसे सर्वेश्वर के प्रति होती तो अशोक अपने वैदिक मार्ग का परित्याग करके पथ से च्युत न होता। अर्जुन की भी स्थिति बहुत पहले अशोक जैसी होने जा रही थी उदारता के नाम पर क्षुद्र हृदय की दुर्बलता को अर्जुन पालने जा रहे थे लेकिन समर्थ श्रीकृष्ण ने अर्जुन को डूबने से और अर्जुन के व्यामोह से भारतवर्ष को डूबने से बचा लिया। संस्कार का तात्पर्य क्या है जिससे देहेन्द्रियादि में मूल तत्त्व सबका उद्‌गम स्थान जीव का तात्विक रूप जो सच्चिदानन्द ब्रह्म है उसकी अभिव्यक्ति के उपयुक्त उपयोग्यता प्रकट हो उसी का नाम संस्कृति है। सज्जनों ! हमारे यहाँ मनु भगवान् का कहना है—अंगन्यास के द्वारा, करन्यास के द्वारा, भूशुद्धि के द्वारा, पराभूत शुद्धि के द्वारा, यज्ञों के द्वारा, महायज्ञों के द्वारा, भगवत् चरणामृत के पान के द्वारा, तुलसी की परिक्रमा के द्वारा, ठाकुरजी की आरती के द्वारा, सत्संग के द्वारा ब्राह्मी तनु की अभिव्यक्ति होती है। ब्राह्मी तनु का अर्थ आनन्द गिरि महोदय ने किया है भगवत् साक्षात्कार के उपयुक्त देहिन्द्रय प्राण और अन्तःकरण की अभिव्यक्ति। ऐसी स्थिति में हम भारतीय संस्कृति को अपनाकर संस्कार पद्धति को अपनाकर अपने जीवन में उस दिव्यता को अभिव्यक्त करें कि हमारा मन केवल व्यवहार सम्पादन के ही उपयुक्त न रहकर कमनीय, वरणीय, सगुण, निर्गुण, उभयविध भगवत् तत्त्व में रम सके।

रामजन्मभूमि के सम्बन्ध में पद के दायित्व को देखते हुए क्योंकि ये धारा चल ही पड़ी है तो मौन रहना हमारे लिए उपयुक्त नहीं है। जहाँ पर विवादास्पद ढाँचा था, जहाँ रामलला प्रतिष्ठित थे, जहाँ रामलला आज विराजमान हैं वहीं भव्य शास्त्रीय रीति से रामलला का मन्दिर बने और जनता के द्वारा मान्यता प्राप्त न्यास के माध्यम से बने यह हमारी भावना है। वस्तुस्थिति यह है कि किसी के भवन पर आकर कोई कील-कांटा चुभो दे, इतने मात्र से वह भवन कील-कांटे चुभाने वाले का नहीं हो जाता। अयोध्या में जो ढांचा था वह मन्दिर ही था इसको हम स्वीकार करते हैं लेकिन बाबर के शासन काल में उसे विकृत कर मस्जिद सरीखा बनाने का प्रयास किया गया हम हिन्दुओं को सनातन धर्मियों को वह विकृत

किया हुआ ढांचा पसन्द नहीं आया इसलिए हमारे क्रान्ति के दूत और शान्ति की भावना को संजोने वाले युवकों ने कलंकभूत उस ढांचे को ढाह दिया ऐसा करके उन्होंने राष्ट्र के शिर को ऊँचा किया है, राष्ट्र को उन्नत किया है न कि राष्ट्रीय संस्कृति को कलंकित। हमारे यहाँ हिन्दुओं के युग प्रणीत दो ही इतिहास हैं, पुराण इत्यादि में इतिहास का अंश है विशुद्ध इतिहास हमारे यहाँ दो हैं श्रीमद्वाल्मीकि रामायण और महाभारत इनको उठाकर आप देखिये वशिष्ठजी की गाय का नाम नन्दिनी, कामधेनु की बालिका: बहुत दिव्य योग्यता से सम्पन्न। विश्वामित्र का मन मचल गया सैनिकों को आज्ञा दी घसीट के ले चलो नन्दिनी को। नन्दिनी ने कहा प्रभु वशिष्ठजी आपने क्या हमारा परित्याग कर दिया है विश्वामित्र के सैनिक क्रूरता पूर्वक खदेड़ कर ले जा रहे हैं। वशिष्ठजी ने कहा, हम ब्राह्मण हैं क्षमा करना हमारा धर्म है तुम चाहो तो अपनी रक्षा नन्दिनी कर सकती हो। यह संकेत प्राप्त करके नन्दिनी ने अपने शरीर से यवन इत्यादि जातियों को व्यक्त किया। सज्जनों! आज के मुसलमानों को हम यह कहना चाहते हैं उनके पास तो उनका इतिहास नहीं हैं हमारे पास तो अरबों वर्षों का इतिहास है हम अपने इतिहास के आधार पर कहना चाहते हैं विश्व में मुसलमानों के पूर्वज यवन आदि जो आज गो भक्षक हैं सबके सब गाय की रक्षा के लिए उत्पन्न हुये और गाय के शरीर से उत्पन्न हुये। कोई मुसलमान हिन्दू न भी होना चाहे भारतवर्ष का कोई भी मुसलमान गो-मांस का सेवन ना करे। हमारी संस्कृति सुरक्षित रहे, सभ्यता सुरक्षित रहे इसके लिए हमको आगे बढ़ना चाहिये और हम कहते हैं तीन गाँधी न मारे गये होते तो कांग्रेस का अस्तित्व नहीं रहता। गौडसे ने अपनी दृष्टि से भला किया या बुरा किया ये तो वो जाने लेकिन हमारी दृष्टि से वो गाँधीजी को ना मारते तो कांग्रेस और गाँधीजी साथ-साथ चल देते, गाँधीजी को मार के कांग्रेस को मानो न चाहते हुए गौडसे ने जीवित कर दिया। इसके बाद दम तोड़ने की स्थिति में कांग्रेस फिर आई तो एक देवता (बोडीगाड) ने इन्दिरा-गाँधी को मार कर कांग्रेस को फिर जीवित कर दिया, फिर कांग्रेस दम तोड़ने की स्थिति में आरही थी कि एक देवता (आत्मघाती जत्था के नेता) ने राजीव गाँधी तीसरे गाँधी को मार के राव महोदय को ला दिया। मुल्लाओं के वेतन बढ़वा रहे हैं, ढ़ाई बीघा जमीन का, देखो ये कितना गलत समझौता है, इतना ही नहीं एक हिन्दुओं के वर्ग विशेष के लिए भंगी शब्द का लालकिले से प्रयोग किया अगर वापस न लिया होता तो आज प्रधानमन्त्री के पद पर नहीं होते लेकिन करोड़ों हिन्दुओं को भावना पर कुठाराघात करते हुए उस ढांचे को मस्जिद कहा फिर भी बुलन्दी से आज शासन कर रहे हैं हिन्दुओं की चेतना जगने पर भी सुप्त नहीं तो और क्या है। अब हमें कहने में संकोच नहीं है मंच संचालक महोदय ध्यान दें हमारे गुरुदेव श्री-करपात्रीजी महाराज सभी सम्प्रदाय के सन्तों को एक मञ्च पर लाना चाहते थे आज भाजपा की योजना हो, विश्वहिन्दू परिषद् की योजना हो, आर्० एस्० एस्० की योजना हो, शिवसेना की योजना हो, हिन्दू महासभा की योजना हो सब उन महापुरुष ने दी। भारत अखण्ड हो ये नारा भी उन महापुरुष ने दिया सब भावना उन्होंने दी। सभी सम्प्रदाय के सन्त एक मंच पर आने ही वाले थे नेहरुजी ने कूटनीति का प्रयोग करके सीधे-साधे गुलजारीलाल नन्दा को आगे करके भारत साधु समाज की स्थापना की ये कांग्रेस के द्वारा सन्तों में फूट डाली गई। और उन सरकारी सन्तों को पास तक दिया गया और बहुत अधिकार दिया गया। गो-रक्षा की

योजना में सन्त लोग थे, तो गिने-चुने सन्तों को फोड़ कर के इन्दिरा गाँधी ने गो-रक्षा की योजना को इतनी रसातल में पहुँचा दिया कि गाय के नाम पर हिन्दु कब संघटित होंगे हम कह नहीं सकते, देशी गाय के न रहने पर संघटित होने का कोई प्रश्न ही नहीं है। सन्तों में फूट डालने की कोशिश दिन-रात हो रही है। चन्द्रास्वामीजी ईद के चाँद बनकर सन्तों में फूट डालने का पूरा प्रयास कर रहे हैं अब हमने कह दिया है तीन गाँधी ने कांग्रेस को जिलाया, दो बार सन्तों की फूट ने कांग्रेस को जिलाया तीसरी बार सन्तों में फूट किसी कीमत पर न हो। हमारी भावना है बुखारी इत्यादि का बुखार मुसलमान स्वयं उतारें और उनके बरगलावे में न आकर के वे हिन्दुओं के साथ आत्मीयता का परिचय दें नहीं तो हम अपनी भावना की रक्षा के लिए फिर जो उचित कदम होगा उसको उठाने में कसर नहीं रखेंगे।

अन्त में हमारे श्री 'श्रीजी' महाराज ५० वर्ष पूर्व इस पद पर आये और उसके उपलक्ष्य में ये सब आयोजन हो रहा है। लेकिन महाराजश्री ने कहा हमारे उपलक्ष्य में मत करो, सनातन धर्म के उपलक्ष्य में करो ये इनकी विनम्रता है महापुरुष तो ऐसे ही होते हैं, आप इस पद पर बने रहें और अपने अनुयायियों को सन्देश देते रहें। यही मंगलकामना है।

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज का

* आशीर्वादात्मक प्रवचन *

आज का दिन हम सब के लिए कितका अनुपम है, कितना प्रेरणादायी है, कितना मार्ग दर्शक है ऐसा अवसर बड़े सौभाग्य से प्राप्त होता है यह परिश्रम साध्य नहीं है भगवत् कृपासाध्य है। जब वे अनन्त कृपाकोष अनुग्रहविग्रह भगवान् सर्वेश्वर अपनी असीम कृपा-कादम्बिनी का अभवर्षण करते हैं तभी जीवन में इस प्रकार का परम मंगलमय सुअवसर प्राप्त होता है। हमारे सभी आचार्यप्रवरों ने, विद्वत् जनों ने जो मंगलमय उपदेश प्रदान किये जो मार्ग-दर्शन कराया वह अनुपम है। यहाँ हमारे आप्तकाम पूर्णकाम निष्काम अमलात्मा महात्मा परमहँसों ने धर्म के स्वरूप को जानने के लिए अनन्त काल तक तपोनिरत रह कर पर्वत कन्द-राओं में, गुफाओं में, गंगा, यमुना, कृष्णा, कावेरी, सरयू प्रभृत्ति इन पुण्यसलिलाओं के पावन तट पर अवस्थित रहकर के दीर्घकाल तक उन्होंने चिन्तन किया है, प्रभु की आराधना की है और परम तपस्यापूर्वक दिव्य अनुभूति प्राप्त कर के जो हमें दिव्य प्रसाद प्रदान किया है वो प्रसाद आज यहाँ पर भी इन आचार्यप्रवरों के द्वारा हम सभी को प्राप्त हो रहा है। यह हमारा राष्ट्र धर्ममय है सम्पूर्ण गीता को आप देखें आरम्भ में 'धर्म क्षेत्रे' तो है ही यहाँ धकार है और अन्त में जाकर के 'मतिर्मम' इन उभयविध वचन से धर्म में सम्पूर्ण गीता का समावेश है धर्म की बड़ी महिमा है "धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः"। धर्मविहीनता जहाँ होती है वहाँ जीवन आसुरी जीवन बन जाता है। भगवत् कृपा से हमें इस धर्मप्राण राष्ट्र में मानव शरीर प्राप्त हुआ है अतः हम हमारे धर्म के स्वरूप को सम्यक् प्रकार से समझें और धर्म के स्वरूप का हम सम्यक्

परिज्ञान कैसे करें उसके लिए भी हमारे पास आधार चाहिये बिना आधार के हम उनके स्वरूप का निर्धारण कैसे करेंगे, तो हमारे यहाँ वेदान्त दर्शन में ऐसे तो अनेक आधार हैं किन्तु मुख्यतः तीन आधार बताये हैं वह तीन आधार हैं, प्रमाण रूप में एक प्रत्यक्ष प्रमाण, अनुमान प्रमाण और एक शब्द प्रमाण ये तीन हमारे प्रमाण हैं. तीन आधार हैं ये जो प्रत्यक्ष प्रमाण है और अनुमान प्रमाण है इसके सम्बन्ध में वेदान्त दर्शन में गहन चिन्तन किया गया है विचार किया है कि ये आधार कहाँ तक तथ्यपूर्ण है तो उसमें बताया—"नानुमानंनेन्द्रियाणि।" अनुमान प्रमाण और प्रत्यक्ष प्रमाण इनको अधिक महत्व नहीं दिया तर्क प्रमाण को अप्रतिष्ठित कहा ऐसे विविध वचन है तो तर्क बुद्धि को अर्थात् अनुमान प्रमाण को माना है स्वीकार किया है। किन्तु उसको प्रबल प्रमाण नहीं माना प्रबल प्रमाण माना है शब्द प्रमाण को। शब्द प्रमाण क्या है शास्त्र प्रमाण हमारे जो वेदादि श्रुति-स्मृति-सूत्रतन्त्रादि हमारे यावन्मात्र निखिल शास्त्र हैं उनको प्रमाण माना है। वो हमारे आधार हैं वे ही मूल आधार हैं जैसे शब्द प्रमाण के लिए लोग कह देते हैं कि हम शब्द प्रमाण को कैसे मानें इस सम्बन्ध में यदि किसी से प्रश्न करें कि आपके माता-पिता ये हैं, अमुक है इसका क्या प्रमाण है। यही हमारे माता-पिता हैं यह आप कैसे जान सकेंगे कि ये हमारे माता-पिता हैं क्या अनुभूति है तो वहाँ शब्द प्रमाण ही प्रमुख है आपकी माता ये बतलाती है कि ये तुम्हारे पिता हैं और पिता कहते हैं यह तुम्हारी माता है यह शब्द प्रमाण है शब्द के द्वारा ही हम निर्धारण करते हैं तो जैसे इस लौकिक जगत् में शब्द के द्वारा हम अपने आपके स्वरूप का परिज्ञान करते हैं, ऐसे ही हमारे शास्त्र हैं ये शास्त्र सामान्य नहीं हैं, हमारे उन आप्तकाम पूर्णकाम ऋषि-मुनियों ने निर्जन वनों में सूर्य-चन्द्रमा के परम निर्मल स्वच्छ प्रकाशमय शान्तमय वातावरण में स्थित रहकर के और अनन्त काल तक तपोनिरत रहकर के, परम साधना करके, तपश्चर्या करके, उग्रतप करके जिस तत्त्व की उपलब्धि की है, जिस रहस्य का परिबोध किया है उन्होंने शास्त्रों के द्वारा हमें प्रदान किया है और उन शास्त्रों में जो हमारे वेद शास्त्र हैं जो अपौरुषेय हैं जो प्रभु के रस परब्रह्म श्रीसर्वेश्वर के निःश्वासभूत जो हमारे वेदादि शास्त्र हैं वो हमारे सर्वस्व हैं आज उन वेदों का अर्थ लोग मनमानी ढंग से करने लग गये हैं इसी प्रकार हमारे गीतादिशास्त्रों के शब्दों का भी लोग विपरीत अर्थ करने लग गये हैं जैसे बहुत से लोग कह देते हैं 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' इन वाक्यों का इन वेद वचनों का अर्थ करने लग जाते हैं कि ये पहले ऐसे स्थान पर थे ये हिन्दू कि जहाँ पर अन्धकार ही अन्धकार था और उनको प्रकाश मिले ऐसा कोई राष्ट्र मिले वहाँ पर हमको भेजो वहाँ हमको पहुँचाओ इसका ऐसा लोग अर्थ करते हैं जो पर-राष्ट्र के लोग भी और हमारे यहाँ के भी जो परराष्ट्र के अन्धानुकरण में लगे हुये हैं वो भी इस प्रकार का अर्थ करने में संलग्न हैं तो इसलिए और भी यहाँ तक कहने का साहस करने लग जाते हैं कि मद्य और अजा आदि का भी प्रयोग करने वाले हमारे लिए ग्राह्य है अथवा चाय पीने का भी शास्त्रों में विधान है ऐसे भी लोग अर्थ करने लगते हैं। बोलते हैं चाय के रूप में मैं सबके हृदय में निवास करता हूँ। इस प्रकार श्रीमद्भगवतगीता के इन दिव्य वचनों का 'मद्याजी मां नमस्कुरू' 'सर्वस्या चाऽहं हृदि सन्निविष्टः' के लोग जो विपरीत अर्थ करने के लिए तत्पर हैं तो उन सबका निराकरण है। हमारे धर्म के स्तम्भ ये हमारे धर्म के सर्वस्व

आधार ये आचार्यप्रवर यहाँ पर विराजमान हैं ऐसे ग्रीष्म के तीव्र ताप में पधार कर अपने अनुग्रह वृष्टि के द्वारा अपने उपदेश वृष्टि के द्वारा जो मार्ग दर्शन कराया है ये इनकी परमकृपा है जिनका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं ऑक्सीजन के माध्यम से जो अपना निर्वाह कर रहे हैं ऐसी अवस्था में भी जो एक कदम भी आगे चलना जिनके लिए कठिन है उनकी कितनी बड़ी कृपा है कितनी सरलता है और सभी आचार्यवर्य कितनी दूर से मार्ग में नाना प्रकार के कष्टों को सहन करके यहाँ पर पधारे हैं, तो इसी दृष्टि से कि हमारे हिन्दुत्व की रक्षा हो, हमारे धर्म की रक्षा हो, हमारे राष्ट्र की रक्षा हो। राष्ट्र पर जो नाना प्रकार के दूषित तत्त्व हैं उनको भी सन्मार्ग मिले, उनको भी सद्बोध मिले, उनका उत्तम मार्ग दर्शन हो वो अपने स्वरूप को समझे। परम सौभाग्य है कि सबने हमारे एक सामान्य संकेत पर किस प्रकार से परम अनुग्रह किया है कैसी कृपा की है कैसे हम अपने भावों को व्यक्त करें कुछ समझ में नहीं आता। बोलने के लिए हमारे पास तो कोई शब्द ही नहीं है। अयोध्या के प्रसङ्ग में स्वामी श्रीवामदेवजी महाराज ने अयोध्याधाम में जो आज साम्प्रतिक समय में वहाँ की परिस्थिति है उसके सम्बन्ध में सिंहावलोकन, मार्ग दर्शन प्रस्तुत किया और हमारे भारत साधु समाज के महामन्त्रीजी ने और शाहपुरा रामस्नेही सम्प्रदायाचार्यप्रवर ने, डीडवाना से पधारे युवराज स्वामी श्रीनिवासाचार्यजी महाराज ने, नेपाल से पधारे हुये श्रीकेशवशरणजी शास्त्री और अनेक विद्वानों ने जो भाव व्यक्त किये यथार्थ में हृदय में अवधारणीय हैं और जीवन में आचरणीय हैं। इस प्रकार से यदि आप सबों के हृदय में इस प्रकार की दिव्य भावना होगी तो प्रभु ऐसा बल प्रदान करेंगे कि संसार की कोई शक्ति नहीं जो हमारे धर्म पर किसी प्रकार का आघात कर सके। अयोध्याधाम में उस विशाल भव्य श्रीराम मन्दिर निर्माण में कोई भी शक्ति नहीं है जो उसको किसी प्रकार निषेधात्मक बाधा उपस्थित कर सके। आप सब निर्भय होकर के परम आनन्द के साथ उन भगवान् श्रीराघवेन्द्र सरकार के युगल चरणारविन्दों का नित्य स्मरण करते हुये अपने कार्य में अभिरत हों उनकी अवश्य कृपा होगी। इन्हीं शब्दों के साथ सबकी मंगलकामना चाहते हुए हम अपने भावों को यहीं विराम देते हैं।

★

श्री 'श्रीजी' महाराज के सनातन धर्म और सनातन संस्कृति विषय पर हुए आशीर्वादात्मक प्रवचनोपरान्त रात्रि १० बजे से भक्ति संगीत का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ, जिसमें श्रीमती पलमा जोशी राष्ट्रीय संगीत कलाकार आकाशवाणी लखनऊ, श्रीहरिचरणजी वर्मा निदेशक आकाशवाणी जोधपुर, श्रीछैलविहारीजी वर्मा एवं श्रीकैलाशजी अनुज एवं श्रीमती पीयूषा अनुज द्वारा भक्ति संगीत के कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। कार्यक्रम का संयोजन श्रीदयाशंकरजी शास्त्री ब्यावर ने किया। आज के समारोह की यह विशेषता रही कि प्रातःकाल से देर रात्रि तक चलने वाले समस्त कार्यक्रमों में जनसमूह से सभा मण्डप खचाखच भरा ही रहा, सभा मण्डप के समीप जलपान आदि की सुविधा रहने से आगन्तुकों को किसी प्रकार के कष्ट का अनुभव नहीं हुआ।

* श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते *

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

कटुक वचन गुरु भले, जिनतैं कारज होय ।
अमृतवानी जगत् की, 'परसा' निष्फल सोय ।।
गुरुद्रोही जो आतमा, सो मम द्रोही जान ।
'परसा' जो गुरु भक्त है, सो मम भक्त पिछान ।।
श्री गुरु की निन्दा करे, रहे विषय सों लीन ।
'परसा' नरक समांहि नर, सेवा सुमिरन हीन ।।

गुरुदेव की जय

आचार्यश्री के आचार्यपीठाभिषेक स्वर्णजयन्ती महोत्सव पर
हार्दिक शुभकामनाओं सहित–

–एक भक्त

※ श्रीसर्वेश्वरो जयति ※

अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

के

अन्तर्गत आयोजित

हिन्दू संस्कृति सम्मेलन

[मिति ज्येष्ठ शु० ३ सोमवार सं० २०५० दिनांक २४-५-९३]

अध्यक्ष :

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य पुरीपीठाधीश्वर

स्वामी श्रीनिश्चलानन्दजी महाराज

पुरी (उड़ीसा)

मुख्य अतिथि :

महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त

श्रीहरिनारायणानन्दजी महाराज

महामन्त्री–अ० भा० भारत साधु समाज, दिल्ली (उ० प्र०)

हिन्दू संस्कृति सम्मेलन

[ज्येष्ठ शु० ३ वि० सं० २०५० सोमवार दिनांक २४-५-९३ ई०]

प्रातःकाल ५ बजे से सदा की भाँति भगवान् श्रीराधामाधव एवं श्रीसर्वेश्वर प्रभु की मंगला आरती. प्रातः ८ बजे श्रीसर्वेश्वर प्रभु का पुरुषसूक्त द्वारा अभिषेक, दर्शन एवं शृङ्गार आरती आदि दैनिक कार्यक्रम मन्दिर में सम्पन्न हुए। यज्ञ मण्डप में प्रातः ९ बजे से १२ बजे तक स्थापित देवताओं का पूजन, जप, पाठ तथा हवन आदि कार्यक्रम प्रतिदिन की भाँति यथावत् चलते रहे तथा हजारों की संख्या में भावुक भक्तजनों ने यज्ञ के दर्शन तथा परिक्रमा का लाभ उठाया ! मध्याह्न २ बजे से ५ बजे तक स्वामी श्रीशिवदयालजी गिरिराजप्रसादजी वृन्दावन की रासमण्डली द्वारा श्रीरासलीलानुकरण हुआ।

सभा मण्डप में प्रातःकाल ८ बजे से हिन्दू संस्कृति सम्मेलन का प्रथम सत्र प्रारम्भ हुआ जिसमें विचारणीय विन्दु थे—१. राष्ट्रीय सन्दर्भ में गो-रक्षा। २. देवालय सुरक्षा। इस सम्मेलन की अध्यक्षता अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य पुरीपीठाधीश्वर स्वामी श्रीनिश्चलानन्दजी महाराज ने की तथा मुख्य अतिथि महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त श्रीहरिनारायणानन्दजी महाराज, महामन्त्री-अ० भा० साधु समाज, दिल्ली थे। सर्व प्रथम स्वागत समिति के पदाधिकारियों ने मञ्चासीन धर्माचार्यों एवं सन्त-महात्माओं का माल्यार्पण करके स्वागत किया। वैदिक विद्वानों द्वारा सामूहिक वैदिक मङ्गलाचरण के पश्चात् कार्यारम्भ हुआ। सभा का सञ्चालन मेवाड़ महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी महाराज उदयपुर ने किया। आज के इस सत्र में निम्नलिखित प्रश्नावली विद्वानों के समाधानार्थ प्रस्तुत की गई थी—

१. केन्द्रीय सरकार द्वारा सम्पूर्ण भारत में गो-हत्या निषेध कानून लागू करने के लिए जनमत संग्रह की मांग आवश्यक क्यों नहीं ?
२. अयोध्या में श्रीराममन्दिर निर्माण पर उपस्थित बाधा का निराकरण कैसे हो ?
३. व्यावसायिक क्षेत्र में उत्पाद चिह्नांकन (ट्रेडमार्क) विज्ञापन, कलारूपाङ्कन (डिजायन) आदि में भगवान् के स्वरूपों तथा नामांकनों का प्रयोग क्या उचित है ?

इन विषयों पर पं० श्रीप्रह्लादचन्द्रजी शास्त्री हरदा, पं० श्रीखेमराजकेशवशरणजी शास्त्री काठमाण्डू (नेपाल), महन्त श्रीहरिवल्लभदासजी शास्त्री रेनवाल, मुनि श्रीशैलेन्द्राचार्यजी हरिद्वार, श्रीप्रेमाचार्यजी मण्डावर, महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त श्रीहरिनारायणानन्दजी महाराज दिल्ली, युवाचार्य श्रीश्रीनिवासाचार्यजी महाराज डीडवाना, जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीनिश्चलानन्दजी महाराज पुरी (उड़ीसा), स्वामी श्रीवामदेवजी महाराज अयोध्या, सन्त श्रीगुरुमुखदासजी गंगापुर एवं जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज के मार्मिक प्रवचन हुए।

इस अवसर पर वैद्यप्रवर पं० श्रीवैकुण्ठनाथजी शर्मा मथुरा द्वारा आचार्यश्री को अभिनन्दन पत्र भी समर्पित किया गया जो निम्नांकित है—

※ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ※

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज

के पीठाभिषेक की स्वर्णजयन्ती के पावन पर्व पर सादर

※ अभिनन्दन पत्र ※

नमामि सर्वेश्वर पाद–पङ्कजं नमामि रासेश्वरि–रूपराशिम् ।
निम्बार्ककारुण्यमरीचि माला—हृद्—वारिजं मे विकची करोतु ।।

राधासर्वेश्वर कृपा हुई आज साकार । स्वर्णजयन्ती पर्व पर छाया हर्ष अपार ।।
श्रीगुरुवर अभिषेक के पूरित वर्ष पचास । यहि विधि सिद्धि समृद्धि का है पावन इतिहास ।।

निम्बार्क धाम अभिराम हुआ, स्वर्णोत्सव की छवि छाई ।।
भक्तों के हृदय–सरोवर में, सुख की तरंग है लहराई ।।१।।

'श्रीजी' की श्री की विमल छटा से, दसों दिशा द्युतिमान हुई ।
सान्निध्य मिला शुभ सन्तों का, अभिलाषाएँ गतिमान हुई ।।२।।

धारायें धर्म सनातन की, निम्बार्कतीर्थ में आज मिली ।
पुरुषार्थ चतुष्टय उपवन में, खिल गई सिद्धि की कलित कली ।।३।।

आचार्य जगद्गुरु मण्डलेश, निज परिकर संग पधारे हैं ।
मङ्गल अवसर पर अपने संग, स्नेहिल भेंटे लाए हैं ।।४।।

सब रजत सिंहासन पर शोभित, मण्डप की छवि अति न्यारी है ।
भक्तों के इस जन—सागर पर, उर बार—बार बलिहारी है ।।५।।

यह रासोत्सव अरु कवि सम्मेलन, शुभ प्रवचन की अमृत धारा ।
यह कर्ण कुहर से आ मन में, करती है तृप्त हृदय सारा ।।६।।

यह धर्म सनातन का वैभव, श्रीगुरुवर ने साकार किया ।
भारत की अनुपम संस्कृति का, इस उत्सव में शृङ्गार किया ।।७।।

आचार्यचरण ने सम्प्रदाय का, सब विधि रूप निखारा है।
वृन्दावन की कल कुञ्जों का, अवगुंठित रूप सँवारा है ।।८।।

श्रीनिम्बग्राम छवि-धाम हुआ, श्री मन्दिर भव्य विशाल बना।
आतिथ्य भवन की सुविधा से, है भक्त समाज प्रसन्नमना ।।९।।

निम्बार्कतीर्थ के सरवर का, श्रीचरणों ने उद्धार किया।
आवर्ष स्नान का सुख देकर, भक्तों पर शुभ उपकार किया ।।१०।।

श्रीराधासर्वेश्वर विग्रह, पधराये नगरों ग्रामों में।
सत्संग लाभ धर्मार्जन का, निज पुण्य दिया निज धामों में ।।११।।

निम्बार्क पीठ में आप कृपा से, वेद ध्वनि भी होती है।
गो–सेवा की पावन सरिता, भव पाप ताप सब धोती है ।।१२।।

विद्या वारिधि, भक्ति सुधा निधि, 'रत्नाञ्जलि' आदि प्रणेता हैं।
निम्बार्क-पीठ ध्वज धारक हैं, भव तारक प्रणत सुचेता हैं ।।१३।।

आपश्री की अनुकम्पा के, यह कुण्ठित जन बैकुण्ठ किया।
परिपूर्ण मनोरथ हुए सभी, चरणामृत का अनुपान लिया ।।१४।।

श्रीमुख निसृत रस वचनों के, हम सदा—सदा अनुगामी हों।
आसीन-पीठ शत शरदों तक, गुरुवर दर्शन नित कामी हों ।।१५।।

अब यही एक अभिलाषा है, जीवन सन्ध्या में आशा है।
वचनामृत पान मिले प्रतिक्षण, प्राणों की यही पिपासा है ।।१६।।

निजधाम निवास प्रदान करो, अब चाहत और निवास नहीं।
मन मानस बीच विलास करो, अब चाहत और विलास नहीं ।।

अब और न देव निराश करो, मन चाहत और की आस नहीं।
निम्बार्क प्रकाश मिल्यौ जब ते, हम चाहत और प्रकाश नहीं ।।

हीर जयन्ती की जगी अब तो मन अभिलाष, राधासर्वेश्वर करें पूर्ण भक्तजन आस

निवेदक — **पदपद्म चञ्चरीक विहारीशरण (वैकुण्ठनाथ शर्मा वैद्य, मथुरा)**

हिन्दू संस्कृति सम्मेलन : प्रथम सत्र

सभा सञ्चालक : मेवाड़ महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त–

श्रीमुरलीमनोहरशरणजी महाराज

गो–सेवा, गो–रक्षा के सम्बन्ध में माननीय विद्वान्, विद्वत्जन सन्तजन आपका मार्ग-दर्शन करेंगे। दूसरा विषय है पूरे राष्ट्र में, देश में और राजस्थान में जो मठ और मन्दिर हैं उनकी सुरक्षा, सरकारी नियन्त्रण से उनको अलग रखना। सरकार की नीति उन मठ–मन्दिरों को अपने अधिकार में लेकर और उनकी सारी व्यवस्थाओं को समाप्त करना और बिगाड़ना। इन दोनों विषयों पर अभी पूज्यजनों के प्रवचन और प्रस्ताव आदि आपके सामने आयेंगे। मैं सबसे पहले इस सभा में मध्यप्रदेश से आये परम श्रद्धेय पं० श्रीप्रह्लादचन्द्रजी शास्त्री से निवेदन करता हूँ कि वे गो-रक्षा और देवस्थान दोनों विषयों पर अपने विचार रखने की कृपा करें।

पं० श्रीप्रह्लादचन्द्रजी शास्त्री

इस समय सनातन धर्म के अन्दर हमारी स्थिति बड़ी खराब है धर्म का लोप हो जाने की स्थिति प्राप्त हो गई है। हमारे यहाँ गो साधारण चीज नहीं है। आदमी जब पैदा होता है तो गाय के गोबर और गऊमूत्र के बिना शुद्धि नहीं होती। परमधामवास हो जाता है तो गोमूत्र और गोबर के बिना शुद्धि को प्राप्त नहीं होता। गऊदान बिना जो प्राण त्याग करता है उसकी गति नहीं होती, विवाह के समय हमें गोबर व गऊमूत्र चाहिये तो गाय के गोबर व गोमूत्र के बिना पंचगव्य नहीं और बिना पंचामृत के देव पूजन भी नहीं हो सकता। यदि भोजन करते हैं तो गऊ को दिये बिना भोजन नहीं करते। गो-ग्रास दिये बिना हमारी गति नहीं। गो हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। हम उसकी पूजा करते हैं। दूसरी समस्या है देवस्थानों की, बड़ी कठिन समस्या पैदा हो गई है, मैं मध्यप्रदेश से आया हूँ वहाँ पाण्डवों का बनाया हुआ मन्दिर है। उसके पुजारी को ६५ रुपया देते हैं क्या पढ़ेगा क्या करेगा। महाकाली मन्दिर के पुजारी को १६० रुपया मिलता है वह क्या पियेगा क्या खायेगा। मन्दिरों को पुजारी नहीं मिलते हैं गवर्मेन्ट ने मन्दिरों की व्यवस्था अपने हाथ में ले ली है पुजारी के जगह पर नौकरों की व्यवस्था करते हैं। इस प्रकार मन्दिरों की दुर्दशा हो रही है। अन्याय को सहना महापाप है हम आप लोगों से कहना चाहते हैं कि आपको दृढ़ प्रतिज्ञ होकर के आगे बढ़ना होगा नहीं तो सब खत्म हो जायेगा।

सभा संचालक : श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी महाराज

गाय की रक्षा करेंगे, गाय की सेवा करेंगे, मन्दिरों को बचायेंगे, मन्दिरों की रक्षा करेंगे ये हमारा संकल्प है और इस सम्मेलन के द्वारा ये संकल्प समाचारों में सरकार के पास और हिन्दू जन के पास जरूर पहुँचायेंगे। अब हमारे मध्य नेपाल से पधारे भारतीय संस्कृति

के उद्‌भट विद्वान् और नेपाल ही नहीं देश में जगह-जगह वैष्णव धर्म का प्रचार करने वाले वैष्णव धर्म के व्याख्याता परम सम्माननीय श्रीखेमराजकेशवशरणजी आचार्य हमारे मध्य आसीन हैं वे अब गो-रक्षा और देवालयों की सुरक्षा के सम्बन्ध में अपने मौलिक विचार अपना मौलिक चिन्तन आपके सामने प्रस्तुत करने जारहे हैं। आचार्य श्रीखेमराजकेशवशरणजी नेपाल में सनातन सेवा सघटन और मण्डल के संस्थापक अध्यक्ष हैं और बहुत ही युवा अवस्था से अभी तक निरन्तर कार्यरत हैं आपसे बहुत बड़ी अपेक्षा है समाज को, देश को और निम्बार्क सम्प्रदाय को। वें पधारे और अपने मौलिक चिन्तन से आज की उपस्थिति को उपकृत करने का कष्ट करें।

आचार्य श्रीखेमराजकेशवशरणजी शास्त्री

आज का जो विषय है बहुत ही महत्व का विषय है क्योंकि हिन्दू संस्कृति का यदि कोई ऐसा सूत्र हम ढूढ़ें जिसमें सम्पूर्ण हिन्दू जाति इकट्ठी हो जाय और संघटित हो जाय तो वो मूल सूत्र गो-माता की सेवा का सूत्र है। हम नेपाल से आये हैं और ये बात हमें कहते हुये बड़ा गौरव का अनुभव होता है कि आज तक आप सबके मंगलमय आशीर्वाद के परिणाम-स्वरूप उस पावन भूमि में गो-माता का रक्त बिन्दु एक भी नहीं गिर पाता। संविधानतः हिन्दू राष्ट्र की परिकल्पना के अन्तर्गत गो-माता पूर्ण रूपेण समरक्षित परम सम्पूजित है और वहाँ गोवध कानून अत्यन्त दण्डनीय है। जो हम हिन्दू संस्कृति और हिन्दुत्व की व्याख्या करते हैं उसके अनुकूल हम लोगों ने दूसरा शब्द भी चयन किया है और वह शब्द है ओंकार। यदि हम हिन्दू शब्द का कोई दूसरा पर्याय ढूढ़ें जिसके भीतर सम्पूर्ण साधनायें, सम्पूर्ण पद्धतियाँ समाविष्ट हो सकती हो तो वैसा एक शब्द है एकमात्र ॐकार। ॐकार का एकात्मक सूत्र का जो एकमात्र आधार है वह है गो-सेवा। आप देखें हम वैदिक सनातन धर्मावलम्बी सभी अपने मन्त्रों के आगे ॐकार का प्रयोग करते हैं "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ॐ नमः शिवाय" इत्यादि हमारे साधना के मन्त्र होते हैं। बौद्ध भी अपने मन्त्रों में ॐ का प्रयोग करते हैं ॐ मणिपदमे हुं वो भी जपते हैं। जैन समुदाय तो ॐ नमो अरिहन्ताणं नमो सिद्धाणं मन्त्र जपता है, सिख सम्प्रदाय का तो महामन्त्र ही ॐ है इक ओंकार सत्यनामकर्ता पुरुख निर्भव निरात मूरत ये वहाँ का मन्त्र है तो ये सारा जो परिवार है उसका नाम ॐकार परिवार है और इस ॐकार परिवार के भीतर सदा-सदा से गो-माता परम पूज्य परम आदरणीय रही है। ऋषिकुलों में विद्यार्थियों की परीक्षा का एक परम आधार गो-सेवा होती थी। विद्यार्थियों को गो-माताओं का एक झुण्ड ले जाकर सेवा करनी होती थी और उनकी वृद्धि होती उतनी ही कुशलता उस विद्यार्थी की मानी जाती थी। सम्पूर्ण अमृतों का उद्‌भव स्थल गो-माता को माना गया है, आज सारे संसार को यदि कोई अमृत पिला रही है तो वह गो-माता है। मैंने पाश्चात्य देशों का भ्रमण करते हुए भी इस बात को देखा चाहे स्वीडन हो, चाहे नार्वे हो, चाहे इंग्लैण्ड हो, चाहे यूरोप का और कोई देश हो, चाहे अमेरिका हो सर्वत्र विश्व मानव को तृप्ति प्रदान करने वाला दुग्ध का जो अमृत है पान कराने वाली कोई यदि है तो केवल गो-माता है। आप देखें वहाँ जाकर के यदि भैंस को देखना चाहें आप तो

चिड़ियाघर जाना पड़ेगा, वहाँ बोर्ड लगे हुये हैं भीतर झांकेंगे तो भैंसे मिलेंगी लेकिन बाहर कहीं भैंसों का दूध नहीं बिकता केवल गाय ही वहाँ सबको तृप्ति प्रदान करती है। हमारी संस्कृति में स्पष्ट निर्देश है यदि किसी को वैतरणी तरनी हो तो गाय की पूँछ पकड़नी पड़ती है भैंस की पूँछ पकड़ के आप वैतरणी नहीं तर सकते। यदि आपको धार्मिक यज्ञ या अनुष्ठान में बैठना है तो पंचगव्य करना होगा। गो-माता के दूध में एक ऊर्जा है एक एनर्जी है एक शक्ति है आप देखें गो-माता के दूध का सेवन करने वाले जो भी महानुभाव हैं दीर्घायुष्य वाले होते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वयं गोपाल बनकर, गोविन्द बनकर यह दिखाया है कि तुम यदि तेजस्वी बनना चाहो, प्रतिभाशाली बनना चाहो, प्रज्ञावान् मेधावी बनना चाहो, सशक्त बलवान् बनना चाहो तो गो-माता के उस अमृत का सेवन करो। हमारी संस्कृति में गो-माता के बारे में जो कुछ कहा है जितना कहा उसके वर्णन में कोई शब्द पर्याप्त नहीं होते।

देवस्थानों पर हस्तक्षेप की जो बातें आरही हैं सरकारी तौर पर उन सब हस्तक्षेपों के लिए हमारा सदैव कड़ा विरोध रहा है और मैं अब भी कहूँगा हमारे सभी धर्माचार्यों को, धर्म के उपदेशकों को, धर्म के प्रचारकों को, व्याख्याताओं को एकजुट होकर के धार्मिक संस्थानों के ऊपर हस्तक्षेप का घोर विरोध करना चाहिये इसके लिए स्वयं दृढ़ता से हमें आगे आना है क्योंकि यह प्रत्यक्ष भगवत् कार्य है प्रभु का कार्य है। एक सुन्दर गान है—

"हम सब हिन्दू एक है धर्म हमारा एक हैं, हर कदम पर एक रहेंगे यही हमारी टेक है।
प्रणव हमारा मंत्र है गौ हमारी माता है, पुनर्जन्म में आस्था रखना हम सभी को भाता है।।
अनेकता में एकता हिन्दू धर्म की विशेषता, सब देवों में एक हरि को हिन्दू सदा से देखता।
भाषा में हो भिन्नता देशों में हो अनेकता, हिन्दू सभी में हिन्दूपने की सदा रही है एकता।।

सम्प्रदाय व साखा जो हो, आखिर हम सब हिन्दू हैं।
हिन्दू बिन्दु हम दीखें, फिर भी साहस के हम सिन्धु हैं।।
आपस में ना फूटेंगे, कभी नहीं हम टूटेंगे।
मानव हित के शुभ कर्मों में, कभी न पीछे छूटेंगे।।

इन्हीं शब्द सुमनों के साथ हम पूरे विश्वास के साथ आशा रख रहे हैं कि नेपाल जो एक प्रज्ज्वलित दीपक रहा है हिन्दू राष्ट्र के रूप में उसी प्रकार एक दिन भारत भी हिन्दू राष्ट्र होकर चमकेगा और विश्वगुरु बनकर हिन्दू संस्कृति का पावन सन्देश विश्व को मुखरित करेगा।

सभा संचालक : श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी महाराज

राजस्थान में मन्दिरों के सम्बन्ध में एक अभी कानून आया है उस कानून के अनुसार राजस्थान में सरकार मन्दिरों की व्यवस्था करने के लिए सरकारी कमेटियां बनायेगी। सरकार दस हजार से अधिक आय वाले जितने मन्दिर हैं उन मन्दिरों की व्यवस्था के लिए सरकार अपनी ओर से सरकारी कमेटियां बनायेगी। सरकारी कमेटियों के लोग इन मन्दिरों का प्रबन्ध करेंगे चाहे वो जातियों के मन्दिर हों, चाहे वो सम्प्रदायों के मन्दिर हों, चाहे वे सन्त-महात्माओं के मन्दिर हों, चाहे वे समाज द्वारा चन्दा करके बनाये गये मन्दिर हों। इन सारे मन्दिरों पर

सरकार अपनी ओर से बहुत जल्दी ही कमेटियाँ बनाने वाली हैं। उत्तरप्रदेश में भी जब डॉ० चन्नारेड्डी गवर्नर थे तो उन्होंने इसी प्रकार का एक कानून बनाया उस कानून के पन्द्रहवें दिन उनका वहाँ से तबादला कर दिया गया, राजस्थान में भी यही हुआ अभी दस-पन्द्रह दिन पहले उन्होंने एक अधिसूचना जारी की और अभी ज्ञात हुआ है कि राजस्थान से भी उनका तबादला कर दिया गया है। जहाँ-जहाँ ये महानुभाव जाते हैं वहाँ-वहाँ लोगों को अकारण परेशानी में डाल कर समाज में चल रही जो सुव्यवस्था है उसमें अकारण हस्तक्षेप करके अपनी मनमानी करते हैं उसका दुष्परिणाम समाज में कठिनाईयां उत्पन्न होना है। हालांकि चन्नारेड्डी के तबादले से वो कागज फट नहीं गया है उस कागज को फाड़ना होगा, उस पत्रावली को नष्ट करना होगा, उसके लिए हमें सामूहिक रूप से प्रयत्न करने होंगे। इसके साथ ही राजस्थान में मन्दिरों में जो खेती की जमीने हैं वो भी और लोगों के नाम करने का एक अजीब प्रकार का आदेश दिया गया है, और भी कई प्रकार की अव्यवस्थाएँ राजस्थान में मन्दिरों के सम्बन्ध में सरकार खड़ी करती जा रही है, सरकार समझती है साधु लोग तो प्रवचन करते हैं अपने घर चले जाते हैं जनता आती है प्रवचन सुनकर अपने घर चली जाती है, कोई उसके पीछे नहीं पड़ता, कोई उसके लिए प्रयत्न नहीं करता, कोई संघर्ष नहीं करता, कोई संघटन नहीं हैं ये सारी बातें सरकार के इस अचेतन मन में जमी हुई हैं उसका प्रतिकार करने के लिए एक यह सनातन धर्म सम्मेलन आज कृत संकल्प है और इसे दिशा बोध करने के लिए मैं किशनगढ़-रेनवाल के माननीय महन्त श्रीहरिवल्लभदासजी महाराज को निमन्त्रित करता हूँ वे पधारें और राजस्थान में देवालयों पर क्या कठिनाईयाँ हैं जनता-जनार्दन को अवगत करायें।

महन्त श्रीहरिवल्लभदासजी महाराज

हमारे हिन्दू संस्कृति के अन्दर मन्दिरों का निर्माण, मन्दिरों के अन्दर ठाकुरजी की प्रतिष्ठा करवाना और भगवान् की सेवा करना यह भागवत के एकादश स्कन्ध में ऊद्धवजी को उपदेश देते समय भगवान् श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण ने बड़ा अच्छा जो अपना मार्मिक शब्द उन्होंने कहा—प्रतिष्ठा के द्वारा क्या होता है, मन्दिर बनाने से क्या होता है और भगवान् की सेवा करने से क्या होता है और यदि एक ही व्यक्ति मन्दिर का निर्माण करवाता है और उसमें ठाकुरजी की प्रतिष्ठा करवाता है और पूजा करता है तो उसका क्या फल होता है? वहाँ विवेचन है—"प्रतिष्ठया सार्वभौमः सन्मनाभुवनत्रयम्। पूजादिना ब्रह्म लोकम् त्रिभिमतसाम्यताम्। मन्दिर क्यों बनाते हैं, प्रतिष्ठा क्यों करवाते हैं और क्यों स्वयं वो पूजा करते हैं। हमारे यहाँ हरेक बात की फलः श्रुति है और उत्तरोत्तर उन फल श्रुतियों के ऊपर ध्यान रखा जाता है, ध्यान ही नहीं यह फलः श्रुतियाँ ही एक ऐसी हैं जो इस मानव जीवन को उस कर्म में लगाने वाली हैं। किसी भी स्तोत्र की यदि फलः श्रुति नहीं हो तो उस स्तोत्र का कोई पाठ करने वाला नहीं मिलेगा और यदि उसकी फलः श्रुति होगी कि इस स्तोत्र के पाठ करने से लक्ष्मी प्राप्ति होगी तो उसका सब कोई पाठ करेंगे। इसी तरह से भगवान् ने मन्दिर के बनवाने की फलः श्रुति, मन्दिर में भगवान् की प्रतिष्ठा की फलः श्रुति और भगवान् की पूजा करने की फलः श्रुति बताई है। जो मन्दिर के अन्दर भगवान् की प्रतिष्ठा करवाते हैं

राजस्थान के भूतपूर्व स्वास्थ्य ... जी चतुर्वेदी प्रवचन करते हुए, मंच पर सिंहासनासीन ... रूप युवराज श्रीकान्त।

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव तथा अ.भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का मंच पर सभा संचालन करते हुए मेवाड़ महामण्डलेश्वरश्रीमंहत श्रीमुरलीमनोहरशरणजी महाराज (उदयपुर)।

मंच पर गम्भीर मुद्रा में समासीन सर्वप्रथम महन्त श्रीहरिवल्लभदासजी महाराज (किशनगढ़-रैनवाल) श्री महन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी महाराज (उदयपुर) पं. श्रीदयाशंकरजी शास्त्री (ब्यावर) डॉ. श्री रामप्रसादजी शर्मा (किशनगढ़) पं. श्रीमुरलीधरजी शास्त्री (प्रेमसरोवर) पं. श्रीहरिशरणजी उपाध्याय (नेपाल) वर्तमान - वृन्दावन, पं. श्रीसीतारामजी श्रोत्रिय (जयपुर) पं. श्रीवासुदेवशरणजी उपाध्याय (नेपाल) वर्तमान-निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद पं. श्रीचन्द्रदत्तजी पुरोहित (परबतसर) पं. श्रीविश्वामित्रजी व्यास (निम्बार्क तीर्थ-सलेमाबाद) पं. श्रीखेमराज केशवशरणजी उपाध्याय (काठमाण्डू-नेपाल) एवं अनेक विद्वान्, सन्त, महात्मावृन्द।

महन्त श्रीविहारीदासजी झांसी (मध्यप्रदेश) से रजत निर्मित रथ के प्रतीक को आचार्यश्री प्राप्त करते हुए। साथ में डॉ. श्रीरामप्रसादजी शर्मा।

महाभारत धारावाहिक के सञ्चालक - बी.आर. चोपड़ा (बम्बई) को आचार्यश्री ... सुदर्शन महाचक्र प्रदान।

अनन्त श्रीविभूपित जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्रीवासुदेवाचार्यजी महाराज (अयोध्या) सदुपदेश देते हुए।
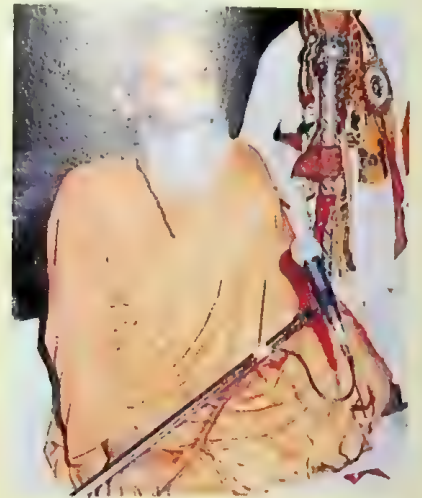
भारत साधु समाज के महामंत्री स्वामी श्रीहरिनारायणनन्द... (दिल्ली) प्रवचन करते हुए।

रामचरितमानस के प्रख्यात प्रवक्ता सन्त श्रीसर्वेश बापू प्रवचन करते हुए।

हिन्दू संस्कृति, सनातन धर्म के अन्तर्राष्ट्रीय प्रवक्ता, नेपाल में सनातन ... समिति के अध्यक्ष - प्राध्यापक श्रीखेमराज केशवशरणजी ... सनातन धर्म पर प्रवचन करते हुए। मञ्च पर समासीन सन्त, म... विद्वज्जन।

उनको चक्रवर्ती पद भगवान् प्रदान करते हैं, चक्रवर्ती राजा बनाते हैं। मन्दिर निर्माण की फलः श्रुति भगवान् स्वयं अपने मुखारविन्द से बता रहे हैं—"प्रतिष्ठाया सार्वभौमः सन्मना-भुवनत्रयम्" जो कोई मन्दिर बनवाता है भगवान् कहते हैं मैं उसको इन्द्र बनाता हूँ। त्रिलोकी का पति बनाता हूँ। "पूजादिना ब्रह्मलोकम्" यदि इसी प्रकार पूजा करता है तो मैं उसको ब्रह्मा बनाता हूँ। भाई एक ही व्यक्ति मन्दिर बनवादे, एक ही व्यक्ति उसमें ठाकुरजी की प्रतिष्ठा करवावे और वही व्यक्ति भगवान् की सेवा करे और करावे उसके लिए तो भगवान् ने कह दिया—"त्रिभिर्मम साम्यता" यदि यह तीनों काम एक व्यक्ति करता है तो वह मेरे तुल्य ही बन जाता है। यह मन्दिरों की फलः श्रुति है। जो हम सब हिन्दुओं में विराजमान है। हम सब कोई यह चाहते हैं कि हम मन्दिर बनवावें, हम भगवान् की प्रतिष्ठा करवावें, हम भगवान् की सेवा करें। आप सब हिन्दू हैं अपने घरों के अन्दर ही एक छोटा सा मन्दिर बना रखा है और अपने घरों के अन्दर ही एक छोटे से ठाकुरजी विराजमान कर रखे हैं और अपने घर के अन्दर ही उन ठाकुरजी की नित्यप्रति आप पूजा करते हैं। वह श्रीविग्रह आठ प्रकार की होती है "लेख्या लेप्या च सैगति मनोमयी मणिमयी प्रतिमाऽष्टविधा स्मृताः।" आप कोई चित्र भी अपने यहाँ रखकर के उसकी पूजा कर रहे हैं तो वह भी पूजा है। इस प्रकार हमारे राजस्थान के अन्दर ही नहीं समस्त हिन्दुस्तान के अन्दर इन मन्दिरों का बोलबाला है, आप उत्तर से लेकर के दक्षिण तक की दिशा देख लीजिये और पूर्व से चलकर के पश्चिम दिशा देख लीजिये कहीं भी मन्दिरों का अभाव नहीं है। हमारा भारतवर्ष मन्दिरों की महिमा से ओत-प्रोत है, मन्दिरों से भरा हुआ है और यों भी कह देना चाहिए कि ऐसे विशाल-विशाल मन्दिर ही नहीं हमारे यहाँ तो जितने मकान हैं वे सब भगवान् के मन्दिर हैं। हमारे यहाँ ब्राह्मण वेद मन्त्रों के द्वारा शिक्षा देने वाले, क्षत्रिय रक्षा करने वाले, वैश्य भगवान् के ऊरू से पैदा होकर के सबकी सहायता करने वाले और जो चतुर्थ वर्ग है वह भी भगवान् के चरणारविन्द से उत्पन्न होकर के सबकी सेवा करने वाले हैं। यह हमारी हिन्दू संस्कृति का पावन क्रम है। हम यदि अपने इस पावन क्रम के अन्दर जमे हुए रहे, स्थित रहे तो हमें किसी भी प्रकार की आधि–व्याधि सताने वाली नहीं है। किसी भी प्रकार के पाञ्च भौतिक दुःखों से हम युक्त नहीं होने वाले। एक समय ऐसा भी आया था कोई युग आया था जिस युग के अन्दर इन मन्दिरों का निर्माण राजा–महाराजाओं ने किया और राजा–महाराजाओं ने केवल मन्दिरों का निर्माण ही नहीं किया उन्होंने अपने नामों से ठाकुरजी का नाम रखा कर के और उनमें उन मूर्तियों की प्रतिष्ठा करवायी और उस मन्दिर की सेवा के लिए अपनी जागीरी में से जमीन निकाल कर के और जितना भी साल भर का खर्चा होता था उसका प्रबन्ध उन्होंने किया।

हमारे यहाँ इस प्रकार के पट्टे हैं। यह उन तपोमूर्ति महात्माओं की विशेषता थी जो वहाँ के महन्त बने थे उन्होंने उन महन्तों के नाम से पट्टे लिखे और उस पट्टे के नीचे एक इस प्रकार की वे शपथ भी खाते हैं—"स्वदत्तां परदत्तां वा वृत्ति गृह्णाति यो नरः। स नरो नरकं याति यावत्—चन्द्रदिवाकरौ।" यहाँ हमारे जितने भी प्राचीन मन्दिर हैं वो बिना जमीन के भोगराग की व्यवस्था के बिना नहीं थे। एक बार मैं भी नेपाल में गया हूँ मुझे मन्दिरों के बारे में वहाँ मालुम हुआ कि बिना पहले मन्दिर के लिए जमीन नियुक्त किये बिना

वहाँ मन्दिर बनाने की राजा आज्ञा नहीं देते थे। ऐसा वहाँ का विधान ऐसे वहाँ की व्यवस्था है। ठीक इसी तरह से हमारे राजा–महाराजाओं ने मन्दिर बनाये तो उस मन्दिर बनाने के साथ में कोई न कोई भूमि आदि का समर्पण अर्थात् जागीरी उनके लगाई। पट्टे के नीचे शपथ खायी गयी कि "स्वदत्तां परदत्तां वा" किसी को अपने आप से हमने दी हो या किसी और ने दी हो ऐसी और ब्राह्मणों की और भगवान् की सम्पत्ति को जो कोई हड़प करता है "स नरो नरकं याति यावत् चन्ददिवाकरौ।" वह मनुष्य तब तक नरक में पड़ा रहेगा जब तक आकाश में सूर्य और चन्द्रमा चमकते रहेंगे। चन्द्रमा और सूर्य ये तो किसी महाप्रलय में ही अपना संवरण करेंगे अन्यथा ये निरन्तर चलेंगे तो इस तरह से हमारे यहाँ जितने भी सन्त-महात्माओं की कृपा से राजा-महाराजाओं ने मन्दिर बनवा करके और उसकी जमीन के पट्टे बनवा करके इन सन्तों को समर्पित किया और कहा कि महाराज इस मन्दिर को सम्भालिये और यह भोगराग की व्यवस्था भी सम्भालिये।

एक समय आया यह स्वतन्त्र भारत बना, राजस्थान भी स्वतन्त्र बना, राजस्थान के प्रत्येक गाँव में भगवान् का मन्दिर है ऐसा कोई गाँव नहीं जहाँ भगवान् का मन्दिर न हो। हम स्वतन्त्र हुए स्वावलम्बी हुए हमने भारत को स्वतन्त्र करवाकर के और ठाकुर को परतन्त्र कर दिया. मन्दिरों को परतन्त्र कर दिया। सरकार ने उनको परतन्त्र कर दिया है, इधर यह कानून तो ऐसा बना रहे हैं कि ठाकुरजी हमेशा नाबालिग रहे और एक तरफ ऐसा करते हैं कि ठाकुरजी के भोग का कोई ठिकाना नहीं, उनकी जमीनों की एनुटी बाँध दी है। जैसी जमीनें हैं उनके अनुसार उनकी आय है उसमें से भी सरकार ने दश प्रतिशत की है, किसी मन्दिर के आठ रुपये बने हैं, किसी के दस रुपये बने हैं, किसी के हजार बने हैं। इनी–गिनी जमीने किसी ने किसी तरह से रख ली है उसका भी कानून बनाया है। अभी क्या कानून बनाया है कि पुजारियों के पास अमुक ठाकुरजी के नाम के साथ अमुक पुजारी का नाम है वह नाम हटा दिया जाये और केवल ठाकुरजी के नाम को रखा जाये। हमने सरकार को सुझाव दिया कि यह बात तो जरा ठीक नहीं है ठाकुरजी की उस आय के और जो सञ्चालन करने वाले पुजारी का, महन्त का नाम था इस नाम को आप ठाकुरजी के नाम के साथ रखिए, यह नाम कोई आपने नहीं जोड़ा है यह नाम हमारा उन राजा–महाराजाओं के काल का है जिन्होंने अपनी तपस्याओं के द्वारा राजाओं को सन्तानें दी है, जिन महात्माओं ने अपनी तपस्याओं के द्वारा राजाओं को जागीरें दिलवाई है उन महात्माओं को उन जागीरदारों द्वारा नाम से पट्टे दिये गये हैं। आप इस नाम को हटाइये नहीं, पुजारी का नाम इस मन्दिर के साथ में रखिए परन्तु सरकार ने उनके नाम हटा दिये और कहते हैं कि तहसील में इस नाम को अलग रजिस्टर में नोट रखेंगे। उसमें लिखित रखेंगे। मैं आज आपसे पूछता हूँ एक गांव के अन्दर दो सीतारामजी के मन्दिर हैं, एक मन्दिर के नीचे कोई पाँच बीघा जमीन है और एक मन्दिर के नीचे हजार बीघा जमीन है आज तो ऐसा भ्रष्टाचार चला हुआ है कि कहीं भी कुछ पैसा आप बांट दीजिये और चाहे जैसा भी काम करवा लीजिये। एक मन्दिर का पुजारी एनुटी का बिल बनवाने जाता है दो-तीन बार जाये बिना तो उसको यह पता नहीं पड़ेगा कि इस देवस्थान की रकम स्वीकृत होकर के यहाँ तहसील में आयी है कि नहीं। एक व्यक्ति यदि तहसील के उस छोर पर रहता है तो

उसको आने-जाने पर बहुत खर्चा हो जाता है और हमारी आय क्या रखी है, कि जो जमीन का लगान है उस लगान का भी दशांश काटकर के उसका हमें बिल बना करके देना पड़ता है, एक बात और है कि मन्दिर की जमीन तो दूसरे लोग ही बीजते हैं हमें तो उसका छटा अंश ही मिलता है जिससे मन्दिर का सारा खर्च चलाना पड़ता है, आज वह भी सरकार बन्द करना चाहती है वह जमीन जो बीज रहा था उसी के नाम करके मन्दिर की व्यवस्था बिगाड़ रही है। ऐसे समय में हम सब उन देवस्थानों के कानून का विरोध करने के सम्बन्ध में आप सबकी सहायता चाहेंगे। यह हमारी बड़ी समस्या है। देवस्थानों की सुरक्षा नहीं होगी तो हिन्दुत्व की सुरक्षा भी नहीं होगी, तो आप सब इस सम्मेलन के अन्दर इन मन्दिरों के विषय में अपने गांव के मन्दिरों के विषय में अच्छी बात सोच कर के कुछ निर्णय करो।

मुनि श्रीशैलेन्द्राचार्यजी हरिद्वार

वर्तमान में जिस चर्चा को उठाया गया है उसके बारे में एक कवि की बात मेरे ध्यान में आ गयी पहले वह सुन लीजिये—"पंछी ये समझते हैं चमन बदला है, तारे यह समझते हैं गगन बदला है। श्मशान की खामोशी मगर कहती है, है लाश वही सिर्फ कफन बदला है।" अभी जो बात चल रही है कि हमारे धर्म स्थानों के ऊपर सरकार अपना नियन्त्रण करना चाह रही है और मैं आप सब लोगों के सामने, सन्तों के सामने सरकार को निमन्त्रण देता हूँ यदि मेरी बात का यहाँ पर कोई मूल्य हो तो सरकार सारे ही हमारे धर्म स्थानों को नियन्त्रित करले पर किस आधार पर, सरकार है धर्म निरपेक्ष और यह स्थान है धर्म सापेक्ष, आज यदि सरकार अपने आपको धर्म सापेक्ष घोषित करदे तो ये सारे के सारे मन्दिर देवालय उसको दे देने चाहिए। धर्म निरपेक्षता की पैंतालीस वर्षों की इस सड़ांध ने यदि आप लोग मानते हो, "अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्याणां तु व्यतिक्रमः। त्रीणि तत्र भविष्यन्ति दुर्भिक्षं मरणं भयम्।" जिस सरकार ने धर्म को अलग कर दिया है उस सरकार को आप जिन्दा समझ रहे हैं। इससे बड़ी भूल और क्या है। पैंतालीस साल से इस मुर्दा सरकार की दुर्गन्ध अब हम लोगों के धर्म के ऊपर भी कुठाराघात करने के लिए तैयार हो रही है। अभी हमारे धर्मालयों पर, धर्म स्थानों पर दस हजार रुपये से ऊपर जिनकी आमदनी है उन धर्मालयों के ऊपर सरकार अपनी नजर रख रही है। कैसी विचित्र बात है. अभी एक सम्वत् प्रारम्भ किया गया आपको मालुम होगा। वो सम्वत् किसका है बोले, राजीव गाँधी का सम्वत् चलाया जाये। सम्वत् किस राजा का चलता है जिस राजा के राज्य में कोई भी व्यक्ति ऋणि नहीं हो किसी का, कोई किसी का कर्जदार न हो उसको सम्वत् चलाने का अधिकार होता है, लेकिन आज "ओ भारत वासियों" तुम्हारे यहाँ एक बालक पैदा होता है तो वह छः हजार रुपये का कर्जदार इस समय विदेशी लोगों का है। हम सब लोग लगभग छः-छः हजार रुपये के कर्जदार हैं पर इस सबका समाधान क्या है, हम केवल यहाँ सुन लें और चले जायें बात ऐसे बनेगी नहीं! इस बात को बनाना है तो उसके लिए सज्जनों आपको सत्य व असत्य का विवेचन और सत्य के स्वरूप को समझना पड़ेगा और सत्य क्या है? वो सत्य है आज के युग का प्रपोगंडा, आज के युग का सबसे बड़ा सत्य है विज्ञापन, आज के युग का सबसे बड़ा सत्य है मीडिया और उस मीडिये ने हमारे ऊपर क्या दशा कर रखी है वो आप सबको बताने की जरूरत नहीं है।

जागो हिन्दू अब जागे बिन नहीं गुजारा है।
आज धर्म सम्मेलन ने यूँ तुम्हें पुकारा है।
ज्ञान विश्व को देने वाला स्वयं बना अज्ञानी।
तेरी फूट से बिगड़ी तेरी कितनी बार कहानी।
दो आवाज सभी मिलकर यह विश्व हमारा है।
पेट्रो डालर ने तेरी अश्मत को ललकारा है।
विश्व नीति में तेरा गौरव क्षीण हो रहा सारा।
धर्म की रक्षा करो गाय की रक्षा करो तभी कल्याण तुम्हारा है।
धर्माचार्य मठाधीशों से विनती एक हमारी।
निगमागम का प्रचुर, करें उपदेश हम शरण तुम्हारी।
शास्त्र-ज्ञान की पावन धारा, बहादें अपारा है। (आज धर्म०)

श्रीप्रेमाचार्यजी महाराज, मण्डावर

राजस्थान में राम कबीर सम्प्रदाय के आचार्य श्रीप्रेमाचार्यजी महाराज, मण्डावर में आपका आश्रम है और आप राम कबीर परम्पराओं के आचार्य हैं, आपने गाय के सम्बन्ध में और मन्दिरों के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा—

समस्त देवता जिसमें निवास करते हैं वो गो माता है माता ही हमें धारण करती है प्रशिक्षण करती है हमारा पोषण करती है। जिस प्रभु की यह सारी की सारी सृष्टि है, सृष्टि में यह आकाश, वायु ये जितने भी पञ्च तत्त्व आदि हैं यह सबका सृजन हुआ है, सबकी एक विधि है और उस विधि के अनुसार हम माता को देवता, पिता को, आचार्य को देवता मानने की जो बात है उसको कलि देव निगल गये, खा गये। हारकर के ही बात कहनी पड़ती है—"वर्तते कस्य दूषणम्" युगधर्म की बात मानव के लिए लागू नहीं होती। हमें प्रभु ने कर दिये, हमें पौरुष दिया, मानव शरीर दिया "दुर्लभो मानुषोदेहो देहीनां क्षणभंगुरः।" यह पिछला जो वाक्य है इसकी विस्मृति हमें हो गयी, यह जो दुर्लभ शरीर हमें प्राप्त हुआ है इसके महत्व को हम भूल गये मूल बात यह है। वैसे तो यथा-तथा जिस किसी भी प्रकार से मानव जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य येन-केन प्रकारेण भगवत् चर्चा हो भगवत् जनों के मध्य में हम बैठकर के कुछ कहे-सुनें यही परम सौभाग्य है हमारा, और हमारी पावन घड़ी है यह जीवन का परम लाभ है।

मन्दिरों के सम्बन्ध में हमारे राजस्थान की ऐसी दुर्दशा है कि ग्यारह हजार मन्दिर तो राज्य के प्रभार क्षेत्रीय मन्दिर कहलाते हैं उनके क्षेत्र में हैं जिसमें दो हजार रुपये महिने के पुजारी रहते हैं और बारह बजे दिन तक वो खुल नहीं पाते, झगड़े होते रहते हैं, क्योंकि चपरासी नामक जो कर्मचारी है वो पुजारी है, तो उनका एक संघ बना हुआ है जब कभी वो संगठित हो जाते हैं तो अपने से जो उच्च श्रेणी के कर्मचारी हैं उनको परास्त करने के लिए अक्षुण

व्रत ले लेते हैं, कोई अभियान उनका चालू हो जाता है तो ठाकुरजी महाराज ताले के भीतर ही विराजे रहते हैं। मन्दिरों के सम्बन्ध में सही बात यह है कि हमारा शरीर भी एक मन्दिर ही है लेकिन उस मन्दिर में माता के शरीर में देवता की भावना करने की बात वेद भगवान् ने कही, पिता के शरीर में भगवत् भाव करने के लिए वेद भगवान् ने आदेश किया हमारे लिए। "एकोहं बहुऽयाम प्रजायेय" जो है वो प्रभु ही है वो विविध प्रकार से एक से बहुत कुछ हो जाते हैं। लेकिन सबकी एक परम्परा है, सबकी एक विधि है। राजा की जहाँ विधि है वहीं प्रजा की विधि है, जहाँ गुरुजन की विधि है वहीं शिष्य की विधि है, जहाँ माता की एक महिमा है वहीं एक पुत्री की भी महिमा है सबके व्यवहार की बात कही गई है वह व्यवहार आज नष्ट हो गया, समाप्त हो गया। सबमें यही बात है। हम साधु समाज में जो आते हैं, जो मठाधीश हम कहलाते हैं वो पूर्व के हमारे संस्कार हैं वे नष्ट नहीं होते, गृहस्थ के संस्कार नष्ट नहीं होते। हमारे में भी अनेक दोष हैं जब तक हम सुसंस्कृत नहीं होंगे तब तक हमारा मंगल नहीं होगा, कल्याण नहीं होगा इसलिए हम जहाँ कहीं भी बैठे हुए हैं स्पर्धा रहित होकर के अपने अच्छे कार्य में लगे रहें। जितना कुछ हम समझते हैं अच्छी बात को ग्रहण करने के बाद हम आचरण करने की कोशिश करें तो यह सारा का सारा संसार क्षीर सिन्धु बन जाये सारी की सारी समस्याएँ हमारी हल हो जायें। हमारी जो स्वयं खाने-पीने, पहनने आदि की जो पद्धति है उसमें थोड़ा सुधार हो जाये तो हमारा मंगल हो जाये।

सभा संचालक : श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी महाराज

आज राजस्थान संस्कृत अकादमी की ओर से राजस्थान संस्कृत अकादमी के निदेशक माननीय डा० श्रीप्रभाकरजी शास्त्री वहाँ के प्रकाशनों का एक सेट पूज्य आचार्यश्री-चरणों में समर्पित करने के लिए लाये हैं। मै शास्त्रीजी से निवेदन करता हूँ कि वे पधारें और आचार्यश्रीचरणों को प्रकाशनों का सेट समर्पित करके अकादमी को कृत-कृत्य करने का पूज्य आचार्यश्री से निवेदन करें।

श्रीप्रभाकरजी शास्त्री राजस्थान विश्वविद्यालय में संस्कृत के विभागाध्यक्ष, प्रोफेसर और डा० व डि लिट् से समलंकृत हैं तथा उच्चकोटि के लेखक हैं आपने श्रीचरणों को अकादमी की ओर से ग्रन्थों का यह सेट समर्पित किया है।

अब आज के समारोह में अखिल भारतीय साधु समाज के महामन्त्री माननीय पूज्य महामण्डलेश्वर महन्त श्रीहरिनारायणानन्दजी महाराज पधारे हैं और आपके विचार जानना हम सबके लिए आवश्यक है। भारत साधु समाज मठ-मन्दिरों के सम्बन्ध में व गाय की रक्षा के सम्बन्ध में, गाय की सेवा के सम्बन्ध में अपने क्या मत रखता है और उनके क्या विचार हैं तथा इन आने वाले संकटों के सम्बन्ध में भारत साधु समाज पूरे राजस्थान के मठ-मन्दिरों की क्या सहायता करेगा, क्या उसकी योजना है और किस प्रकार से राजस्थान के सन्त-महात्मा और यह जो मठ-मन्दिरों की समस्या है जो सरकार के अतिक्रमण से उत्पन्न हुई है उसको किस प्रकार से रोकने का प्रयत्न करेंगे, इस सम्बन्ध में पूज्य महामन्त्रीजी अपने विचार व्यक्त कर रहे हैं।

महामण्डलेश्वर महन्त स्वामी श्रीहरिनारायणानन्दजी महाराज

[महामन्त्री – अ० भा० भारत साधु समाज दिल्ली]

अभी आप अनेक घण्टों से गो-सेवा, गो-रक्षा के सम्बन्ध में अनेक लोगों के विचारों से परिचित हो रहे हैं उसके साथ ही साथ राजस्थान में धार्मिक स्थलों के सम्बन्ध में सरकारी नियन्त्रण की जो कठिनाईयां उत्पन्न हुई हैं, जिसके सम्बन्ध में भी आपने विस्तार से विचार सुने हैं। साधु का जीवन अपने-अपने सम्प्रदाय के रीति-नीति के अनुसार सम्पादित होता है परन्तु धर्म प्रवर्तकों ने, सम्प्रदाय प्रवर्तकों ने मानव जाति के कल्याण के लिए ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण प्राणियों के कल्याण के लिए सोचा है। "सर्वभूतहिते रताः" सभी प्राणियों के जो हित में लगा है वह साधु सन्त है। राष्ट्र और समाज की पहचान के लिए कुछ ऐसे केन्द्र बिन्दु होते हैं जिससे अपनी दृष्टि को ओझल नहीं किया जा सकता, उन्हीं केन्द्र बिन्दुओं में गो-रक्षा का प्रश्न अनेक वर्षों से हमारे देश के सामने चला आरहा है। अनेक दलों की सरकार केन्द्र में हुई कांग्रेस की सरकार बनी, भाजपा व जनता पार्टी की सरकार बनी और फिर भाजपा व जनतादल की सरकार बनी परन्तु किसी भी केन्द्रीय सरकार ने भारतीय जनता के आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए केन्द्रीय स्तर पर गो-वध नियन्त्रण कानून को नहीं बनाया क्योंकि ऐसे कानून को बनाने के लिए उसे भारत के संविधान में संशोधन करना होगा और उस संविधान संशोधन की स्वीकृति के लिए राज्य सरकारों की विधान सभाओं से भी सहमति लेनी होगी, इसलिए विधान के मार्गदर्शक सिद्धान्त में राज्य सरकारों को अधिकृत किया गया कि वे गोवंश के वध के नियन्त्रण के लिये कानून बनाए। इस सम्बन्ध में दिल्ली में एक विशाल अधिवेशन हुआ जिसमें गृहमन्त्री श्रीनन्दाजी को भी अपना त्यागपत्र देना पड़ा और उस गो-रक्षा अभियान में मेरे हाथ पुलिस ने तोड़ डाले थे अस्पताल में रहना पड़ा, फिर भी वह समस्या हल नहीं हुई क्योंकि ऐसे प्रश्नों को जब हम राजनीति से जोड़ देते हैं तो धार्मिक व आध्यात्मिक पहलू नष्ट हो जाता है और जो हमारे समर्थक हैं वे भी विचारों की विभिन्नता के कारण राजनैतिक स्वार्थ के कारण अपने राजनीति में मिल जाते हैं। इसलिए भारत साधु समाज जो देश के सभी साधु सम्प्रदायों का एकमात्र संगठन आज से लगभग छत्तीस वर्ष पहले बना, उसमें प्रायः सभी शंकराचार्यों का, सभी सम्प्रदायाचार्यों का और भारत के अठारह साधु सम्प्रदायों के धार्मिक नेताओं का समर्थन और सहयोग प्राप्त रहा है और रहे। उसमें यह विचार बनाया है कि धर्म और धर्मस्थानों को राजनैतिक मुद्दा से अलग रखा जाये। भगवान् व परमात्मा व्यापक वस्तु है उसे हम ऐसे सीमित क्षेत्र में लाने का प्रयास न करें जिससे दूसरे दल वाले दूसरे पक्ष वाले भी धर्म और भगवान् के आलोचक बन जायें। जहाँ तक गो-रक्षा का प्रश्न है उसमें यह निश्चित बात है कि भारत में किसी भी प्रकार का कोई औचित्य नहीं है कि गो-वध कानून लागू रखा जाये। अनेक राज्यों ने सीमित अवस्था तक गाय के वध के नियन्त्रण के लिए कानून बनाये हैं, लेकिन भारत साधु समाज की, हिन्दु जनता की, सभी धर्माचार्यों की यह मांग रही है और यह मांग बनी रहेगी कि सम्पूर्ण गो-वंश की रक्षा की जानी चाहिए, केवल गाय की ही रक्षा नहीं की जानी चाहिए, गाय के प्रजनन से जो बछड़े उत्पन्न होते हैं उन पर भी पूर्ण

रूप से वध का निषेध किया जाना चाहिए और इसके लिए यदि आवश्यकता हो तो भारत का संविधान का संशोधन किया जाना चाहिए। अनेक राज्यों में ऐसी भी सरकारे हैं जिनके नेता भगवान् को नहीं मानते, ईश्वर को नहीं मानते। जिनके नेता धार्मिक और धर्मस्थानों की व्यवस्था की प्राचीन पद्धति के प्रति विश्वास नहीं रखते उनसे भी हमारा कहना है कि भारत भूमि की प्राचीन महत्ता और गरिमा को ध्यान में रखकर साधुओं की, धर्माचार्यों की और भारतीय जनता की, भारतीय जनता की जब बात मैं करता हूं तो पचास करोड़ हिन्दुओं की ही बात नहीं है बल्कि पच्चासी करोड़ सभी वर्ग के लोगों की बात है. क्योंकि जो मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र कश्मीर है वहाँ कानून बना हुआ है कि कोई गो-वध नहीं कर सकेगा, सम्पूर्ण रूप से गो-वध निषेध है। तो जहाँ मुसलमानों की इतनी बड़ी संख्या है वहाँ कानून बना है कि गो-वध नहीं हो सकता और जहाँ मुसलमानों की नगण्य संख्या है वहाँ क्या औचित्य हो सकता है गो-वध को चालू रखा जाये। तो इसलिए मैं ऐसा मानता हूँ कि इस प्रश्न को सभी दलों को राजनैतिक विचारों से अलग रखना चाहिए और भारतीय जनता की आकांक्षाओं को ध्यान में रखकर भारत के संविधान को संशोधन करके सम्पूर्ण रूप से गो-वध पर नियन्त्रण लगाना चाहिए। एक सुझाव पिछले अधिवेशन में आया था कि गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाये, तो राष्ट्रीय पशु घोषित हो जाने के बाद अपने आप गो-माता के वध का निषेध हो जायेगा। लेकिन हमारा कहना केवल गो-वध के लिए नहीं है, हमारा तो कहना है सम्पूर्ण गो-वंश की जाति के वध पर नियन्त्रण लगाया जाये। दूध का क्या गुण है भैंस का और गाय का इसका प्रश्न क्या है ? हमारे देश में पच्यासी करोड लोगों में दस करोड़ लोगों को भी दूध उपलब्ध नहीं है, गाय का दूध का तो सवाल ही नहीं है। जहाँ हजारों आदमी पेट को भूख की ज्वाला से मर रहे हैं उनका कोई अभी तक समाधान नहीं हो सका है तो यह सब समस्याएँ अलग है। जो आर्थिक समस्याएँ है उन आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए जो कुछ किया जा सकता है उस पर भी राजनैतिक नेताओं का, राजनैतिक दलों का कोई ध्यान नहीं है। क्योंकि सभी व्यक्ति जो राजनैतिक दल से जुड़े हुए हैं, सत्ता के लालच में भारत की प्राचीन संस्कृति की गरिमा की उपेक्षा कर रहे हैं और इस संस्कृति की रक्षा के लिए जो यह मन्दिर आश्रम बनाये गये हैं उन पर उनकी दृष्टि आयी हुई है यह दृष्टि कोई नई नहीं है पिछले पच्चीस-तीस वर्षों से अनेक राज्यों में धार्मिक स्थानों के सञ्चालन और नियन्त्रण के लिए कानून बने हुए हैं, लेकिन कुछ राज्यों का कानून एक दूसरे प्रकार का है और किसी राज्य का रूप एक तीसरे प्रकार का है। यह कानून सभी धर्म के लोगों पर लागू है, मुसलमानों के लिए वक्फ एक्ट लागू है, क्रिश्चियन के लिए भी एक्ट लागू है, गुरुद्वारा एक्ट लागू है। लेकिन हिन्दू धार्मिक स्थानों के लिए इस प्रकार के कानून की आवश्यकता नहीं है। हालांकि कुछ हमारे धार्मिक नेता जब कभी इस बात की चर्चा करते हैं तो कभी-कभी कह डालते हैं कि सभी धर्म के लिए, सभी धर्मस्थानों के लिए एक सामान्य कानून बनना चाहिए, लेकिन इन बातों को भूल जाते हैं, हिन्दू धर्म की जो शास्त्र परम्परा धर्माचार्यों की है और सम्पत्ति के साथ उनका सम्बन्ध जुड़ा हुआ है, वैसी परम्परा मुस्लिम धर्म में नहीं है, वैसी परम्परा जैन व बौद्ध धर्म में नहीं है। लेकिन जो सनातन धर्म की परम्परा है जिसमें दस नाम सन्यासी परम्परा, निम्बार्क सम्प्रदाय की परम्परा, रामानन्द सम्प्रदाय की परम्परा, कबीर की परम्परा, राम-

स्नेही सम्प्रदाय की परम्परा और यह जो हमारे वैष्णव चतुः सम्प्रदाय की जो परम्परा है ये परम्पराएँ अलग हैं, जहाँ धर्मगुरु होता है और धर्मगुरु शिष्यों को दीक्षा देता है। ये दीक्षा का काम मुसलमानों में नहीं होता इसलिए धर्मगुरु के नाते धर्मस्थान का वर्चस्व है।

लेकिन आज ये जो मध्यप्रदेश और राजस्थान में यह कानून बना रहे हैं उसे मैंने संक्षेप रूप से देखा है उसमें कुछ इस प्रकार का नादानी का परिचय दिया गया है कि शंकराचार्य, माधवाचार्य और निम्बार्काचार्यजी के पद को भी उसी सामान्य ट्रस्टी के साथ जोड़ दिया गया है जो एक सामान्य ट्रस्ट कमेटी का कोई ट्रस्टी होता है, पुजारी होता है। इस सम्बन्ध में कल भी मैंने कहा था कि राजस्थान का जो वर्तमान कानून पिछले वर्षों में बना है, और पिछली सरकार के समय में भी लगभग दो वर्ष पहले से यह लागू किया गया है, उसके बाद में अभी नये-नये सरकारी आदेश अभी राष्ट्रपति शासनकाल में निकले हैं। इन सारे कानूनों की समीक्षा की जायेगी और साधु समाज की जो पाँच महात्माओं की, जिसमें श्रीमुरलीमनोहरशरणजी, दादू पंथ सम्प्रदाय के स्वामी श्रीरामप्रकाशजी महाराज, प्रदेश के अध्यक्ष रामस्नेही सम्प्रदायाचार्य श्रीरामकिशोरदासजी महाराज और दूसरे महात्मा मिलकर एक महीने में सारे कानून की रूपरेखा का अध्ययन करके, जिनके दुरुपयोग के कारण मठ-मन्दिरों पर क्या कठिनाई उत्पन्न हो रही है इसका एक विवरण तैयार करेंगे, फिर हम कानून में संशोधन की मांग करेंगे और जुलाई में भारत साधु समाज राजस्थान की एक विशेष सभा आयोजित की जायेगी, जिसमें हम इसका समाधान ढूढ़ेंगे। हम स्पष्ट करना चाहते हैं कि जो हमारे मठ-मन्दिर और आश्रम हैं इनका सम्बन्ध करोड़ों लोगों के धार्मिक और आध्यात्मिक आस्था से जुड़ा है, यह सम्बन्ध कोई राजनैतिक विचारधारा से नहीं जुड़ा हुआ है और न हम किसी व्यक्ति या राजनैतिक विचार के पोषक हो सकते हैं। कोई भी साधु-सन्त एक नागरिक के नाते किसी भी दल में प्रवेश कर सकता है परन्तु एक सम्प्रदाय के रूप में एक साधु समाज के रूप में हम ऐसा नहीं कर सकते, क्योंकि हमारे ही भक्त अनेक दलों में विभक्त हैं। तो इस तरह से यह भ्रम लोगों के मन में नहीं फैलना चाहिए कि साधु समाज या साधु वर्ग या सम्प्रदाय या शंकराचार्यजी महाराज या निम्बार्काचार्यजी महाराज किसी वर्ग विशेष, किसी दल विशेष का समर्थन करते हैं और आशीर्वाद देते हैं। हमारा समर्थन, हमारा आशीर्वाद उन सभी लोगों के लिए है जो श्रद्धा और भक्ति से राष्ट्र की जनता की सेवा निष्ठा पूर्वक करना चाहते हों।

जहाँ तक राजस्थान के धार्मिक अधिनियम का प्रश्न है इसके सम्बन्ध में दो बातें हैं एक तो राजस्थान में हमारे धर्माचार्य के पीठ हैं जिसे हम मठ कह सकते हैं। "ब्रह्म पोषो भवेति यत्र यत्र ब्रह्माष्मिस्थिति देवस्य पूजनं दानं मठानि च विधियते।" तो मठ की यह परिभाषा जिसको आश्रम कह सकते हैं, जहाँ एक प्रधान है आचार्य है उसका वर्चस्व है एक धर्मगुरु के नाते वो ट्रस्टी से ऊपर है, उसकी एक शृङ्खला की व्यवस्था अलग रखी जानी चाहिए। दूसरी जो यहाँ मन्दिर हैं जब देशी रजवाड़े थे उस समय राजाओं के द्वारा माफी मिली हुई थी, उसमें अनेक मुसलमान शासकों ने भी जमीन-जायदाद दी है, और उसके अतिरिक्त जो अनेक छोटे-छोटे मन्दिरों में पैसे और गाँव लगे हुए थे उसको जमीदारी और राज्य उन्मूलन

कानून के अन्तर्गत सरकार ने अधिग्रहण कर लिया। अधिग्रहण करने के बाद जो मन्दिरों के सञ्चालन की आमदनी थी उस समय सौ रुपये अगर राज्य की तरफ से, राजा की तरफ से दिया जाता था, आज वह सौ रुपये दिये जाते हैं। तो आज सौ रुपये से एक आदमी का भोजन भी महिने भर नहीं चल सकता है, जबकि उस समय आज से पचास वर्ष पहले सौ रुपये का मूल्य था और आज सौ रुपये का मूल्य नौ पैसा हो गया है। तो नौ गुना दश गुना तो उसकी आमदनी को, उसकी एनुटी को बढ़ाना चाहिए, हम इस विषय पर जरूर चर्चा करेंगे कि जिन मन्दिरों की देख-रेख राज्य शासन द्वारा पुरानी देशी रियाशतों के नियम के अनुसार होती आ रही है उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार किया जाये और वर्तमान बाजार कि पद्धति के रेट अनुसार उस मन्दिर के सञ्चालन के खर्च की जो आवश्यकता है उसको पूरा किया जाना चाहिए, दूसरे उसमें भूमि हदवन्दी कानून की बात को भी लेकर एक समस्या है उस पर भी हम लोग विचार करेंगे और उसका समाधान निकालने के भी प्रयास किये जायेंगे।

नागौरिया मठ डीडवाना के युवाचार्य–

श्रीश्रीनिवासाचार्यजी महाराज

जिन भगवान् के दर्शन करके आप लोग उद्विग्नता को त्यागते हैं, जहाँ आप मनोतियाँ मनाते हैं, जहाँ जाकर के सांसारिक दुःखों को दूर करते हैं, ताप को नष्ट करते हैं, उन देव स्थानों के ऊपर भी जिनको पूजन, अर्चन, वन्दन, तप, त्याग का कोई कुछ भी ज्ञान नहीं, कुछ भी श्रद्धा नहीं वो शासन कह रहा है कि हम वहाँ पूजा की व्यवस्था करायेंगे। महात्मा लोग किसके लिए हैं, महात्माओं ने मन्दिर क्यों बना रखे हैं, प्राचीन समय में राजा–महाराजा व बादशाहों ने उनको जमीने क्यों दी ? महात्मा लोगों का तो हमेशा अपने ध्यान, जप, तप के बाद में संकल्प रहता है "स्वस्तिप्रजाभ्यः परिपादयन्तां न्यायेन मार्गण" प्रजा के लिए, राजा के लिए "गौ ब्राह्मणेभ्य शुभमस्तु नित्यं लोका समस्ता सुखीनो भवन्तु" अपने रोज की पूजा आराधना मठ, मन्दिर में करके भगवान् के सामने वह यह प्रार्थना करते हैं। वैसे भी धार्मिक व्यक्तियों का राजनेताओं को कटु शब्द कहने का कभी स्वभाव नहीं रहा है कल यहाँ धर्माचार्य बार-बार कहते रहे कि हमारा किसी से कोई विरोध नहीं है रोग से विरोध है। पर न जाने इन नेताओं को क्या समझ में आया है। महात्मा लोग, पुजारी लोग भगवान् को विविध अंलकारों से सुसज्जित करके भक्तों को एक ध्यान देते हैं, एक आकर्षण देते हैं, आराधना करने का अवसर देते हैं, उनको सुधरने की व्यवस्थाएँ करते हैं। यदि मन्दिर न हो तो मनुष्य की सारी इन्द्रियाँ, सारा शरीर भगवान् के लिए समर्पित भी नहीं होवे, बिना मन्दिर के कोई हाथ नहीं जोड़ता, मन्दिर में जाने वाला व्यक्ति भगवान् की पावों से परिक्रमा करेगा, नेत्रों से दर्शन करेगा, जिह्वा से भगवत् स्तुति करेगा, कानों से कथा सुनेगा, तीर्थ प्रसाद लेगा, उसका जन्म कृतार्थ हो जायेगा। इसलिए ऐसे देव स्थानों पर जहाँ हमें शान्ति मिलती है, जहाँ हमें सुगन्ध मिलती है, जहाँ लोकातीत सौन्दर्य के दर्शन होते हैं, महात्मा पुरुषों के दिव्य दर्शन होते हैं उन देव स्थानों की व्यवस्था में यदि यह शासन आगे बढ़े कुछ, तो सज्जनों आजकल सबसे बड़ा उपाय इस शासन को मनाने का एक ही है और वह है आन्दोलन। आप अपने गाँव

के मन्दिर के लिए सैकड़ों-हजारों की संख्या में एकत्रित होकर के अनशन कीजिये। प्रजातन्त्र के अन्दर आन्दोलन के सिवाय कोई उपाय नहीं, हजारों-लाखों की संख्या में जाओ यह शासन मान लेगा। जिन महात्मा-साधुओं के पास आकर के इन्हें प्रार्थना करना चाहिए कि आपके यहाँ यह सम्मेलन हो रहा है हमें आज्ञा देकर के कृतार्थ करिये। वह तो नहीं और सर्वत्र हम लोगों से उल्टी कोशिश करते हैं, यदि ऐसी शासन की दशा रहेगी तो महात्माओं का तो फिर भी कुछ नहीं बिगड़ना है "त्रिणि तत्र भविष्यन्ति दुर्भिक्षं" राष्ट्र के अन्दर वर्षा बन्द हो जायेगी "दुर्भिक्षं मरणं भयं" कोई न कोई भयंकर उत्पात होने लगेंगे, महामारी फैल जायेगी। अपनी व्यवस्थाओं के बड़े-बड़े दोष इन्हें दिखते नहीं, कितना पेट्रोल फूँक रहे हैं, यह लोग कितना अपव्यय कर रहे हैं, इनके रोज के जीवन में राष्ट्र की, गरीबों की, व्यापारियों की, किसानों की अत्यन्त उत्तम सम्पत्ति विनष्ट हो रही है वह यह नहीं देखते। यह राजनेता धर्म से सम्बन्ध नहीं रखना चाहते, यह कैसा समय है। सज्जनों! शालासर हमारे पास ही है सुनते हैं कि वहाँ नोटिस आते रहते हैं कि आपने यह नहीं दिखाया तो आपके ऊपर कानूनी कार्यवाही की जायेगी। अरे! कैसी कानूनी कार्यवाही। महात्माओं के त्याग को सोचो तो देखते रह जाओगे, राजाओं का राज गया, जमीने जोतने वालों के रह गयी, भगवान् का बड़ा विशाल कार्य करना इनके दायित्व के ऊपर है। सेठ-साहूकारों के माध्यम से, भक्तों के माध्यम से वे अपना कार्य चला रहे हैं वो भी इनको पसन्द नहीं है। इन देव स्थानों में जहाँ भगवान् की घड़ी-घण्टाल बजती है, जय-जयकार की ध्वनि होती है, ब्रह्मघोष होता है, अतिथियों का स्वागत होता है, ब्राह्मणों का सत्कार होता है, भक्तों को आशीर्वाद दिये जाते हैं। उनको ये राष्ट्र के नेता लोग न जाने कौन-कौन से नियमों से आघात कर रहे हैं यह देश के लिए कलंक की बात है। एतदर्थ महात्मा-साधु अपने-अपने आराध्य प्रभु से, अपने-अपने ईश्वर से, अपने-अपने स्थान के अधिष्ठाता देवताओं से खूब आराधना करें कि हे प्रभो! आपकी सेवा में कोई विघ्न न आ जाय इसलिए इन मन्दमति व्यक्तियों को आप बुद्धि देंवे और आप सभी भक्तों का जहाँ कर्तव्यपरायणता का प्रश्न आवे मन्दिरों की सुरक्षा के लिए आप तत्पर रहें।

सभा संचालक–

वृन्दावन से पधारे श्रीरासविहारी के परम सेवक, देश-विदेश में रासलीलाओं के माध्यम से श्रीराधाकृष्ण भक्ति का प्रचार करने वाले माननीय स्वामी श्रीरामजी शर्मा को सम्मान स्वरूप एक प्रतीक श्रीनिम्बार्क सुदर्शन चक्रराज की एक अनुकृति उन्हें प्रसाद रूप में आशीर्वाद रूप में आचार्यचरणों द्वारा प्रदान की जारही है। माननीय श्रीरामजी से प्रार्थना है कि वे पधारें और पूरे विराट् सनातन धर्म की ओर से उनको दिये जाने वाले सर्वश्रेष्ठ सम्मान को ग्रहण करके सुदीर्घकाल तक विद्यमान रहते हुए श्रीराधाकृष्ण भक्ति का संचार कोटि-कोटि जनमानस में करते रहने का अपना कर्तव्य पालन करें।

"राधेकृष्ण राधेकृष्ण कृष्ण कृष्ण राधे राधे" इस तरह के पवित्र श्रीभगवन्नामों के साथ यह पवित्र प्रसाद पूज्य आचार्यचरणों के माध्यम से श्रीस्वामीजी को प्रदान किया गया। स्वामीजी ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा—

स्वामी श्रीरामजी शर्मा, वृन्दावन

मैं यहाँ अपने हृदय के जो मेरे भाव हैं संक्षेप में इतना ही निवेदन करता हूँ कि यहाँ सभी भावुक भक्त स्वर्णजयन्ती महोत्सव पर बधाई लेने और बधाई देने आये हैं, तो बधाई मुझे प्राप्त है ही। मैं तो आज श्रीसर्वेश्वर भगवान् से हृदय से प्रार्थना करता हूँ कि मेरी आयु आचार्यचरण को लग जाय और भगवान् के पद गायन में, आचार्यचरणों में यह शरीर छूटे या श्रीरासविहारी की सेवा करते-करते ये शरीर पूरा हो, इतनी प्रार्थना है चरणों में और मुझे विश्वास है कि वो मुझे प्राप्त होगी।

जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीनिश्चलानन्दजी महाराज

आज गो-रक्षा की बात कही गई, मठ-मन्दिरों की रक्षा की बात कही गई। गो-रक्षा के सम्बन्ध में गिने-चुने वाक्यों को मैं प्रस्तुत कर देना चाहता हूँ। भारतवर्ष में हिन्दुओं से सम्बन्धित जो भी समस्या है सबके मूल में इन नेताओं की तुष्टीकरण की नीति ही प्रतिष्ठित है। अरब राष्ट्र को सन्तुष्ट करना सत्तारूढ़ दल अपना दायित्व समझता है इसलिए स्थिति यह आ गई है कि देश में देशी गाय का दर्शन दुर्लभ होने लगा है। हम कहते तो हैं गो-हत्या बन्द हो, लेकिन मन में सोचते हैं गाय नहीं रहेगी, तब तक क्या हम नारा ही लगाते रहेंगे। एक ज्वलन्त उदाहरण देना हूँ। विनोबाजी जीवन के अन्तिम दो-तीन वर्षों को छोड़कर कांग्रेस के परम अनुयायी रहे, समर्थक रहे, पण्डित जवाहरलाल नेहरु को भाई मानने वाले और इन्दिरा गाँधी को भतीजी मानने वाले रहे। कांग्रेस ने भूदान यज्ञ में उनका पूरा योगदान किया राष्ट्रीय सन्त और नायक मानने-जानने वाले रहे। अन्त में उनके हृदय में ईश्वर की प्रेरणा से गो-रक्षा की भावना उदित हुई और उन्होंने कहा—भारतवर्ष में गो-वंश की हत्या नहीं होनी चाहिये। इन्दिरा गाँधी ने कहा कि चाचाजी, ताऊजी अगर जेल में सड़ के मरना हो अनशन करके तो गो-रक्षा की बात करो और हुआ भी यही, विनोबा भावे चल बसे गो-वंश की हत्या ज्यों की त्यों बनी रही। इससे सिद्ध होता है जब विनोबाजी को अन्तिम २ वर्षों में सरकार के द्वारा यातना मिल सकती है तो आप लोग घर बैठे कल्पना कर सकते हैं कि हमको कितनी यातना मिलती है जो दिन-रात सरकार की आलोचना करने वाले हम सन्त हैं उनको तो सरकार सीधे निगल जाने की चेष्टा करती है। फिर हमारे मठ–मन्दिरों की सम्पत्ति को लेने की फिराक में सरकार है तो इसमें आश्चर्य ही क्या है। सरकार की करतूत तो काली है ही, जब कोर्स में गो-वंश का महत्व नहीं लिखा जायेगा तो आपके बालकों में, आपकी बालिकाओं में गाय के प्रति भक्ति का उदय कहाँ से होगा। चार-पाँच साल पहले हमने पता लगाया आखिर गो-हत्या के लिए सरकार लाइसेन्स ही तो देती है। आपको सुनकर बहुत आश्चर्य होगा कि पूरे भारत में गो-हत्या के तेरह एजेन्ट हैं उनमें से नौ एजेन्ट तो सनातनधर्मी हैं जो गोशालाओं को अनुदान भी देते हैं, दान भी देते हैं और गोहत्या में सक्रिय योगदान रखते हैं। और तीन अहिंसा की दुहाई देने वाले जैनी सज्जनों का व्यापारियों का हाथ है, और इन बारहों के द्वारा एक मुसलमान कसाई को खड़ा किया गया है पूरे भारतवर्ष में, बूचड़खाने के

माध्यम से । जो गो-वंश की हत्या होती है उसमें इन तेरह व्यापारियों का हाथ है । सरकार तो तुष्टीकरण की भावना के बल पर पेट्रोल के लोभ में अरब राष्ट्र की आरती उतारने की भावना से गो-हत्या कराती ही है । गो-वंश के सम्बन्ध में इतनी ही बात कहें हमारा आपका दायित्व है गो-पालन हो । बहुत से लोग ऐसे भी हैं कहते हैं अजी विधान बनने से क्या होगा, इसका उत्तर सुन लीजिये, नर हत्या पर प्रतिबन्ध लगा हुआ है तब नर हत्या नहीं रुक रही है, तो गो-हत्या पर जब खुली छूट है तो गो-हत्या कैसे बन्द हो सकती है । उत्तरप्रदेश में भाजपा की सरकार थी, गो-रक्षा के लिए, गो-वंश की रक्षा के लिए उत्तम से उत्तम विधान बनाया लेकिन पूर्व राष्ट्रपति महोदय ने हस्ताक्षर करके नहीं दिया । आप सब समझ सकते हैं, नये राष्ट्रपति, पद पर आते ही निजामुद्दीन औलिया साहब की कब्र पर चादर चढ़ा आये और अपने को कृतार्थ मानने लग गये । रामजन्मभूमि में रामलला का दर्शन करने जाते मत्था टेकते तब हम समझते कि हिन्दू है सनातनी है, ऐसे नेताओं से देश की रक्षा क्या होगी । मठ-मन्दिरों के बारे में हम अधिक नहीं कहेंगे सबसे भुक्त-भोगी हम ही हैं, इन्डौन्मेन्ट कमिश्नर उड़ीसा में नियुक्त है और मठ की पच्चीस गाँवों की जमीदारी सब किसानों के पेट में, सरकार के पेट में पहुँच चुकी है । दिन-रात सरकार का प्रयास होता है ब्राह्मणों को लूटो, मण्डलेश्वरों, महन्तों को लूटो । लालू यादव बिहार में पागलों का सिरमौर है । अगर आज मैं शंकराचार्य होकर सामने वाले व्यक्ति को सुप्रीम कोर्ट का चीफ जस्टिस नियुक्त कर दूँ, किसी सज्जन को भारत का राष्ट्रपति नियुक्त कर दूँ, किसी सज्जन को भारत का प्रधानमन्त्री नियुक्त कर दूँ अपनी ओर से तो, आप लोग क्या कहेंगे कि पुरी का शंकराचार्य पागल हो गया है । लालू यादव को क्या भारतीय संविधान ने अधिकार प्रदान किया है कि हर जाति के चार पेन्ट-पतलून पहनने वालों को उसने शंकराचार्य मनोनीत कर दिये । इस देश का एक मुख्यमन्त्री जब चार-चार शंकराचार्य बना सकता है तो पागल नहीं तो और क्या है, लेकिन वह भी शासन बड़े मजे से कर रहा है । उड़ीसा का मुख्यमन्त्री भी ऐसा ही है वह कहता है इन महात्माओं को नंग-धडंग रहना चाहिये । राजस्थानी सेठ लंगोटी लगाके आये कान पकड़ के भगा दो, सारी सम्पत्ति जब्त कर लो, तो देश में कंस राज्य हो चुका है । ऋषि के समान अब हम बाबाओं को बनना होगा । जब दो-चार ब्राह्मण ढ़ंग से उत्पन्न होंगे तो सारे देश की समस्या हल हो जायेगी, ब्राह्मण गायत्री मन्त्र जपें, तप करें, तेजस्वी बनें पर ऐसा बनने में इनकी आस्था नहीं है अरे, सब आपको निगलने के लिए तैयार हैं, दो-चार ब्राह्मण अगस्त्य जैसे होने का प्रयास कीजिये, गायत्री मन्त्र जप करिये, किसी सरकार या सरकारी पदाधिकारी में दम-खम नहीं कि मठ-मन्दिर और सम्पत्ति की तरफ दृष्टि भी उठाकर के देख ले । पिछली दो घटनायें सात नवम्बर ६६ को गाय के लिए गये पार्लियामेन्ट के सामने भून डाले गये । राममन्दिर की बात करने गये राम-राम कीर्तन कर रहे थे, निहत्थे गो-भक्त सैकड़ों की संख्या में भून डाले गये । जब ऐसा बर्बरता का शासन है तो ऐसी स्थिति में तप और त्याग की आवश्यकता है । तप कीजिये, त्याग कीजिये । इतना ही कह कर हम अपने भावों को विराम देते हैं ।

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

"गावो विश्वस्य मातरः" यह शास्त्रों का वचन है गो-माता केवल भारत की नहीं यह अन्य किसी एक राष्ट्र को नहीं, सम्पूर्ण यावन्मात्र विश्व की माता है और हमारे वेदों में, हमारे शास्त्रों में गो-माता को अघ्न्या कहकर के संकेत किया है, अघ्न्या का तात्पर्य होता है जो मारी नहीं जाय। उस गो-माता के सम्बन्ध में शास्त्रों में संकेत है यदि जहाँ एक गो-माता का रक्त बिन्दु भूमि पर गिर जाय वहाँ अनन्त अनर्थ होते हैं, उपद्रव होते हैं, उत्पात होते हैं, अशान्ति होती है और जहाँ पर, जिस राष्ट्र में, जिस देश में एक गो-माता नहीं, दस-बीस-पचास नहीं, सौ-दो सौ नहीं, जहाँ चालीस हजार गायों का प्रतिदिन वध होता हो उस राष्ट्र का क्या मंगल होगा, कैसी स्थिति होगी। यही नहीं उसके लिए नये-नये बूचड़खाना बन रहे हैं, नई-नई योजनायें बनती है और कितनी निर्दयता पूर्वक उनका वध किया जाता है। जहाँ पर ये बूचड़-खाना बने हुये हैं वहाँ यन्त्रों में बेंते लगी हुई है. बेंत और खोलता हुआ जल उन गो-माताओं के ऊपर पड़ता है नलों के द्वारा और उन पर बेंते पड़ती है मशीनों से। भयंकर भीषण अत्या-चार होता है और इसलिए होता है कि उनका चर्म अच्छा बने, सुन्दर बने और उसके द्वारा हमें अच्छी अर्थराशि मिले, अच्छा पैसा मिले, धन मिले इस दृष्टि से यह भीषण अत्याचार किया जाता है, और जो गर्भवती गो-मातायें हैं उन गो-माताओं को इतने जोर से ताड़ना दी जाती है, इतना कष्ट दिया जाता है कि उनका गर्भपात हो जाता है और उन नवजात गोवत्सों को, बछड़ों को तत्काल लेकर के उनका चर्म खींच लिया जाता है, और वो इसलिए किया जाता है कि उससे हाथों के दस्ताने बनते हैं विदेशी लोग उसको खरीदते हैं। आप हम सब नित्य साबुन का प्रयोग करते हैं अपने शरीर की शुद्धि के लिए करते हैं, वस्त्र शुद्धि के लिए करते हैं। अधिकांशतः साबुन में गो-चर्बी विद्यमान रहती है। तेल के स्थान पर उनको ये चर्बी सस्ती मिल जाती है। जो साबुन बनाने वाले हैं वो इसी का उपयोग करते हैं और आप हम सब प्रायः उस साबुन को प्रयोग में लेते हैं। आप जब अस्वस्थ हो जाते हैं, बीमार हो जाते हैं तो ऐलोपैथिक चिकित्सक वर्ग (डाक्टर) आपकी चिकित्सा करते हैं और औषधि देते हैं कैप्सूल देते हैं उसके ऊपर का जो आवरण होता है. वह किससे बनता है यह आप सबों ने कभी नहीं सोचा होगा, बहुत से तो सोचते हैं कि चावल का जो मांड होता है उससे बनता है, वस्तुतः ऐसा नहीं है ये गो-माता की हड्डी से बनते है। उसमें गाय, सूअर, भैंस, बकरी भी है प्रायः सभी की हड्डी से कैप्सूलों का निर्माण होता है। हमारे यहाँ के एक भक्त हरिद्वार में आकर मिले हमसे, हमने उनसे जिज्ञासा की, कि आप यहाँ पर क्या कार्य करते हैं, हरिद्वार में ही रहते हैं उन्होंने कहा यहीं रहता हूँ और एक बहुत बडा कारखाना है औषधि का निर्माण होता है वहाँ सेवारत हूँ। तो हमने सोचा कोई आयुर्वेद औषधियों का निर्माण होता होगा, उनसे जिज्ञासा की तो उन्होंने बताया आयुर्वेद नहीं ऐलोपैथिक चिकित्सा के लिए जो औषधियों का निर्माण होता है उसमें मैं सेवारत हूँ तो फिर हमने उनसे जिज्ञासा की कि कैप्सूल जो बनते हैं ये कैसे बनते हैं उन्होंने सम्पूर्ण विधि सुनाई, उन्होंने बताया कि हड्डी से बनते हैं। अभी हम दो वर्ष पूर्व नासिक कुम्भ में गये थे और नासिक कुम्भ से बम्बई जाने का अवसर मिला वहाँ पर हम अस्वस्थ हो गये। हमें ज्वर हो गया तो उस समय जो डाक्टर महोदय पधारे, डाक्टर साहब से हमने कहा कि

आप क्या औषधि देंगे तो उन्होंने कहा कि कैप्सूल लेना होगा तो हमने उनसे कहा कि इसमें तो कुछ अशुद्धता की आशंका है तो बोले यह बात तो सही है हड्डी से ही बनते हैं तो यह और दृढ़ता हो गई, उन भक्त ने भी हमसे कहा उन डाक्टर महोदय से भी हमें विदित हुआ तो इस प्रकार सर्वविधरूप से समग्रविधि से हम लोग अपावन बनते जारहे हैं। हमारे कैसे स्वस्थ विचार होंगे, कैसे धार्मिक विचार होंगे, कैसे उपासना करेंगे, आराधना करेंगे, कैसे भगवद्‌चरणारविन्दों की और हमारी प्रवृत्ति और अनुराग होगा। तो बड़ी समस्यायें हैं, बड़ी विचित्र स्थिति है और इस भारत को स्वतन्त्र करने के लिए प्रयत्न किया गया कि हमारा देश हमारा राष्ट्र जो परतन्त्र है उसको हम स्वतन्त्र करें उसके लिए बहुत बड़ा बलिदान किया, यथेष्ट प्रयास किया। सर्वात्मना सर्वप्रथम लोकमान्य तिलक ने कहा कि जब हम हमारे राष्ट्र को स्वतन्त्र कर लेंगे तो सबसे पहला हमारा कोई कार्य होगा तो गो-माता की जो हत्या होती है उसका हम निरोध करेंगे, यह उन्होंने संकल्प लिया था और इसी प्रकार महात्मा गाँधी ने भी घोषणा की थी कि जब हमारा भारत स्वतन्त्र हो जायेगा तो सबसे पहले हम जो गो-हत्या का भीषण कलंक भारत के भाल पर है उसका हम प्रक्षालन करेंगे यह उन्होंने प्रतिज्ञा की थी, और भारत स्वतन्त्र हुआ और स्वतन्त्र होने के बाद वे सब बाते कहाँ गई, इतना ही नहीं और नये-नये बूचड़खाना बन गये और उससे कहीं कम से कम यों समझिये कि ४०–५० गुना अधिक गो-हत्या का क्रम बढ़ गया यह स्थिति आज आपके भारत की है, अपने इस राष्ट्र की है और यह अपने केवल स्वार्थ के लिए, जो इनके सींग जाते हैं. इनका चर्म जाता है, हड्डीयाँ जाती है, सब कुछ विदेशों में और वहाँ से धन मिलता है और उस धन से यहाँ पर नाना प्रकार के पदार्थ और खाद भी बनता है, रासायनिक आजकल जो खाद बनती है उसमें भी अस्थि का प्रयोग किया जाता है उसमें भी हड्डीयों का प्रयोग होता है और वो खाद दिया जाता है अन्न में, फलों में और साग-सब्जी इत्यादि में। और समस्त अन्न और फल-फूल, साग-सब्जी इत्यादि का आप हम सब प्रयोग करते हैं उनमें दूषित परमाणु विद्यमान रहते हैं जिसके प्रयोग से हमारी बुद्धि भ्रष्ट होती है उनके सेवन से हमारे स्वास्थ्य की इतनी महत्ती हानि होती है. स्वास्थ्य का ह्रास होता है कि जो अकल्पनीय है। गो-माता की रक्षा के लिए जिन महापुरुषों ने, नेताओं ने पहले संकल्प लिया था आज वो कतई स्मरण नहीं करते हैं और अधिक से अधिक गो-हत्या का प्राबल्य होता जारहा है।

धर्म सम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज ने मनसा, वाचा, कर्मणा समग्र विधि से गोरक्षा के लिये यथेष्ठ प्रयास किया, सत्याग्रह किया, आन्दोलन किया बहुत बड़ी जागृति हुई और बहुतों ने अपने आपको समर्पित किया, अपने प्राणोत्सर्ग किए सब कुछ हुआ उसमें हम लोग भी थे। सात नवम्बर दिल्ली की घटना में जिस समय अश्रुगैस गोलीकाण्ड हुआ उस जगह पन्द्रह लाख जनता थी और मञ्च पर जहाँ श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी, धर्म सम्राट् श्रीकरपात्रीजी महाराज, पुरीपीठाधीश्वर और श्रीकृष्ण बोद्धाश्रमजी महाराज ज्योतिष्पीठाधीश्वर आदि-आदि आचार्य-प्रवर वहाँ विराजमान थे हम भी सम्मिलित थे, वहाँ पर जो भीषण दृश्य था उस समय हमारे सामने भाई श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार 'कल्याण' के वरिष्ठ सम्पादक बैठे थे अश्रुगैस का गोला उनकी पीठ पर पड़ा और पीछे आग लग गई और बगल में एक सन्यासी सन्त-महात्मा थे उन पर भीषण अत्याचार हो रहा था, लाठी प्रहार हो रहा था। हमारे सामने की यह स्थिति थी।

और सरकार ने केवल समाचार पत्रों में दिया कि सात व्यक्तियों की मृत्यु हुई है, कुछ लोग आहत हुये हैं। जहाँ शान्तभाव से, सरलभाव से सन्त-महात्मा, गो-भक्त सत्याग्रह के लिए वहाँ पर प्रदर्शन कर रहे थे वहाँ कोई किसी प्रकार की विषम समस्या नहीं, पर उन पर इस प्रकार से भीषण आक्रमण हुआ, सहस्रों गो-भक्त बलिदान हुए आपकी सरकार द्वारा और आपने अभी अयोध्या में देखा वहाँ पर जो रामनाम उच्चारण कर रहे थे, नाम-कीर्तन कर रहे थे उनके ऊपर भयंकर गोलीकाण्ड हुआ, घरों में जाकर के खेंच-खेंच के लाकर गोली मारी गई। सन्त-महात्माओं और रामभक्त कारसेवकों की रक्तधारा से वहाँ का राजपथ रंजित हो गया था ऐसा भीषण दृश्य था। बड़ा सन्ताप होता है। भारत को स्वतन्त्र करने के लिए क्या हेतु है, क्यों स्वतन्त्र किया, क्या आवश्यकता थी, इसलिए किया कि हमारी संस्कृति की रक्षा हो, हमारे धर्म की रक्षा हो, हमारी मर्यादा की रक्षा हो, हमारी परम्पराओं की रक्षा हो, हमारे नियमों की रक्षा हो, हमारे नियमों के जो आधार है उनकी रक्षा हो, हमारे जो संस्कृति के प्रतीक है उनकी रक्षा हो, हमारे धर्म-ग्रन्थों की रक्षा हो, हमारे देवालयों की रक्षा हो, गो-माता की रक्षा हो, अबलाओं की रक्षा हो, दीन-दु.खियों की रक्षा हो इसलिए भारत को स्वतन्त्र करने के लिए सबने प्रयत्न किया था। यदि आपका धर्म सुरक्षित नहीं है, आपकी संस्कृति सुरक्षित नहीं है, आपकी मातायें सुरक्षित नहीं है, आपके देवालय सुरक्षित नहीं है और आपकी गो-माता सुरक्षित नहीं है तो इस स्वतन्त्रता का अर्थ केवल भोजन करना ही है क्या ? भोजन तो आपको यवन शासनकाल में भी मिलता था, अंग्रेजी शासनकाल में भी भोजन, निवास आदि के लिए मकान मिल रहे थे इसमें कौनसी नई बात हुई है। आजकल जो सबसे बड़ा मन्त्र है आपका सत्याग्रह आन्दोलन का, उस मन्त्र को भी आप लेकर के चलें तो आपको कोई न कोई सुन्दर फल मिलेगा। और कुछ भी न हो सके तो अपने घरों में बैठकर के जो सर्वनियन्ता सर्वान्तरात्मा करुणावरुणालय भगवान् श्रीहरि हैं, भगवान् श्रीसर्वेश्वर हैं, भगवान् श्रीराघवेन्द्र सरकार हैं उनके चरणारविन्दों में अपनी भावना, अपनी प्रार्थना प्रस्तुत करें कि हमारी गो-माता की रक्षा हो यदि इस प्रकार हमारी यह प्रार्थना समवेतरूप से हुई तो प्रभु हम पर कृपा करेंगे। यहाँ पर केवल यह जो विशाल अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का समायोजन हुआ, इसलिए नहीं हुआ कि केवल कुछ प्रवचन श्रवण करलें और आप सब महानुभाव भी एकत्रित हो जाये, हम भी कुछ बोल दें, अपने भाव प्रकट कर दें इतने तक ही सीमित नहीं हो, यह कार्यान्वित हो और ऐसा सिद्ध हो कि यहाँ आचार्यपीठ से कोई ऐसा गरिमापूर्ण कार्य सम्पादित हुआ कि जो देश के, राष्ट्र के हित में कोई न कोई नई चेतना मिली, नया कोई एक अध्याय प्रारम्भ हुआ ऐसा सबको प्राप्त हो ऐसी हमारी भावना है।

—※—

हिन्दू संस्कृति सम्मेलन : द्वितीय सत्र

स्वामी श्रीवामदेवजी महाराज

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री "श्रीजी" महाराज ने इस निम्बार्कतीर्थ में यह विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन कराया है। जिसमें आप और हम लोग यहाँ पर स्थित हैं। हमारे जिन-जिन महापुरुषों के साथ जगद्गुरु लगाया जाता है उनका बहुत बड़ा महत्व है, जिन्होंने अपनी मान्यता या अपना सिद्धान्त वेदों में मुख्य जो उपनिषदें हैं और हमारे आध्यात्मिक शास्त्रों में मुख्य जो गीता है और ब्रह्मसूत्र हैं, इन तीनों के द्वारा अपना सिद्धान्त जिन महापुरुषों ने प्रमाणित कर दिया है उन महापुरुषों को ही जगद्गुरु की उपाधि पहले मिली हुई है। अब तो ऐसा समय आगया है कि चाहे जो कोई कुछ लिख मारता है लेकिन पहले यह बात नहीं थी, पहले वहीं ग्रन्थ प्रकाशित होता था जो काशी के विद्वानों की सभा में स्वीकृत होता था। काशी के महाराजा की सभा जुड़ती थी और उसके अन्दर जब निर्णय हो जाता था कि यह जनता का हितकारी ग्रन्थ है तब उसका प्रकाशन होता था। हमारा जो गीता ग्रन्थ है वह इतना गम्भीर है कि उसकी अनेक भाषाओं के अन्दर अनेक टीका हो चुकी हैं बीसियों टीका तो संस्कृत की ही हैं। लेकिन कोई यह नहीं कह सकता कि मैंने गीता के अर्थ का पार पा लिया है क्योंकि यह तो भगवान् के ज्ञान का समुद्र है जो सर्वस्व हैं। इसी प्रकार से वेद का भी पार पाना बड़ा कठिन है और उसमें उपनिषद् का तो कहना ही क्या है, जो हमारे उपनिषद् ग्रन्थ हैं उनके बारे में तो विदेशी महापुरुषों ने यह कहा है कि संसार के अन्दर जब कभी भी उत्कृष्ट विचारों का संसार में प्रकाश में आयेगा तो उपनिषदों के विचारों से ऊँचा कभी नहीं जा सकता। ऐसे यह हमारे गम्भीर ग्रन्थ हैं।

ऋषभदेव भगवान् कहते हैं "तपो दिव्यं।" दिव्य तपस्या करो। तो तपस्या में दिव्यता क्या चाहिये यहाँ हमारे वैष्णवाचार्यों ने श्रीधराचार्य आदिकों ने कहा कि दिव्य का अर्थ है कि भगवत् स्मरण, कीर्तन इत्यादिक के सहित तपस्वी जीवन व्यतीत करो। यह तुम्हारी विशेषता है फिर कहा कि इससे होगा क्या कि "सत्वं विशुद्धं" आपका सत्व कहिये आपका अन्तःकरण पवित्र हो जायेगा तो अन्तःकरण के पवित्र होने पर क्या होगा, जो अनन्त ब्रह्म-सुख है उसकी अनुभूति आपको होगी, यह अनन्त ब्रह्मसुख की अनुभूति ही आपके जीवन का लक्ष्य है यह संसार के विषय आपके जीवन का लक्ष्य नहीं है। यह है भगवान् की बात।

धर्म की बात मैं इसलिए कहता हूँ कि वह सभा, सभा नहीं है जहाँ बूढ़े न हों और वो बूढ़े, बूढ़े नहीं है चाहे भले ही सफेद बाल हो जाओ जो सभा के अन्दर धर्म की बात नहीं कहते हैं। मैं इसलिए कहता हूँ कि बूढ़े धर्म की बात आज नहीं कहते। घरों में बाल-बच्चों के बीच में बैठकर या नौजवानों के बीच में बैठकर के धर्म की बात कहने वाला आज कोई बुढ़ा नहीं, इसलिए कहता हूँ कि भारत बुढ़ों से शून्य हो गया है। यदि भारत बुढ़ों से शून्य न होता तो इस देश के अन्दर धर्मनिरपेक्षता की आवाज किसी प्रकार से कामयाब नहीं हो सकती थी। इस संस्कृति ने बुढ़ों को खतम कर दिया है इसलिए हमने एक छोटा सा अभियान चलाया है

कि अपने घरों में एक धर्मपात्र रखो मिट्टी का बनाओ चाहे लोहे का बनाओ उसमें ऊपर से छेद करो और सातवें दिन अपने सब घर के बालकों के हाथ में चाहे पाँच पैसे का, चाहे दस पैसे का जैसी आपकी योग्यता हो उसमें सिक्का डलवाओ और सब बालकों से यह कहकर के डलवाओ कि हम इस द्रव्य को धर्मपात्र में डालते हैं और हम धर्म के लिए समर्पित हैं। इससे लाभ यह होगा कि किसी दिन बालक यह पूछेगा कि पिताजी धर्म क्या है, तो पिताजी कहे कि अपनी माताजी के चरण स्पर्श करना, भगवान् के मन्दिर में दर्शन करना, साधु-सन्यासी का सत्कार करना, परोपकार करना, सत्य बोलना ये धर्म है, तो वह धर्म के विषय में समझेगा।

हमारे लिए आज तो धर्म से बड़ा राष्ट्र है, क्योंकि राष्ट्र रहेगा तो राष्ट्र में हमारी संस्कृति रहेगी तो हम अपने श्रीमद्भागवत, उपनिषद्, गीता इत्यादि के ऊपर कथा इत्यादि करके अपनी साधना कर सकते हैं और राष्ट्र नहीं रहा तो ऋषि-मुनियों की बताई हुई साधना हम नहीं कर सकते। इसलिए हमारे लिए आज धर्म से बड़ा राष्ट्र है। राष्ट्र हमको हमारे जीवन की सारी सफलताओं के लिए चाहिए। इसलिए मैं राष्ट्र की बात करता हूँ। आपकी एक लोक सभा है जहाँ से आपके यहाँ से एम्० पी० लोग चुनकर जाते हैं वहाँ पर, अब आज के अखबार के अनुसार आपकी एक दूसरी लोक सभा और बन गई है, उसका नाम है मिनी लोकसभा। वह किसने बनाई है, आपके देश के अन्दर रहने वाले देश को बाँटने वालों ने, वह चाहे मुसलमान है चाहे उनको कोई सहयोग देने वाला हिन्दू है उनके द्वारा बन गई। उस मिनी पार्लियामेन्ट की घोषणा मुसलमान नेताओं के द्वारा हुई है, क्या हुई है सुनो-- आवेश में आकर यह कह डाला कि हमारा लोकतन्त्र में विश्वास नहीं है। जो आपकी व्यवस्था है कि लोक तन्त्र से चुनकर लोग जाये और वह सरकार को, देश को चलावें इसमें हमारा विश्वास नहीं है। हम सूरा मानने वाले हैं, सूरा कौन कि कुरान का उपदेश। कुरान का जो फैसला होगा उसे मानेंगे, लोकतन्त्र का फैसला होगा आपकी संसद् का उसे नहीं मानेंगे और न आपके न्यायालय की बात मानेंगे स्पष्ट घोषणा है। उन्होंने अपनी बात साफ-साफ कह दी अब आप चाहे सोते रहो या जागते रहो। फिर उन्होंने कहा कि पहले हम मुसलमान हैं फिर उसके बाद देश और देश के बाद संविधान है। यह सारी की सारी घोषणाएँ आपके देश के अन्दर मिनी पार्लियामेन्ट कर रही है और इन घोषणाओं को जब मैं आपके सामने रखता हूँ, देश के सामने रखता हूँ, राष्ट्र-भक्तों के सामने रखता हूँ, अपने सन्त और महात्माओं के आगे रखता हूँ तो आज की सत्ता पर बैठी हुई राजनीति कहती है कि यह तो देश को तोड़ देंगे, यह तो देश को तोड़ते हैं, अलगाव पैदा करते हैं। तो मैं आपसे पूछता हूँ कि इस देश की रक्षा कैसे होगी, इस देश की रक्षा वर्तमान सरकार के द्वारा तो होने वाली नहीं है, इसलिए देश की रक्षा के लिए हिन्दुओं आपको संगठित होना पड़ेगा, आप सारी बातों को भुलाकर कि मैं ब्राह्मण हूँ, मैं ठाकुर हूँ, मैं अमुक हूँ को भुलाकर संगठित होने की भावना जगाइये और मैं अपने महापुरुषों से भी यही बात कहता हूँ कि आपके पास जो कोई भक्त इत्यादि आये सबसे संगठित होने का उपदेश दीजिये, नहीं तो इस देश की रक्षा नहीं होगी। हमारी सूची में गो-हत्या बन्द होने की भी बात है लेकिन सज्जनों यू० पी० की सरकार ने पूरी तरह से गो-हत्या बन्द का कानून बना दिया लेकिन हुआ क्या कि संविधान ऐसा बना हुआ है कि प्रान्त अपनी इच्छा से गो-रक्षा नहीं कर सकता।

राष्ट्रपति के हस्ताक्षर आवश्यक हैं, न पहले राष्ट्रपति वेंकटरमनजी ने हस्ताक्षर किये और जो अभी आपके वर्तमान हैं न इन्होंने हस्ताक्षर किये। क्योंकि गृहमन्त्री ने उसके ऊपर अपनी अनुशंसा नहीं लिखी, जो केन्द्रीय सरकार है उसने उसको आगे नहीं बढ़ने दिया। इसलिए आप गो-रक्षा चाहते हों, मन्दिर बनाना चाहते हों और आप अपनी कोई बात स्वीकार कराना चाहते हों तो केन्द्र में गो-रक्षक सरकार बैठानी होगी।

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

जो आप्त महापुरुष होते हैं उनका जीवन लोक मंगल के लिए होता है, ऐसे विभूतियों का जीवन अपने स्वयं के लिए नहीं अपितु समस्त प्राणीमात्र के मंगल के लिए होता है, राष्ट्र मंगल के लिए होता है और धर्म की अभिवृद्धि के लिए होता है, धर्म की सुरक्षा के लिए होता है, गो-माता की सुरक्षा के लिए होता है और हमारे धर्म पर होने वाले जो भी आक्रमण हैं, अत्याचार हैं, अनाचार हैं, दुराचार हैं, दुर्विचार हैं उनके परिहार के लिए होता है ऐसा उदात्त स्वरूप स्वामी श्रीवामदेवजी महाराज का है। आज जो सामयिक स्थिति राष्ट्र में है भारत को स्वतन्त्र किया गया बहुत बड़ा बलिदान हुआ और हमारे महापुरुषों ने देश को स्वतन्त्र करने के लिए यथेष्ठ प्रयास भी किया। भारत को स्वतन्त्र किसलिए किया गया क्या आवश्यकता थी, इसलिए आवश्यकता पड़ी कि हमारे धर्म को रक्षा हो, हमारी संस्कृति की रक्षा हो, उस स्वतन्त्रता के प्राप्त होने पर न हम धर्म की रक्षा कर पा रहे हैं और नहीं कर पा रहे हैं हम अपनी संस्कृति और हमारे मठ-मन्दिरों की सुरक्षा भी। श्रीरामजन्मभूमि के संदर्भ में श्री-स्वामीजी महाराज ने अनेक ऐसे प्रेरणादायक प्रसंग श्रवण कराये, आपने जो प्रेरणा प्रदान की कि भारतवासियों का, समस्त हिन्दू वर्ग का क्या कर्तव्य है और इस विषम स्थिति में उनका क्या पावन धर्म है, उनको किस प्रकार अपने हिन्दुत्व की रक्षा के लिए, अपने वैदिक संस्कृति एवं सनातन धर्म की रक्षा के लिए, अपनी परम्परा-मर्यादा की रक्षा के लिए हमें क्या करना चाहिये उसका कितना सुन्दर आपश्री ने उद्बोधन दिया। वस्तुतः सन्तों का जीवन अपने लिए नहीं होता है लोक मंगल के लिए होता है। लोक हित के लिए होता है, संसार के समग्र प्राणियों के कल्याण के लिए होता है। हमारे जीवन में दो प्रकार के मार्ग हैं जिस समय बालक नचिकेता ने यमराज से प्रश्न किया था तो यमराज ने बालक नचिकेता को उपदेश देते हुए कहा कि मानव के सन्मुख प्राणियों के सन्मुख दो मार्ग हैं—एक श्रेय मार्ग और एक प्रेय मार्ग। जो प्राणी श्रेय मार्ग का अनुगमन करते हैं वो उत्तमोत्तम फल को प्राप्त करते हैं। इसी प्रकार जो प्रेय मार्ग का अनुगमन करते हैं वो जागतिक जंजालों में जकड़े रहते हैं। इसलिए उत्तमोत्तम कार्य जीवन में हों, श्रेष्ठ कार्य जीवन में हो उसका सत्फल होता है और वो फल इतना मधुर होता है, इतना श्रेष्ठ होता है, इतना उत्तम होता है कि जिससे जीवन का स्वरूप सुभग बन जाता है, श्रेष्ठ बन जाता है।

पक्ष और विपक्ष में परस्पर समाधानात्मक चर्चा

सम्मेलन में आज संस्कृत भाषा में "धर्म निरपेक्षता" एवं "व्यावसायिक क्षेत्र में उत्पाद चिह्नांकों पर भगवत् स्वरूपों का चित्रण" इन दोनों विषयों पर संस्कृत विद्वानों के समाधानात्मक प्रवचन हुए। इसमें एक पक्षकार व्याकरण न्याय वेदान्तादि विषयों के मूर्धन्य विद्वान् माननीय पं० श्रीविश्वनाथजी मिश्र प्रो० युनिवर्सिटी लाडनू थे एवं द्वितीय पक्षकार थे नेपाल से आये हुए त्रिभुवन विश्वविद्यालय काठमांडु (नेपाल) के प्राचार्य माननीय श्रीखेम-राजकेशवशरणजी शास्त्री। दोनों ही विद्वानों ने संस्कृत में पक्ष–विपक्ष के रूप में परस्पर चर्चा की। साम्प्रतिक विचारणीय विषयों पर उभय विद्वानों के विचारों का हिन्दी रूपान्तर यहाँ प्रकाशित है।

श्रीविश्वनाथजी मिश्र

अभी परस्पर चर्चा हुई जिसमें कहा कि अपना देश धर्म निरपेक्ष कहा जाता है, 'धर्म निरपेक्षता' का अर्थ होता है धर्म विहीन सरकार. जो सरकार धर्म विहीन है उसे धर्म निरपेक्ष कहते हैं। बात ऐसी नहीं है सरकार ने देखा कि अपना भारत देश अनेक संस्कृतियों का देश है, अनेक सभ्यताओं का देश है, अनेक परम्पराओं का देश है, अनेक परम्पराएँ चलती हैं, अनेक मान्यताएँ हैं, अनेक आराधनाएँ हैं, उपासनाएँ हैं हम किसका अवलम्बन करें, किस पद्धति का अवलम्बन करके सरकार अपना निर्वाह करे। सरकार ने सोचा यदि हम हिन्दू धर्म पद्धति का अवलम्बन करते हैं, हिन्दू मार्ग का अवलम्बन करते हैं तो यहाँ ईसाई, यवन और यहूदी हैं इनकी भावनाओं को ठेस लगेगी। यदि हम मुसलमान धर्म की मान्यताओं को स्वीकार करते हैं तो हिन्दू बाहुल्य जो देश है यह हिन्दुओं का देश है. आर्यों का देश है। मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है—"यह बुद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमोर है ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है। भगवान् की भवभूतियों का यह प्रथम भण्डार है, जिसने किया नर सृष्टि का पहले यहीं विस्तार है।।" वास्तव में मानव सृष्टि भारत में ही हुई। यह आर्यों का आदि देश है, हिन्दुओं का आदि देश है। हमारी सरलता से, हमारी सहिष्णुता से, हमारी उदारता से अन्य लोग आकर यहाँ बस गये। सारी बातें आपके ध्यान में हैं ऐसी परिस्थिति में हम क्या करें, सरकार दुविधा में पड़ गई। यदि हम हिन्दू धर्म का अवलम्बन करते हैं जो यहाँ का मूल धर्म है तो जो यहाँ आकर बस गये हैं, यहीं के हो गये हैं उन्हें दुःख होगा कि उनके को मानते हैं तो इन्हें भी दुःख होगा। अपनी-अपनी उपासना पद्धति को करें, चलावें हमारा किसी के ऊपर आक्षेप नहीं है. किसी के प्रति आग्रह नहीं है। धर्म निरपेक्षता का अर्थ यह नहीं होता है शब्द गलत है यह धर्म निरपेक्ष शब्द ऐसा नहीं होना चाहिये इसका सर्वधर्म समभाव होना चाहिये, सारे धर्म के प्रति सरकार की समभावना है ऐसा शब्द होना चाहिये था किन्तु हमारे संविधान के निर्माताओं ने इस शब्द को रख दिया। चल रहा है और विवाद का जड़ बना हुआ है। वर्तमान परिस्थिति में तो यह धर्म निरपेक्षता हिन्दू दलन का पर्याय बनकर रह गया है फिर भी कहने के लिए तो यह है कि हम किसी धर्म से आग्रह नहीं करते हैं, हरेक व्यक्ति अपने-अपने धर्म का पालन करे, अपनी-अपनी उपासना करे, अपने-अपने देवस्थानों में जाय, मन्दिरों

में जाय पूजा करे, अर्चना करे कोई आक्षेप नहीं है। यह प्रस्तुत प्रसङ्ग संस्कृत में की गई चर्चा का संक्षिप्त सार है।

श्रीखेमराजकेशवशरणजी शास्त्री

मैंने निवेदन किया कि जब हमको धर्म अपरिहार्य है। कदम-कदम पर धर्म हमें अपरिहार्य है, श्वाँस-श्वाँस में धर्म अपरिहार्य है ऐसी स्थिति में हम धर्म निरपेक्ष कैसे हो सकते हैं जबकि यह शब्द स्वयं जता रहा है कि हम धर्म के प्रति निरपेक्ष हैं। धर्म के प्रति हमारी चाह नहीं रहेगी तो हमारी मनुष्यता भी चली जायेगी तो उस स्थिति में ऐसा शब्द ही क्यों रखें। और जो धर्म निरपेक्षता के ऊपर लक्षित बाते हैं—अन्य सम्प्रदाय भी शान्ति से रहे, अन्य धर्मावलम्बी भी शान्ति से रहे वह तो हिन्दू राष्ट्र में सम्भव है क्योंकि युगों से हिन्दू धर्म ऐसा विशाल धर्म रहा है जिसने घोषणा की है कि अपनी-अपनी रुचि के अनुसार जैसे सारी नदियाँ कोई टेड़ा रास्ता लेकर, कोई सीधा साधा लेकर आखिर सारी महासागर में जाकर विलीन हुआ करती हैं, ऐसे ही सारी मानव साधनाएँ, आराधनाएँ अन्त में एक ही महाप्रभु में, भगवान् में जाकर विलीन होती हैं। ऐसी मान्यता रखने वाला संसार का एक ही धर्म है जिसको हम हिन्दू धर्म, सनातन धर्म कह सकते हैं तो ऐसी बात जब है तो हिन्दू धर्म को मानकर, हिन्दू संस्कृति को मानकर यदि भारत हिन्दू राष्ट्र होकर के रहता है तो सारे सम्प्रदायों का सामञ्जस्य यहाँ सम्भव है तो ऐसी स्थिति में हम इस गलत शब्द को अपना कर निरपेक्ष बनकर क्यों रहें। हिन्दू राष्ट्र स्वयं को घोषित कर के भारत को एक अमर राष्ट्र के रूप में क्यों न खड़ा किया जाय, यह मेरे विषय की प्रस्तुति रही।

श्रीविश्वनाथजी मिश्र

अब दूसरे विषय में विचार कर रहे हैं। ऐसा है कि हमने देखा है, सभी देखते हैं कि जो विज्ञापन निकालते हैं व्यापारी लोग डालडा बनाने वाले, बीड़ी बनाने वाले, सिगरेट बनाने वाले, फटाके बनाने वाले। सिगरेट-बीड़ी, डालडा, शराब ये न केवल मानवता के घातक हैं बल्कि अपने राष्ट्रीय गरिमा के भी घातक हैं। हमारा राष्ट्र कितना पवित्र राष्ट्र है मनुजी लिखते हैं मनुस्मृति में–इस देश के ब्राह्मणों के द्वारा सारे विश्व ने शिक्षा ग्रहण की थी, क्या ग्रहण की थी–आदर्श की शिक्षा, चरित्र की शिक्षा। हमारा चरित्र ऊँचा हो, हमारे आदर्श ऊँचे हों, हमारी भावना ऊँची हो, हमारे विचार उदात्त हों यह हमारी आदर्शपूर्ण गरिमा आदिकाल से रही है, आज के पैसे के लोलुप व्यापारी समझते नहीं भगवान् राम क्या थे, भगवती सीता क्या थी, भगवान् कृष्ण क्या थे। जैसे अपने हैं वैसे ही उनको समझ रखा है. जैसे अपने लल्लूराम, घसीटूराम हैं ऐसे भगवान् भी रहे होंगे, राम भी रहे होंगे ऐसा मानकर के बीड़ी के नाम पर राम लगा दिया, सीता के नाम पर कुछ और रख दिया, द्रोपदी के नाम पर कुछ और कर दिया तो जितनी मान्यताएँ जितनी बातें सामने देखने में आती है यह देखकर के सिर नतमस्तक हो जाता है और बहुत बड़ा अपार कष्ट होता है कि कहाँ हमारे आराध्य देवी–देवता, कहाँ हमारे पूज्य और उनका सम्पर्क बीड़ी और शराब एवं डालडा से किया जा रहा है, यह सचमुच दुःख का विषय है इसका प्रतिरोध होना चाहिये। एक सज्जन ने हमसे कहा कि देखिये जैसे ईसाई लोग बाइबिल की

पुस्तकों को दो-दो पैसे में बेचते हैं चौराहे पर खड़े होकर के और उनका प्रचार हो रहा है उसी प्रकार से वेद का भी होना चाहिये। वेद की पुस्तकें निकलें छोटी-छोटी, बुकलेट निकलें और उन बुकलेटों को, छोटी-छोटी पुस्तकों को चौराहे पर बेचा जाय वेद का प्रचार होगा। मैंने कहा क्षमा कीजिये, जो बाईबिल की पुस्तकें बिकती है चौराहे के ऊपर उनका वो बाईबिल है। देखता क्या हूँ लोग खरीदते हैं और फेंक देते हैं कोई पैर से रौंधता है, कोई कुछ करता है तो उसी प्रकार से यदि वेद की पुस्तकों को भी अगर बेचा जायेगा तो क्या होगा। परिणाम वेद की पुस्तकें दो-दो पैसे में बिकेगी तो लोग ले जाकर बाहर फेंक देंगे, लड़के जूते से रौंध देंगे हमारे वेद की दुर्दशा हो जायेगी। ठीक वही स्थिति आ रही है जो बीड़ी का प्रचारक तन्त्र है, सिगरेट का प्रचारक तन्त्र है जहाँ भगवान् राम का नाम लिखा हुआ है, कृष्ण का नाम लिखा है, गीता लिखी हुई है, सावित्री लिखी हुई है वे जो पम्पलेट हैं रास्ते में पड़े रहते हैं लोग उस पर थूँक देते हैं, उसको पैरों से रौंध देते हैं, क्या-क्या होता है बहुत बड़े अपमान का विषय है आज इसलिए इसका परिहार होना चाहिये और जितने व्यक्ति हिन्दुत्व के अभिमानी है, जिन्हें अपनी संस्कृति सभ्यता पर गर्व है, गौरव करते हैं अपने को सनातन धर्मानुयायी और हिन्दू कहते हैं उनका पुनीत कर्तव्य हो जाता है कि वह ऐसी विचारधाराओं का, ऐसे प्रचारों का मुँह तोड़ जबाव दें, प्रतिरोध करें जिससे ऐसी कलंक की बातें अपने देश में न होने पावें। यही मेरे संस्कृत में कहने का सारांश था।

श्रीखेमराजकेशवशरणजी शास्त्री

मैंने संक्षेप में निवेदन किया था कि चरित्र राष्ट्र की सर्वोपरि सम्पत्ति होती है जब चारित्रिक ह्रास हो जाता है तो राष्ट्र का अस्तित्व बड़ा संकटग्रस्त बन जाता है और हमारा जीवन मूल्यहीन बन जाता है, केवल सम्पत्ति, केवल आर्थिक समृद्धि राष्ट्र के लिए इतनी महत्वपूर्ण नहीं होती है यदि चारित्रिक सम्पत्ति हमारी गई तो हम गरीब बन जायेंगे और राष्ट्र का जो सम्मान और उसकी जो प्रतिष्ठा विश्वभर में रही है भारत राष्ट्र की वह गिर जायेगी। इसलिए हमें अपने आराध्यों का सम्मान करना पड़ेगा। हिन्दुओं का वह चरित्र आदर्श चरित्र माना जायेगा जो अपने आराध्यों का सदा सम्मान करें, हमारे परम आराध्य देवों को किसी भी प्रकार से विज्ञापन का साधन बनाकर अवहेलित हमको नहीं करना है क्योंकि इससे हमारा राष्ट्रीय चरित्र अपमानित हो जाता है इस दृष्टि से हमें इन सब बातों को हटाना चाहिये और जो आप प्रतिनिधि होकर के इस महान् सम्मेलन में यहाँ उपस्थित हो रहे हैं, अपने-अपने स्थानों में जब भी आप जायेंगे यदि इस प्रकार की कोई बुरी बातें वहाँ हो रही हो तो उसके निरोधक बनकर, प्रतिरोधक बनकर, विरोधी बनकर आप सामने आयेंगे और उसको हटाने में सहयोग पहुँचायेंगे हमारी यह आप सबके प्रति निवेदन है।

इस प्रकार उक्त विषयों पर उभय विद्वानों की संस्कृत भाषा में पक्ष और विपक्ष में परस्पर समाधानात्मक चर्चा हुई जिसका हिन्दी अनुवाद यहाँ दिया गया।

विद्वद्वर पं० श्रीकेशवदेवजी शास्त्री

[सम्पादक–'अनन्त सन्देश' वृन्दावन]

अत्यन्त सौभाग्य की बात है कि राजस्थान के इस पावन क्षेत्र में इस पवित्र तीर्थ में इस विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का महत्वपूर्ण समायोजन हो रहा है और इसके द्वारा सनातन धर्म की विविध विधाओं की तरफ हमारा ध्यान आकर्षित किया जा रहा है। देश की परिस्थितियाँ, धर्म की परिस्थिति, समाज की परिस्थिति, अन्यान्य अपने जो हमारे कर्तव्य हैं उनके प्रति हमको जागरूक किया जा रहा है, यह सब धर्माचार्यों का विषय है और वह महान् सन्त–आचार्य ही समाज की बागडोर को संभालते हैं वही साधारण जनता को उद्‌बोधन देते हैं धर्म के विषय में, संस्कारों के विषय में। धर्म के विषय में तो सभी महानुभावों ने अब तक कई दिनों से काफी प्रकाश डाला है। धर्म शाश्वत है सनातन है और वह सनातन इसलिए है कि भगवान् सनातन जो शाश्वत तत्त्व है उससे सम्बन्ध रखता है इसलिए वह सनातन धर्म है, वह सदा रहने वाला धर्म है और उस धर्म की अनेक प्रकार से व्याख्यायें की गई हैं। धर्म के विषय में यदि कोई यह कहे कि आप क्या हमको धर्म दिखा सकते हैं, धर्म के दर्शन करा सकते हैं तो ऐसा भी महात्मा लोग करते हैं धर्म के दर्शन भी करा देते हैं। हमारे देश की, हमारे धर्म की जो पहचान है, हमारी जो पहचान है वह है वेद। वेद में दो प्रकार की बातें आती है एक विधि वाक्य और एक निषेध वाक्य। विधि वाक्यों में आता है "स्वर्गकामोयजेत।" निषेध वाक्यों में आता है 'न कलञ्जं भक्षयेत्।' तो विधि वाक्य का अर्थ है ऐसा करो और निषेध वाक्य का अर्थ है ऐसा मत करो। इस प्रकार के वाक्य वेदों में आते हैं और वेद हमारे परम शिक्षक हैं। जब वेदों में ऐसा है कि ऐसा काम करो और ऐसा न करो तब धर्म के रूप में हम कह देते हैं कि यदि धर्म के दर्शन करने हैं तो श्रीराम के दर्शन कर लो, श्रीराम साक्षात् धर्म की मूर्ति हैं और भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं ईश्वर हैं परतत्त्व हैं तो इस प्रकार धर्म की व्याख्या में जब यह कहा जाय कि यहाँ जितने महानुभाव विराजे हुये हैं यहाँ गोपाल यज्ञ हो रहा है, आपने दर्शन किये होंगे, परिक्रमा भी लगाई होगी तो यही धर्म का रूप है। यदि इस कार्य को आप करेंगे तो आप धार्मिक कहलायेंगे अर्थात् एकादशी व्रत, गिरिराजजी की परिक्रमा आदि-आदि जो बाते हैं, श्रीतुलसीजी के सामने दीपक से आरती एवं उनमें जल देना, भगवान् का दर्शन, भगवान् के मन्दिर में जाकर के परिक्रमा देना इन कार्यों को आप करेंगे तो आप धार्मिक कहलायेंगे और यही धर्म का रूप है, यह धर्म के साक्षात् दर्शन हैं। यह भारतवर्ष धर्मप्राण देश है, इसमें धर्म के पग-पग पर दर्शन होते हैं तो धर्म के विषय में आप यह न सोचें कि यह कोई अदृश्य वस्तु है आपको दीखता है, आप जो कुछ करते हैं अर्थात् भगवान् को स्मरण करते हुये आप जो कर्म करते हैं वो कर्म ही धर्म है, कर्म जो है वही धर्म है आप करेंगे तो वह धर्म होगा। मन्दिर में प्रत्येक स्थान पर कुछ पुराणों की चर्चा होती थी, मातायें सुनकर आती थी घर में अपने बच्चों को बताती थी कि आज अमुक देवता का जयन्ती अवसर है, कल एकादशी है, अमुक दिन यह होगा, तो वह माताओं से बच्चे जब सुनते थे महिलायें जब घर में सुनाती थी तो उनको धर्म की एक जागरूकता होती थी। आज मठ–मन्दिरों में नियमित रूप से जो धर्म की चर्चा अर्थात्

पुराणादिक का पाठ होता था प्राय: मैं देखता हूँ कई जगह से बन्द हो गया है और यह जो बातें हैं वह इसलिए है कि यह सारा झगड़ा है, झगड़ा यह है कि हमारे यहाँ जो पुरुषार्थ चतुष्टय बताया गया धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष यह चार पुरुषार्थ बतलाये गये। उसमें धर्म सबसे प्रधान था सबसे पहले धर्म की मान्यता थी, आज सबसे पहले अर्थ की मान्यता हो गई है। प्राणी वर्ग अर्थ के पीछे दौड़ रहा है धर्म को गौण कर दिया है, यह सारी जो जितनी बातें आ रही है चाहे गो-वंश से सम्बन्धित हों, चाहे वह रामजन्मभूमि से सम्बन्धित हों, चाहे हमारे संस्कारों से सम्बन्धित हों वे सब क्या हैं धर्म को गौण करके अर्थ की प्रधानता हो जाने के कारण धर्म गौण हो गया है। अर्थ हमारे जीवन का प्रधान लक्ष्य हो गया। यह सारी विपदाएँ और आपदाएँ जो आ रही है देश पर यह धर्म को गौण करने के कारण से है। धर्म का आचरण करने से मनुष्य के अन्दर जो संस्कार बनते हैं वह ऐसे हैं जैसे कि आप अपने मकान में कलई करते हैं तो उसकी परतें पड़ जाती है हर साल कलई करने से एक-एक पर्त पड़ जाती है ठीक इसी तरह से आपके जीवन में धर्माचरण के द्वारा एक पर्त पड़ती है एक संस्कार बनता है और वह संस्कार ही सोलह संस्कारों के नाम से कहा जाता है जिससे कि जीवन उत्कृष्टतम बनता है। हमारे हिन्दू धर्म में कुछ पहचान है और वह है शिखा सूत्र की पहचान। शिखा रखने से हम हिन्दू हैं हम अन्य यवन आदि नहीं हैं, संस्कारवान् हैं इसलिए हमारे अन्दर हमारी शिखा है उससे हमारे मस्तिष्क की जो नसें हैं, जो ज्ञान की प्रक्रिया है उसमें वह उसकी सुरक्षा करती है। तिलक संस्कार में हमारी जो इला और पिंगला नाड़ी है उसको ठण्डा रखने के लिए, उसको संयमित रखने के लिए वह तिलक संस्कार है। हमारे मस्तिष्क पर भगवत् चरणारविन्द का निवास रहे, हमारे मस्तिष्क पर भगवान् के चरण विराजमान रहे जिससे कि हम भक्ति मार्ग में आगे बढ़ सकें। इसी प्रकार यज्ञोपवीत संस्कार है, यज्ञोपवीत संस्कार करने के बाद ही वेदाध्ययन में प्रवृत्ति होती है। वेद का अध्ययन आवश्यक है। अब तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य यज्ञोपवीत संस्कार को ही भूल गये हैं न ब्राह्मण यज्ञोपवीत पहनता है, न गायत्री का जप करता है, न सन्ध्योपासना करता है। हम अपने संस्कारों को भूलते चले जा रहे हैं और दोष देते हैं किसी अन्य को। हम क्या हैं, हम क्या बनते जा रहे हैं, हम क्यों इस तरह के व्यापार करते हैं, हम क्यों संस्कारों की तरफ ध्यान नहीं देते। हम अपने दोषों को नहीं देखते और आलोचना अन्य की करें यह उचित नहीं है।

मेवाड़ महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त मुरलीमनोहरशरणजी

हमारे एक विद्यार्थी शिष्य हैं जो डाक्टर हैं उनको हमने एक समस्या दी कि आप इस समस्या पर कार्य करें, समस्या क्या दी गई कि जिनको हृदय की बीमारी होती है और हृदय के जो रोगी हैं इनके ई० सी० जी० होती है एक इलेक्ट्रिक कॉडियो ग्राफी कहलाती है उसका ई० सी० जी० होता है। तो करीब पच्चीस बीमारों को ई० सी० जी० किया तो सभी की ई० सी० जी० खराब थी। उसके बाद हमने उनसे कहा कि यह जो जनेऊ है इस जनेऊ को कान-कान पर दोनों ओर चढ़ाकर हम शौच जाते हैं, इसके कई वैदिक और सांस्कृतिक अभिप्राय तो हैं लेकिन एक स्वास्थ्य सम्बन्धी अभिप्राय भी है वह उन्हें समझाया। उसके बाद डाक्टर महोदय ने उनके कानों में एक ताँबे की रिंग बनाई और दोनों साइड में उस रिंग को

लगाकर, अब उन लोगों को शौच जाने के लिए कहा गया। तीन महिने बाद जब फिर उनकी ई० सी० जी० की गई तो बिना किसी औषधि के, बिना किसी दवाई के उनकी ई० सी० जी० में इतना ज्यादा सुधार आया कि वहाँ एक आन्दोलन सा चल पड़ा है। बीसों लोग वहाँ कान में रिंग पहनकर के अब शौच जाते हैं जिससे उनका हृदय मजबूत रहता है, उनके हृदय के अन्दर शक्ति रहती है। इसलिए भारतीय संस्कारों के पीछे एक छिपी हुई वैज्ञानिकता भी है इसलिए इस वैज्ञानिकता को समझकर द्विजमात्र को अपने उपनयन संस्कार कराना उपनयन को पवित्र रखना, उपनयन को पवित्र भावों से स्थापित करना और उसके जितने भी लाभ हैं उन लाभों से इस देह को लाभ दिलवाना, इस आत्मा और मन को लाभ दिलवाना यह हमारा सांस्कृतिक और सनातन विचार है। आप सबसे निवेदन है कि जो लोग जनेऊ को धारण करते हैं वह शौच जाते समय अपने कान पर जनेऊ जरूर चढ़ायें। आजकल विद्यार्थी जनेऊ लेने के बाद जनेऊ को खूँटी पर टाँग देते हैं, मैं कई होस्टलों में जाता हूँ और बाथरूम में जनेऊ लटकी हुई मिलती है। तो हमारा कर्तव्य है हम धर्मगुरु हैं, हम धर्माचार्य हैं, हम विद्वान् हैं, गुरु हैं समाज को इस बात के लिए प्रेरित करें कि वे जनेऊ रखें, शिखा सूत्र रखें, तिलक लगायें तथा तुलसी या रुद्राक्ष की कण्ठी धारण करें।

सन्त श्रीगुरुमुखदासजी महाराज, गंगापुर

जब-जब भी राष्ट्र के अन्दर अनेकानेक प्रकार की विकृतियाँ आई, अनेकानेक प्रकार से धर्म के ऊपर आघात हुये उस-उस समय में परब्रह्म परमात्मा ने कृपा करके और स्वयं ने अवतार लिया और अवतार लेकर के उस परमपिता परमात्मा ने उन पापात्माओं का अन्त किया और इस राष्ट्र के अन्दर धर्म की स्थापना की। इस घोर कलयुग के अन्दर जिसको कि अभी ५ हजार और कुछ वर्ष ही ऊपर बीते हैं अनन्तानन्त प्रकार के पाप कर्म छा गये हैं, छा रहे हैं। इस कलयुग के अन्दर आपका हमारा जन्म हुआ, हमारा जीवन किस प्रकार निर्मल बने, हम किस प्रकार से सन्मार्गगामी बनें, किस तरह से हम अपनी जीवन यात्रा को सार्थक बनायें और पापों से हमारा जीवन दूर हो उसका उपाय कौन बताये। भगवान् श्री के अवतार होने का तो अभी बहुत लम्बा समय है और पापमयवृत्ति लोगों की यह बन गई इसलिए इस घोर कलियुग के अन्दर उस परमपिता परमात्मा ने समय-समय पर अपने भक्तजनों को, अपने पार्षदजनों को अपने चतुर्भुज रूप में धारण करने वाले जो आयुध हैं उनको आपने इस भू-मण्डल के ऊपर भेजा कि जाओ और जो मेरे नाम का स्मरण करने वाले भक्तजन हैं, साधुजन हैं, गो, गायत्री, गंगा और गुरु के प्रति और गीता के प्रति आस्था रखने वाले हैं, उन लोगों का जीवन आनन्दित बने इस तरह का तुम कार्य करो। तो समय आया आद्य जगद्गुरु शंकराचार्य इस भू-मण्डल पर पधारे, वैष्णवाचार्य में जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज, रामानुजाचार्यजी महाराज ने अवतार लिया, जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराज, जगद्गुरु श्रीमाधवाचार्यजी महाराज, जगद्गुरु श्रीविष्णुस्वामीजी महाराज पधारे। जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज को भगवान् के आयुध श्रीचक्रसुदर्शन का ही अवतार माना गया और उन महाप्रभु ने पधार कर के अनेकानेक भक्तजनों को जो कि भजन स्मरण के अन्दर लगे हुये थे

धार्मिकवृत्तियों को धारण किये हुये थे उनके ऊपर जो आघात हो रहा था, उन आघातियों को दण्ड दिया और धर्माचरण करने वालों का रक्षण किया। जब-जब भी इस राष्ट्र के ऊपर विपदा आई है तब इन आचार्यप्रवरों, सन्त-महात्मा पुरुषों ने ही पधारकर के हमको ज्ञानामृत का पान कराया है। यदि सन्त-महात्मा संसार में नहीं होते तो संसारी जीव इस भौतिक वातावरण के अन्दर जलकर के समाप्त हो जाते। याद रखिये पुत्र-माता, पिता कुटुम्ब-परिवार जहाँ हम गये वहाँ मिले, मिल रहे हैं और भविष्य में भी मिलते रहेंगे, परन्तु इन सन्त-महात्मा पुरुषों का साक्षात्कार, इन सन्त-महात्मा पुरुषों के दर्शन, इनके द्वारा ज्ञानामृत पान करने का सुन्दर सुअवसर हमको अन्यत्र कहीं प्राप्त नहीं होगा, केवल इस मानव जीवन ही में हमको प्राप्त हुआ है यदि हमने इसको भी छोड़ दिया तो फिर हम पश्चात्ताप करेंगे। अतः इस मानव जीवन को पाकर के और सन्त-महात्मा पुरुषों के द्वारा अमृतमय वाणी श्रवण करने का जो हमें सुन्दर सुअवसर प्राप्त हुआ है इसका लाभ उठावें। आप सब लोग एकाग्रचित्त होकर के सुनते तो हैं परन्तु सुनकर के श्रवण-मनन, निदिध्यासन करना अति आवश्यक है। जैसे–हम भोजन करते हैं भोजन यदि हमको पच गया तो उसका रस बनेगा, शरीर में शक्ति प्राप्त होगी। ऐसे ही यह सत्संग के द्वारा, महापुरुषों के द्वारा ज्ञानामृत जो हमको पान करने को मिल रहा है उसको हम श्रवण करके और उस पर विचार करें, उसके अनुरूप जीवन को ढालने का प्रयास करें।

जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीनिश्चलानन्दजी महाराज

भगवान् ने हम सनातनधर्मियों को जैसा भगवान् प्रदान किया है वैसा भगवान् किसी भी ईश्वरवादी को प्राप्त नहीं है। सनातनधर्मियों का भगवान् अद्भुत है, अनूठा है, अनुपम है। ईसाई सज्जनों ने ईश्वर का अस्तित्व माना है परन्तु उनका ईश्वर जगत् का निमित्त कारण ही हो सकता है, जगत् का उपादान कारण नहीं हो सकता। अभिप्राय यह है कि ईसाईयों का ईश्वर जगत् बना सकता है, जगत् बन नहीं सकता और अवतार तो ले ही नहीं सकता है। मुसलमान सज्जनों ने भी ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार किया है परन्तु उनका ईश्वर जगत् का केवल निमित्त कारण है उपादान कारण नहीं है, मुसलमान सज्जनों का ईश्वर जगत् बना सकता है बन सकता नहीं, अवतार तो ले ही नहीं सकता है। आर्य समाजी सज्जनों ने भी ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार किया है परन्तु उनका ईश्वर जगत् बना सकता है बन सकता नहीं, अवतार तो कथमपि ले सकता ही नहीं है। वैशेषिकों ने और नैयायिकों ने भी ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार किया है परन्तु इन दोनों दार्शनिकों का ईश्वर जगत् का केवल निमित्त कारण है न कि अभिन्ननिमित्तोपादान कारण। नैयायिकों के ईश्वर को, वैशेषिकों के ईश्वर को पृथ्वी, जल, तेज और वायु के परमाणु चाहिये, तब वह उसको जगत् का रूप दे सकता है। योगियों ने भी क्लेश, कर्म, विपाक और आशय से अपरामृष्ट पुरुष विशेष को ईश्वर स्वीकार किया है, परन्तु योगियों का ईश्वर जगत् बना सकता है बन सकता नहीं, तीनों गुणों की साम्यावस्था, प्रकृति, अभिव्यक्त अथवा प्रधान को वह जगत् का रूप देता है, स्वयं जगत्रूप से विलसित हो सकता नहीं। हमारे श्रीरामानुजाचार्यजी महाराज ने इसी अंश में मध्वाचार्यजी महाराज ने, श्रीनिम्बार्काचायजी महाराज ने, श्रीवल्लभाचार्यजी महाराज ने और श्रीशंकरा-

चार्यजी महाराज ने वेदान्त दर्शन के आधार पर जिस ईश्वर को ईश्वर माना है, वह जगत् का न केवल निमित्त अपितु उपादान कारण भी है, हमारा ईश्वर जहाँ जगत् बना सकता है वहाँ जगत् बन भी सकता है। सज्जनों आप धैर्य धारण करें, निमित्त और उपादान यह दोनों पारिभाषिक शब्द हैं जैसे—माईक नामक यह यन्त्र है। किसी ज्ञानवान्, इच्छावान्, प्रयत्नवान् चेतन मैकेनिक ने लोहा नामक मैटल धातु या पदार्थ को माईक नामक यन्त्र का रूप प्रदान किया है, उस मैकेनिक को हम इस माईक नामक यन्त्र का निमित्त कारण कहते हैं। जो ज्ञानवान्, इच्छावान्, प्रयत्यवान् चेतन किसी मैटल धातु या पदार्थ को कार्य का रूप प्रदान करता है दर्शन शास्त्रों में उसे उस कार्य का निमित्त कारण माना जाता है। जो मैटल धातु या पदार्थ कार्य का रूप धारण करता है, कार्यरूप से विलसित होता है उसे दर्शन शास्त्रों में उस कार्य का उपादान कारण कहा जाता है, जैसे कि लोहा इस माईक नामक यन्त्र का उपादान कारण है। लेकिन हमारे ईश्वर ऐसे नहीं हैं सज्जनों, वे तो जगत् के अभिन्ननिमित्तोपादानकारण हैं। श्रुतियों के अनुसार हमारे भगवान् जगत् के निमित्त कारण सिद्ध होते हैं, श्रुतियों के ही अनुसार वही ईश्वर जगत् से उपादान कारण सिद्ध होते हैं अतः हमारे ईश्वर को भगवान् कृष्णद्वैपायन वेदव्यास भगवान् ने ब्रह्मसूत्र में जगत् का अभिन्नमित्तोपादानकारण कहा। उदाहरण हमारी उपनिषदों ने दिया मकड़ी से, मन लगाइये आज हम राजनीति पर बिल्कुल नहीं बोलेंगे दर्शन शास्त्र के अनुसार गिने-चुने मिनटों में भगवान् के अवतारवाद के तात्त्विक स्वरूप को प्रस्तुत करेंगे, बुद्धि लगाना आपके लिए आवश्यक है। तो मकड़ी के जाले से आप परिचित हैं, जाले का मकड़ी जिस प्रकार अभिन्ननिमित्तोपादान कारण होती है उसी प्रकार स्थावर जंगमात्मक प्रपंच का हमारे भगवान् अभिन्ननिमित्तोपादानकारण हैं। जाला बनाने वाली भी मकड़ी होती है, जाला बनाने की सामग्री भी मकड़ी के शरीर में ही सन्निहित होती है इसलिए जाले का मकड़ी अभिन्ननिमित्तोपादानकारण कही जाती है। हम वृन्दावन में बीस वर्षों तक रहे, नैमिषारण्य में दस वर्षों तक रहे हैं। मोर का नृत्य हमने खूब देखा है उसी का दृष्टान्त प्रस्तुत कर दें। जब कोई मयूर घनघटा का दर्शन करता है, घन गर्जन का श्रवण करता है तब उन्मत्त होकर अपने दोनों पंखों को फैलाकर जय हो का उद्घोष करता हुआ नृत्य करने लगता है, तो जिस प्रकार घन गर्जन का श्रवण कर, घन-घटा का दर्शन कर उन्मत्त होकर नाचते हुए मोर के पंखों का मोर स्वयं ही अभिन्ननिमित्तोपादानकारण होता है। उसी प्रकार हम सनातनधर्मियों के ईश्वर जगत् के स्वयं ही अभिन्ननिमित्तोपादानकारण है। और बात छोड़ दीजिये, गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी महाराज ने जिस रामभद्र को परमभक्त परमात्मा तत्त्व स्वीकार किया है, वह रामभद्र जगत् के अभिन्ननिमित्तोपादानकारण गोस्वामी तुलसीदासजी महाराज की दृष्टि में हैं। रामचरितमानस की पंक्ति लीजिये—"जेहि सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई संग सहाय न दूजा" जिस भगवान् ने आदिभौतिक, आध्यात्मिक और आदिदैविक तीनों प्रकार की सृष्टि बना दी लेकिन जिनको अपने अतिरिक्त अन्य किसी मैटल धातु या पदार्थ की आवश्यकता नहीं पड़ी ऐसे जगत् के अभिन्ननिमित्तोपादानकारण रामतत्त्व को रामभद्र स्वीकार किया है रामचरितमानस में। जब कोई योगी अपने संकल्प से व्याघ्र बनता है तब योग दर्शन के आचार्य उसको योगव्याघ्र कहते हैं, तो जैसे योगव्याघ्र का योगी स्वयं ही

अभिन्ननिमित्तोपादानकारण होता है उसी प्रकार हमारे भगवान् स्थावर जंगमात्मक प्रपंच के स्वयं ही अभिन्ननिमित्तोपादानकारण है। हमारे भगवान् निर्गुण भी हैं, सगुण भी हैं, निराकार भी हैं, साकार भी हैं। तुलसीदासजी की पंक्ति को ही हम उद्धृत कर दें—"पावक युग सम ब्रह्म विवेकू, एक दारुगत देखिय ऐकू।" जैसे एक अग्नि अव्यक्त है और दूसरी आग व्यक्त है। एक अग्नि को नेत्रों से आप निहार सकते ही नहीं, नेत्रों का विषय एक आग बन सकती नहीं, दूसरी आग वह है जो घर्षण के द्वारा अभिव्यक्त होती है नेत्रों का विषय बनती है तो जैसे अग्नि निर्गुण, सगुण, निराकार, साकार उभयविध है उसी प्रकार गोस्वामीजी कहते हैं हमारे भगवान् सगुण, निर्गुण, साकार, निराकार उभयविध हैं। हम वैज्ञानिक रीति से विश्लेषण करें तो हम सनातनधर्मियों ने अपने भगवान् को जहाँ निर्गुण, निराकार माना है सज्जनों वहाँ सगुण-निराकार, सगुण-साकार भी माना है विद्युत् का सिद्धान्त है। एक बिजली होती है निर्गुण-निराकार दूसरी बिजली होती है सगुण-निराकार और तीसरी बिजली होती है केवल साकार, जो व्यापक विद्युत् है। जल में, स्थल में विद्यमान बिजली है जिसका कोई अनुकूल अथवा प्रतिकूल प्रभाव हमारे आपके जीवन पर पड़ता नहीं है परन्तु प्रामाणिक रीति से निरीक्षण-परीक्षण करने पर जिस बिजली का अस्तित्व सिद्ध होता है, और नेत्रों का विषय जो बिजली बनती नहीं है उसको हम कहते हैं निर्गुण-निराकार विद्युत्। यदि जल में पहले से ही विद्युत् की विद्यमानता न हो तो कोटि-कोटि यान्त्रिक, मान्त्रिक, तान्त्रिक विधानों का आलम्बन लेकर कोटि-कोटि कल्पों में भी लोग उसे व्यक्त न कर सकें, तो व्यापक विद्युत् का नाम है निर्गुण-निराकार। एक बिजली है सगुण-निराकार, पावर हाऊस में जो बिजली है उसको आप क्या कहेंगे सगुण-निराकार। हाथ कंगन को आरसी क्या इस माईक नामक यन्त्र के माध्यम से जो बिजली काम कर रही है, पंखा के माध्यम से जो बिजली काम कर रही है, करन्ट लग जाने पर घायल और मार देने वाली बिजली है उसको हम कहते हैं सगुण-निराकार। जिस विद्युत् का अनुकूल अथवा प्रतिकूल प्रभाव हमारे आपके जीवन में पड़ता हो और जो नेत्रों का विषय बनती न हो बिजली उसको हम कहते हैं सगुण-निराकार और वैज्ञानिकों का चमत्कार देखिये एक बिजली है सगुण-साकार। बल्ब के माध्यम से जो बिजली है, वर्षा के दिनों में बादल के माध्यम से जो बिजली व्यक्त होती है उसको हम कहते हैं सगुण-साकार। इसी प्रकार हमारे भगवान् निर्गुण-निराकार हैं, सगुण-निराकार हैं और सगुण-साकार हैं। एक भगवान् हमारे सगुण—निराकार जो जगत् के अभिन्ननिमित्तोपादानकारण है कर्तुमकुर्तंअन्यथाकर्तुं समर्थ हैं, उर प्रेरक हैं, अन्तर्यामी हैं उन भगवान् को हम कहते हैं सगुण-निराकार। "ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति" कहकर गीता में जिस भगवत् तत्त्व का प्रतिपादन किया है। उर प्रेरक "रघुवंश विभूषण" कहकर गोस्वामीजी ने जिस राम तत्त्व का निरूपण किया है उसको हम कहते हैं सगुण-निराकार और एक भगवान् है सगुण-साकार, कौन से भगवान् पञ्च देव होकर जो विलसित होते हैं, रामकृष्णादि रूप से जो अवतरित होते हैं उन भगवान् को हम सनातनधर्मी कहते हैं सगुण-साकार। किसी भी कारण में परस्पर विलक्षण कार्यों को अभिव्यक्त करने की शक्ति होती है इसीलिए दार्शनिकों ने शक्ति को कार्यानुमेया कहा है। जैसे—अंगार का आपको दर्शन होता है, अंगार छू जाये तो दाह का आपको अनुभव होता है लेकिन दाहिका शक्ति का आपको दर्शन नहीं होता। दाह के द्वारा दाहिका शक्ति का अनुमान किया

जा सकता है। इसी प्रकार से हमारे भगवान् सगुण-साकार श्रीरामकृष्णादि रूप से अचिन्त्य लीला शक्ति के योग से अवतरित होते हैं। एक कथा कहकर इस प्रसंग को हम विराम देते हैं।

एक नट राजा के यहाँ आया और कहा—मैं अपनी माया शक्ति से कुछ भी कर सकता हूँ। तब राजा ने कहा कि तुम अपने जादू का प्रयोग करके राजदरबार में हमको आह्लादित कर सकते हो। नट ने कहा–अच्छा राजन् तत्पर हो जाइये अब खेल आपके सामने प्रस्तुत है परन्तु ध्यान रखिये, जादूगर ने कहा कि यह मेरी पतिव्रता सती-साध्वी पत्नी है मैं इसे आपके दरबार में सौंप कर और देव-दानव युद्ध में बैण्डबाजा बजाने के लिए अन्तरिक्ष की ओर प्रयाण कर रहा हूँ, परन्तु सावधान राजन् मेरी सती-साध्वी पतिव्रता देवी शरीर और शील के साथ सुरक्षित मुझे आने पर मिले। राजा ने कहा कि हम खानदानी क्षत्री हैं किसी के शील पर प्रहार करना हमारा स्वभाव नहीं है, शील और शरीर के सहित सुरक्षित तेरी पत्नी तुझे मिलेगी। जादूगर ने कहा कि तो यह मेरी पत्नी रही धरोहर के रूप में और मैं अब चला देव-दानव के युद्ध में, युद्ध के बाजे बजाने। जादूगर ने माया से रस्सी को आकाश की ओर फैंका, बिना किसी सहारे के वह रस्सी ऊपर से नीचे की तरफ लटकती हुई दीखने लगी और जादूगर उस रस्सी को पकड़कर झटपट अन्तरिक्ष की ओर गया और तिरोहित हो गया। बैण्डबाजे बजने लग गये और राजदरबार के सामने जो मैदान था रूण्डों से, मुण्डों से पटने लग गया, देव और दानव के शिर और शरीर का अन्य अंश कट-कट के गिरने लग गया, अद्‌भुत युद्ध का दर्शन करके वीर चकित होने लग गये। इतने में क्या आश्चर्य हुआ कि जो मायावी जादूगर गया था बैण्डबाजा बजाने युद्ध में उसका शिर भी कट के सबके सामने गिर पड़ा। राजा ने भी पहचान लिया कि यह तो जादूगर का शिर है, सभासदों ने भी पहचान लिया और अन्त में बात क्या हुई कि उसकी पतिव्रता जो राजसभा में बैठी थी चिल्लाती हुई दौड़ी और पतिदेव के शिर को गोदी में लेकर बैठ गई, विलाप करने लगी और राजा से कहा राजन् सती होने की अनुमति दो, चन्दन की लकड़ी लाओ, अब मैं देखते-देखते पतिदेव के शरीर के साथ ही सदा के लिए अन्तर्हित हो रही हूँ। उस देवी ने, जादूगर की धरोहररूपा धर्मपत्नी ने देखते-देखते ही अपने शरीर को राख बना दिया। लोग शोक निमग्न हो गये यह क्या हुआ, बेचारा जादूगर तो कट गया उसका शिर लेकर उसकी धर्मपत्नी सती हो गई हाय युवावस्था में ही यह क्या अनर्थ हुआ। थोड़ी देर में मुस्कुराता हुआ जादूगर आ गया, अब सब देखने लगे कि भूत बन के आया है या सचमुच का है जादूगर। भूत विद्या के पारखी मनीषियों ने कहा कि यह तो भूत नहीं है जीवित व्यक्ति का सब लक्षण इसमें चरितार्थ होता है। अब गम्भीर होकर वह जादूगर कहता है, हाँ राजन् मेरी धरोहर वह मेरी धर्मपत्नी कहाँ है दीजिये। सबके सब शिर खुजलाने लगे दूँ कहाँ से, यह कहाँ से टपक पड़ा सबने कहा-जादूगर तू तो मर गया था, तेरे शिर को लेकर तेरी धर्मपत्नी अभी-अभी चिता में भस्म हो चुकी है तू कहाँ से टपक पड़ा। जादूगर को सज्जनों अवसर मिल गया उसने कहा—राजन् प्रतिज्ञा से मुकरिये मत, आपने कहा था शील और शरीर सहित तेरी पत्नी तुझे सुरक्षित मिलेगी। शील का तो पता नहीं आपने क्या किया और पत्नी का शरीर भी तो दिखता नहीं। अरे जादूगर तू हमें परेशान मत कर तेरी पत्नी सचमुच में सती हो गई है। इतने में मुस्कुराती हुई वह देवी आ गई, सबके सामने जो जली थी। राजा

ने कहा यह क्या हुआ, जादूगर ने कहा परेशान मत होइये राजन्, यही तो मेरी माया है मैं कहीं गया ही नहीं था, मैं भी इस राजसभा में ही था मेरी धर्मपत्नी भी इस राजसभा में ही थी देखिये यह मेरी धर्मपत्नी है और यह मैं हूँ, न मैं कटा, न ये जली। इस दृष्टान्त का दृष्टांतिक क्या हुआ सज्जनों, एक सामान्य जादूगर मायावी तान्त्रिक भी अपने अतिरिक्त जहाँ अन्य व्यक्ति और वस्तु की रचना कर सकता है तो श्रुति कहती है—भगवान् लीलाशक्ति से युक्त, स्वात्म वैभव, आत्मयोग से परिपुष्ट भगवान् क्या नहीं कर सकते। जगत् को साकार बना सकते हैं, निराकार जीवों को साकार बना सकते हैं, स्वयं साकार हो सकते हैं। अतः चिदानन्द स्वरूप भगवान् का ध्यान करना चाहिये। जो कोई अनर्गल प्रलाप करें ईश्वर का अवतार नहीं होता है, रामकृष्णादि का विग्रह भौतिक होता है, नश्वर होता है उसके अनर्गल प्रलाप को न मानकर अत्यन्त आस्थापूर्वक सगुण साकार भगवान् के चरण कमलों में मन को रमाना चाहिये। कल हम भगवत् कृपा से श्रीवृन्दावनधाम की ओर प्रस्थान करेंगे, भगवान् के चरणों में यही प्रार्थना है कि हमारा आपका मन लोकमधुप के समान, भँवरे के समान भगवान् श्रीश्यामसुन्दर के चरणकमलों के अनुपम पराग और मकरन्द में रमे।

श्रीखेमराजकेशवशरणजी शास्त्री, नेपाल

हमारे यहाँ शिक्षा का सदाचार का मूल केन्द्र व्यक्ति माना गया है। हिन्दू संस्कृति का सर्वोपरि आदर्श शिक्षा का सम्पूर्ण केन्द्र बिन्दु यदि कुछ रहा है तो वह व्यक्ति निर्माण रहा है। विश्व कल्याण का चाहे जितना बड़ा लक्ष्य हम रखें चाहे जितनी विशाल उदात्त योजना लेकर चलें पर साधना का सूत्रपात हमारी मातृभूमि से होगा, हमारे अपने कार्यक्षेत्र से होगा अपनी कर्मभूमि से होगा और उस कर्मभूमि के प्रति ममत्व, निर्भयत्व और आत्मीयता की अनुभूति करके व्यक्ति-व्यक्ति को खड़ा करने का संकल्प जगाना परम आवश्यक है। इस बात पर उन्होंने निर्माण का सूत्रपात व्यक्ति से माना है। लक्ष्य चाहे जितना महान् हो परन्तु सूत्रपात शुरुआत का जो बिन्दु है व्यक्ति निर्माण माना गया है और व्यक्ति को कैसे निर्मित किया जाये इस पर बड़ा सुन्दर चिन्तन हिन्दू संस्कृति ने प्रस्तुत किया है। जैसे किसी तालाब के मध्य भाग में छोटा से छोटा भी पत्थर फेंका जाय तो लगता है छोटी-छोटी तरंगें उठ रही है कौन सा इतना बड़ा भारी कुछ प्रकम्पन हुआ कि कुछ प्रभाव हुआ लेकिन ऐसी बात नहीं सूक्ष्म रूप से देखने पर छोटे से छोटा भी कंकड़ पत्थर हम फेंके किसी तालाब में तो वहाँ से उठती हुई तरंगे छोटा-छोटा रूप लेकर के भी अन्ततः किनारे पर जाकर उसका प्रभाव अवश्य होता है ठीक इसी तरह से समाज के बीच में व्यक्ति चाहे कहीं भी जीता हो चाहे जितना सीमाबद्ध उसका क्षेत्र हो परन्तु उसके चिन्तन के द्वारा उसके व्यवहार के द्वारा उसके कर्मों के द्वारा

कुछ न कुछ प्रभाव समाज जीवन में पड़ता ही है। इसलिए हर व्यक्ति में ऐसी भावना उभारी जाय कि मैं अकेला नहीं हूँ मेरे साथ दांये-बांये, आगे-पीछे एक समष्टि जीवन जुड़ा हुआ है एक समाज जुड़ा हुआ है जिसका अभिन्न अंग होकर के मैं जीता हूँ यदि मैं बुरा कर्म करता हूँ उसका असर समाज में पड़ेगा अच्छा बनूँगा तो समाज के लिए योगदान होगा। इस प्रकार अपने व्यक्तित्व निर्माण के प्रति स्वयं व्यक्ति को सजग कैसे बनाया जाय यह ही हिन्दू संस्कृति के शिक्षण का केन्द्र बिन्दु रहा है।

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज

आज हम जिस पावन क्षेत्र में स्थित हैं यह कोटि-कोटि तीर्थों के गुरु पुष्करारण्य का पावन क्षेत्र है, पुष्कर क्षेत्र के अत्यन्त सन्निकट यह निम्बार्कतीर्थ है यह पौराणिक तीर्थ है 'पद्मपुराण में निम्बार्कदेव तीर्थमहात्म्यवर्णनम्' इस नाम से पूरा अध्याय है 'निम्बार्कतः परं तीर्थं न भूतं न भविष्यति' आदि उसमें वचन हैं। यह अरण्य प्रदेश है एकान्त प्रदेश है यह साभ्रमती का परम पावन तट है। एक सावरमती है जो अहमदाबाद में है किन्तु यहाँ पर जो नदी प्रवाहित है उसका नाम है साभ्रमती। परम प्राचीनतम यह यहाँ की पुण्य सलिला है इसके पुनीत तट पर अवस्थित यह निम्बार्कतीर्थ है जहाँ कोलाहल दैत्य के आक्रमण से अनेक देवता सशंकित थे उसमें सूर्य भगवान् भी थे उन्होंने यहाँ निम्बवृक्ष में आश्रय लिया एतावता इसका नाम निम्बार्कतीर्थ पड़ा, उनकी दिव्य रश्मियों से एक सरोवर का उद्भव हुआ जो निम्बार्कतीर्थ नाम से परम प्रख्यात हुआ। यों तो निम्बार्क सम्प्रदाय के पूर्व आचार्यप्रवर व्रजधाम में, मथुरा, वृन्दावन, निम्बग्राम वहीं निवास करते रहे हैं किन्तु साढ़े पांच सौ वर्ष पूर्व यहाँ पर एक मस्तिगशाह फकीर का उपद्रव था उसके परिशमन के लिए आचार्यप्रवर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज ने यहाँ श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज को प्रेषित किया और उन्होंने अपने प्रबल प्रभाव से उसको पराजित किया और यहीं उनका विराजना हुआ। आज जो साम्प्रतिक समय में हमारे सामने विषम समस्यायें हैं विकट स्थिति है उन सबके परिहार के लिए भी हमारे आचार्यप्रवर कृत संकल्प हैं, दृढ़ प्रतिज्ञ हैं और यह सब हमारे सन्त-महात्मा, भक्तप्रवर सबके सब अग्रगण्य हो गये तो संसार की कोई ऐसी शक्ति नहीं है हमारे हिन्दू संस्कृति के जो मूल आधार हैं उन पर कोई किसी प्रकार की आपत्ति कर सके। अन्त में जिन आचार्यप्रवरों ने इतना कष्ट करके इतनी दूर से पधार करके, सन्त-महात्माओं ने महामण्डलेश्वरों ने, श्रीमहन्त महानुभावों ने, विद्वज्जनों ने सबने पधारकर के जो प्रेरणादायक पावन विचार व्यक्त किये हैं जिससे परम आह्लाद और असीम आनन्द का अनुभव हो रहा है कि आज सभी अपने आपको परम गौरवान्वित मान रहे हैं। ★

※ श्रीसर्वेश्वरो जयति ※

अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

के

अन्तर्गत आयोजित

विश्व-शान्ति सम्मेलन

[मिति ज्येष्ठ शु० ४ मंगलवार सं० २०५० दिनांक २५-५-९३]

अध्यक्ष :

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य

श्रीहर्याचार्यजी महाराज

अयोध्या (उ० प्र०)

मुख्य अतिथि :

जगद्गुरु वल्लभाचार्य

गोस्वामी श्रीवल्लभरायजी महाराज

सूरत (गुजरात)

❋ श्रीसर्वेश्वरो जयति ❋

अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

के

अन्तर्गत आयोजित

विश्व-शान्ति सम्मेलन

[मिति ज्येष्ठ शु० ४ मंगलवार सं० २०५० दिनांक २५-५-९३]

अध्यक्ष :

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य

श्रीहर्याचार्यजी महाराज

अयोध्या (उ० प्र०)

मुख्य अतिथि :

जगद्गुरु वल्लभाचार्य

गोस्वामी श्रीवल्लभरायजी महाराज

सूरत (गुजरात)

विश्व-शान्ति सम्मेलन

[ज्येष्ठ शु० ४ वि० सं० २०५० मंगलवार दिनांक २५-५-९३ ई०]

प्रतिदिन की भाँति मन्दिर में प्रातःकालीन मङ्गला आरती, श्रीसर्वेश्वर प्रभु का अभिषेक, दर्शन एवं शृङ्गार आरती, यज्ञ मण्डप में देव पूजन, जप, पाठ, हवन आदि विधिवत् चलते रहे. विशेष आयोजन के अन्तर्गत जगद्गुरु निम्बार्काचार्य जगद्विजयी श्रीकेशवकाश्मीरी-भट्टाचार्यजी महाराज के पाटोत्सव के उपलक्ष्य में उनके चित्रपट का जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज के करकमलों द्वारा वेदमन्त्रों से अभिषेक एवं विशेष अर्चन हुआ। मध्याह्न में २ बजे से ५ बजे तक स्वामी श्रीशिवदयालजी गिरिराजप्रसादजी की रासमण्डली द्वारा श्रीरास-लीलानुकरण का भक्तजनों ने रसास्वादन किया।

सभा मण्डप में प्रातः ९ बजे पदाधिकारियों द्वारा समागत आचार्यवर्य को माल्यार्पण व सामूहिक वैदिक मंगलाचरण से सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता जगद्-गुरु रामानन्दाचार्य श्रीहर्याचार्यजी महाराज अयोध्या ने की एवं मुख्य अतिथि जगद्गुरु वल्लभा-चार्य गोस्वामी श्रीवल्लभरायजी महाराज सूरत थे। सर्व प्रथम आचार्यश्री के करकमलों द्वारा जगद्गुरु श्रीकेशवकाश्मीरीभट्टाचार्यजी महाराज के चित्रपट का अर्चन व माल्यार्पण एवं आपश्री के द्वारा ही विरचित ग्रन्थ भाषानुवाद सहित 'क्रम-दीपिका' का भगवच्चरणों में समर्पण भाषानु-वादक पं. श्रीहरिशरणजी शास्त्री नेपाल थे एवं इसी क्रम में पं. श्रीसत्यनारायणजी शास्त्री अजमेर द्वारा संस्कृत में रचित लघु ग्रन्थ 'श्रीनिम्बार्कोदयं' का विमोचन आचार्यश्री के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। तदनन्तर पण्डित श्रीकेशवदेवजी शास्त्री सम्पादक 'अनन्त सन्देश' वृन्दावन द्वारा आचार्यश्री को अभिनन्दन पत्र समर्पित किया गया। सम्मेलन में पारित होने वाले प्रस्ताव जन समर्थ-नार्थ सभा मण्डप में प्रस्तुत किये गये जो सर्व सम्मति से पारित हुए। सम्मेलन में तीन विचारणीय बिन्दु थे–१. विश्व में शान्ति के कारण और उनका निराकरण। २. विश्वशान्ति के सन्दर्भ में भारतीय संस्कृति की देन। ३. राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में वर्तमान समस्यायें तथा दूरदर्शन एवं चलचित्रों से आगत सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय प्रदूषण को कैसे रोका जाय। इन विषयों पर प्रो० श्रीमनुदेवजी भट्टाचार्य वाराणसी, पं० श्रीखेमराजकेशवशरणजी शास्त्री नेपाल, श्रीमुक्तानन्दजी महाराज अयोध्या, गोस्वामी श्रीवल्लभरायजी महाराज सूरत, ज० शंकराचार्य श्रीवासुदेवानन्दजी महा-राज बद्रिकाश्रम, ज० रामानन्दाचार्य श्रीहर्याचार्यजी महाराज अयोध्या, एवं ज० निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी महाराज के सारगर्भित प्रवचन हुए। प्रमुख वक्ता के रूप में राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्रीभैरोंसिंहजी शेखावत ने भी अपने विचार प्रकट किए। सभा का सञ्चालन श्रीमहन्त श्री-मुरलीमनोहरशरणजी शास्त्री उदयपुर ने किया।

बम्बई से आये हुए दूरदर्शन धारावाहिक 'रामायण' एवं 'श्रीकृष्णा' के निर्माता श्रीरामानन्दजी सागर बम्बई एवं इन धारावाहिकों के संगीत निर्देशक एवं गायक श्रीरविन्द्रजी जैन बम्बई को आचार्यश्री के करकमलों द्वारा रजतमय सुदर्शनचक्र प्रतीक एवं उपहार प्रदान कर सम्मानित किया गया। रात्रि में भक्ति संगीत का कार्यक्रम हुआ जिसमें श्रीरवीन्द्रजी जैन एवं श्रीमोहनलालजी शर्मा जोधपुर एवं उनकी मण्डली ने रात्रि के उत्तरार्ध तक जनता को संगीतमय ध्वनि से भावविभोर कर दिया।

विश्व शान्ति सम्मेलन : प्रथम सत्र

अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन में आज सम्मेलन द्वारा पारित होने वाले सभी प्रस्तावों पर विचार हुआ। प्रस्तावों का वाचन विद्वद्वरेण्य डा. श्रीरामप्रसादजी शर्मा ने किया। समर्थन तथा अनुमोदन के पश्चात् सभी प्रस्ताव अपार जन समूह की उपस्थिति में 'श्रीराधे-राधे' की जय ध्वनि के साथ सर्व सम्मति से स्वीकृत हुए। अध्यक्षता महन्त श्रीहरिवल्लभदासजी शास्त्री किशनगढ़-रेनवाल ने की। प्रस्तावों में—

(१) श्रीचन्द्रदत्तजी पुरोहित परबतसर द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव में जनमत संग्रह कराकर अविलम्ब गो-हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने की माँग की गई है।

(२) पं० श्रीहरिशरणजी उपाध्याय वृन्दावन द्वारा प्रस्तुत हुए प्रस्ताव में देवस्थानों पर नियन्त्रण करने सम्बन्धी समस्त कानूनों को निरस्त करने की मांग की गई है।

(३) पं० श्रीदयाशंकरजी शास्त्री ब्यावर द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव में सम्पूर्ण देश में गो-हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग की गई है।

(४) पं० श्रीसीतारामजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव में धर्मान्तरण पर कानूनी प्रतिबन्ध लगाने की माँग की गई है।

(५) श्रीचन्द्रदत्तजी पुरोहित परबतसर द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव में सरकार से स्थान-स्थान पर राजकीय गौशालाओं की स्थापना कर गोपालनकर्ताओं को अल्प मूल्य में घास उपलब्ध कराने की माँग की गई है।

(६) श्रीखेमराजकेशवशरणजी शास्त्री काठमांडू (नेपाल) द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव में सरकार से नशा निषेध के लिए व्यावहारिक कानून बनाकर प्रतिबन्धित करने की माँग की गई है।

(७) डा० श्रीरामप्रसादजी शर्मा किशनगढ़ द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव में सरकार से नशीले पदार्थों एवं विशेषकर गुटकों के विज्ञापनों पर कानूनी प्रतिबन्ध लगाने की मांग की गई है।

(८) श्रीचन्द्रदत्तजी पुरोहित परबतसर द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव में शिखा (चोटी) रखने के लिए नई पीढ़ी को प्रेरित करने की हिन्दू समाज से अपील की गई है।

(९) पं० श्रीदयाशंकरजी शास्त्री ब्यावर द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव में आयुर्वेद में प्रवेश के लिए उपाध्याय परीक्षा को मान्य करने की माँग की गई है।

(१०) पं० श्रीवासुदेवशरणजी उपाध्याय निम्बार्कतीर्थ द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव में सरकार से माँग की गई है कि शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में परिवर्तन कर भारतीय संस्कृति के प्रति अनुदारता व उपेक्षा का जो भाव बरता जा रहा है इसे रोका जाय।

(११) डा० श्रीमती बिमला भास्कर द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव में सरकार से शिक्षा नीति में आमूलचूल परिवर्तन कर पाठ्यक्रम में नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा का समावेश करने की मांग की गई है।

(१२) पं० श्रीसीतारामजी श्रोत्रिय जयपुर द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव में धार्मिक शिक्षा के नाम पर गाँव-गाँव में मुस्लिम समुदाय द्वारा चलाये जा रहे मदर्शाग्रों पर रोक लगाने की माँग की गई है।

(१३) श्रीदुर्गाशंकरजी गुप्ता द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव में धर्माचार्यों व सन्तों से भारतीय सांस्कृतिक परम्परानुसार पाठ्यक्रमों की व्यवस्था कर शिक्षण संस्थायें चलाने की माँग की गई है।

(१४) राजस्थान के राज्यपाल को भेजे गये प्रस्ताव में धार्मिक न्यासों सम्बन्धी अधिसूचना को निरस्त कर नवीन आदेश प्रसारित करने की मांग की गई है।

इस प्रकार हिन्दू संस्कृति सम्मेलन, विश्व शान्ति सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन के प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित हुए। प्रस्तावों का विस्तृत विवरण इसी स्मारिका में आगे प्रकाशित किया गया है।

इसी अवसर पर सम्मेलन में आये हुए अनेक महानुभावों ने अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के समक्ष नशीले पदार्थ शराब, तम्बाखू, गुटका, बीड़ी, भंग, चाय आदि के परित्याग करने का संकल्प लिया और भविष्य में इनका सेवन न करने की प्रतिज्ञा की।। आचार्यश्री ने सभी को अपना शुभाशीर्वाद प्रदान करते हुए इस सम्मेलन की बहुत बड़ी उपलब्धि बताई। नशा व्यसन परित्याग करने वाले सभी महानुभावों की नामावली एक साथ इसी अंक में आगे प्रकाशित है।

श्रीकेशवदेवजी शास्त्री, वृन्दावन

प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि मैं दुःखों से दूर रहूँ मेरी आत्मा का कल्याण हो और मैं फिर से बार-बार यह जन्म लेना-मरना यह जो संसार का चक्र है इससे मैं मुक्त हो जाऊँ। उसके लिए हमारे आचार्यों ने, हमारे धर्माचार्यों ने चार बाते बतलाई और वह है—कर्म, ज्ञान, भक्ति और प्रपत्ति शरणागति जिसे कहते हैं। यह चार विषय बतलाये जो व्यक्ति कर्म करने में असमर्थ है वह क्रमशः ज्ञान प्राप्त कर सकता है, कर्म और ज्ञान और भक्ति यह बहुत ही साधन सम्पन्न है बड़े-बड़े साधकों को ही यह प्राप्त होती है इसके लिए बहुत कुछ त्याग करना पड़ता है, संयम करना पड़ता है, अपने को समर्पित करना पड़ता है तो अन्त में जाकर के प्रभु की शरणागति आचार्यचरण कराते हैं। जब आप शिष्य होने जाते हैं तब आपको भगवान् के चरणों में श्रीराधामाधव के युगल चरणों में आचार्य समर्पित करते हैं कि आज से यह जीवात्मा आपका है आपके लिए है आपके लिए सम्पूर्ण रूप से समर्पित है इस तरह से यह शरणागति आचार्यचरण जीव की करते हैं। अब उसमें उससे भी आगे एक बहुत सरल उपाय है और वह उपाय है आचार्य अभिमान। आचार्य अभिमान का मतलब है आचार्य निष्ठा। केवल आपके अन्दर अपने आचार्य चरणों के प्रति निष्ठा है तो समझ लीजिये आपका उद्धार निश्चित होने वाला है, आपकी आत्मा निश्चित ही गोलोकधाम को पधारेगी इसमें कोई सन्देह नहीं है आप केवल अपने अन्दर आचार्य निष्ठा रख लें। बस इतना सन्देश देकर के मैं अपना अभिनन्दन पत्र प्रस्तुत करता हूं। समर्पित अभिनन्दन पत्र—

।। श्रीराधासर्वेश्वरो विजयतेतराम् ।।

श्रीमद्—वेदमार्गप्रतिष्ठापकाचार्याणां, सत्सम्प्रदायाचार्याणां, श्रीमद्—हँस-सनकादि-नारद-प्रवर्तितपरपथिकानां श्रीनिम्बार्काचार्यप्रदर्शितद्वैताद्वैतसिद्धान्तसिद्धानां स्वसम्प्रदायस्य बहुमुखीप्रोन्नतौ बद्धदीक्षाणां, अनन्तश्रीविभूषितानां **श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वराणां जगद्गुरुवर्याणां श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्याणां श्री "श्रीजी" महाराजानां** करकमलयोः स्वर्णजयन्तीमहोत्सवावसरे **समर्पितमिदं श्रीराधासर्वेश्वराष्टकात्मकं**

अभिनन्दनपत्रम्

श्रीहँसं ज्ञानगं नित्यं सेवितं सनकादिभिः ।
आत्मबन्धविमोकाय राधासर्वेश्वरं भजे ।।१।।
निम्बार्काचार्यपीठस्थं जगद्गुरुं कृपार्णवम् ।
धर्मिष्ठं सत्वसम्पन्नं राधासर्वेश्वरं भजे ।।२।।
सौम्याकृतिं ऋजुं दान्तं शान्तं कोमलविग्रहम् ।
सदाचारे स्थितं सिद्धं राधासर्वेश्वरं भजे ।।३।।
सर्वेषु यो हि भूतेषु नारायणं प्रपश्यति ।
तं सत्यनिरतं देवं राधासर्वेश्वरं भजे ।।४।।
श्रीनारदादिसंसेव्यं श्रीशं सर्वेश्वरं विभुम् ।
अद्याऽपि सेव्यमानं तु राधासर्वेश्वरं भजे ।।५।।
यस्य पाटोत्सवे चाऽत्र पुण्ये रम्ये महोत्सवे ।
तन्मङ्गलकरं देवं राधासर्वेश्वरं भजे ।।६।।
प्रोन्नतिः कारिता येन पीठस्य सर्वतोमुखी ।
सत्यसंधं दयार्दत्वं राधासर्वेश्वरं भजे ।।७।।
राजस्थाने महापुण्ये चक्रतीर्थे च पुष्करे ।
भ्राजमानं कृपासिन्धुं राधासर्वेश्वरं भजे ।।८।।
सर्वेश्वराष्टकं प्रोक्तं वृन्दावन-निवासिना ।
राधासर्वेश्वरः प्रीत्यै केशवदेव—शास्त्रिणा ।।९।।

पं० केशवदेव शास्त्री
सम्पादक–'अनन्त सन्देश' मासिक पत्र
श्रीरङ्गनाथ प्रेस, वृन्दावन

※ ग्रन्थ–समर्पण समारोह ※

आज अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर जगद्विजयी काश्मीरी श्रीकेशवभट्टाचार्यजी का पावन जयन्ती दिवस था। अत: उनके पावन चरित पर विद्वानों के प्रवचनोपरान्त आपके द्वारा विरचित ग्रन्थ "क्रम-दीपिका" का समर्पण समारोह सम्पन्न हुआ। अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ. निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) द्वारा प्रकाशित यह ग्रन्थ एक अमूल्य निधि है, इसमें मन्त्रों के ऐसे सरलतम प्रयोग दिए गये हैं जिनके अनुष्ठान द्वारा साधक जिस वस्तु की भी कामना करें, वह अल्प परिश्रम से ही प्राप्त कर सकते हैं। यह ग्रन्थ संस्कृत में है और इसका हिन्दी अनुवाद पं० श्रीहरिशरणजी शास्त्री प्राचार्य श्रीनिम्बार्क महाविद्यालय वृन्दावन ने किया है। आपने इस ग्रन्थ के विषय में अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा—

श्रीहरिशरणजी शास्त्री

वैष्णव धर्म ही सनातन धर्म है सनातन धर्म ही वैष्णव धर्म है विष्णु सनातन हैं धर्म सनातन है जीव सनातन है, धर्म सनातन धर्म इसलिए है कि विष्णु स्वयं सनातन है वेद-व्यासादिक महापुरुषों ने लिखा है कि वैष्णव धर्म में दीक्षित होने के बाद वह व्यक्ति भगवान् का हो जाता है और वह यमराज के शासन का अधिकारी नहीं होता। जिस दिन हम वैष्णवी दीक्षा ग्रहण कर लेते हैं गुरु शरणागति हो जाते हैं और पंचसंस्कारों से सम्पन्न हो जाते हैं गोपीचन्दन तिलक धारण करते हैं और भगवत् सम्बन्धी नाम रख लेते हैं तब हम भगवान् के हो जाते हैं ये वैष्णव धर्म की विशेषता है। ऐसे वैष्णव लोग पृथ्वी को पवित्र करते हैं इन्हीं वैष्णवाचार्यों में हमारी इस परम्परा में बड़े-बड़े दिग्गज आचार्य हुये और उनमें से दिग्विजयी श्रीकेशवकाश्मीरीभट्टाचार्यजी जो हमारे सामने आज यहाँ पर विग्रहरूप में विराजित है बड़े तान्त्रिक बड़े साधक बड़े सिद्ध उद्भट विद्वान् और सम्पूर्ण भारतवर्ष में घूमकर के तीन बार इन्होंने जगत् विजय किया। उन्हीं आचार्यवर्य ने इस क्रम-दीपिका की रचना की है यह सम्प्रदाय की अमूल्य निधि है इसमें आठ पटलों में ७०० श्लोकों के माध्यम से उसमें दिग्दर्शन कराया था और संस्कृत टीकायें थी। वर्तमान आचार्य चरण की अपने सिद्धान्त के अनुसार ही इच्छा थी कि ऐसे अमूल्य ग्रन्थों का प्रकाशन होना चाहिये और महाराजश्री ने उनकी हिन्दी व्याख्या करने का भार मुझे सौंपा श्रीचरणों की कृपा से मैंने प्रयास किया है इसमें जो कुछ अच्छाई है आपकी है जो कुछ बुराई या त्रुटियाँ हैं वह मेरी हैं आज जगत्विजयी श्रीकेशवकाश्मीरीभट्टाचार्य के इस जयन्ती महोत्सव पर यह 'क्रम-दीपिका' आचार्यश्री के चरणकमलों में अर्पित है।

इसी अवसर पर पं० श्रीसत्यनारायणजी शास्त्री 'आशुकवि' अजमेर द्वारा रचित "श्रीनिम्बार्कोदयम्" नामक ग्रन्थ भी अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के चरणकमलों में समर्पित किया गया। मधुर सरस संस्कृत भाषा में आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् के संक्षिप्त चरित से ओत-प्रोत इस ग्रन्थ का प्रकाशन अ० भा० श्री-निम्बार्काचार्यपीठ द्वारा हुआ है। इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में अपने भाव व्यक्त करते हुए श्री-शास्त्रीजी ने कहा —

पं० श्रीसत्यनारायणजी शास्त्री

आपको यह जानकर बड़ी प्रसन्नता होगी कि हमारे आद्य निम्बार्काचार्यजी के जीवन के सारे प्रसंग इस लघु ग्रन्थ 'निम्बार्कोदयम्' में वर्णित किये गये हैं। प्रत्येक निम्बार्कीय वैष्णव के घर में यह पुस्तक होना नितान्त आवश्यक है। पुस्तक वैसे छोटी ही है लेकिन इसके अन्दर भगवान् का सारा चरित्र वर्णित है। यह पुस्तक अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) श्रीआचार्यचरणों के कृपाप्रसाद से ही मुद्रित हुई है और निम्बार्काचार्यपीठ पर आप विराजमान हैं हमारे लिए आप जो है आद्य निम्बार्काचार्य हैं अतः नव्य काव्य "श्रीनिम्बार्कोदयम्" नामक यह लघु ग्रन्थ वर्तमान श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री "श्रीजी" महाराज के करकमलयुगल में सादर समर्पित करता हूँ।

महन्त श्रीहरिवल्लभदासजी शास्त्री

आज सारे विश्व में बड़ी अशान्ति मच रही है, भारत में भी अशान्ति है ये जितने भी राष्ट्र हैं उन सब में अशान्ति है। इस अशान्ति के बहुत से कारण हैं उनमें मूल कारण है नशा। यह नशा सारे विश्व के अन्दर अशान्ति पैदा कर रहा है जहाँ देखो वहाँ पर सुरा का पान हो रहा है, ऐसे-ऐसे नशे के पदार्थ बने हैं कहते हैं जरा सी कोई सींक जिह्वा से संयुक्त करलो इतने में वह २४ घन्टे के नशे में मस्त हो गया। इस प्रकार का व्यसन इस प्रकार का नशा इस विश्व के अन्दर आ गया, पहले ऐसा नशा नहीं था केवल सोमवल्ली रस का पान करने का विवरण हमारे वेदों के अन्दर आता है और सोमवल्ली रस का पान करने का भी एक विधान है कि सोमवल्ली रस का जो पान किया जाय तो वह यज्ञविशेष के अन्दर ही किया जाय दूसरे किसी भी प्रकरण में ऐसी बात नहीं है। नशे में जो व्यक्ति होता है वह प्रमत्त होता है। उन्मत्त होता है विक्षिप्त होता है वह कुछ से कुछ कर डालता है। आज ये जितने भी मानव हत्यायें कर रहे हैं इन मानव हत्या करने वालों का मूल अवगुण यही है कि वह इस प्रकार का नशा करके और पीछे ये यह कार्य करते हैं। सारे विश्व के अन्दर एक महान् अशान्ति हो रही है। आज के सम्मेलन का प्रारम्भ बड़ा मंगलमय रहा। इन महापुरुषों की वाणी में कितनी महान् शक्ति है कि वे अपनी वाणी से ऐसा कह दें कि नशा करना महान् अवगुण है इस नशे का फल नरक है, इसके द्वारा अवनति होती है इसके द्वारा हमारा पतन होगा हमको नरकादि योनियाँ मिलेंगी। इन महापुरुषों की वाणी अनमोल वाणी है आज आपने प्रत्यक्ष देखा, प्रत्यक्ष के लिए कोई प्रमाण की आवश्यकता नहीं है हमारी माताओं ने बुजुर्ग लोगों ने, हमारे साथियों ने, हमारे बालकों ने इस मञ्च पर आकर के इस प्रकार से प्रतिज्ञायें की कि हम शराब छोड़ते हैं हम बीड़ी छोड़ते हैं हम गांजा छोड़ते हैं, हम चाय छोड़ते हैं हम गुटका छोड़ते हैं। परन्तु वे ध्यान रखें एक इस प्रकार का सूत्र लिखकर के रखें कि हमने अमुक तारीख को अमुक तिथि को जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के सामने प्रतिज्ञा ली है। यदि यह आपको स्मरण आती रहेगी तो आपके जीवन में बड़ा सुधार होगा।

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज

हमारे जीवन में जो अनेक प्रकार के मादक द्रव्यों का सेवन होता है लोग नशा करते हैं उससे कितनी बड़ी हानि होती है उसके निषेध के लिए उसके निवारण के लिए हमारे विद्वज्जनों ने बड़े ही सारगर्भित भाव व्यक्त किये, नशा नहीं होना चाहिये पर एक नशा होना चाहिये वह नशा है भगवत् स्मरण का नशा, प्रभु के चिन्तन का नशा, सत्संग श्रवण करने का नशा। जहाँ भी सत्संग हो वहाँ अवश्य पहुँचे। भगवत्परक हमारे जितने भी ग्रन्थ हैं श्रीमद्भागवत है रामचरित मानस है श्रीमद्भगवद्गीता, हनुमान–चालीसा आदि है इनके पठन करने का नशा हो। यह नशा बहुत उत्तम है सबका कल्याणकारी नशा है ऐसा नशा हो जीवन में कि कभी उतरे ही नहीं। आजकल गुटका नामक एक बड़ा विलक्षण पदार्थ चला है और अच्छे-अच्छे व्यक्ति उसका सेवन करते हैं। विद्यार्थियों में भी इसका प्रचार हो गया है। ये जो गुटका आता है बाजार में उसमें लिखा भी रहता है कि यह हानिकारक है, यह जो गुटका है इसके प्रयोग से कैन्सर की उत्पत्ति होती है इसमें जहरीला पदार्थ होता है और वह क्या होता है आपको बतावें, ये जो छिपकली होती है जिसको विषमरा कहते हैं उसकी पूँछ काट-कर के उसको सुखाकर के पीसकर के इसमें डाली जाती है, हजारों विषमरा पकड़े जाते हैं और पीपाओं में भरकर के ले जाते हैं जहाँ ये गुटका बनता है और वहाँ उस गुटका में इसका प्रयोग होता है। यह जहरीला होता है उसकी पूँछ लेते हैं और वे अपनी रासायनिक क्रिया से उसमें डालते हैं। जो गुटका सेवन करते हैं उनमें उत्तेजना आती है, शरीर में ये जो उत्तेजना आती है उसका कारण वह विषमरा की पूँछ है। आप सोचिये आपको विषमरा की पूँछ लाकर देवे तो आप पा लेंगे क्या? तो बड़ी विचित्र गति है। यह जो आप बहुत सी सिगरेट लेते हैं सिगरेट जो चिपकाई जाती है उसमें मुर्गी के अण्डों का प्रयोग किया जाता है। हम सबों को पतित करने के लिए न जाने लोग क्या-क्या उपाय करते हैं तो इसको हम समझें। ये मादक द्रव्य यह शराब अत्यन्त हानिकारक है यह मद्य जीवन में परम हानिकारक है। ये ट्रकों की, आपके जयपुर और किशनगढ़ के बीच में दैनिक कोई दिन खाली नहीं जाता होगा जिस दिन कोई घटना नहीं हुई हो इसमें अधिकांश कारण है मद्य का, नशीले द्रव्यों का सेवन करके फिर उनको चलाते हैं उनको ज्ञान नहीं रहता है और इस प्रकार की दुर्घ-टनायें होती है। ऐसे द्रव्यों का सेवन करना हमारे लिए जीवन में अत्यत्त हानिकारक है। आज ये जो प्रसंग चला तो इस अवसर पर हमारे अनेक भगवद् भक्तों ने छोटे-छोटे बालकों ने बालिकाओं ने भी जो कोई गुटका लेते हैं कोई चाय पीते हैं इन सबके परित्याग का उन्होंने संकल्प लिया। सबसे बड़े इस प्रस्ताव की सार्थकता सामने प्रकट हुई है और इसके साथ-साथ एक और बात है जो अत्यन्त आवश्यक है उसके लिए आप सबों ने सम्भवतः ध्यान नहीं दिया होगा। आप हम सब अपने को 'हिन्दू' कहते हैं कैसे कहते हैं हिन्दू आपका क्या चिह्न है। नाक कान हाथ पांव ये सब तो मुसलमान व ईसाई सभी के होते हैं और औरों के भी होते हैं तो कैसे देखने से ही पता लग जाय कि हम हिन्दू हैं वह है हमारी चोटी व शिखा। यदि शिखा नहीं है तो हम अपने आपको हिन्दू कैसे कह सकते हैं, हम धर्मानुष्ठान में विनियोग भी कर तो पहले शिखां बध्वा, यज्ञादि कर्मों में किसी में बैठते हैं तो सबसे पहले शिखा को बाँध

राजस्थान के मुख्यमंत्री माननीय श्री भैरोंसिंहजी शेखावत प्रवचन करते हुए। मंच पर सिंहासनासीन आचार्यवृन्द एवं दायें से बायें बैठे श्रीरामानन्द सागर (बम्बई), श्रीसुभाष सागर (बम्बई), समिति के अध्यक्ष श्रीभीमकरणजी छापरवाल (इचलकरंजी)।

आचार्यश्री महल में आचार्यश्री के समक्ष विराजमान राजस्थान के मुख्यमंत्री श्रीभैरोंसिंहजी शेखावत, श्रीललितकिशोरजी चतुर्वेदी, श्रीरामानन्दजी सागर, श्रीसुभाषजी सागर एवं अनेक सन्त, महात्मा, विद्वज्जन।
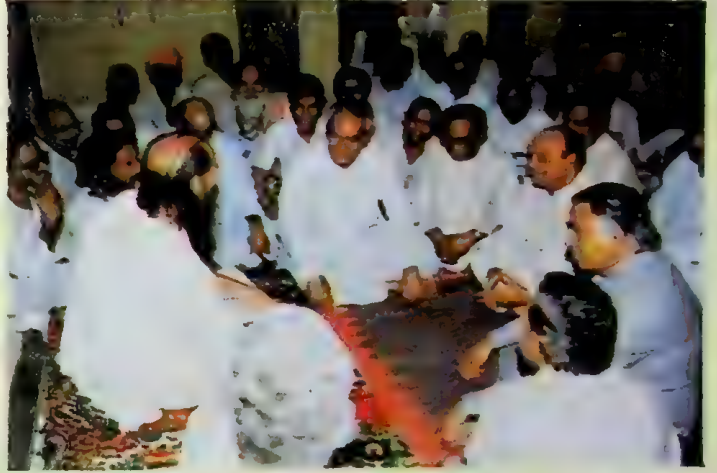
सम्मेलन मंच पर - आचार्यश्री से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए श्रीरवीन्द्रजी जैन, बायें ओर विराजमान विख्यात कथावाचक श्रीशैलेन्द्रजी मुनि (हरिद्वार) म. श्री गोपालदासजी (सांगानेर) दायें ओर पुजारी श्रीराधामाधवशरणजी (निम्बार्कतीर्थ) प्रसिद्ध तबला वादक श्री अशोकजी शर्मा (हाथरस) छड़ी लिए पुजारी श्री हरिशरणजी (नीमगांव)।

आचार्यश्री के तत्वावधान में संस्कृत में शास्त्रार्थ करते हुए दायें पं. श्रीविश्वनाथजी मिश्र, पूर्व प्राचार्य - गंगा शार्दूल राजकीय सं. म. विद्यालय, बीकानेर बायें - नेपाल में सनातन धर्म समिति के अध्यक्ष पं. श्रीखेमराज केशवशरणजी काठमाण्डू ।

रासविहारी युगल स्वरूप श्रीराधाकृष्ण की दिव्य झांकी के समक्ष स्वामी श्रीशिवदयाल गिरिराज[illegible]) समाज गायन करते हुये।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्रीघनश्यामाचार्यजी महाराज झालरिया मठ डीडवाना प्रवचन करते हुए।

शास्त्रार्थपञ्चानन पं. श्रीप्रेमाचार्यजी (दिल्ली) प्रवचन करते हुए। मंच पर सिंहासनासीन आचार्यवृन्द एवं सन्त समाज।

व्रजविदेही चतुः सम्प्रदाय श्रीमहन्त श्रीरासविहारीदासजी महाराज काठिया (वृन्दावन-नया काठियाश्रम) प्रवचन करते हुए, मंच पर समासीन सन्त, महन्त, विद्वज्जन।

अनंत श्रीविभूषित जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीरामेश्वरानन्दजी महाराज (अहमदाबाद) सम्मेलन में उपदेश प्रदान करते हुए।

कर के फिर कार्य में संलग्न होते हैं। शिखा नहीं है चोटी नहीं है तो कर्म करने का हमको अधिकार ही नहीं है, हम यज्ञ में नहीं बैठ सकते सत्कर्म नहीं कर सकते। आज किसी के भी सबसे पहले चोटी को हम लोग हटाते हैं यह दुर्भाग्य की बात है। वनवासी क्षेत्रों में रहने वाले भील लोग हैं उनके भी कम से कम आधे-आधे फुट लम्बी चोटी हमने देखी है किन्तु जो अच्छे पढ़े लिखे लोग हैं उनके यहाँ चोटी के दर्शन नहीं होते चाहे वे बहुत अच्छे विद्वान् हैं बहुत उत्तम हैं श्रेष्ठ हैं परन्तु चोटी का अभाव वहाँ पर भी है। इसलिए शिखा का संकल्प होना चाहिये। हमारे हिन्दुत्व के चिह्न से हम चिह्नित नहीं हैं तो फिर हमारा कैसा स्वरूप है इसलिए कम से कम आप इस चिह्न को धारण करने का भी संकल्प लें। अभी 'क्रम-दीपिका' ग्रन्थ का जो आप सबों ने दर्शन किया जो समर्पण हुआ, यह ग्रन्थ हमारे जगत्‌विजयी आचार्यप्रवर श्रीकेशवकाश्मीरीभट्टाचार्यजी महाराज द्वारा प्रणीत है अत्यन्त प्राचीन ग्रन्थ है इसमें गोपालमन्त्रराज और शरणागति मन्त्र इन दोनों मन्त्रों का सुन्दर वर्णन किया गया है इनके अनुष्ठानों का वर्णन है इनके स्वरूप का वर्णन किया गया है, एक ऐसा सुन्दर अनुष्ठान है बहुविध सरल अनुष्ठान इसमें प्रयुक्त है इसमें बताया गया है कि यह अनुष्ठान यदि कोई करे तो छह महीना के अन्दर वह श्रुतिधर हो जाता है जो भी सुनता है धारण कर लेता है। इतनी बड़ी महिमा है, ऐसे ही गोपालमन्त्रराज के भी अनेक अनुष्ठान हैं जिसको धन चाहिये उस अनुष्ठान के करने से धन भी मिल जाता है, जिसको अन्न की कमी है अन्न मिल जाता है वस्त्र की कमी है उसको वस्त्र मिल जाता है और भी भौतिक साधन भी मिल जाते हैं और भगवत्प्राप्ति कराने वाला तो ये मन्त्र है ही, निश्चित उसके जप करने से स्वयं प्रभु प्रसन्न होकर के उसको अनुगृहीत करते हैं और अपने दिव्य मंगलमय दर्शनों से उसको आह्लादित कर देते हैं ये इस मन्त्र का प्रभाव है। ऐसा यह दिव्य ग्रन्थ है, अनुपम ग्रन्थ है ऐसी इसकी विशेषता है। विद्वन्मूर्द्धन्य पं. श्रीहरिशरणजी शास्त्री ने इसका भाषानुवाद कर सम्प्रदाय का महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित किया है। श्रीसर्वेश्वर प्रभु के कृपा प्रसाद से हमारे प्रेस के व्यवस्थापक जिनको मैनेजर कहते हैं श्रीभँवरलालजी उपाध्याय उन्होंने बड़ा परिश्रम करके और प्रेस के कम्पोजीटर हैं उन सबने भी बहुत परिश्रम के साथ इस ग्रन्थ का आचार्यपीठ में ही यहीं के प्रेस में ही इसका मुद्रण हुआ और बहुत सुन्दर मुद्रण हुआ है। आज जगत्‌विजयी श्रीकेशवकाश्मीरीभट्टाचार्यजी महाराज जिनके चित्रपट का आप दर्शन कर रहे हैं आज उनका पाटोत्सव का दिन है। इस परम पावन पाटोत्सव अवसर पर इस ग्रन्थ का समर्पण समारोह हुआ और इसके साथ-साथ हमारे पं० प्रवर श्रीसत्यनारायणजी शास्त्री यज्ञाचार्य जो आशुकवि भी हैं इन्होंने श्रीनिम्बार्क भगवान् का बड़ा पावन चरित भी बड़े सुन्दर शब्दावली में रचना की हिन्दी अनुवाद के साथ-साथ, फिर बोले कि इस सम्मेलन के अवसर पर इसका प्रकाशन हो जाय तो, हमने कहा मुद्रणालय में तो यहाँ अवसर है नहीं आप अजमेर में इसका प्रकाशन करा लें और जो भी इसमें व्यय होगा वह पीठ की ओर से होगा आप विचार न करें इन्होंने तत्काल अजमेर में प्रकाशन करा के संग के संग यह ग्रन्थ भी आपके सामने प्रस्तुत कर दिया जिसका नाम आपने रखा है "निम्बार्कोदयम्" आज इसका भी यहाँ पर समर्पण समारोह हुआ इस प्रकार इन दोनों ही ग्रन्थों का अद्भुत कार्यक्रम यहाँ पर सम्पन्न हुआ। अब अधिक समय न लेते हुए हम अपनी वाणी को यहीं विराम देते हैं। ★

विश्व शान्ति सम्मेलन : द्वितीय सत्र

सभा संचालक : श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी महाराज

सनातन धर्म सम्मेलन २२ मई से निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में हो रहा है इससे पूर्व ३-४ दिनों में पुरी शंकराचार्य माननीय श्रीनिश्चलानन्दजी महाराज, पूज्य श्रीवामदेवजी महाराज और अन्य महानुभाव पधार चुके हैं और उनकी कृपा से हमने इस सम्मेलन में गो-रक्षा के सम्बन्ध में, गाय की हत्या देश में बन्द हो उसके लिए केन्द्रीय और प्रादेशिक सरकारों के कानून बनें और इसमें जो शिथिलताएँ हैं उसे दूर करने के लिए तत्काल कदम उठाने की बात कही है, इसके साथ ही हमने राजस्थान के मठ-मन्दिरों के सम्बन्ध में सरकार ने जो समितियाँ बनाकर के मन्दिरों में सरकारी हस्तक्षेप करना चाहती है उसे रोकने के लिए हमने महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए हैं। राजस्थान में हजारों की संख्या में मन्दिर हैं वह सारी जनता के बनाये हुये, सारे समाज के बनाये हुये, सम्प्रदायों के बनाये मठ-मन्दिर हैं इनमें कोई सरकार का लेना-देना नहीं था केवल कुछ जमीनों की भेंट होने के कारण इन मन्दिरों का सरकार के साथ साधारण सम्बन्ध रहा था, उस साधारण सम्बन्ध को हमारी सरकारों ने असाधारण सम्बन्ध बना दिया और सारे मन्दिरों की व्यवस्था में एक नया परिवर्तन लाने का संकल्प अभी-अभी फरवरी महीने में किया है उसका घोर-विरोध इस सनातन धर्म सम्मेलन के द्वारा किया गया था इसके साथ-साथ पाठ्यक्रमों में परिवर्तन करना नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा के पाठ उसमें संयोजित करना स्थापित करना और नशा उन्मूलन के सम्बन्ध में भारतीय जनता को जागृत करना। आज के प्रातःकाल के सत्र में इस अपार भीड़ में सैकड़ों की संख्या में लोगों ने बीड़ी, तम्बाकू, शराब, गुटका आदि के सारे के सारे नशे यहाँ आकर के पूज्य आचार्यचरणों के समक्ष छोड़ने का संकल्प लिया, एक आदर्श स्थापित किया इस प्रकार नशा उन्मूलन देवस्थान के द्वारा मन्दिरों का एक प्रकार से अतिक्रमण और यह सारी की सारी समस्याएँ हैं उन पर गम्भीरता पूर्वक चिन्तन और मनन किया गया। आज बड़ा सौभाग्य है कि हमारा जो सायंकालीन सत्र है यह विश्व शान्ति के सन्दर्भ में है विश्व में शान्ति कैसे हो, सारे विश्व में जो लड़ाइयाँ-झगड़े, देश-देश में राग-द्वेष, जाति-जाति में राग-द्वेष, प्रान्त-प्रान्त में राग-द्वेष, परिवार-परिवार में अशान्तियाँ, सड़क पर अशान्ति, बाजार में अशान्ति, सभाओं में अशान्ति, लोकसभा में अशान्ति, विधान सभा में अशान्ति जहाँ जाओ वहाँ अशान्ति इस सारी अशान्ति पर शान्ति की विजय कैसे होगी यह महत्वपूर्ण प्रश्न हमारे सामने उपस्थित है। सारी परम्परा को आदेश देने वाले श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज, श्रीवल्लभाचार्यजी महाराज, श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराज और पूज्य श्रीशंकराचार्यजी महाराज जो हमारे बीच पधारे हैं इनसे आज आशीर्वाद लेने की हम कामना करते हैं।

श्रीमनुदेवजी भट्टाचार्य

श्रीसम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष आदरणीय श्रीमनुदेवजी भट्टाचार्य ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा—विदुर ने महाराज युधिष्ठिर से कहा कि वास्तविक बात कहने वाले सुनने वाले बहुत कम हैं। तो सज्जनों हम तो यहाँ अपनी कमजोरी को प्रकट करते

आये हैं। प्रश्न है पर्यावरण संशोधन का, पर्यावरण के ऊपर सभी लोग चिन्ता कर रहे हैं राष्ट्र संघ भी चिन्ता कर रहा है, सरकार भी चिन्ता कर रही है। लेकिन यह चिन्ता जो है जल के ऊपर रेखा निर्माण के समान है। हिन्दुत्व यदि सुरक्षित रहेगा पर्यावरण सुरक्षित रहेगा हिन्दुत्व अर्थात् वास्तविक यथार्थता। यदि हम वास्तविक यथार्थता पर विचार करें तो मानव और हिन्दू यह दोनों पर्याय शब्द हैं व्यक्ति जन्म से हिन्दू होता है हमारे बहुत से भाई हैं जो अपने को हिन्दू नहीं कहते, हमारे बहुत से मित्र भी हैं जो अपने को हिन्दू नहीं कहते। एक बार हिन्दू विश्वविद्यालय में एक गोष्ठी हुई वहाँ सब लोग टाई वाले थे हम ही एक चुटैयाधारी बैठे थे, वहाँ पर यह विषय रखा गया था कि पण्डित और वैज्ञानिक में क्या भेद है वहाँ सौभाग्य–दुर्भाग्य से मैं ही एक पण्डित था बाकी सब वैज्ञानिक थे और लोगों ने यही समाधान किया कि पण्डित माने जो बिना समझे विषय को मान लेता है और वैज्ञानिक जो समझने के बाद विषय को मानता है यह पण्डित और वैज्ञानिक का भेद किया गया। वैज्ञानिक माने जो समझने के बाद विषय को मानता है वह लेबोरेट्री में अरबों रुपये का एक्सपेरीमेन्ट कर देता है राष्ट्रसंघ जब बोलता है तब कहता है कि पेड़ नहीं काटना चाहिये, जब फ्रान्स कहता है तब कहता है गंगाजी में पेशाब नहीं करना चाहिये लेकिन हमारे यहाँ एक अनपढ़ भी गंगाजी एक अलग बात गाँव में बरषात के जमे हुये जो पानी का दल-दल है उसमें भी पेशाब नहीं करेगा वह इतनी अंग्रेजी नहीं पढ़ा होता है वह एक्सपेरीमेन्ट के नाम पर लेबोरेट्री में बैठकर शराब नहीं पीता है लेकिन वह वैज्ञानिक है। हमने कहा भाई आप लोग रीबर्थ मानते हैं या नहीं, वैज्ञानिक लोग पुनर्जन्म को रीबर्थ से मानते हैं। उन्होंने कहा हाँ-हाँ मैं मानता हूँ तो हमने कहा कि आप तो सब वैज्ञानिक हैं बिना समझे इसको नहीं मान सकते, पुनर्जन्म मानना होता है पुनर्जन्म मानना, आत्म अस्तित्व मानना और कर्मफल मानना सारी की सारी परम्परा इसी में माननी पड़ेगी जो कि हिन्दुत्व के द्वारा आविष्कार है। वास्तव में पर्यावरण जो प्रदूषण है यह वर्तमान वैज्ञानिकों की देन है। मैं बचपन से जानता हूँ गंगाजी में कूड़ा-करकट तो फेंकना अलग गंगाजी की तरफ कोई पैर करके भी नहीं सोता था आज भी ऐसी जनता गांवों में मिलेगी आपको जो गंगाजी क्या काशीजी की ओर पैर करके नहीं सोती है। लेकिन इस आधुनिक शिक्षाओं ने हमारी इस वैज्ञानिक धारणा को अन्धविश्वास, ब्राह्मणों के पेट भरने की विद्या कहा है।

एक बार काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक सम्मेलन हुआ पाँच दिन सम्मेलन हुआ उसके बाद प्रेस रिपोर्टर प्रेस कान्फ्रेस किया गया दुर्भाग्य से मैं उस समय प्रेस में ही काम करता था तो आत्मारामजी ने कहा प्रेस रिपोर्टर ने पूछा क्या उपलब्धि है इस सम्मेलन की तो बोले पाँच उपलब्धि है। क्या-क्या, तो पहली नदी में कूड़ा मत फेंकों, दूसरी अग्नि में कूड़ा-करकट मत डालो, तीसरी वृक्ष लगाओ और दो हमको याद नहीं। हमने कहा आत्मा-रामजी यह तो मनुस्मृति की बातें हैं आपने जो ३ अरब रुपया खर्च करके साइन्स कान्फ्रेस किया इसमें क्या उपलब्धि निकली और उपलब्धि निकल भी नहीं सकती क्योंकि साइन्स तो स्वयं अपने में एक कौआ का दाँत है यह तो सब मनुस्मृति की बात है। तो सज्जनों हिन्दुत्व सुरक्षित रहेगा जिस समय मानवता रहेगी और उसी के बाद आगे सब धर्म बनेगा। हमारे

यहाँ आचार–विचार की परम्पराएँ हैं उनकी हम रक्षा करें, धर्म का तात्पर्य है कि जो धारण करता है आज भी हम जो यह चन्दन भस्म लगाते हैं इसका यदि कभी मेडीकल टैस्टिंग किया जाये तो दुनियाभर का शौपिंग सेन्टर बन्द हो जायगा। हमारे घर से गोपालन, गो-सेवा दूर हो गई लेकिन सज्जनों वह दिन दूर नहीं है जब गो-मूत्र का इन्जेक्शन निकलेगा और गोबर का टेबलेट निकलेगा और उसको हम लोग खरीदकर खायेंगे लेकिन उस समय वह गो-मूत्र गोमय नाम से नहीं वह जी. एम. ६१, जी. एम. ६२ कुछ इन्हीं नाम से निकलेगा, हम इसीलिए कहते हैं कि हिन्दुत्व की रक्षा हो, हमारे शास्त्र की वैज्ञानिक प्रायोगिकता सामने आये तो भारत का विश्व का क्या ब्रह्माण्ड का पर्यावरण ठीक हो जायेगा।

श्रीखेमराजकेशवशरणजी शास्त्री, नेपाल

सारा संसार विश्वशान्ति के लिए तड़फ रहा है पर विश्वशान्ति का उदय नहीं हो पाता, हमारे उन महान् पूर्वजों की ओर ध्यान दें हम उस मन्त्र को बार-बार रटा करते हैं उच्चारण किया करते हैं पर उसके उन परम पावन सन्देशों को कितना मनन किया है थोडा सा गौर से हम देखें। ऋग्वेद से गून्ज रहा है वह मन्त्र-"द्यौः शान्तिः, अन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिः, आपः शान्तिः, औषधयः शान्तिः, वनस्पतयः शान्तिः, विश्वदेवोः शान्तिः, ब्रह्म शान्तिः, सर्वं शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः, सामाशान्तिरेधिः" इस पावन मन्त्र के एक-एक पहलू को आप गौर से देखें कितनी विश्व व्यापिनी शान्ति चिन्ता हमारे पूर्वजों ने प्रकट की। आज स्टारवार का जमाना आ गया है अन्तरिक्ष में अत्यन्त घनघोर युद्ध के भयावने वातावरण मण्डरा रहे हैं ऐसी स्थिति में पता नहीं उस ऋतम्भरा प्रज्ञा के धनियों ने यह दिन भी आयेंगे मनुष्य के इतिहास में, यह कैसे ताड़ लिया होगा उसी वक्त उन्होंने कहा अन्तरिक्षं शान्तिः सारा अन्तरिक्ष मण्डल हमारा शान्तिमय बने और पृथ्वी शान्तिः सारा भू-मण्डल शान्तिमय बने, सम्पूर्ण जलीय क्षेत्र शान्तिमय बने इसके लिए आपः शान्तिः करके उन्होंने प्रार्थना की। समय बदल गया आज मनुष्य कितना लालायित हो गया है पैसे के पीछे, पैसे को जीवन का सर्वस्व मान रखा है तो हमारे पूर्वजों को आज के मनुष्य का जो होने वाला हाल है उसी समय हृदय में आभासित था। औषधः शान्तिः औषध जगत् में कोई अशान्ति न आ सके निर्बाध गति से हमारी औषधियाँ चलती रहें कितनी बड़ी हमारी वैदिक संस्कृति धर्म की है और इसके बाद सारा क्षेत्र आ जाता है, वनस्पति जगत् की जो चिन्ता आज सारे संसार में व्याप्त है समस्त पेड़-पौधों के जीवन संकट की स्थिति आ गई है और वे नष्ट किये जा रहे हैं। लगाये जाते हैं पर उनका संरक्षण नहीं हो पाता। इन सारी चिन्ताओं को उसी समय उन्होंने ताड़ लिया था और उच्च स्वर से कहा था वनस्पतयः शान्तिः चारों ओर हरियाली बनी रहे सारा संसार शान्तिमय वातावरण से घिरा रहे यह उन्होंने मंगलमयी प्रार्थना की। संसार के सुख के कल्याण के शान्ति स्थापना के सारे भाव हमारे परम पूज्य प्रातःस्मरणीय पूर्वजों ने अपनी उन अभिव्यक्तियों में प्रकट की है। आज भी संसार को शान्ति देने का सामर्थ्य कोई धर्म रखता है कोई संस्कृति रखती है तो वह केवल हिन्दू धर्म है और हिन्दू संस्कृति है। यह हमारे मुख से कहने की अब बात नहीं रही सारा संसार

इस बात को शिर झुकाकर मान रहा है। हिन्दू संस्कृति का सन्देश है कि मनुष्य जीवन मुक्ति द्वार है आध्यात्मिक साधना के उच्चतम स्तर तक आ चुके हो अब तुम्हें वंचित नहीं होना है अपनी साधना के उस पथ पर चलना है वंचित मत रहो, पकड़ लो किसी को भी पकड़ लो प्रभु राम को पकड़ लो प्रभु कृष्ण को पकड़ लो, प्रभु शम्भू सदाशिवशंकर को पकड़ लो जगत् माता दुर्गाभवानी को पकड़ लो अपने आराध्य इष्ट, किसी को भी पकड़ लो पर आध्यात्मिक साधना से वंचित मत बनो, तुम्हारे लिए सहस्रों द्वार है सारी नदियाँ जैसे महासागर में जाती है उसी तरह से सारी मानवीय भावनायें अन्त में एक ही प्रभु को प्राप्त होकर धन्य हो जाती है यह मानने वाला धर्म विश्व में हिन्दू धर्म है। हिन्दू धर्म संस्कृति बताती है तुम अपने आराध्य को अपनी रुचि के अनुसार ले लो पवित्र आराधना करो आध्यात्मिक साधना को अपनाओ और जीवन को धन्य बनाओ, शान्ति को प्राप्त हो जाओगे यही एकमेव निर्विकल्प उपाय है शान्ति का ऐसा बताने वाला धर्म केवल सनानत धर्म है हिन्दू धर्म ही है।

श्रीरामानन्द सागर

भगवान् श्रीकृष्ण के प्राकट्य के पश्चात् एक स्थान पर आया है जब महर्षि गर्ग प्रभु का नामकरण करने आते हैं वृन्दावन-गोकुल में उस समय छिपकर श्रीनारदजी भी आये हैं। नारदजी भी निम्बार्क सम्प्रदाय ही के हैं क्योंकि इससे नारद सम्प्रदाय भी कहते हैं मैं यह नहीं जानता था परन्तु मेरे मन में नारदजी के प्रति श्रद्धा थी। जैसा आज तक हम इतने वर्षों से नारदजी को दिखाते आ रहे थे वह वेद सम्मत नहीं था, धर्म सम्मत नहीं था। हम उनको केवल एक कोमेडियन बनाकर दिखाते थे। नारदजी जैसा परम भक्त तो सारे विश्व में कोई भी नहीं है वे परम भक्त, महाज्ञानी और उनके प्रति मेरी बड़ी श्रद्धा थी तो मैंने उनका सारा चरित्र का चित्रण किया है वह उसी श्रद्धा और भक्ति से किया है। तो जब प्रभु का नामकरण किया गया उस नाम की क्या-क्या शक्ति है और कैसे वह रहेगा यह गीत आप रवीन्द्रजी जैन से सुनिये। बड़ी ही मधुर और सरस ध्वनि में श्रीरवीन्द्रजी ने वह गीत सुनाया जिसे सुनकर सारा जनमानस श्रद्धामय हो उठा।

श्रीमुक्तानन्दजी महाराज

हिन्दू धर्म और सनातन धर्म सारी समस्याओं का समाधान है ऐसी बातें कई दिन से आप सुन रहे हैं अब प्रश्न यह है कि यह हिन्दू धर्म अपना प्रभाव दिखाता क्यों नहीं है, क्या कारण है। देखो बहुत बड़ा एक टप है उसको हम भरना चाहते हैं और उसमें आधे इंच का नल लगा हुआ है तो वह आधे इंच के नल से उसको भरने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन उसमें जो एक फुट का छेद है जो उसमें पानी को ठहरने ही नहीं देता उस तरफ हमारा ध्यान बहुत कम जाता है। धर्म का प्रचार हम सारे देश में जोर से कर रहे हैं धर्म अनुष्ठान भी कर रहे हैं लेकिन इस धर्म के प्रभाव को कौन समाप्त कर देता है उस तरफ हमारा ध्यान बहुत कम है। अभी कोई चार-पाँच साल पहले वृन्दावन में वैज्ञानिकों ने एक प्रयोग किया कि यज्ञ से वर्षा होती है ऐसा हमारे शास्त्र कहते हैं तो विधिवत् अनुष्ठान के साथ वह यज्ञ हुआ और यज्ञ से

वादल वने लेकिन एक मशीन भी वहाँ लगी हुई थी जो दुनियाँ में वहुत ही सक्षम मशीन बनाई गई थी, वह यह देख रही थी कि ये बादल कहाँ जाते हैं तो उस मशीन ने बताया कि बादल तो बनते हैं लेकिन उन बादलों को कोई खा जाता है अब कौन खा जाता है उसको, तो एक अनिल नाम का वैज्ञानिक जो उस मशीन पर काम कर रहा था उसने देखा कि कोई धुँआ है जो उस बादल को आगे खा जाता है तो वह अनिल धुँए के पीछे-पीछे मशीन से गया और जाकर देखा कि मथुरा में जो रिफायनरी है वहाँ से जो धुँआ उठता है वह उन बादलों को खा जाता है। उसने जब यह रिपोर्ट लिखी तो अचानक यह सारा प्रयोग भारत सरकार ने बन्द करवा दिया और वहाँ से सब वैज्ञानिक एक ही साथ एक घन्टे के अन्दर सब दिल्ली पहुँच गये और वह प्रयोग वहीं बन्द हो गया। उसकी रिपोर्ट आज तक नहीं छपी, उस अनिल ने एक पर्चा उस रिपोर्ट का छापा तो उस पर प्रतिबन्ध लग गया तो ऐसा है यह जो सनातन धर्म है हिन्दू धर्म है इसको खाने वाला कौन है इसकी पहचान बहुत आवश्यक है। सारी दुनियां में जितनी भी राज्य व्यवस्थायें व कानून हैं वह सब इस हिन्दू धर्म और सनातन धर्म के विपरीत हैं। इन कानूनों के अन्तर्गत हमको जिन्दा रहना होता है इन कानूनों के अन्तर्गत हम अपने आश्रम बनाते हैं, अपनी सभायें करते हैं इन कानूनों के अन्दर ही सुबह से शाम तक जीवन चलता है ये सारे कानून शान्ति के और पर्यावरण के विरुद्ध हैं उन कानूनों के रहते हुए हम शान्ति का नारा लगाते रहें उससे शान्ति नहीं होगी जब तक यह संसार की कानूनी व्यवस्था रहेगी तब तक इस संसार में शान्ति नहीं हो सकती, क्यों नहीं हो सकती संसार के सभी विद्वानों ने, सभी राजनेताओं ने, सभी वैज्ञानिकों ने, सभी प्रभावशाली धनिकों ने विकास की एक परिभाषा बनाई है कि दुनिया में सबसे बड़ा देश कौन, सबसे प्रतिष्ठित व्यक्ति कौन, जिस देश में प्रति व्यक्ति साबुन, तेल, चीनी, शराब, लोहा, कपड़ा प्रतिव्यक्ति ज्यादा खर्च हो वह देश पहले नम्बर का देश। इस हिसाब से सारी दुनियाँ का बंटवारा किया है और सारी दुनियाँ ने उसे स्वीकार किया है। इसमें पहले नम्बर का देश कौन सा आता है जिसमें भोग सामग्री प्रति-व्यक्ति ज्यादा से ज्यादा खर्च होती हो, तो फिर जब भोग सामग्री के आधार पर बड़प्पन की परिभाषा निश्चित होगी तो फिर यह सनातन धर्म कहाँ ठहरेगा, यह हिन्दू धर्म कहाँ ठहरेगा क्योंकि हिन्दू धर्म तो यह कहता है सादा जीवन उच्च विचार, जो कम से कम भोग सामग्री से अपना जीवन चलाये वह बड़े से बड़ा आदमी और जिसके पास ज्यादा से ज्यादा भोग सामग्री हो वह निकृष्ट व्यक्ति, तो इस तरह से कैसे हिन्दू धर्म और सनातन धर्म की स्थापना इस परि-वेश में होगी, सनातन धर्म और हिन्दू धर्म पर यह सबसे बड़ा प्रहार है। वह पहला प्रहार है संसार ने जो विकास की परिभाषा बनाई है उस विकास की परिभाषा के कारण है। इसलिए सनातन धर्म और हिन्दू धर्म की स्थापना का पथ प्रशस्त तभी होगा कि हम इस परिभाषा को बदलें यदि यह परिभाषा न बदली गई तो हम चाहे जितना शोर मचाते रहें कभी भी शान्ति स्थापित नहीं हो सकती। दूसरी बात भोजन के बारे में है। आज संसार में भोजन की, किस भोजन की प्रतिष्ठा है आप अपने देश में ही देखते होंगे कि टेलीविजन पर अण्डे का खूब प्रचार हो रहा है। टेलीविजन में गाय के दूध के गुणों पर कभी विचार नहीं होता है। हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए दूसरा चरण है भोजन, क्योंकि भोजन से मन बनता है जैसा खावोगे अन्न वैसा

बनेगा मन और सनातन धर्म ने तो भोजन पर बड़ी शोध की है ऐसा भोजन मनुष्य को मिले जिससे सुख शान्ति उसके आचरण में पैदा हो। तीसरी बात है हमारी जीवन पद्धति। हमारी जीवन पद्धति में सनातन धर्म हिन्दू धर्म ने दो मूल्य स्थापित किये हैं एक संयुक्त परिवार और दूसरा पतिव्रता धर्म है। आज की कानून व्यवस्था इन दोनों के विरुद्ध है। हिन्दू धर्म के जो मूल आधार हैं उन पर आज की कानून व्यवस्था भारत की भी और सारे संसार की चोट करती है इसलिए जब हम शान्ति और पर्यावरण की बात सोचते हैं तो शान्ति और पर्यावरण केवल वृक्ष लगाने से नहीं होगी, केवल शान्ति-शान्ति कहने से शान्ति नहीं होगी, हिन्दू धर्म और सनातन धर्म की जय कहने से नहीं होगी। इसलिए आज हमने भारत के समस्त सम्प्रदायों के सन्तों को इकट्ठा करने का एक प्रयास शुरु किया है। अखिल भारतीय सन्त समिति के तत्त्वावधान में सभी सन्तों को हम इकट्ठा कर रहे हैं जो सन्त इकट्ठा हो रहे हैं किसी राजनैतिक पक्ष को राज दिलाने के लिए इकट्ठा नहीं हो रहे हैं। सन्त समिति का उद्देश्य है भारत में हिन्दू धर्म सनातन धर्म की पुनःस्थापना हो, उसके मूल्यों की स्थापना हो और जो व्यवस्था उसको तोड़ने का काम कर रही है उसके खिलाफ एक जन आन्दोलन इस देश में हो। उस जन आन्दोलन को जो भी सहयोग करेगा उसके हम पक्षधर हैं।

श्रीभैरोंसिंह शेखावत

यह मेरा सौभाग्य है कि आज इस अवसर पर उपस्थित होकर धर्माचार्यों के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं इन समस्त आचार्यों के प्रति यह आभार प्रकट करना चाहूँगा कि उन्होंने राजस्थान की धरती पर पैर रख कर इस धरती को पवित्र किया है और श्रोताओं का मार्गदर्शन कर उनके मन को शुद्ध बनाया है, मैं जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज के प्रति आभार प्रकट करना चाहूँगा कि उन्होंने ५० वर्ष तक इस पीठ में रहकर लोगों का शिक्षण किया, उपदेश दिया, मार्ग दर्शन किया यह उसी का परिणाम है कि आज सारे भक्तजन इस स्वर्णजयन्ती के अवसर पर उनका दर्शन करने के लिए यहाँ उपस्थित हुये हैं। राजस्थान के लिए बहुत ही सौभाग्य का दिन है। आप जानते हैं कि धर्माचार्यों के समक्ष धर्म के विषय में चर्चा करना यह मुझ जैसे व्यक्ति का काम नहीं है मैं केवल धर्माचार्यों के आदेश का पालन करने वाला हूँ, आज श्रीरविन्द्रजी जैन ने एक पगडण्डी बना दी मैं उसी पगडण्डी पर चलता हुआ अपने विचार आपके समक्ष प्रस्तुत करना चाहता हूँ। यह बात सही है कि राम आज घट-घट में है लेकिन यह बात भी सही है कि धर्माचार्यों ने और श्रीरामानन्दजी सागर ने यह राम घट-घट में क्यों है इसका जिस सुन्दरता से विश्लेषण किया है यह केवल उसी का परिणाम है कि राम केवल भारत में ही नहीं आज विश्व में मर्यादापुरुषोत्तम राम के रूप में जाने गये हैं। भगवान् राम और कृष्ण को कौन नहीं जानता लेकिन जिस रूप में इस समय भगवान् राम और कृष्ण को रखा गया है हर व्यक्ति के मन में उस राम का आदर्श उपस्थित हुआ है। मैं समझता हूँ कि इधर राममन्दिर का प्रश्न और उधर श्रीरामानन्दजी सागर की रामायण, इन दोनों ने जिस प्रकार की भावनायें एकत्रित की हैं यह उसी का नतीजा है कि आज सारा संसार हिन्दुस्तान की तरफ इस गति से देख रहा है कि यह देश संसार में मार्गदर्शक है और आज की परिस्थितियों में भी मार्गदर्शन करे। ऐसी स्थिति में ६ दिसम्बर की

घटना हमारे देश का एक महत्वपूर्ण दिन है ६ दिसम्बर को एक ढांचा टूटा वह ढांचा टूटने के साथ ही जैसे हर व्यक्ति के मन में बिजली का करन्ट पैदा हुआ हो उसी प्रकार से मन्दिर बनाने की इच्छा लोगों के मन में जागृत हुई, दुर्भाग्य है कि इस इच्छा की पूर्ति में कई लोग बाधा के रूप में खड़े हैं लेकिन जिस प्रकार का वातावरण बनता जा रहा है उस वातावरण के आधार पर कोई भी आदमी निश्चित रूप से कह सकता है कि अयोध्या में भगवान् राम के जन्मस्थान पर भगवान् राम का मन्दिर निश्चित रूप से बनेगा। आज धर्माचार्यों ने जिस प्रकार का वातावरण बनाया उसमें राष्ट्र की एकता के प्रश्न को लोगों ने गम्भीरता से लिया है इस एकता के आधार पर देश कितना ऊँचा चढ़ सकता है इसकी लोगों ने कल्पना की है और इस कल्पना को साकार रूप देने के लिए इस प्रकार के धर्माचार्य आज सारे देश का प्रवास कर वस्तुस्थिति से लोगों को परिचित करा रहे हैं। अभी यहाँ दो-तीन बातों का जिक्र किया गया, एक कहा गया कि राजस्थान की सरकार ने हाल ही में राजस्थान की सरकार में जितने भी ट्रस्ट न्यास बने हुए हैं और जिनकी कुल आय १ लाख रुपये से अधिक है उन सब में उनकी व्यवस्था चलाने के लिए सरकार के मनोनीत सदस्यों के हाथ में काम देने का निर्णय लिया है उसका विरोध हो रहा है लेकिन मैं आचार्यश्रीचरणों में यह कह सकता हूँ कि सरकार ने जो अधिसूचना जारी की है उसको फाड़कर फैंक देने की ताकत हिन्दुस्तान की जनता में है और आपका आशीर्वाद निश्चित रूप से मिलेगा और इस आशीर्वाद के आधार पर मै कह सकता हूँ कि इस अधिसूचना को राजस्थान में लागू नहीं करने दिया जायगा। कहीं इसमें कोई सन्देह करने की आवश्यकता नहीं है। आज राजस्थान में जितने भी मन्दिर हैं जितनी भी धर्मशालायें हैं यहाँ तक कि कबूतरखाने हैं, जितनी भी शिक्षण संस्थायें हैं उन सारी संस्थाओं को अपने नियन्त्रण में लेना यह किसी भी सरकार के लिए उचित नहीं होता। सामाजिक सेवाओं में जनता के सहयोग की अपेक्षा की जाती है लेकिन दुर्भाग्य है सरकार सहयोग न लेकर जो सहयोग देने वाले हैं उनको सहयोग देने से वंचित रखना चाहती है यह चीजें चलने वाली नहीं। यहाँ पर्यावरण का जिक्र किया गया, पर्यावरण के सम्बन्ध में आजकल इस देश में जितनी चर्चायें होने लगी है उसका कारण तो कुछ और है। पर्यावरण के नाम पर हिन्दूस्तान में उद्योग बन्द हो, पर्यावरण के नाम पर बेकारी की समस्या बढ़े लोगों के सामने रोटी और रोजी का सवाल पैदा हो लेकिन असली पर्यावरण कहाँ शुद्ध हुआ है दो शब्दों के साथ और इन दो शब्दों के ऊपर की गई कार्यवाही के साथ हुआ है। संविधान लागू होने के तीस वर्षों के पश्चात् दो शब्द जोड़े गये, एक समाजवाद का दूसरा जोड़ा गया धर्म निरपेक्षता का। समाजवाद की तो हालत आपने देख ली जहाँ से समाजवाद पैदा हुआ था उस रूस में से समाजवाद गायब हो गया। समाजवाद गायब होने के साथ ही रूस के टुकड़े-टुकड़े हो गये और एक बहुत बड़ी महाशक्ति एक छोटे से राष्ट्र के रूप में हमारे सामने खड़ी है। भारत सरकार ने भी उसी प्रकार से व्यवस्था की, समाजवाद को छुट्टी दे दी लेकिन पिछला चुनाव समाजवाद के आधार पर लड़ा और चुनाव लड़ने के बाद समाजवाद को भूल गये और आर्थिक क्षेत्र में उदारीकरण की बात शुरु कर दी यहाँ भी समाजवाद को छुट्टी दे दी। समाजवाद को छूट दे दी तो आज वह कोई भी व्यक्ति यह नहीं कहता कि आपने सविधान का उल्लंघन किया है। संविधान में

ये जो शब्द हैं वो भी प्रस्तावना में शब्द हैं संविधान में उसका और कहीं उल्लेख नहीं है। धर्मनिरपेक्ष का भी प्रस्तावना में उल्लेख है उसका भी संविधान में कोई उल्लेख नहीं है लेकिन समाजवाद को तिलाञ्जलि दी तो कोई यह कहने को तैयार नहीं है कि आपने संविधान का उल्लंघन किया और जब धर्मनिरपेक्षता की असलीयत लोगों के सामने रखी कि धर्मनिरपेक्ष किस प्रकार से इस हिन्दुस्तान में प्रदूषण पैदा कर रहा है इस बात को जब लोगों के सामने रखा गया तो लोग कहते हैं कि धर्मनिरपेक्ष संविधान का एक मूल अंग है और इसका उल्लंघन करना संविधान का उल्लंघन है। मैं ऐसा समझता हूँ कि आज प्रदूषण सबसे ज्यादा फैला है तो भारतीय संस्कृति में प्रदूषण फैला है, भारतीय धार्मिक व्यवस्थाओं में प्रदूषण फैला है यह प्रदूषण कानून से नहीं मिट सकता, यह प्रदूषण कोई पार्लियामेण्ट में कानून बनाकर उसको पास कर दे उससे नहीं मिट सकता। मैं निवेदन करना चाहूँगा इस प्रदूषण को रोकने की ताकत इन सारे धर्माचार्यों, सन्त-महन्तों में है बाकी किसी में भी इस प्रकार की ताकत नहीं है और इस विश्वास के साथ मैं यह कह सकता हूँ कि श्रीरामानन्दजी सागर और श्रीरविन्द्रजी जैन जब इस प्रकार की बातें सारे समाज के सामने रख रहे हैं, धर्माचार्यों के आदेश से लोग इस प्रकार की स्थिति में आ रहे हैं तो आप विश्वास रखकर चलिये कि यह प्रदूषण मिटाना मामूली हस्ती का काम नहीं सारे शंकराचार्य, जगद्गुरु, महन्त, सन्यासी मण्डल जिस दिन एकत्रित होकर इस धर्म की सही व्याख्या को लेकर इसके प्रदूषण को मिटाने का अभियान चलायेंगे कोई ताकत हिन्दुस्तान में नहीं आ सकती कि उस समय इस प्रदूषण को मिटाया नहीं जा सके।

गोस्वामी श्रीवल्लभरायजी महाराज

इस स्वर्णजयन्ती महोत्सव में विराट् सनातन धर्म का भी सम्मेलन हो रहा है यह भी एक बड़ा ही समुचित कार्य हो रहा है क्योंकि आज हमारे देश में जो परिस्थिति हो रही है और जिन स्थितियों से हम गुजर रहे हैं उस समय पर हमारे देश में और विदेश में रहने वाले जो भारतीय जनता है उनके हृदय में सनातन धर्म के गौरव की भावना का पुनः जागरण होना परम आवश्यक है। हिन्दू संस्कृति क्या है और विश्व में शान्ति किस प्रकार स्थापित हो सकती है, हमारी शिक्षा का क्या स्वरूप हो सकता है, हमारी महिला शक्ति का भी क्या सामर्थ्य है इन सब बातों पर धर्माचार्यों के नेतृत्व में और हमारे सन्त-महन्तों के सान्निध्य में जब यह कार्यक्रम हो रहा है तब मुझे यह आशा है कि इन तत्त्वों को हमारा समाज सच्चे अर्थ में समझने के लिए सक्षम हो पायेगा। आज धर्म का नाम लेना भी कुछ लोग समझते हैं कि बहुत बड़ा अपराध है, लोगों में यह भावना पनप गयी है कि धर्म तो कोई बुढ़े लोगों का जो जिनकी उम्र ५० वर्ष से ऊपर हो गई हो उन लोगों के अनुसरण के लिए, उनके मनोरंजन के लिए कोई तत्त्व हो वह धर्म है लेकिन वास्तव में हमारे ऋषि-मुनियों ने, हमारे पूर्वाचार्यों ने जो धर्म का स्वरूप हमें दिया वह यह धर्म का स्वरूप नहीं है। धर्म का सच्चा स्वरूप क्या है, धर्म तो वह तत्त्व है कि जो प्राणीमात्र का कल्याण करता है जिससे हमारा अभ्युदय हो और जिससे यश की प्राप्ति हो वह है धर्म। धर्म से कभी भी अशान्ति या हिंसा नहीं होती, धर्म से कहीं आतंकवाद नहीं होता उससे प्रेम-सद्भावना और एकाग्रता की भावना समाज में स्थापित होती

है धर्म ऐसा तत्त्व है । श्रीमद्भागवत में प्राणीमात्र के कल्याण के लिए, विश्व के कल्याण के लिए जिन बातों की खोज की गई है उनमें प्राणीमात्र के कल्याण के लिए जो तत्त्व हमें दिया गया वह है भागवत् धर्म । यदि समस्त विश्व में परस्पर द्रोह की भावना से मुक्त होकर प्राणी-मात्र के कल्याण का यदि कोई मार्ग है तो वह भागवत् धर्म का मार्ग है । गीता का जो यह सिद्धान्त है कि स्त्री-शूद्रों का भी उद्धार हो सकता है यह जो भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है उसको हमारे पूर्वाचार्यों ने समाज के सामने रखा और भक्ति का अधिकार सभी को है और भगवान् के शरण में सब कोई आ सकते हैं और सब कोई भागवत धर्म का अनुसरण कर सकते हैं इस रूप में समाज के सारे ही वर्ग को चाहे कोई भी हो यहाँ तक कि हमारे वैष्णवाचार्यों ने न केवल हिन्दू तक ही अपनी दृष्टि सीमित रखी, उन्होंने तो जब किसी को अपनाने का प्रश्न आया तो उन्होंने हर किसी को अपना लिया । उदाहरण के रूप में आज भी हम देखते हैं कि हमारे भक्तों की परम्परा में हम बड़े आदर से रसखान जैसे भक्त का भी स्मरण करते हैं ताजबीबी, अलीखान पठान जैसे मुसलमान भक्तों का हम स्मरण करते हैं यह जो विशाल भावना आयी यह विशाल भावना भागवत् धर्म का ही प्रतिफलन है । भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने यहाँ तक कहा कि "उन मुसलमान हरिजनन पर कोटिक हिन्दू वार डारौ" आप भावना देखिये कितनी उदात्त भावना है । ऐसी उदात्त संस्कृति और उदात्त भावना आपको और कहीं नहीं मिलेगी । हमारी परम्परा यह है कि हम भगवान् के लिए जियें सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक भगवान् के लिये जियें, जो कुछ करते हैं काया से, मन से, वाणी से वह सब कुछ भगवत् अर्पण की भावना से करिये और भगवत् प्रसन्नता के लिए करिये, शास्त्रोक्त कर्म भी भगवत् प्रसन्नता के लिए करिये चाहे सकाम हों चाहे निष्काम हों यह हमारा भागवत् धर्म का उपदेश है । यदि हम हिन्दू हैं अपने आपको हिन्दू मानते हैं तो हमारी जीवन पद्धति तो हिन्दू के अनुसार ही होनी चाहिये, सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक हमारी जीवन पद्धति जो आज बदल गई है सर्वथा पाश्चात्य पद्धति में हम चले गये हैं और सच पूछो तो कोई पद्धति ही नहीं, कोई शिष्टाचार ही नहीं रहा है, कोई दुराचार नहीं, कोई धर्मशास्त्र नहीं, कोई सिद्धान्त नहीं ऐसी जो हमारी स्थिति आज हो गई है उस स्थिति से बाहर आकर सच्चे अर्थ में धर्म-ग्रन्थों को प्रमाण मानकर हमको हमारी संस्कृति को फिर से जीवन में अपनाना पड़ेगा । हमारे राजकीय नेता लोग और हमारी सामान्य जनता भी जब कोई भी प्रश्न आ जाता है तब आखिर में जाकर के कह देते हैं कि हमारे धर्माचार्य जो चाहे वह कर सकते हैं धर्माचार्य यदि कोई काम उठा लेंगे तो वह पीछे नहीं रहेगा । बात सच्ची है लेकिन आप यह भी ध्यान रखिये कि धर्माचार्यों की क्रियाशक्ति समाज है आप लोग हैं और हमारे जो विद्वज्जन हैं धर्माचार्यों की ज्ञानशक्ति हैं उनके द्वारा जो सद्विचार और उनके द्वारा जो सत्प्रेरणा और जो सत्ज्ञान समाज में आता है उसका लाभ सबको मिलता है तो हमारी क्रियाशक्ति ज्ञानशक्ति सबका समन्वय में मिलकर जब काम करेंगे तब कोई काम हो पायेगा । इसलिए आप हमसे कहिये हम आप धर्माचार्यों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलेंगे और हर घर में से एक व्यक्ति समर्पित करिये धर्म के लिए, जब तक आप अपने घर में से एक व्यक्ति धर्म के लिए समर्पित नहीं करते तब तक इस राष्ट्र का उत्थान नहीं हो पायेगा और राष्ट्र हमारा आज जिस

पतन के मार्ग पर चल रहा है उस समय हमारा सभी का कर्तव्य हो जाता है कि हम राष्ट्र के उत्थान में लगें इसलिए मैं आपसे हमारी जनता से प्रार्थना करता हूँ कि आप अपने-अपने घरों में से एक-एक व्यक्ति को आप धर्म के लिए समर्पित कर दीजिये, इतनी ही मात्र अभिलाषा रखते हुये मेरा अल्प व्यक्तव्य प्रभु चरणों में समर्पित करता हुँ।

जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीजी महाराज

आज के कार्यक्रम में पर्यावरण पर, विश्वशान्ति पर चर्चा चल रही है हमारे मनुदेवजी भट्टाचार्य, नेपाल से पधारे हुये केशवशरणजी, हमारे मुक्तानन्दजी, सन्तों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये। रामानन्दजी सागर का अभिनन्दन हुआ। वर्तमान वातावरण को बनाने में श्रीरामानन्दजी सागर का बहुत ही बड़ा सहयोग है यद्यपि श्रीरामचरित मानस बहुत प्राचीन ग्रन्थ है चार-साढ़े चार सौ वर्ष हो रहे हैं, गोस्वामीजी ने रचना की, उससे पहले रामचरित रामायण शत् कोटि अपारा अनेक सन्तों ने लिखे हैं विचार व्यक्त किये हैं परन्तु इस प्रकार का दूरदर्शन पर प्रसारण करके जिस दूरदर्शन से अदूरदर्शिता का प्रसारण होता है उसी दूरदर्शन से रामचरित्र का प्रसारण हुआ, उस रामचरित्र ने देश को झकझोर दिया है। जिस समय ३०, ३१ अक्टूबर को अखिल भारतीय धर्म संसद् की बैठक दिल्ली में हुई थी मेरी ही अध्यक्षता में कारसेवा की तिथि ६ दिसम्बर अगहन शुक्ल पक्ष द्वादशी तिथि तय की गई, तब कहा गया—श्रीरामजन्मभूमि मन्दिर के निर्माण के लिए सौ करौड़ रुपया केन्द्रीय सरकार देगी इस तिथि को बदल दिया जाय। मैंने कहा इस रुपये को कहीं देश के और किसी कार्य में लगाया जाय तो ज्यादा अच्छा होगा, श्रीरामजन्मभूमि पर शासकीय द्रव्य से मन्दिर नहीं बनेगा भारतीय हिन्दू समाज ने पूरे विश्व से एक-एक रुपया, सवा-सवा रुपया दिया है उस मन्दिर का निर्माण उन्हीं पैसों से होगा और श्रीरामजन्मभूमि न्यास करेगा। ऐसे प्रलोभन भी दिये जाते हैं महात्माओं को फोड़ने के लिए, जिन्होंने घर छोड़ा माता-पिता छोड़ा, भाई-बन्धु छोड़ा, सम्पत्ति छोड़ी उनको पैसे का प्रलोभन दिया जाता है। इन आचार्यों को कौन प्रलोभन देकर के अपने पक्ष में कर सकता है यह तो भारत के साथ हैं, भारतीय समाज के साथ हैं, धर्म के साथ हैं अस्तु ऐसे-ऐसे कुचक्र रचे जा रहे हैं। श्रीरामजन्मभूमि न्यास हमारे श्रीरामानन्दाचार्य सार्वभौम रूप से रामानन्द सम्प्रदाय के आचार्य श्रीशिवरामाचार्यजी महाराज ने स्थापित किया था और उस न्यास के अध्यक्ष भगवान् श्रीराम प्रभु हैं कोई मानव नहीं है, यह समझ लेना चाहिये। जो अध्यक्ष कार्यकारी रूप में बनाये जाते हैं वह कर्ता के रूप में भगवान् के सेवक के रूप में होते हैं और यह नियम भी है कि रामानन्द सम्प्रदाय का ही कोई प्रमुख व्यक्ति धर्मकर्ता होगा, इस समय श्रीरामचन्द्रदासजी परमहंस धर्मकर्ता के रूप में, कार्यकारी के रूप में कार्य कर रहे हैं। समस्त धर्माचार्य प्रमुख रूप से उसमें न्यासी हैं वह किसी पार्टी से सम्बद्ध संस्था नहीं है वह तो श्रीरामजन्मभूमि निर्माण के लिए और उसकी व्यवस्था के लिए एक सार्वभौम आचार्य ने उसकी संगठना की है हम उसका समादर करते हैं। इसी न्यास पर विश्वास कर के देश–विदेश की जनता ने श्रीराम शिलाओं का पूजन किया था और अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किये थे जो सुरक्षित हैं, निर्माण कार्य में लग रहे हैं। इसी न्यास में विश्वास

व्यक्त कर के चार-चार हमारे भारत के प्रधानमन्त्रियों ने बीच-बीच में परामर्श किया, पिछले जुलाई में प्रारम्भ हुये कारसेवा को रुकवाने के लिए इसी न्यास के सन्तों को बुलाकर के हमारे वर्तमान प्रधानमन्त्री ने भी आग्रह किया समय दिया जाय और कारसेवा भी स्थगित की जाय, इसी न्यास में विश्वास व्यक्त करते हुए हमारे नौजवान श्रीराम कारसेवकों ने देश के कौने-कौने से एकत्रित होकर के ३० अक्टूबर सन् १९९० को श्रीरामजन्मभूमि पर वीर ध्वज फहराया। निःशस्त्र श्रीराम कारसेवक जय श्रीराम कहते हुये सरकार की गोलियों द्वारा बलिदान हो गये। इसी न्यास पर विश्वास व्यक्त करते हुये अभी ६ दिसम्बर की जो घटना हुई है लाखों-लाखों कारसेवक पूरे देश से चले थे अयोध्या में स्थान नहीं रह गया, फैजाबाद में स्थान नहीं रह गया हमारे कारसेवकों ने सड़कों पर विश्राम किया है, शीत की घड़ी में कष्ट सहे हैं और ढ़ाँचे को ध्वस्त किया है। यह सब श्रीराम प्रभु की इच्छा से हुआ, हनुमानजी ने स्वतः किया है। उस दिन भी, उस काल भी, उस क्षण भी हनुमानजी उस शिखर पर विद्यमान थे जिस समय ढ़ाँचा ध्वस्त हो रहा था। आज सारा वातावरण वहाँ का शुद्ध है लेकिन अब गलत रीति से गलत भावना पैदा करके वहाँ का पर्यावरण अशुद्ध किया जाय तो अच्छा है, उसे हिन्दू समाज अपनी गाढ़ी कमाई से बनायेगा, श्रीरामजन्मभूमि न्यास के माध्यम से बनायेगा।

पर्यावरण के सम्बन्ध में केवल इतना ही कहेंगे, जब से हमारी धार्मिक भावना नष्ट की गई है तब से पर्यावरण की समस्या बढ़ती जा रही है चाहे वह पर्वतीय क्षेत्र हो चाहे मैदानी क्षेत्र हो, चाहे नदियाँ हों, चाहे व्यक्ति हों इन सब में जब से धर्म की भावना को समाप्त किया गया है तब से यह पर्यावरण दूषित हो रहा है। हिमालय के तीर्थों को आज पर्यटक केन्द्र घोषित किया जा रहा है वहाँ पर बार रेस्टोरेन्ट खोलने के लिए टेन्डर आमन्त्रित किये जा रहे हैं। जब से पर्यटक वहाँ जाने लग गये हैं जो पवित्र हमारा तप्तकुण्ड तीर्थ है, अलकनन्दा में कोई स्नान नहीं कर सकता प्रवाह बहुत है शीत बहुत है, तप्तकुण्ड में लोग स्नान करते हैं भगवद्दर्शन करते हैं उसमें साबुन लगाया जाने लग गया है। कहने का मतलब हमारे तीर्थों को पर्यटक के रूप में विकसित किया जा रहा है उससे केवल हमारी धार्मिकता की ही हानि नहीं है बल्कि हमारे सीमाओं की भी हानि है। विदेशी पर्यटक वहाँ पहुँचेगे वहाँ की वास्तविकता को देखेंगे, वहाँ अनेक प्रकार के अपने विचार लेकर अपने देश में जायेंगे जिससे देश पर आपत्ति भी आ सकती है इसलिए वहाँ की धार्मिकता को बनाये रखना चाहिये।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीहर्याचार्यजी महाराज

जिस राष्ट्र, समाज और परिवार का तीन सूत्र गिर जाता है, एक आस्था, एक व्यवस्था और एक श्रम, वह राष्ट्र, समाज और परिवार कभी भी विकास की ओर नहीं, विनाश की ओर जाना प्रारम्भ कर देता है इसलिए किसी भी समाज का यह तीन सूत्र दृढ़ रहना चाहिये। हिन्दू का आधार और हिन्दुत्व का आधार सदा हमारे वेद प्रतिपाद्य आचरण और वेदों का जो परम तात्पर्य रहा है उस पर आधारित रहा है, आज उसके साथ खिलवाड़ हो रहा है। यह हमारी आस्था में शिथिलता आ रही है। जब तक यह शिथिलता विद्यमान रहेगी तब तक हम अपना स्वरूप नहीं सम्भाल पायेंगे। हमारा वेद कहता है "मातृदेवो भव, पितृ-

देवो भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव" क्या वास्तव में आज यह चरितार्थ है। श्रुति भगवती कहती है जैसा तुम सोचोगे वैसा तुम बन जाओगे, यदि तुम आज के डिस्को डांसिग में जैसे आज का नवयुवक नाचता है ऐसे तुम बन जाओगे और तुम यदि समझने की क्षमता रखते हो तो जैसा तुम सोचोगे वैसा तुम बन जाओगे। आज हमारे धम को राजनीतिक रंग दे दिया है वास्तव में पर्यावरण इसीलिए दूषित हो गया है, उसको आपको शुद्ध करने के लिए अपने शुद्ध हृदय से विचार करना पड़ेगा। धर्म जब तक मन में है तब तक धर्म धर्म नहीं है, धर्म जब तक क्रिया में है तब तक धर्म धर्म नहीं है, धर्म जब तक मात्र आचरण में है तब तक धर्म धर्म नहीं है धर्म जिस दिन विचार में आ जायेगा उसी दिन धर्म धर्म हो जायेगा, यह तब होगा जब आपकी आस्था दृढ़ होगी। जब तक आपकी आस्था दृढ़ नहीं होगी तब तक न आप घर चला सकते हैं, न परिवार चला सकते हैं, न समाज चला सकते हैं और न राष्ट्र चला सकते हैं इसलिए पहले आस्था ठीक करो, तब व्यवस्था ठीक हो जायेगी। जिस दिन आपका श्रम ठीक हो जायेगा उस दिन आपको जीवन में कोई भी गुमराह नहीं कर सकता है। आज हम एक किलोमीटर पैदल नहीं चल सकते हैं तब हम बीस नहीं ५० किलोमीटर पैदल बड़ी आसानी से चलते थे। इसलिए गीता में सर्वप्रथम धर्म क्षेत्र में धर्म का प्रयोग किया गया है। रामायण में पहले तप का प्रयोग किया गया है, रामायण का दर्शन तप का दर्शन है और गीता का दर्शन धर्म का दर्शन है। यदि अधर्म न हो तो धर्म का महत्व नहीं है यदि धर्म न हो तो अधर्म का भी महत्व नहीं है।

आज का नेता भयभीत है क्योंकि वह बेईमान है, वह न राम का भक्त है न कृष्ण का भक्त है वह केवल कुर्सी का भक्त है और कुर्सी का भक्त कभी दृढ़ता नहीं ला सकता और दृढ़ता आपको नहीं दे सकता है। राजनीति कुल्टा होती है और कुल्टा किसी को वास्तव में शुभ और सुख कुल प्रदान नहीं कर सकती। आज हमारा नेता सही-सही रूप में यह नहीं बोल पा रहा है कि वहाँ मस्जिद थी कि वहाँ श्रीराम मन्दिर था। हमारा रास्ते का पत्थर भी सत्य बोलता है लेकिन हमारा नेता सत्य नहीं बोलता। यह राजनीति है इससे दूर हटकर के हमको आज मैदान में आना पड़ेगा। हमारे परमपद पर जाने के लिए भगवती श्री वास्तव में सिंह-वाहिनी दुर्गा के रूप में है, भारतीय संस्कृति को जो आँख दिखायेगा यह दुर्गा उसकी आँख निकालकर बाहर फैंक देगी। हमारी भारतीय संस्कृति ही साक्षात् भवानी है इस संस्कृति को कोई झुठला नहीं सकता है। आज सरकार के सामने प्रश्न चिह्न लगा हुआ है कोई भी सरकार जो श्रीराम मन्दिर का निर्माण भारत में नहीं करायेगी यहाँ पर स्थाई रह नहीं सकती। जो इस भूमि को कर्मभूमि, धर्मभूमि, पुण्यभूमि और तीर्थभूमि नहीं समझता उसको इस भूमि में रहने का कोई भी अधिकार नहीं है। श्रीरामजन्मभूमि की जहाँ तक बात है वहाँ गर्भगृह से ही मन्दिर का निर्माण होना चाहिये, एक साथ होकर एक वेदी पर बैठकर जिस दिन आर्यावर्त की संस्कृति के गोद में उत्पन्न सम्पूर्ण हिन्दू एक साथ बोल पड़ेंगे उस दिन चौबीस घण्टे में श्रीराम मन्दिर बनना प्रारम्भ हो जायेगा, दुनियाँ की कोई शक्ति उसको रोक नहीं सकती है। इसलिए यदि आते हो इस ओर तो सशक्त होकर आओ, सच्चा हृदय लेकर आओ, श्रीराम के भक्त हो श्रीराम मन्दिर के प्रति शुद्ध समर्पित भाव लेकर आओ, श्रीराम मन्दिर अवश्य बनेगा।

आप सब भगवान् से किसी न किसी रूप में जुड़ जांय यही ध्येय है, यही गेय है और यहो प्रमेय है। इन्हीं शब्दों के साथ हम अपनी वाणी को विराम देते हैं।

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज

श्रीसर्वेश्वर प्रभु के कृपा प्रसाद से जो भी कुछ होता है, यह तो उनकी कृपा कटाक्ष विक्षेप से होता है। जब वे स्वयं कृपा कटाक्ष कर दें उनकी कृपा कादम्बिनी का परम दिव्य अविवर्षण हो जाय तो वे कर्तु मकर्तु मन्यथाकर्तु सर्वसमर्थ हैं, सब कुछ हो जाता है। ये यहाँ पर जो भी कुछ हुआ है यह उनकी लीला है वे लीलाविहारी हैं अपनी लीला विलास के निमित्त ही सारे संसार का वह सृजन करते हैं इसलिए आज हमको अपार हर्ष हो रहा है, अपार आनन्द हो रहा है। प्रतिदिन यहाँ आचार्यप्रवरों का दिव्य प्रेरणादायी उपदेशामृत पान हो रहा है। जब यह बात चली कि सनातन धर्म सम्मेलन हो और बोले पाटोत्सव का कार्यक्रम रखा जाय तो हमने भगवत् भक्तों से कहा कि यह जो अभिनन्दन आदि की जो कुछ भी भावना है, तो उनका अभिनन्दन हो कि जिन्होंने प्रत्येक जन-जन में रामभक्ति का संचार किया है, कृष्ण भक्ति का संचार किया है, भगवद् भक्ति का संचार किया है उनका अभिनन्दन हो तब तो हमारे अन्तःकरण में असीम प्रसन्नता होगी। भगवद् भक्तों ने हमारे वचनों का समादर किया और उसके अनुरूप आज हम परम गौरवान्वित हैं कि जिन श्रीभक्ताग्रगण्य जैसे हनुमतलालजी इसी प्रकार हमारे रामानन्दजी सागर ने जन-जन में भगवद् भक्ति का जो अपूर्व संचार किया है अपूर्व जाग्रति की है, हमारे रवीन्द्रजी जैन ने दिव्य ध्वनि प्रदान करके जो प्रेरणा प्रदान की है, सुभाषजी सागर ने भी इसी प्रकार इस क्षेत्र में जो अपूर्व सेवा प्रदान की है ऐसे ही हमारे बी० आर० चोपड़ाजी ने भी महाभारत जैसे विशाल दिव्य ग्रन्थ का भी जो दिव्य पञ्चमवेद स्वरूप है उस सारे भागवत चरित्र को उत्तम प्रकार से उपस्थित किया है। इसी प्रकार हमारे शेखावतजी जो इस क्षेत्र के परम धर्मनिष्ठ प्रशासक हैं उनका यहाँ पर पधारना हुआ और उन्होंने भी अपने दिव्य भाव अभिव्यक्त किये जो सारग्राही है अनुकरणीय है। अब आप सब भगवद् भक्तों से और आचार्यप्रवरों से भी ऐसी भावना चाहते हैं कि श्रीराधामाधवजी जो रससिद्ध कवि जयदेव के आराध्य देव हैं और सनकादिकों के संसेव्य विग्रह श्रीसर्वेश्वर प्रभु का आज पुष्प-बंगला है, आप सभी क्रमबद्ध हो दर्शन करें उसके बाद इसी मञ्च पर पधारें और श्रीरविन्द्रजी जैन जो यहाँ पधारे हैं उनकी मंगलमयी रसमयी मधुरातिमधुर ध्वनि है उसको श्रवण करने का सौभाग्य प्राप्त करें।

With Best
Compliments
of

※ श्रीसर्वेश्वरो जयति ※

अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

के

अन्तर्गत आयोजित

शिक्षा सम्मेलन

[मिति ज्येष्ठ शु० ५ बुधवार सं० २०५० दिनांक २६-५-९३]

अध्यक्ष :

जगद्गुरु रामानुजाचार्य

श्रीवासुदेवाचार्यजी महाराज

अयोध्या (उ० प्र०)

मुख्य अतिथि :

महन्त श्रीनृत्यगोपालदासजी महाराज

अयोध्या (उ० प्र०)

शिक्षा सम्मेलन

[ज्येष्ठ शु० ५ वि० सं० २०५० बुधवार दिनांक २६–५–९३ ई०]

मन्दिर में प्रतिदिन की भाँति प्रातःकालीन मङ्गला आरती, श्रीसर्वेश्वर प्रभु का पुरुषसूक्त द्वारा अभिषेक, दर्शन, शृङ्गार आरती आदि दैनिक कार्यक्रम विधिवत् सम्पन्न हुए। यज्ञ मण्डप में दैनिक देव पूजन जप, पाठ, हवन आदि कार्यक्रम पूर्ववत् चलते रहे। श्रीसर्वेश्वर प्रभु के दर्शनों के लिए आज अपार भीड़ थी, अपार जन समूह दर्शनों के लिए उमड़ पड़ा जिसे नियन्त्रित करने में कार्यकताओं को विशेष परिश्रम करना पड़ा, प्रशंसनीय अनुशासनवद्ध व्यवस्था कर के सभी दर्शनार्थियों को श्रीसर्वेश्वर प्रभु के दर्शनों का लाभ कराया गया। मध्याह्न में सदा की भाँति २ बजे से ५ बजे तक वृन्दावन निवासी स्वामी श्रीशिवदयालजी गिरिराजप्रसादजी की रासमण्डली द्वारा रसमय श्रीरासलीलानुकरण हुआ जिसका भक्तजनों ने रसास्वादन किया।

सभा मण्डप में सभी धर्माचार्यों के पदासीन हो जाने पर समिति के पदाधिकारी कार्यकताओं द्वारा माल्यार्पण करके स्वागत किया गया। सामूहिक वैदिक मङ्गलाचरण से सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ। सभा की अध्यक्षता जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्रीवासुदेवाचार्यजी महाराज अयोध्या ने की एवं मुख्य अतिथि अयोध्यावासी महन्त श्रीनृत्यगोपालदासजी महाराज थे। सम्मेलन में विचारणीय बिन्दु थे— १. वैदिक शिक्षा का महत्व एवं वेद के सस्वर पठन-पाठन की समस्या। २. शिक्षा में संस्कृत एवं संस्कृति की आवश्यकता। ३. राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में शिक्षा का स्वरूप तथा समाधानार्थ प्रश्नावली थी— १. आधुनिक शिक्षा नीति में नैतिक शिक्षा का समावेश क्यों नहीं? २. क्या भारतीय आयुर्वेद विज्ञान एवं चिकित्सा प्रतियोगी परीक्षा में पूर्व निर्धारित संस्कृत पाठ्यक्रम पर्याप्त नहीं है? ३. क्या वर्तमान में हिन्दू संस्कृति की सुरक्षा एवं राष्ट्रीय एकता के लिए संस्कृत भाषा का अध्ययन आवश्यक नहीं?

उक्त विषयों पर विचार प्रकट करते हुए व्रजविदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहन्त श्रीरास-विहारीदासजी काठिया ने संस्कृत भाषा के अध्ययन पर बल देते हुए कहा—भारतीय संस्कृति के साथ संस्कृत का अनन्य सम्बन्ध है, संस्कृत को यदि हम छोड़ते हैं तो भारतीय जो मूल विश्वास, श्रद्धा और निष्ठा है और जिस पर भारतीय आध्यात्मिकता टिकी हुई है वह श्रद्धा विश्वास की संस्कृति हम खो चुकेंगे। इसके पूर्व डा० विमला भास्कर ने नारी शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया और इसे आवश्यक बताया। पं० श्रीखेमराजकेशवशरणजी शास्त्री नेपाल ने कहा–संस्कृत के उत्थान के साथ ही भारतीय संस्कृति का उत्थान जुड़ा हुआ है। संस्कृत के बिना भारतीय संस्कृति नहीं है और संस्कृति के बिना राष्ट्र नहीं है इसलिए हमें संस्कृत की शिक्षा, संस्कृत का ज्ञान सम्पूर्ण भारतीय जन जीवन में कराने की व्यवस्था करनी चाहिये। राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष श्रीहरिशंकरजी भाभड़ा ने कहा–विश्व की जितनी भी भाषाएँ है उन सबकी जननी संस्कृत भाषा है। अंग्रेजी केवल भाषणबाजी की भाषा है उसे अपनाया

नहीं जा सकता, संस्कृत में अपनापन होता है क्योंकि उसमें हमारी संस्कृति की मूल भावना भरी होती है। आज देश में जो शिक्षा दी जा रही है वह बिलकुल विपरीत है इसे सुधारना है तो इसका तरीका एकमात्र यही है कि हम संस्कृत शिक्षा के माध्यम से आने वाली पीढ़ी में सद्गुण पैदा करें। राजस्थान के पूर्व मन्त्री श्रीललितकिशोरजी चतुर्वेदी ने वर्तमान शिक्षा पद्धति को भर्त्सना करते हुए कहा—आज की यह शिक्षा अवसरवादी लोगों को पैदा करने की है व्यक्ति-वादी जीवन उसका लक्ष्य हो गया है इससे भारतमाता का हित सम्भव नहीं है आध्यात्मिक शिक्षा की आज आवश्यकता है।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीहर्याचार्यजी महाराज ने कहा—हमारे शिक्षा केन्द्र उद्दण्डता के केन्द्र बने हुए हैं आज ऐसी पाठशालाओं की आवश्यकता है जहाँ पवित्र संस्कार, पवित्र चरित्र और पवित्र भाषा का संस्कार बालकों के हृदय में दृढ़ता के साथ भरा जाय, जब तक हमारा मूल ठीक नहीं होगा जीवन में दृढ़ता नहीं आयेगी, जब तक संस्कृत और संस्कृति प्रकाशित नहीं होगी तब तक इस देश का आध्यात्मिक, चारित्रिक और सांस्कृतिक विकास होना असम्भव है। जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीवासुदेवानन्दजी महाराज ने आज की शिक्षा पद्धति पर कटाक्ष करते हुए कहा—शिक्षा का उद्देश्य आज केवल अर्थ प्राप्ति तक ही सीमित रह गया है, अध्यापक शिक्षण करता है अर्थ के लिए, शिक्षण संस्थायें खोलकर वहाँ के अधिकारी अर्थ चाहते हैं शिक्षा नहीं चाहते, जब तक यह दुर्भावना समाप्त नहीं होती तब तक वास्तविक शिक्षा लागू नहीं हो सकती। दुर्भाग्यवश हमारी यह शिक्षा भारतीय नहीं है, हमारी शिक्षा पद्धति में हमारा संस्कार प्रधान था, संस्कार समाप्त हो गया है। अनुदान देने वाले स्कूलों में सरकार की तरफ से धार्मिक शिक्षा देने पर रोक है जबकि अल्पसंख्यकों द्वारा सञ्चालित स्कूलों में धार्मिक शिक्षा दिए जाने की छूट है। राजनेताओं का मस्तिष्क विदेशी हो तो शिक्षा, संस्कृति, संस्कार भारतीय कैसे हो सकते हैं। अपने अध्यक्षीय प्रवचन में जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्रीवासु-देवाचार्यजी महाराज ने शिक्षा पद्धति कैसी होनी चाहिए इस पर अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा—अध्ययन की एक परम्परा जो हमारे प्राचीन भारतीय पद्धति में लगातार चली आ रही थी वह अविच्छिन्न परम्परा आज विच्छिन्न हो गई है, शिक्षा के राज्याश्रित होने के कारण वह राज्यमुखापेक्षी हो गई है, अनीश्वर वादिनी हो गई है, ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करने की परम्परा यदि बालकों को बताई जाय तो लोग कहेंगे शिक्षा पद्धति को साम्प्रदायिक रंग दिया जा रहा है। दुर्भाग्य है आज राष्ट्र का जो वह धर्म निरपेक्ष है और यह धर्म निरपेक्ष शासन प्रणाली धर्म का पालन करने का उपदेश भला कैसे भारतीय प्रजा को दे सकती है। धर्म के दश लक्षणों में किसी का विरोध नहीं है वे तो शाश्वत हैं धर्म कभी अलग हुआ ही नहीं है राष्ट्र से। राष्ट्र के अन्त-

र्गत ही धर्म है। इस देश की मिट्टी से हमारी संस्कृति, हमारे धर्म का सम्बन्ध है, हमारी परम्परा का सम्बन्ध है ऐसी ही हमारे राष्ट्र की शिक्षा पद्धति होनी चाहिए। मुख्य अतिथि महन्त श्रीनृत्यगोपालदासजी महाराज ने कहा–हमारी संस्कृति में समर्पण को जो भावना है, वह आदर्श है, विद्या का सर्व प्रधान अंग विनय है जो प्राचीन परम्पराओं के अनुसरण से सम्भव है पश्चिम अनुसरण से हमारी अनुशासन की भावना नष्ट हो गई है और हम ज्ञान-गौरव को भूल गये हैं।

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज ने अपने आशीर्वचन में आज की शिक्षा पद्धति पर खेद व्यक्त करते हुए कहा—आज सरकार के द्वारा निर्धारित जो पाठ्यक्रम है उसके द्वारा विद्यार्थी को व्याकरणाचार्य, साहित्याचार्य आदि परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने पर भी ह्रस्व-दीर्घ का ज्ञान नहीं होता है, साधारण हिन्दी का पत्र भी वे शुद्ध नहीं लिख सकते, कैसी शिक्षा है यह, कैसे राष्ट्र का मंगल होगा। समस्त धर्माचार्यप्रवर, सन्त-महात्मा, विद्वज्जन और धर्म-प्राण जनता द्वारा यदि इस पर चिन्तन नहीं होगा तो भविष्य अन्धकारमय है इस पर सभी को गम्भीरता से सोचना चाहिये।

दूरदर्शन धारावाहिक 'महाभारत' के निर्माता श्री बी० आर० चौपड़ा बम्बई का भी आज आगमन हुआ। 'महाभारत' सीरियल में श्रीचौपड़ाजी द्वारा पात्रों का जो सुन्दर चयन हुआ है उसके लिए पूज्य आचार्यश्री ने आपकी विशेष सराहना की और पुनः महाभारत को दूरदर्शन पर दिखाये जाने का आपसे एवं सरकार से आग्रह किया। इस अवसर पर सम्मान स्वरूप आचार्यश्री ने अपने करकमलों द्वारा आपको रजतमय श्रीनिम्बार्क सुदर्शन महाचक्र एवं उपहार प्रदान किया जिसे प्राप्तकर आप भाव-विभोर हो गये एवं 'महाभारत' दूरदर्शन धारा-वाहिक के निर्माण में भगवान् श्रीकृष्ण की महती अनुकम्पा का वर्णन किया।

आज सायंकाल मन्दिर में रससिद्ध कवि जयदेव के आराध्य ठाकुर भगवान् श्रीराधा-माधवजी और सनकादिकों द्वारा संसेव्य ठाकुर श्रीसर्वेश्वर प्रभु के भव्य पुष्प बंगला का सुन्दर आयोजन किया गया था जिसके दर्शनार्थ अपार जन समूह उमड़ पड़ा। व्यवस्थित रूप से सभी दर्शनार्थियों को भगवान् के पुष्प श्रृङ्गारयुक्त झाँकी के मनोहर दर्शन कराये गये।

रात्रि में सुदीर्घ समय तक कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें श्रीसत्यनारायणजी सत्यन इन्दौर, कुमारी ममता शर्मा आगरा, श्रीराजवीर क्रान्तिकारी अमरोहा, श्रीविष्णु सक्सेना अलीगढ़, श्रीरमेश गुप्ता उज्जैन, श्रीराजेन्द्र राजन्, श्रीजगदीश सोलंकी कोटा, श्रीउर्मिलेश बदायु एवं सुप्रसिद्ध हास्यकवि श्रीनिर्भय हाथरसी ने अपनी स्वरचित रचनायें सुनाकर सबको प्रमुदित किया।

शिक्षा सम्मेलन : प्रथम सत्र

डॉ० विमला भास्कर

नारी शिक्षा आज समाज के लिए क्यों आवश्यक है, हमारा समाज क्यों इस बात पर बल दे रहा है, हमें इस पर विचार करना है। नारी जननी है माँ है, हमारे यहाँ यह कहा जाता रहा है कि जहाँ नारी का सम्मान है उस स्थान पर देवता लोग वास करते हैं, जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ भगवान् का वास है और दूसरी तरफ हम देखते हैं कि उसे घर की चार दीवारी के बाहर निकलने नहीं दिया जाता। जीवन रथ के दो पहिये हैं एक तरफ है पुरुषवर्ग और एक तरफ है नारीवर्ग। दोनों ही पहिये जब तक उसके सशक्त और मजबूत नहीं होंगे तो हमारे घर-परिवार की, समाज की, राष्ट्र की गाड़ी सुचारू रूप से नहीं चल सकेगी। नारी के लिए शिक्षा का महत्व इसलिए भी अधिक है कि केवल उस एक की शिक्षा से दो परिवार फलते-फूलते हैं। एक तरफ उसके अपने माँ-बाप का घर और दूसरी तरफ उसकी ससुराल का घर और उसके बाद आने वाली पीढ़ियां, वह बच्चे जो माँ की गोद में संस्कार पाते हैं, माँ की गोदी में खेलते हैं फलते-फूलते हैं राष्ट्र के प्रतीक भी बनते हैं वह जो भी संस्कार पाते हैं वह माँ की गोदी ही है। आज देश के लिए बहुत जबरदस्त आवश्यकता है नारी के साक्षरता के लिए। बहुत अधिक न कहते हुये मैं यही कहूँगी कि हमें अपने यहाँ ऐसे-ऐसे संगठनों का समायोजन करना है जो कि महिलाओं को अधिक से अधिक जागरूक बना सकें, उनकी समस्याओं को समझ सकें उनको पहचान सकें और नारी को घर से बाहर आने के लिए, अपने जीने के अधिकारों को दिलाने के लिए उसे सक्षमता प्रदान कर सकें और यह तभी सम्भव होगा जबकि नारी स्वयं जागरूक होगी थोड़ी सी शिक्षा को प्राप्त करेगी उसके पास थोड़ा ज्ञान होगा यदि वह कूपमण्डूक बनी रही तो शायद हमारा देश जो आगे जा रहा है कहीं अधिक रसातल की तरफ न चला जाये। इसलिए मैं यह कहना चाहूँगी कि आप अपने परिवार के अन्दर अपनी बच्चियों को कम से कम जरूर पढ़ायें, बेटा नहीं पढ़ता है तो कोई न कोई काम-धन्धा कर लेगा लेकिन बेटी नहीं पढ़ती है उस पर कल कोई मुसीबत आती है तो उसका सामना वह कैसे करेगी। यदि उसके पास शिक्षा है, आत्मबल है आत्मनिर्भरता है, उसके पास गुण है शिक्षा का तो वह हर तरह से मुसीबत का सामना कर सकती है।

श्रीरासविहारीदासजी महाराज (काठियाबाबा)

मैं जिस विश्वविद्यालय का छात्र हूँ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, उस विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठाता महामना मदनमोहनजी मालवीय ने एक ही बात कही थी कि हमारे उत्तराधिकारी सूत्र में अपने पूर्वजों के पास से, ऋषि-मुनियों के पास से यदि किसी प्रकार की हमने निधि पाई है तो वह संस्कृत निधि है। उस संस्कृत को आपको अवश्य ही जीवित रखना है, तो क्या संस्कृत केवल पाठशालाओं में पढ़ाने तक ही जीवित रह सकता है, क्या संस्कृत को जीवित रखने का कर्तव्य केवल साधुओं का ही है, क्या संस्कृत को बचाने का काम केवल ब्राह्मणों का ही है। संस्कृत तो प्रत्येक भारतीयों के साथ जुड़ी हुई है चाहे वह हिन्दू हो चाहे

मुसलमान हो, चाहे इस भारत में कोई आया हुआ विदेशी हो, सनातन धर्म की शाखा पर-शाखा के अन्तर्गत पालित–पोषित चाहे सिख हो, जैन हो, बौद्ध हो सबका परम पुनीत कर्तव्य है कि वह संस्कृत को जीवित रखें। हमारे आचार्यों ने जितने भी ग्रन्थ लिखे हैं वह सब संस्कृत में लिखे हैं। कारण हैं संस्कृत को यदि हम छोड़ते हैं तो भारतीय जो मूल विश्वास श्रद्धा और निष्ठा है जिस पर भारतीय आध्यात्मिकता आत्मविद्या भारतीय संस्कृति की टिकी हुई है वह श्रद्धा-विश्वास की संस्कृति हम खो चुकेंगे इसलिए संस्कृत की आवश्यकता है। स्वामी विवेकानन्दजी ने कहा है—भारतीय वैदिक संस्कृति को यदि जानना है तो संस्कृत भाषा को अवश्य ही आपको पढ़ना होगा। भारतीय संस्कृति के साथ संस्कृत का यह अनन्य सम्बन्ध सदा सर्वदा से है पहले भी था अभी भी है और भविष्य में भी रहेगा। अतः सबका कर्तव्य है कि संस्कृत शिक्षा को बढ़ावा दें। संस्कृत एक किसी जाति विशेष की शिक्षा नहीं, किसी एक धर्म विशेष की शिक्षा नहीं संस्कृत तो विश्व की जननी भाषा है ओज है, आपके दैनिक जीवन के हर पहलू में संस्कृत का प्रवेश है। संस्कृत को यदि आप छोड़ते हैं तो ऐसा दिन आयेगा जबकि भारत के बाहर के विद्वान् आकर के आपको वेद सिखायेंगे, आपको कर्मकाण्ड सिखायेंगे, आपके संस्कार करायेंगे तब आपको क्या अच्छा लग सकता है। भारतीय संस्कृति कोई ऐसी वैसी संस्कृति तो है नहीं, यह त्याग-तपस्या की संस्कृति है त्याग-तपस्या का स्वरूप है। संस्कृत के पढ़े हुये बालकों में देव उपमागुण आते हैं देवउपमा गुण आने के लिए हर भारतीय बालक को संस्कृत का अध्ययन अवश्य ही करना चाहिए, संस्कृत के बिना हमारे बालकों की शिक्षा अधूरी रह जायेगी इसलिए संस्कृत शिक्षा की विशेष आवश्यकता है।

श्रीखेमराजकेशवशरणजी शास्त्री, नेपाल

किसी राष्ट्र को यदि हम दुर्बल बनाना चाहें तो उसकी संस्कृति को दुर्बल बनावें काम तमाम हो जायेगा, यही साजिश भारत राष्ट्र को दुर्बल बनाने के पीछे चलाई गई है, यह दुर्नीति है जिसको साजिश कह सकते हैं कूटनीति कह सकते हैं। जिस समय लार्डमेकाले के हाथ में शिक्षा नीति आई थी सन् १८३३-३४ की बात है उस वक्त शिक्षा की नीति के पीछे लक्ष्य बनाया गया था कि हिन्दू संस्कृति का मूलोच्छेद करना। आप देखें भारत का सम्पूर्ण सांस्कृतिक जीवन उसकी सारी सांस्कृतिक मूल मर्यादायें संस्कृत पर टिकी हैं, हमारे पास जो अमर निधियाँ हैं वे संस्कृत भाषा में हैं। यदि संस्कृत से हम वंचित रह जाते हैं तो सारे उपनिषद् वाङ्मय के अध्ययन से हम वंचित रह जाते हैं इसलिए हमको संस्कृत का ज्ञान होना चाहिये। हमारी भगवद्गीता संस्कृत में है सारे धर्मों का जो वेदवाङ्मय है वैदिक वाङ्मय वह संस्कृत में है यदि संस्कृत का ज्ञान हमारा नहीं रहा तो हम उसके ज्ञान से भी वंचित रह जायेंगे। इसलिए हमें संस्कृत की शिक्षा, संस्कृत का ज्ञान सम्पूर्ण भारतीय जन जीवन में कराने की व्यवस्था करनी चाहिए, हमें संस्कृत को उभारकर के जनस्तर पर भी और सरकारी स्तर पर भी, दोनों स्तर पर संस्कृत को उठाने का संकल्प लेना और लेने के लिए प्रेरित करना परम आवश्यक हो गया है यह समय की माँग है। संस्कृत के उत्थान के साथ भारतीय आत्मा का उत्थान जुड़ा हुआ है इसीलिए संस्कृत हमें सर्वथा वर्णनीय है। हमारी निधियों को बचाये

रखने के लिए वरणीय है, हमारी भाषाओं के ज्ञान के लिए संस्कृत वरणीय है और हमारी मातृ जाति को तथा पुरुष वर्ग को अपने जीवन का लक्ष्य समझने के लिए संस्कृत वरणीय है। संस्कृत के बिना भारतीय संस्कृति नहीं है और संस्कृति के बिना राष्ट्र नहीं है यह बात अभेद्य कवच के रूप में स्पष्ट है। आपने राजस्थान सरकार से संस्कृत शिक्षा को अनिवार्य विषय के रूप में स्थान प्रदान करने की मांग करते हुए निम्नलिखित प्रस्ताव रखा जो समर्थन और अनुमोदन के साथ सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ—"अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ में जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के स्वर्णजयन्ती समारोह पर आयोजित अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन की यह सभा अनुभव करती है कि भारत राष्ट्र की छवि प्राच्य संस्कृति एवं हिन्दू सभ्यता का मूल उद्भव स्रोत के रूप में प्रतिष्ठित रही है, आध्यात्मिक आस्था के माध्यम से उच्च मानवीय नैतिक मूल्यों एवं मर्यादाओं के प्रति प्रतिबद्धता भारतीय संस्कृति का सर्वस्व रहा है मेरुदण्ड रहा है और इन सभी विशिष्ट आदर्शों के एक ही अक्षय भण्डार के रूप में संस्कृत विद्या की गौरवपूर्ण प्रतिष्ठा रही है। बड़े दुःख की बात है कि सम्पूर्ण भारतीय जन जीवन की मूल सांस्कृतिक भाषा के रूप में विद्यमान संस्कृत का जो स्थान शिक्षा में रहना चाहिये था वह बिलकुल नहीं रहा है संस्कृत की यह उपेक्षित अवस्था राष्ट्रीय आत्मा की ही घोर उपेक्षा है और इससे भारत की नई सन्ततियों को अपने सांस्कृतिक मूल्यों एवं आदर्शों की जानकारी में प्रत्यक्ष अवरोध खड़ा हो रहा है अतः यह सभा राष्ट्र की समस्त सन्ततियों को भारतीय जीवन मूल्यों एवं आदर्शों के प्रति जागरूक बनाने के लिए प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च माध्यमिक स्तर तक १०० अंकों का पत्र समावेश कर संस्कृत शिक्षा को अनिवार्य विषय के रूप में स्थान प्रदान करने के लिए राजस्थान सरकार से हार्दिक अपील करती है।"

श्रीहरिशंकरजी भाभड़ा

[अध्यक्ष : राजस्थान विधान सभा]

यह देश हमेशा सन्तों के पीछे चला है और दुर्भाग्य है कि इतिहास में जो सन्तों का वर्णन विस्तार से होना चाहिये वह नहीं हुआ और इसलिए हम अपनी संस्कृति से पिछड़ते जा रहे हैं। हम राम को इसलिए नहीं पूजते कि वह राजा थे, हम राम को इसलिए पूजते हैं कि वह मर्यादा पुरुषोत्तम थे उनमें ईश्वरीय गुण थे। हम कृष्ण को इसलिए नहीं पूजते कि वह भी कहीं राजा थे, हम कृष्ण को इसलिए पूजते हैं कि उन्होंने आजीवन निष्काम कर्म करके हमें गीता जैसा ज्ञान दिया। इस देश में सन्तों की बड़ी लम्बी परम्परा है सारा वैदिक वाङ्मय ऋषियों के द्वारा प्रणीत है, सारे उपनिषद्, सारी स्मृतियाँ, सारे धर्मसूत्र सबके सब बड़े-बड़े ऋषि-मुनि, सन्तों से पनपे हैं इन्हीं सन्तों ने इस देश में क्रान्तियाँ की है। मुगलकाल में अकेले सन्त तुलसीदासजी ने रामायण लिखकर के भगवान् राम के चरित्र को हमारे सामने जिस प्रकार से रखा उसकी केवल किरण मात्र से हमने वह अन्धकार का समय भी बिता दिया। समर्थ स्वामी रामदास, गुरुगोविन्दसिंह यह सभी सन्त थे कि जिन्होंने हर वक्त समाज को दिशा दी, आज इस प्रांगण में हम सबका सौभाग्य है कि देश के बड़े-बड़े महान् सन्त आचार्य

एकत्रित होकर आपको अपनी मधुर वाणी से इस देश को दिशा दे रहे हैं इसी सिलसिले में आज का विषय संस्कृत के बारे में जो प्रस्ताव रखा गया है मैं उसका समर्थन करता हूँ। संस्कृत भारत की आत्मा है यदि हमें अपनी आत्मा को जागृत करना है तो पूरे देश में संस्कृत का उत्थान, संस्कृत का देश में पठन-पाठन करना ही पड़ेगा हमारी जड़ संस्कृत में है। संस्कृत के बल पर ही हिन्दू समाज हजारों वर्षों से जिन्दा है। सनातन धर्म अमर है शाश्वत है कभी नष्ट नहीं हो सकता इसका एकमात्र कारण संस्कृत का वाङ्मय है। हमारा बहुत साहित्य नष्ट कर दिया यूनानियों ने और विदेशियों ने, हमारे पुस्तकालय महीनों तक जलते रहे और आज भी हमें हमारे बहुत से साहित्य की कड़ियां नहीं मिल रही है लेकिन जो मिल रही है वह भी इतनी ज्यादा है सभी विषयों पर कि विश्व के और किसी भाषा में इतना साहित्य नहीं है जो भिन्न-भिन्न अंगों को छूता हो। अद्भुत साहित्य संस्कृत में लिखा पड़ा हुआ है उसकी तरफ नजर उठाकर देखने की जरूरत है परन्तु हम संस्कृत से अलग हटते जा रहे हैं इसलिए हम अपनी जड़ से भी अलग हटते जा रहे हैं यदि हमने संस्कृत का पठन-पाठन नहीं किया तो जो हमारा सारा वाङ्मय है उस वाङ्मय की अच्छाइयों को हम देख नहीं पायेंगे, उसका रस हम तक नहीं मिलेगा। विश्व की जितनी भी भाषायें हैं उन सब की जननी संस्कृत है संस्कृत से ही सब पैदा हुई हैं। संस्कृत जब तक है तब तक हम अमर हैं, आज देश में जो शिक्षा दी जा रही है वह बिल्कुल विपरीत जा रही है। हमारे यहाँ शिक्षा का अर्थ होता है "विद्या ददाति विनयम्" विद्या पढ़ने के बाद आदमी विनम्र होना चाहिये पात्र होना चाहिये, आज की शिक्षा प्राप्त करने के बाद चाहे लड़के हो या लड़कियाँ उनमें अहंकार बढ़ता है विनय नहीं बढ़ती। इसको सुधारना है तो इसका तरीका केवल एकमात्र यही है कि हम संस्कृत शिक्षा के माध्यम से हमारी आने वाली पीढ़ी में सद्गुण पैदा करें, उनको संस्कार दें, उनको बतायें कि विद्या पढ़ने के बाद विनयी बनना चाहिये। आज के युग में आवश्यकता इस बात की है कि हमारे बड़े-बड़े विद्वान् हमारा जो संस्कृत साहित्य है या हमारी जो खोजे हैं उनकी वैज्ञानिकता को साबित करें, आज के इस बदले हुये परिपेक्ष्य में यह बहुत आवश्यक है। हमारी आने वाली पीढ़ियाँ दिग्भ्रमित हो रही है उनका मूल से सम्बन्ध टूट रहा है, उनका सूत्र बिखर रहा है उनमें जो रस पहुँचना चाहिये, हमारे पूर्वजों ने जो ज्ञान हमको दिया जंगलों में बलकल वस्त्र पहनकर के, भूखे रहकर के विश्व में उस ज्ञान की दिव्यता एवं बराबरी आज भी नहीं है। चाहे भौतिकवाद कितनी भी उन्नति कर ले लेकिन उस ज्ञान की परिधि तक भी आज वह नहीं पहुँचा है, उस ज्ञान को फिर से प्राप्त करने की साधना हमको करनी पड़ेगी और उस साधना का माध्यम केवल मात्र संस्कृत ही हो सकती है, संस्कृत के बिना वह साधना कभी पूरी नहीं होगी। इसलिए यदि हम इस जीवन में सुख चाहते हैं और मरने के बाद भी मुक्ति चाहते हैं तो संस्कृत का अध्ययन-अध्यापन आवश्यक है।

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज

जीवन में शिक्षा कितनी अपेक्षित है कितनी आवश्यक है यह तो आप सभी जानते हैं, सबसे प्रथम शिक्षा मिलती है जन्म लेने के बाद माता के द्वारा, माता के मंगलमय अंक में उनकी गोद में बैठने का सौभाग्य मिलता है और माता अपने पुत्र को सम्यक् शिक्षा का दान करती है। उसके बाद पिता के द्वारा समय-समय पर शिक्षा बालक की होती रहती है जब वही बालक कुछ बड़ा हो जाता है तो गुरुकुलों में, ऋषिकुलों में, आश्रमों में, शिक्षालयों में जाकर शिक्षा ग्रहण करता है और उसके अनन्तर सन्त-महात्माओं के सान्निध्य में पहुँच कर उपदेश ग्रहण करता है और वह शिक्षा ऐसी शिक्षा है जिस शिक्षा को प्राप्त कर लेने पर फिर इस संसार में आना नहीं पड़ता। जितनी भी जीवन में साधनायें की जाती है, तपश्चर्यायें की जाती है, उत्तमोत्तम साधन किये जाते हैं, तप किया जाता है, भगवन्नाम संकीर्तन का आश्रय लिया जाता है ऐसे अनेक विभिन्न प्रकार के जो हमारे साधन हैं क्रम हैं उनका साधक आश्रय लेता है इसका मूल उद्देश्य है विद्या के द्वारा हम अमृतत्त्व की उपलब्धि करें। संसार में बार-बार जन्म न लेना पड़े भगवत् धाम की प्राप्ति हो, अनन्त सुख हो जाय इसके लिए शिक्षा की आवश्यकता है, केवल अक्षर ज्ञान कर लेना उदर पोषण कर लेना यही शिक्षा नहीं है। एक बार हम नासिक कुम्भ के अवसर पर थे कुछ कनाड़ा के पत्रकार हमारे पास आये और उन्होंने कुछ प्रश्न किये, उनके प्रश्न में पहला प्रश्न था कि यह कुम्भ महापर्व जो होता है १२ वर्ष बाद आता है इसका क्या अभिप्राय है हम जानना चाहते हैं। उनको शास्त्रों के आधार पर और ज्योतिष् शास्त्र की दृष्टि से कुम्भ पर्व की महत्ता बताई गई उसके बाद दूसरा उन्होंने प्रश्न किया कि आपने ईश्वर की प्राप्ति कर ली है यह उनका दूसरा प्रश्न था, उसके उत्तर में हमने कहा—कोई व्यक्ति यह सोचता हो कि मैं बहुत सुन्दर प्रवचन करता हूँ मेरी मधुर वाणी से सभी लोग आकृष्ट हो जाते हैं वह सर्वान्तरात्मा सर्वाधार सर्वज्ञ भगवान् सर्वेश्वर प्रभु भी परम प्रमुदित हो जायेंगे किन्तु वे श्रीहरि केवल प्रवचन करने से प्रसन्न नहीं होते और कोई यह सोचता हो मेरी सत्-सद् विवेकनी बुद्धि है उस बुद्धि के प्रभाव से ही श्रीसर्वेश्वर प्रभु प्रसन्न हो जाय तो उससे भी वह प्रसन्न नहीं होते, अनेक शास्त्रों के श्रवण से कहीं प्रसन्न हो जाय तो वे प्रभु उससे भी प्रसन्न नहीं होते हैं, तब वे प्रसन्न किससे होते हैं जब कृपामय स्वयं अपने कृपाकटाक्ष जिस पर निक्षेप कर दें वही प्राणी वही जीवात्मा उनकी उपलब्धि कर सकता है। श्रीनिम्बार्क भगवान् ने वेदान्त कामधेनु दशश्लोकी में 'कृपास्य दैन्यादियुजि प्रजायते' जिनमें दीनता है, जिनमें नम्रता है, जिनमें सरलता है और जो भगवत्परायण रहते हैं परम वैष्णव हैं भगवज्जन हैं जिन्होंने सर्वस्व अपना प्रभु के प्रति समर्पित कर दिया है जिनका जीवन का एकमात्र ध्येय-गेय सब कुछ प्रभु हैं उन्हीं पर उनकी कृपा होती है। इसलिए जीवन में दीनता आवे, सरलता आवे, श्रेष्ठता आवे यह हमारे जीवन की प्रक्रिया बने और शिक्षा का यही मूल उद्देश्य है। शिक्षा के क्रम में संस्कृत का यहाँ पर अभी प्रसङ्ग चल रहा था कि संस्कृत का हमको परिज्ञान हो। यह आश्चर्य है कि विदेशों में संस्कृत का हमारे भारत से कहीं अधिक प्रचार है। इग्लैण्ड में एक विद्यालय में संस्कृत अनिवार्य है। एक कोई जायसवाल महानुभाव गये हुये थे भारत से तो वहाँ एक लन्दन के

विश्वविद्यालय को उन्होंने देखा जिसमें एक हजार से भी अधिक छात्र संस्कृत का अध्ययन करते हैं, वहाँ के यदि कोई प्राध्यापक–अध्यापक हैं जो किसी भी विभाग के चाहे गणित शास्त्र के हैं, भूगोल शास्त्र के हैं, इतिहास के हैं, विज्ञान के हैं और किसी भी विषय के वे हैं परन्तु उनको संस्कृत का विद्वान् होना परम अनिवार्य है, जायसवालजी ने बतलाया कि जब हमने जाकर के देखा विद्यालय को तो ऐसी अनुभूति हुई मानों किसी एक ऋषिकुल में आकर के हम जहाँ ऋषि-मुनि तपस्वी शिक्षा का दान करते हैं आश्रमों में उस प्रकार का वहाँ विलक्षण स्वरूप देखा। वहाँ के छोटे-छोटे अंग्रेज बालक जिनकी आयु ११ वर्ष की है १४ वर्ष की आयु है वह बालक पाणिनी अष्टाध्यायी के सूत्रों के क्रम से जो प्राचीन हमारी व्याकरण अध्ययन करने की पद्धति थी उसके अनुसार वह अध्ययनरत थे, वहाँ के श्यामपट्टों पर पाणिनी सूत्र अंकित थे और उन बालकों ने जायसवालजो से जब उन्हें अवगत हुआ कि भारत से कोई विद्वान् आये हैं तो उन्होंने जिज्ञासा करते हुए कहा कि हम आपके द्वारा कुछ संस्कृत सुनना चाहते हैं, जायसवालजी ने कहा कि मैं साधारण रूप से कुछ संस्कृत बोल सकता था किन्तु मेरे साथ में जो व्यक्ति थे वह संस्कृत बोलने में सक्षम नहीं थे। मैं उन बालकों की भावना की पूर्ति नहीं कर सका, उन बालकों ने गहरा खेद प्रकट किया कि क्या आप भारत के निवासी हैं भारत में रहते हैं आप संस्कृत नहीं जानते बड़े आश्चर्य का विषय है। हमारे यहाँ के एक शीर्षस्थ नेता पहुँचे अमेरिका और वहाँ जाकर के जब उनकी एक सभा का आयोजन हुआ तो वहाँ के निवासियों ने कहा कि श्रीमद्भगवद् गीता पर, श्रीरामचरितमानस पर आप कुछ भाव व्यक्त करें हम सुनना चाहते हैं, तो उन शीर्षस्थ महानुभाव ने कहा कि गीता और रामचरितमानस कौनसा ग्रन्थ है हमें पता नहीं आज ही नाम सुना है, वहाँ के निवासियों ने इतनी गहरी वेदना प्रकट की, आश्चर्य लगता है कि आप भारत में रहते हैं एक विशिष्ट शीर्षस्थ नेता हैं और जिस गीता का सम्पूर्ण विश्व की भाषाओं में अनुवाद हो चुका है ऐसे उस पावन दिव्य ग्रन्थ भारत की वह अमूल्य निधि और उससे आप परिचित नहीं, तो यह स्थिति बनती जा रही है। शिक्षा का जो सम्यक् रूप होना चाहिये विदेशों में बढ़ता जा रहा हैं। इसका परिणाम यह होगा कि आज जो पाठ्यक्रम की स्थिति है सरकार के द्वारा निर्धारित जो पाठ्यक्रम है जो कालेजों में, विद्यालयों में, संस्कृत महाविद्यालयों में जो अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है, एक तो पाठ्यक्रम का भार है विद्यार्थी के सामने, अनेक विषय हैं छटवीं कक्षा से दशवीं कक्षा तक उसके सामने दश-दश, पन्द्रह-पन्द्रह ग्रन्थ आते हैं और तेरह-चौदह वर्ष की आयु का छोटा बालक व्याकुल हो जाता है। किसी प्रकार से उसको परीक्षा में सफलता मिल जाय इसके लिए वह जैसा भी बन पड़े करने की चेष्टा करता है। कैसे शिक्षा का ज्ञान होगा। व्याकरणाचार्य, साहित्याचार्य आदि परीक्षाओं के उत्तीर्ण करने पर भी ह्रस्व-दीर्घ का भी ज्ञान नहीं होता है, एक साधारण हिन्दी का पत्र नहीं लिख सकते। भारत को स्वतन्त्र किया और फिर भी हम अंग्रेजी के पीछे इतने पागल हो रहे हैं व्याकुल हो रहे हैं कितना अन्धानुकरण हमारा है आश्चर्य का विषय है कैसे राष्ट्र का मंगल करेंगे, कैसे राष्ट्र के लिए हम हमारे हिन्दू संस्कृति के लिए हितप्रद कार्य कर सकेंगे, बार-बार एतद्विषयक चर्चा होती रहती है और कुछ भी नहीं कर पा रहे हैं यह स्थिति चल रही है और यही व्यवस्था रही तो

आप निश्चित समझें यों तो धर्म की जड़ सदा हरी है नष्ट नहीं होती किन्तु ५० वर्ष बाद आपको पूजा-पाठ करने वाला कोई विद्वान् मिलना कठिन हो जायेगा। ये जो आपके धर्मग्रन्थ, पुराण शास्त्र हैं, वेद शास्त्र हैं, हमारे और जितने भी दर्शन शास्त्र हैं उन शास्त्रों का अर्थ करने वाला श्लोकों का अर्थ करने वाला, अनन्त ज्ञान-विज्ञान से ओत-प्रोत हमारे जो निखिल शास्त्र हैं उन शास्त्रों का ज्ञाता, उन शास्त्रों का सम्यक् अर्थ करने वाला कोई महानुभाव महामनीषी मिलना भी दुर्लभ हो जायेगा। यह जो प्राचीन विद्वान् विद्यमान हैं उनके अतिरिक्त नवीन पीढ़ी में तो कोई सौभाग्य से लाखों में एक दो कोई व्युत्पन्न विद्वान् मिलते होंगे। इसकी गहरी चिन्ता हम सबों को है। ये समस्त धर्माचार्यप्रवर, सन्त-महात्मा, महामनीषी विद्वद्वृन्द और समस्त धर्मप्राण जनता इसका यदि चिन्तन नहीं करेगी तो भविष्य अन्धकारमय है बहुत कठिन है आपके शास्त्रों की स्थिति क्या होगी। जब शास्त्र समझ में नहीं आयेंगे तो शास्त्रों की उपेक्षा होगी, उपेक्षा होने पर कोई उसको जला देगा, कोई फेंक देगा ऐसी अवस्था बनेगी। इसलिए बहुत कठिन समस्या है आप सबों को गम्भीरता से सोचना चाहिए। केवल प्रस्ताव पारित कर दिया और यहाँ हम लोग बोल दिये इतने पर से कोई कार्य होगा नहीं, सरकार को बाध्य करना चाहिये, शिक्षाविदों को बड़ी गम्भीरता से ध्यान देना होगा। हम बार-बार कहते हैं और हम लोगों की उपेक्षा निरन्तर होती ही जा रही है इसका परिणाम नहीं सोचते हैं इसलिए हम अधिक कहना नहीं चाहते। दो-तीन महिना पहले हम ऐसे ही लेखनी लेकर के बैठ गये लगभग ५० दोहों की रचना के लिए मन में विचार किया पर लिखते-लिखते इसमें ४०१ दोहा बन गये और एक लघु कलेवरात्मक छोटा सा यह "विवेक–वल्ली" ग्रन्थ हो गया, इसमें अनेक प्रसंग हैं शिक्षा के सम्बन्ध में, मातृवर्ग के सम्बन्ध में, श्रेष्ठी वर्ग के सम्बन्ध में, धर्माचार्यों के सम्बन्ध में, महात्माओं के सम्बन्ध में, विद्वानों के सम्बन्ध में, वैद्यों के सम्बन्ध में, मानवमात्र के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के ऐसे इसमें उद्‌बोधन हैं भिन्न-भिन्न प्रसंग हैं यह उपादेय ग्रन्थ है प्रेरणादायी है। कल तक तो यह छप ही रहा था और आज प्रातःकाल भी इसका मुद्रण चल रहा था। हमारे मुद्रणालय के व्यवस्थापक श्रीभँवरलालजी उपाध्याय उन्होंने प्रयास करके तत्काल ही यह ग्रन्थ अभी-अभी व्यवस्थित करके यहाँ पर भेजा और हमने सोचा हमारे यहाँ चर्चा चली कि उसका विमोचन कैसे क्या हो। हमने कहा—जगद्‌गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराज पधारे हुये हैं ये महामनीषी हैं परम सरल सौम्य हैं इनके द्वारा ही इस ग्रन्थ का विमोचन हो तो सबसे बड़ा महत्वकर होगा तो यह पावन अवसर देखकर के आपके द्वारा इसका विमोचन हुआ। श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज व्रज से यहाँ पधारे उन्होंने यहाँ आकर के आचार्यपीठ की स्थापना की और उनका एक ग्रन्थ है महान् विशाल ग्रन्थ "श्रीपरशुराम सागर" जिसमें तीन हजार से अधिक दोहा है, हजारों ही पद्य हैं, चौपाईयाँ हैं महान् ग्रन्थ है उसका नाम ही है 'परशुराम सागर' उस ग्रन्थ पर डा० श्रीरामप्रसादजी शर्मा ने शोधकार्य किया है बड़ा शोध ग्रन्थ आपने लिखा और परम महनीय परिश्रम किया है। आचार्यवर्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज ने जो वचन वेद-पुराणादि शास्त्रों में हैं उन्हीं प्रसङ्गों को तथा स्वानुभूत विषयों को दोहों में समावेश कर दिया है जो सदा अन्तःकरण में परम अवधारणीय है।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीहर्याचार्यजी महाराज

अभी-अभी जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज ने बतलाया वह बहुत उच्चकोटि की बात है कि जब तक हमारा संस्कार हमारा मूल नहीं ठीक होगा तब तक पत्तों को हम कितना भी सींचते रहें उससे हमारे जीवन में दृढ़ता नहीं आयेगी और हमारी रीढ़ जो है वह दृढ़ नहीं हो सकती। प्रवेशिका कक्षा के छात्र को वास्तव में रामः गच्छति या रामः गच्छतः होगा यह नहीं जानेगा तो शब्द बोध उसको कैसे होगा। शिक्षा के मूल में परिवर्तन होना अनिवार्य है इसी से संस्कृत भाषा का विकास और संस्कृति में आस्था उत्पन्न होगी। आज हिन्दू-हिन्दू हम चिल्लाते हैं लेकिन हम यह नहीं कहते हैं कि हिन्दुत्व का आधार क्या है हिन्दुत्व का आधार हमारे वेद शास्त्र हैं तत्प्रतिपादित आचरण हम नहीं करते तो हम हिन्दू कैसे ? हम वेद प्रतिपादित, शास्त्र प्रतिपादित आचरण करें, तब हम हिन्दुत्व और हिन्दू की दुहाई दें तब ठीक है, इसलिए आमूल परिवर्तन हमारे संस्कृत भाषा में हमारे सम्पूर्ण भारतीय आर्यावर्त का जो समग्र ऐश्वर्य पक्ष है, चरित्र पक्ष है, ज्ञान पक्ष है, कर्म पक्ष है, भक्ति पक्ष है, प्रपत्ति पक्ष है, शरणागति पक्ष है वह सब वेदों में सन्निहित है। आज लोग कहते हैं वेदों में भक्ति कहाँ, वेद को तुम किस अर्थ में पढ़ते हो। वेद का एक भी मन्त्र ऐसा नहीं है जो भक्ति से अनुप्राणित न हो। सभी मन्त्र स्तुति परक है प्रार्थना परक है और यज्ञ परक है वह सब भक्ति से परिपूर्ण हैं एक भी मन्त्र ऐसा नहीं है जिसमें भगवान् की भक्ति सन्निहित न हो। हमारी जो संस्कृति है भारतीय संस्कृति वह वेदों में सन्निहित है। हमारा चाल-चलन, हमारा रहन-सहन, हमारा उठना-बैठना, हमारा बोल-चाल, हमारे जीवन के प्रत्येक क्रियाकलाप, हमारा चरित्र पक्ष, हमारा आचरण पक्ष, हमारा अध्ययन पक्ष, हमारा अध्यात्म पक्ष, हमारे जीवन का प्रत्येक पक्ष वेद से सम्बद्ध है। आज संस्कृत भाषा का सरकार उत्थान करेगी, यह आपका भ्रम है, तुम अपना उद्धार नहीं करोगे तो हम तुम्हारा उद्धार कभी नहीं कर सकते हैं। तुम्हें अपना उद्धार करने के लिए स्वयं आगे आना होगा। तुम्हारा उद्धार नेता करेगा ? यह तुम्हें भ्रम है, तुम्हारा उद्धार कभी नेता नहीं कर सकता तुम्हारा उद्धार तुम्हारी तपस्या करेगी, तुम्हारा उद्धार तुम्हारी कर्मठता करेगी। शिक्षा शब्द में चार अक्षर धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का सम्यक् परिज्ञान हो जाना शिक्षा शब्द की निरूक्ति है और विद्या शब्द में पाँच अक्षर पाँच अक्षर का क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर पञ्चतत्त्वों का सही-सही परिज्ञान हो जाना यही विद्या का परम तात्पर्य है। हमारे उपनिषद् में विद्या की परिभाषा की गई है कि विद्या वह है जो आत्म विमुक्ति की ओर ले जाती है, मृत्यु को हम पार कर जाँय यह विद्या है। भारतीय विद्या वास्तव में आत्म विमुक्ति की ओर सदा प्रेरित करती रही है, आत्म विमुक्ति का तात्पर्य है आत्मतोष, यदि हमको आत्मतोष नहीं हुआ विद्या के द्वारा तो हमारी विद्या किसी काम की नहीं। आप कहते हैं कि हम हिन्दू हैं शिर पर हाथ फेरो कितने लोगों के शिर पर शिखा में ग्रन्थी बँधी हुई है। भारत का अर्थ है—भा माने दीप्ति, भा माने ज्योति, भा माने प्रकाश और रत माने संलग्न रहना। जहाँ के मनीषी सदा प्रकाश में रत रहे हैं, तपस्या में रत रहे हैं वह हमारी ऋतम्भरा प्रतिभा है और वही हमारी रीति परम्परा है, इस ऋषि परम्परा की छाया में जब तक आप नहीं आयेंगे तब तक आपकी संस्कृति और आपकी संस्कृत प्रकाशित

सम्मेलन पर अपने दिव्य सदुपदेश प्रदान करते हुए अनन्त श्रीविभूपित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज।

अनन्त श्रीविभूपित जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर स्वामी श्रीवासुदेवानंद सरस्वतीजी महाराज (बदरिकाश्रम) सम्मेलन पर दिव्य उद्बोधन देते हुए।

रामानन्द सम्प्रदाय के यशस्वी सन्तशिरोमणि राम जन्मभूमि न्यास के उपाध्यक्ष श्रीमहन्त श्रीनृत्यगोपालदासजी महाराज मनीराम छावनी (अयोध्या) प्रवचन करते हुए।

अनन्त श्रीविभूपित जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीहर्याचार्यजी महाराज सदुपदेश प्रदान करते हुए।

रामायण एवं [illegible] धारावाहिक के संचालक श्रीरामानन्दजी सागर (बम्बई) [illegible] आचार्यश्री द्वारा श्रीनिम्बार्कसुदर्शन महाचक्र प्रदान एवं [illegible] श्रीभीमकरणजी छापरवाल एवं मंत्री श्रीराधे[illegible] द्वारा अभिनन्दन समर्पण।

सभामंच पर रामायण धारावाहिक एवं श्रीकृष्ण धारावाहिक के प्रख्यात गायक श्रीरविन्द्रजी जैन (बम्बई) अपना सुमधुर गायन प्रस्तुत करते हुए। साथ में बैठे हुए बायें से दायें श्रीसुभाषजी सागर, श्रीरामानन्दजी सागर, राजस्थान के मुख्यमंत्री श्रीभैरोंसिंहजी शेखावत, श्रीललितकिशोरजी चतुर्वेदी एवं अन्य विद्वज्जन तथा भक्तजन।

रामायण एवं महाभारत धारावाहिक के प्रसिद्ध गायक श्रीरवीन्द्रजी जैन (बम्बई) को श्रीनिम्बार्कसुदर्शन महाचक्र प्रतीक एवं अभिनन्दन-पत्र प्रदान करते हुए आचार्यश्री एवं सिंहासनासीन जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीहर्याचार्यजी महाराज, खड़े - स्वागताध्यक्ष, दायीं ओर विराजमान दिगम्बर अनी के श्रीमहन्त श्रीहरिदासजी महाराज (नासिक) अनेक सन्त, महात्मा, विद्वज्जन।

हिन्दी व्याख्या सहित अभिनव प्रकाशित '[illegible] दीपिका' ग्रन्थ का समर्पण करते हुए आचार्यश्री। साथ खड़े हैं हिन्दी व्याख्याकार पं. श्रीहरिशरण[illegible] उपाध्याय, प्राचार्य - श्रीनिम्बार्क संस्कृत महाविद्यालय (वृन्दावन)। उनके पीछे माला [illegible] [illegible] इन्दौर।

नहीं होगी और जब तक आपकी संस्कृत और आपकी संस्कृति प्रकाशित नहीं होगी तब तक इस देश का विकास, आपका आध्यात्मिक विकास, आपका चारित्रिक विकास, आपका सांस्कृतिक विकास, आपका सामाजिक विकास होना असम्भव है। इसलिए आपको और अपने बच्चों को सर्वप्रथम आज ऐसी पाठशालाओं की आवश्यकता है जहाँ पवित्र संस्कार, पवित्र चरित्र और पवित्र भाषा का संस्कार उनके हृदय में दृढ़ता के साथ भरा जाय। भारतीय संस्कृति का यदि हम उत्थान चाहते हैं, यदि हम विकास चाहते हैं तो आज अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए उनमें संस्कार डालने के लिए हम छोटी-छोटी पाठशालाओं का गाँव-गाँव में निर्माण करें, घर-घर में निर्माण करें और आज से ही हम छोटे-छोटे वाक्यों में संस्कृत को अधिक से अधिक बोलना प्रारम्भ करें, बोलना सीखें और बोलना सिखायें। गाँव में पाठशालाओं में, घरों में बच्चों में, यदि हम यह भाषा बोलने लगें तो यही एक दिन लोक भाषा के रूप में परिणित हो जायेगी, वास्तव में इसमें जितनी सरलता है, जितनी मृदुता है, जितनी विशालता है, जितना विस्तार है, जितना गहन ज्ञान है वह आपको कहीं प्राप्त नहीं होगा। आज ऋषि कल्प की जो परम्परायें हैं हमारे यहाँ वह क्यों अधिक महत्वपूर्ण हैं इसलिए कि इन्होंने ऋतम्भरा प्रतिभा के द्वारा वेद भगवान् के मन्त्रों को जिन-जिन अर्थों में जहाँ-जहाँ जैसे विघटित होते हुए देखा था तत्तत् ऋषियों का तत्तत् मन्त्रों के पहले विनियोग बना है, विनियोग का अर्थ होता है—वि पूर्वक यजु योगे धातु से विनियोग शब्द की निष्पत्ति होती है जिसका अर्थ होता है निशाना। वास्तव में यदि हमारा लक्ष्य बन्दूक मारने के पहले जैसे आप निशाना लगाते हैं वैसे ही वेद मन्त्रों का प्रयोग करने के पहले आप लक्ष्य करते हैं। यदि आपका लक्ष्य है कि हमारा विकास हो, यदि आपका लक्ष्य है कि हम विस्तृतता की ओर जाँय, यदि आपका लक्ष्य है कि हम अध्यात्म की ओर जाँय, हम पवित्रता की ओर जाँय, हम आध्यात्मिकता की ओर जाँय तो आप याद रखें दुनियाँ की कोई शक्ति आपको क्षीण नहीं कर सकती। भारत की यह वह सभ्यता है, वह संस्कृति है जहाँ श्रीकृष्ण ऐसे राजराजेन्द्र व्रजेन्द्रनन्दन भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र राजकुमार के रूप में होते हुये भी सुदामा जैसे दरिद्र के साथ एक साथ विद्यालय में पढ़कर के और सेवा किया करते थे। वो संस्कृति आज इस देश में पूर्णरूपेण विद्यमान है वास्तव में आज भी कृष्ण सुदामा के साथ जाने में नहीं हिचकते हैं यही सबसे बड़ी यहाँ की संस्कृति है और यहाँ की सभ्यता है, वास्तव में इस सभ्यता को, इस संस्कृति को कोई दुनियाँ में है जो इसे हटा सकता है, कोई नहीं हटा सकता है। यह संस्कृति आज भी विद्यमान है हमारे प्यारे श्रीकृष्ण दीनों के साथ जाने में नहीं हिचके। इस अर्थ में हमारे भगवान् देश की संस्कृति है। अर्जुन रोते हुये कहता है कि मैं आज आपको जान पाया अभी तक अहीर समझता था, अभी तक सखा समझता था, अभी तक माधव समझता था लेकिन आज जान गया, भगवान् ने कहा क्या जाना, कहा आज मैं जान सका कि आप सनातन हैं। जो इसको विकृत करने के लिए आया इसमें समा गया उसका नामों निशान नहीं रह गया और जो आयेगा इसकी कुक्षी में समा जायेगा यह सनातन धर्म का वैशिष्टय है। क्योंकि यह धर्म कहीं बाहर से नहीं लाया गया है, किसी व्यक्ति के द्वारा नहीं लाया गया है यहाँ का सनातन परमात्मा आनन्दकन्द व्रजेन्द्रनन्दन भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं वह सनातन हैं और शाश्वत धर्म के रक्षक हैं, तीनों काल में

जिसका कभी व्यय नहीं होता वह अव्यय भगवान् सनातन श्रीकृष्ण हैं । तो जिस देश के सनातन श्रीकृष्ण हों, जिस सभा के सनातन श्रीकृष्ण हों, जिस धर्म के सनातन श्रीकृष्ण सर्वेश्वर हों, जिस सभा, जिस सन्त और जिस संस्कृति का सनातनत्व पोषण भगवान् श्रीसर्वेश्वरजी करते हों उसको विकृत करने की क्षमता किसी में नहीं है । जो लोग कहते हैं और राजनीति की ढपली पीटते हैं वह केवल आपको तोड़ने का प्रयास कर रहे हैं, आपको बरगलाने का प्रयास कर रहे हैं । ऐसे समय में अपनी गीता को, भगवान् को, अपने रामायण को और ऋषि कल्पों के आचरणों को कभी मत भूलना इनको हृदय में रखना यदि इनको रखे रहोगे तो दुनियाँ की कोई शक्ति ऐसी नहीं है जो तुम्हें डिगा सके, जो तुम्हें हिला सके और जो तुम्हें गुमराह कर सके। आज संस्कृत भाषा की जो बात है वास्तव में यह संस्कृत भाषा इस देश की धरोहर है इसी भाषा के द्वारा हम सब कुछ सीखे हैं जीवन में उठना-बैठना, चलना-फिरना यह सब कुछ संस्कृत में निहित है इसलिए हमारे यहाँ आध्यात्म को जानने के लिए, भगवान् को जानने के लिए, अपने स्वरूप का परिज्ञान करने के लिए जीविकोपार्जन का सम्पूर्ण सनातनत्व का दर्शन आपको करना हो तो वेद भगवान् की कुक्षी में करिये उनको न जान पावें तो आप शास्त्रों में आइये शास्त्रों में न जान पावें तो आप भाषा ग्रन्थ श्रीरामचरितमानस जो आज समग्र आर्यावर्त का प्रतिनिधित्व कर रहा है, वेदों की तरह जिसका महत्व है उसको देखें । आप ऐसे सरल श्रीकृष्ण का दर्शन करें जो वास्तव में गोपियों के गोबर उठाने में भी कभी हिचकते नहीं हैं और श्रुति स्वरूप में स्थिर होने में भी कभी हिचकते नहीं हैं ऐसे श्रीराधासर्वेश्वर के निरावरण पादारविन्द में जब हम पहुँच जायें तो उसका माध्यम केवल संस्कृत भाषा है, उसका माध्यम केवल हमारे वेद भगवान् हैं । संस्कृत मेरे देश की धरोहर है, संस्कृत भारत की आत्मा है, संस्कृत केवल भाषा नहीं है संस्कृत हमारे जीवन की वह देवगिरा है जो मेरे हृदय के सुसुप्त तारों को झंकृत करती रही है और आज भी झंकृत कर रही है । वास्तव में हम यदि संस्कृत से हट जायेंगे तो हमारे संस्कार समाप्त हो जायेंगे, वास्तव में आप जनेऊ तोड़ सकते हैं, आप चोटी काट सकते हैं आप और कुछ कर सकते हैं लेकिन इस खून में जो धर्म व्याप्त है इसमें जो शाकाहारी खून शरीर में बह रहा है इसको आप कैसे निकालोगे । इसलिए आप सम्पूर्ण नागरिकों को आज से व्रत लेना चाहिये कि अपने बच्चों को ये मत समझो कि अंग्रेजी पढ़ाओगे तो उसको नौकरी मिल जायेगी यह तुम्हारा भ्रम है । यदि वह अज्ञानी होगा तो पढ़कर के भी लाखों रुपया दे दो तो उड़ा देगा आवारागर्दी में, लेकिन उसमें यदि चरित्र है, यदि उसमें विचार है, यदि उसमें धैर्य है तो तुम दश रुपया देदोगे तो दश रुपये के द्वारा वह दश लाख बनाकर के तुम्हारे सामने प्रस्तुत करेगा और तुम्हारी सेवा करेगा । इसलिए आज ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसमें विचार हो, चरित्र हो, प्रकाश हो और पंचतत्त्वों का परिज्ञान निहित हो, वास्तव में तभी हमको प्रकाश मिलेगा, तभी हमको आनन्द मिलेगा । सच्चिदानन्द का अर्थ यही है सत् का अर्थ-कर्म है चिदन्त का अर्थ-ज्ञान है और आनन्दान्त का अर्थ-भक्ति है, भगवान् की भक्ति आनन्द के बाद ही प्राप्त होती है । हमारे श्रीराधासर्वेश्वरजी आनन्दस्वरूप हैं उनके सामने यदि कोई दीन होकर चला जाय तो चाहे जैसा हो उस पर उनकी अहैतुकी कृपा होती है । भगवान् देवगिरा में निहित हैं देवगिरा का अध्ययन करोगे तो देवत्व की ओर जाओगे देवता होकर

देव का पूजन करो। यह देवगिरा है जिस दिन देवगिरा का अध्ययन करोगे तुम में देवात्मक शक्ति आयेगी, वास्तव में जिस शक्ति के द्वारा अपने जीवन के प्रत्येक पक्ष का पोषण करने में हम सभी सक्षम हो सकेंगे तभी भारतीय संस्कृति का, हमारे चाल-चलन का, हमारे रहन-सहन का, हमारे खान-पान का, हमारे जीवन का, हमारे प्रत्येक पक्ष का वास्तव में संशोधन हो जायेगा और उसके होने के लिए आपको आज संस्कृत की आवश्यकता है। इन्हीं शब्दों के साथ हम अपनी वाणी को विश्राम देते हैं।

शिक्षा सम्मेलन : द्वितीय सत्र

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

लीला विलास के निमित्त जिस प्रकार मकड़ी अपने उदरदरी से जाला का विस्तार करती है और उसमें क्रीड़ा करती रहती है, क्रीड़ा से जब उपरति होती है उसे विराम लेने की इच्छा होती है तो उस समस्त जाला को अपने उदरदरी में लीन कर लेती है। एवंविध परात्पर प्रभु की जब इच्छा होती है सम्पूर्ण संसार का सृजन करते हैं और जब उससे विराम की इच्छा होती है तो आप सारे संसार को अपने में लीन कर लेते हैं। उस लीला के क्रम में "यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत" इस संकल्पानुसार समय-समय पर आप अनेकानेक स्वरूपों में अवतीर्ण होते हैं, कभी ऐसा भी अवसर आता है कि पार्षदरूप में भी अवतीर्ण हो जाते हैं। अनेक स्वरूप हैं अद्भुत लीला है उनकी लीला का वर्णन वाणी का माध्यम नहीं है। जब भगवान् व्यास इस अवनितल पर अवतीर्ण हुये आपने अष्टादश पुराण, अष्टादश उपपुराण और अष्टादश ही उपोपपुराण इन समस्त पुराणों की आपने रचना की और नाना प्रकार के अनन्त ज्ञान-विज्ञान से सम्पन्न 'महाभारत' का आपने प्रणयन किया, जो 'महाभारत' एक लाख से भी अधिक श्लोकों से समन्वित है, ऐसा अद्भुत दिव्य ग्रन्थ है। जितने भी हमारे कर्म हैं नीति का, धर्म का क्या स्वरूप हो, हमारे सन्तों का क्या स्वरूप हो, जगत् के सम्पूर्ण स्थिति का, व्यवस्था का चित्रण 'महाभारत' में है। महाभारत युद्ध हुआ और विलक्षण संग्राम हुआ चर्चा तो लोग करते रहते हैं। बहुत से महानुभावों में यह भी भ्रांति है कि 'महाभारत' की यदि कथा करावें तो कहीं ऐसा न हो जाय कि अपने घर में ही महाभारत हो जाये, हमारे यहाँ आचार्यपीठ में एक वर्ष तक महाभारत की कथा का क्रम चला, हमारे विद्वानों द्वारा लगभग दो घण्टे तक कथा चलती थी एक वर्ष लगा तो उस अवधि में समग्र आनन्द रहा किसी प्रकार की कोई भी अव्यवस्था नहीं हुई। जो भ्रान्ति बनी हुई थी कि महाभारत की जहाँ पर कथा होती है तो वहाँ कोई न कोई विचित्र अवस्था हो जाती है ऐसा कुछ नहीं है भ्रान्ति है। महाभारत का पठन, दर्शन जन-जन में हो, पता नहीं प्रभु की अद्भुत लीला है उस लीला के क्रम में बी० आर० चौपड़ाजी को और श्रीरामचरितमानस का, भगवान् के लोकोत्तर पावनतम चरित्र का सर्वत्र प्रचार-प्रसार हो ऐसी प्रेरणा श्रीरामानन्दजी सागर को हुई, उभय महानुभावों ने बड़े अद्भुत रूप से अनिर्वचनीय रूप से उसे दूरदर्शन पर उपस्थित किया और दूरदर्शन से कोटि-कोटि जनता ने उसका दर्शन लाभ लिया।

महाभारत में चौपड़ाजी ने इतने सुन्दर पात्रों का चयन पता नहीं कैसे किस बुद्धिमत्ता से किया है। पितामह भीष्म को देखें, संजय को देखें और शकुनी का तो बड़ा ही विलक्षण है। जयपुर के निकट की ही बात है मार्ग में थोड़ी देर के लिए कहीं जलपान करना था कुँआ पर कुछ बालक बैठे हुये थे उन्होंने महाभारत के अनेक प्रसंग हमको श्रवण कराये, जो ग्राम्य बालक, अबोध बालक, छोटे-छोटे बालक उन्होंने चरित्र श्रवण कराये, हमें परम प्रसन्नता हुई। बी० आर० चौपड़ाजी ने और श्रीरामानन्दजी सागर ने 'महाभारत' और 'श्रीरामचरितमानस' का जन-जन में प्रचार-प्रसार किया, यह दोनों ही विभूति हैं ऐसा लगता है जैसे भगवान् व्यास ने प्रकट होकर के पुराणों की रचना की है। किनके माध्यम से कोई कार्य हो जाय 'निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्' के अनुसार किसी को निमित्त बनाकर के भगवान् अपनी लीला का दिव्य प्रसार-प्रचार स्वयं कर देते हैं वो कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं सर्वसमर्थ हैं कुछ भी कर सकते हैं। दूरदर्शन से पुनः उसी महाभारत का दर्शन कराया जाये यह कोटि-कोटि जनता की इच्छा है हम तो कहेंगे कि हमारे धर्माचार्यप्रवर, विद्वद्वृन्द और ये कोटि-कोटि जनता जो यहाँ पर स्थित है पुनः यह आग्रह करें कि दुबारा 'महाभारत' का शुभारम्भ हो और सरकार को भी चाहिये कि वह अनुमति देकर के पुनः इसका शुभारम्भ किया जाय तो एक अद्भुत प्रेरणा मिलेगी, आनन्द मिलेगा और समस्त जन-जन का मानस उल्लसित हो जायेगा। ऐसी हम भावना रखते हैं। हम सर्वेश्वर प्रभु से पुनः-पुनः ऐसी मंगलमयी कामना करते हैं कि ऐसे और भी लोकोत्तर पावनतम चरित्र दूरदर्शन से अवलोकन करवाया जाये जिससे भारतीय संस्कृति का दिव्य स्वरूप आपके सामने प्रकट हो।

श्री बी० आर० चौपड़ा

श्रीगुरु महाराज के चरणों में मेरा बहुत बड़ा प्रणाम। मेरे शब्द मेरे गले में आकर अटक रहे हैं मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि मैं इतनी सारी तारीफ का जबाब कैसे दूँ। मैं सिर्फ यही बता सकता हूँ कि 'महाभारत' कैसे बनी और कैसे बन सकी वही बता सकता हूँ। जब सरकार ने मुझे कहा और निमन्त्रण दिया कि आप 'महाभारत' बनाओ तो मैं एक बार तो डर गया, मैंने कहा ये बहुत उलझा हुआ है, रामायण बहुत सीधा है, 'महाभारत' बहुत उलझी हुई गाथा है इसको कैसे करूँगा मेरे से तो बन नहीं पायेगी, अब तक मैंने जो ईज्जत कमाई है शायद वह भी जायेगी, एक बार तो मैंने सोचा कि इन्कार ही कर दूँ दिल्ली में था होटल में जाकर सो गया कि कल बताऊँगा। मैं सच कहता हूँ कि मैं आर्य समाजी हूँ और मानता नहीं हूँ कि भगवान् के दर्शन हो जाते हैं। मगर रात को सोते हुये मुझे ऐसे लगा जैसे कोई मुझे कह रहा है कि तू तो कहता है कि कर्म करना चाहिये। फल की आशा क्यों लेकर बैठ गया, तू बना और बाकी छोड़ दे मेरे पर, यह बात मेरे में आई यह कैसे आई यह मुझे मालुम नहीं है। यह सच बात है मैं अगले दिन जाकर बोला उनसे, मैं बनाऊँगा। एक वर्ष बहुत तपस्या की मगर हमेशा यह लगा कि कोई मेरे कन्धे पर बैठा है और कह रहा है मैं हूँ कोई चिन्ता न करो तुम घबराओ नहीं मैं तेरे साथ हूँ। सुबह आठ बजे से लेकर रात्रि दश बजे तक काम करते थे मगर ऐसे लगता था कि कोई करवा रहा है, यहाँ तक हुआ कि हमारा जो लिखने वाला था

वह एक मुसलमान था। उसको मैंने एक बार कहा कि भाई डाक्टर साहब आप कैसे लिख पाते हैं तो वह कहता है कि भाई मैं तो कवि हुँ मुझे तो आमद होती है ऊपर से एक्सप्रोसन आती है तो मैं लिखता हूँ, मगर इस 'महाभारत' के लिए मुझे समझ में नहीं आता कि जब विचार-विमर्श आप से करके सारा वार्तालाप आप से करके घर जाता हूँ और सोता हूँ एक घण्टे के लिए तो उसके बाद एक मेरे चमत्कार आता है मुझे ऐसे लगता है कि मुझे कृष्ण लिखवा रहे हैं। सच पूछिये तो मैं 'महाभारत' का क्रेडिट लेने को बिल्कुल तैयार नहीं हूँ, यह 'महाभारत' भगवान् का ग्रन्थ है उन्होंने ही बनवाई है और आप लोगों ने उसको सराहा तो मैं आप लोगों के प्यार को प्रणाम करता हूँ, श्रीगुरुजी महाराज के आशीर्वाद को प्रणाम करता हूँ उनकी कृपा को प्रणाम करता हूँ आपने जो मुझे इतना मान दिया है उसके काबिल हूँ कि नहीं ये तो मुझे मालुम नहीं मगर गुरुजी महाराज की कृपा से उनके चरणों में यह आशीर्वाद माँगता हूँ कि मैं इसके लायक बनूँ।

श्रीललितकिशोरजी चतुर्वेदी

हम लोग कितने सौभाग्यशाली हैं कि पिछली २२ तारीख से इस स्वर्णजयन्ती समारोह में आचार्यश्री की कृपा से सलेमाबाद की इस नगरी में वैराग्य का, ज्ञान का, धर्म का, भक्ति का सागर ही उपस्थित हो गया। पूज्य श्री 'श्रीजी' महाराज की कृपा से पिछले ५० वर्षों तक जो हमको मार्ग दर्शन मिलता रहा राजस्थान के इस क्षेत्र में और ५० वर्ष के बाद आज श्रीचरणों में बैठकर किन शब्दों में इन चरणों का अभिवादन हम करें, कौन से श्रद्धा-सुमन इन पूज्य चरणों में समर्पित करें। इस कार्यक्रम के माध्यम से बड़ी कृपा करके देशभर के पूज्य आचार्य, सन्त अपने बीच में पधारे, मार्गदर्शन मिला हम भक्तजन उनसे लगातार लाभान्वित हो रहे हैं। हमारे सामने भक्ति का, कर्म का, ज्ञान का, वैराग्य का सागर उपस्थित है हम सब श्रद्धालु भक्तजन जो सागर के समीप आये हैं पिछले ५ दिन से लगातार स्नान कर रहे हैं। सारे देशों को निगाहें भारतवर्ष में उठते हुए इस भक्ति, ज्ञान, वैराग्य की ओर देख रही है। स्वतन्त्रता के पश्चात् यह पहला अवसर देश में एकत्रित हुआ है जब सारा देश हिमालय उत्तर से लेकर दक्षिण तक, कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक, अटक से लेकर कटक तक आज एक विशेष प्रकार की लहर में गोते लगा रहा है। देश के सन्त-महात्माओं के कारण आज देश में एक आध्यात्मिकता की लहर जो उठी है ज्ञान, भक्ति, कर्म का जो एक उभार आकर उपस्थित हुआ है इसको हम और बढ़ावें। रोटी, कपड़ा, मकान तो मिल सकता है सब स्थानों पर और मिला है, उसकी आशा-आकांक्षा भी हो सकती है किन्तु वह जीवन का अन्तिम लक्ष्य नहीं है आनन्द की प्राप्ति तो केवल आध्यात्मिक जीवन से ही हो सकती है। हिन्दुत्व की लहर आज देश में व्याप्त है। विश्व भी चाहता है, फिर देश में स्वामी विवेकानन्द खड़े हों और अमेरिका की धर्म संसद् में जाकर गुंजा दे हिन्दुत्व का घोष। हिन्दुत्व की लहर, भारतीयता की लहर, आध्यात्मिकता की लहर देश के कौने-कौने में चली है उसी के क्रम में चाहे बी० आर० चोपड़ा का महाभारत हो, चाहे रामानन्द सागर की रामायण हो, अयोध्या में भगवान् राम के मन्दिर का चाहे निर्माण हो। यह कोई सामान्य स्थिति नहीं है आवश्यकता तो यह है कि एक ओर

जन्म स्थान पर राम का मन्दिर बने और यह क्रम रूके नहीं। मथुरा भगवान् कृष्ण की जन्म-भूमि रही है, वाराणसी भगवान् शिव की भूमि रही है तो भव्य मन्दिर हिन्दुत्व लहर को चलाने के लिए वहाँ भी स्थापित हो इस बात की बहुत आवश्यकता है और वह यदि पूर्ण होगी तो सन्तों की कृपा से होगी, सन्तों के आशीर्वाद से होगी, सन्तों के मार्गदर्शन से होगी। हम जैसे धूर्त राजनीतिज्ञ तो अपनी रोटी सेंकने के लिए कहीं भी तैयार हो जायेंगे, किन्तु आवश्यकता यह है कि आज विश्व के प्राँगण में भारत देश फिर धर्मगुरु के नाते खड़ा हो और आध्यात्मिकता की ध्वजा सारे विश्व पर फहरावे और उसी के लिए जो प्रयास चला है, जो कदम बढ़े हैं, जो स्वर गूँजा है, देश की धरती पर वह सब आगे बढ़ता चला जाय और भगवान् की कृपा से जैसा उन्होंने कहा—जब-जब धर्म का नाश होता है मैं अवतार लेता हूँ आज इसी नाते से अवतरित पुरुष सबके सामने विराजमान हैं और श्री 'श्रीजी' महाराज का हम पाटोत्सव मनाने के लिए एकत्रित हैं देश के प्रांगण में हिन्दुत्व की भावना पैदा हो यह विचार उत्पन्न हो मनसा, वाचा, कर्मणा यह भावना बढ़ती चली जाय इसी के लिए हम राजनीतिज्ञों को आशीर्वाद मिले। शिक्षा के विषय में केवल एक निवेदन करना चाहूँगा, एक बालक था एक अच्छी शिक्षा प्राप्त कर ली, साक्षात्कार का निमन्त्रण आया साक्षात्कार के लिए पहुँच गया बड़ा दुबला-पतला व्यक्ति था। आज की पोस्ट ग्रेजुयेशन शिक्षा प्राप्त की थी साक्षात्कार करने वाले ने और प्रश्नों के साथ एक सवाल किया कि तुम्हारा शौक क्या है, कहने लगा लड़का मैं दौड़ता हूँ, मैं कूदता हूँ, साक्षात्कार करने वाले ने पूछा कि बड़े दुबले-पतले लगते हो कैसे कूदते होंगे, कैसे दौड़ते होंगे। उसने कहा—मैं दौड़ता तो हूँ किन्तु मैदान में नहीं मैं तो अवसर के पीछे दौड़ता हूँ। मैं कूदता तो हूँ मैदान में नहीं कूदता, मैं तो समय देखकर उस पर कूद जाता हूँ। यदि भारत की शिक्षा यही रहेगी, अवसरवादी लोगों को पैदा करने की, समय देखकर उसका फायदा उठाने की, इतना व्यक्तिवादी जीवन का लक्ष्य हो गया शिक्षा में तो भारत की भूमि में वह शिक्षा निरर्थक है। विश्व में भारत गुरु स्थान पर आध्यात्मिकता के कारण पहुँच सकता है। तो पहली शिक्षा की ये देन होनी चाहिये परिवार के जीवन के लिए नहीं, उस भारतमाता के चरणों में बैठकर उसकी पूजा करते हुये समस्त जीवन बीत जाय यह जीवन का लक्ष्य होना चाहिए।

जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्रीवासुदेवाचार्यजी महाराज

विषय है कि आज की शिक्षा पद्धति कैसी होनी चाहिये। वस्तुतः बिना शिक्षा के व्यक्ति अधूरा है। उपनिषद् ऋचाओं में सबसे पहले शिक्षा का अध्याय है, अध्ययन की एक परम्परा जो हमारे प्राचीन भारतीय पद्धति में लगातार चली आ रही थी। जब से शिक्षा राज्याश्रित हो गई तब से वह अविच्छिन्न परम्परा विच्छिन्न हो गई। आज शिक्षा के राज्याश्रित होने के कारण जो शिक्षा पद्धति राज्याश्रय को ज्यादा महत्व देती है वह राज्यमुखापेक्षी होती है। जो शिक्षा पद्धति राजनेताओं का गुणगान करती है, शिक्षा पद्धति जो किसी पार्टी या किसी दल विशेष के कर्णधारों का गुणगान करती है ऐसी शिक्षा पद्धतियों के लिए ही हमारी केन्द्रीय सरकारें अनुदान देती है। उस शिक्षा पद्धति के लिए अनुदान देने में घबराहट होती है

जिस शिक्षा पद्धति के आधार पर हमारे मानवीय मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास किया जाता है। जिन भरत ने एक हरिणी के बच्चे का लालन-पालन किया था, जिन भरत के हृदय में ऐसी दयालुता है जो वैदिक ऋचा के अनुसार चार पैर वाले पशु के कल्याण की भी कामना करता है, जो अपनी तपस्या को भी समर्पित कर देता है उस पशु की सुरक्षा के लिए और हरिणी के बच्चे को उठा लेता है, पालन-पोषण के द्वारा उसे समृद्ध करता है और बाद में उसके वियोग में अपने प्राणों तक का परित्याग करके समाज को बतलाता है। त्रिलोक के अन्दर ऐसा कोई राष्ट्र नहीं होगा जिस राष्ट्र का नाम इतने बड़े उदात्त धीर वीर सच्चरित्रवृत श्रीभरतजी के नाम पर पड़ा हो, विश्व में इसका कोई इतिहास नहीं है। हमारा वैदिक महर्षि प्रार्थना में क्या कामना करता है—हमारे राष्ट्र के बुद्धि प्रधान लोग बुद्धि सम्पन्न हों, तेज सम्पन्न हों, राजकुल में रहने वाले राज्य का पालन करने वाले लोग इतने धीर वीर, गम्भीर हो जो बाण का प्रयोग करने में महारथी हों, युद्ध में जो शत्रु की सेना को व्यथित कर दें, शत्रु को ही परास्त कर दें, गायें खूब दूध देने वाली हों, आज दुर्भाग्य है भारतवर्ष का कि जिन गायों को दूध देने वाली के रूप में हमने आकांक्षा की है उन्हीं गायों का खून इस भारतवर्ष में गिर रहा है कहाँ से हमें गायों का दूध प्राप्त हो सकता है। हमारे यहाँ के सांड वृषभ कैसे हों जो सहन करने में क्षम हो, उठाने-वहन एवं धारण करने में समर्थ हों, हमारे राष्ट्र के घोड़े तीव्रगामी हों, हमारे राष्ट्र की स्त्रियाँ, हमारे राष्ट्र की महिलायें अपने चारित्र्यवृत के आधार पर, अपने चरित्र बल के माध्यम से राष्ट्र और नगर की प्रतिष्ठा को आगे बढ़ाती चली जांय, इस प्रकार राष्ट्र की देवियों के प्रति आराधना की गई, प्रार्थना की गई। परमात्मा से आकांक्षा की गई और हमारे यजमान को वीर पुत्र प्राप्त हो, जब मेरी कामना हो उस समय बादल हमें जल दे दें यह हमारे यहाँ राष्ट्र गान में प्रार्थना की गई है, प्रातःकाल आचार्यों ने जो गान किया है राष्ट्र गान के रूप में वैदिक गान है न कि पञ्चम जार्ज के स्वागत-सत्कार में किया गया जनगण मन अधिनायक जय हे, यह कैसा राष्ट्र गान है। आज की शिक्षा पद्धति अनीश्वर वादिनी हो गई है, ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करने की परम्परा यदि बताई जाय तो लोग कहेंगे शिक्षा पद्धति को साम्प्रदायिक रंग दिया जा रहा है। दुर्भाग्य है राष्ट्र का आज कि जिस परम्परा में भारतीय संस्कृति के अनुसार बच्चों को सबसे पहले उपदेश देने में आचार्य उपदेश करते थे। 'सत्यं वद' पहले तुम सत्य बोलो, उसके बाद धर्म का पालन करो लेकिन आज की शासन प्रणाली धर्म निरपेक्ष हो जाने के कारण धर्म के पालन करने का उपदेश कैसे भारतीय प्रजा को दे सकती है ऐसी शिक्षा पद्धति है जो धर्म निरपेक्ष है। वेद कहता है—धर्म का पालन करो, धर्म किसी का विरोध नहीं करता धर्म तो मानवीय गुणों का विकास करता है। धर्म के ये जो दश लक्षण बतलाये गये हैं इसमें किसी दूसरे से विरोध नहीं है अहिंसा, सत्य अहिंसा का पालन करना, हिंसा न करना, सत्य बोलना, कौनसा मजहब होगा जो बतायेगा कि सत्य मत बोलो चाहे वह ईसाई हो, चाहे मुसलमान हो, चाहे पारसी हो, चाहे यहूदी हो कोई भी ऐसा नहीं होगा जो यह कहेगा कि सत्य मत बोलो। तो हमारे नियम तो शाश्वत हैं निरन्तर चलने वाले नियम हैं। आज शिक्षा पद्धति में हमें बालकों को सर्वप्रथम इस पद्धति से उपदेश देना होगा सत्य बोलो, धर्म का पालन करो, यदि मैं धर्म का पालन नहीं करूँगा तो हमारे जीवन में

अधर्म प्रवेश कर जायेगा तो पाप में मेरी प्रवृत्ति हो जायेगी। इसलिए धर्म का बहुत बड़ा महत्व हमारे धर्म शास्त्रों में बताया गया है। समाज की व्यवस्था सम्पादन करने के लिए भगवान् राम आये जिनको बताया कि भगवान् राम साक्षात् धर्म हैं। भगवान् श्रीकृष्ण आये जिनके लिए कहा—भगवान् श्रीकृष्ण सनातन शाश्वत धर्म हैं इसलिए धर्म का त्याग नहीं किया जा सकता और फिर तो आज सनातन धर्म सम्मेलन के अन्तर्गत आप सब लोगों को धर्म की गहराई का पता चलेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत हमें तो बस इतना ही आप लोगों के बीच में कहना है कि आज की राष्ट्रीय शिक्षा नीति इसलिए आवश्यक है कि वह लोगों को इन बातों को बतावे कि एक बालक जब क्लास में पढ़ता है तो उसे सिखाया जाय कि सवेरे जगते ही किसकी वन्दना करो, हमारी राष्ट्रीय संस्कृति ने शिक्षा पद्धति के अन्तर्गत नैतिक शिक्षाएँ बालकों को यह उपदेश सर्वप्रथम दिया कि तुम प्रातःकाल जगते ही पृथ्वी की प्रार्थना करो, समुद्र ही तुम्हारा वस्त्र है, यह पृथ्वी देवी पर्वत ही तुम्हारे स्तन हैं, तुम भगवान् विष्णु की पत्नी हो तुम्हें नमस्कार है। यह इसीलिए बताया गया जिससे कि बाल्यावस्था में ही राष्ट्रीय भावना व्यक्त हो जाय, बालक भी राष्ट्र का भक्त बन जाय भारतवर्ष की पृथ्वी का जो हिस्सा है उसकी हम प्रार्थना करते हैं। 'विष्णुपत्नी नमस्तुभ्यम्' हमारे हृदय में इस राष्ट्र माँ के प्रति ऐसी धारणा हो कि वह मेरी माँ है वो भी व्याप्त अर्थ में है और विष्णु भी व्यापक अर्थ में हैं यह भगवान् विष्णु की पत्नी है इसीलिए सबकी माँ है। बन्धुओं हमारी परम्परा में इसका उपदेश किया गया है। माता के साथ-साथ हमारे राष्ट्रीय प्रतीक जो हैं उनका चिन्तन करना भी आवश्यक है। हमारे यहाँ तो धर्म और राष्ट्र को तो अलग-अलग रखा ही नहीं है राष्ट्र की मिट्टी को सवेरे जगते-जगते हम अपने मत्थे में धारण करते हैं। लोग तो केवल यही कहते हैं इस मिट्टी से तिलक करो यह धरती है बलिदान की, केवल गा लेते होंगे लोग, लेकिन हमारे आचार्यों ने तो हमें इस देश की मिट्टी को अपने मस्तक में धारण करने की परम्परा सिखलाई है। हम लोग उसी परम्परा में आगे बढ़ रहे हैं धर्म कभी अलग हुआ ही नहीं है राष्ट्र से, राष्ट्र के अन्तर्गत ही धर्म है और धर्म का पालन शुद्ध राष्ट्र में होगा, अधर्म पूर्वक पालित होने वाला राष्ट्र स्थायी नहीं रह पाता है धर्म पूर्वक पालित-पोषित होने वाला राष्ट्र सुस्थिर होता है। पर्यावरण प्रदूषण को लोग लेते हैं, अलग ही मानते हैं धर्म से लेकिन हमारे यहाँ पर्यावरण प्रदूषण भी धर्म से अलग नहीं है। तुलसी के पौधे में जल डालना, पीपल की जड़ में जल डालना बताओ कितनी ऑक्सीजन मिलती है हमको इन पौधों और वृक्षों के माध्यम से, वैज्ञानिक लोग जानते होंगे। आज के शासक लगातार जंगलों को, वनों को, अरावलियों को कटाते चले गये। अब उसके बाद कहते हैं एक वृक्ष दश पुत्र समान है जबकि हमारे यहाँ इसका विशद् विवेचन धर्म शास्त्रों में पहले से ही किया जा चुका है। बन्धुओं, हमें इन सभी परिस्थितियों पर गम्भीर रहते हुये अपनी शिक्षा पद्धति में राष्ट्रीयता, शास्त्रीय परम्परा का समावेश करना चाहिये। हम कोई भी धर्म कार्य करते हैं तो सबसे पहले भूमि पूजन करते हैं, पृथ्वी पूजन करते हैं, जलाहरण करते हैं, मृदाहरण करते हैं तो हमारे तो जीवन में यह रच बस गई है। इस देश की मिट्टी से हमारी संस्कृति का सम्बन्ध है, हमारी परम्परा का सम्बन्ध है ऐसी ही हमारे राष्ट्र की शिक्षा पद्धति होनी चाहिये।

जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीवासुदेवानन्दजी महाराज

हमारी भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रीय धार्मिक चेतना का आधार यह ही है परन्तु दुर्भाग्यवश शिक्षा हमारी भारतीय नहीं है, आप कहेंगे महाराज इतने विद्यालय खुले हुये हैं, कालेजिज खुले हुये हैं, विश्वविद्यालय खुले हुये हैं शिक्षा कैसे भारतीय नहीं है। भाई देखो जिस समय विदेशी शासन था, चाहे कितने ही आक्रमण आये हमारे ऊपर शासन भी किए परन्तु हम अपनी संस्कृति से अलग नहीं हो सके लेकिन अंग्रेजों के शासनकाल में लार्ड मेकाले ने वर्तमान शिक्षा पद्धति संचालित की। यहीं के लोगों को अपनी पद्धति से शिक्षित करके कार्यालयों में लगाने की उसने योजना बनाई और उसे लागू की, सफलता प्राप्त की सदा-सदा के लिए भारत को नौकर बना दिया। यह हमारी शिक्षा नहीं है, यह आचार्य परम्परा की शिक्षा नहीं है। जिस शिक्षा संस्था में बैठकर के कौत्स पढ़ता था चौदह-चौदह विद्यायें प्राप्त की, गुरु दक्षिणा के लिए प्रार्थना करता है गुरु कहता है गुरु दक्षिणा की आवश्यकता नहीं है तुम्हारी सेवा ही गुरु दक्षिणा है शिष्य हठ करता है कि अवश्य गुरु दक्षिणा देनी चाहिये मुझे, आवेश में गुरु कह देते हैं कि चौदह विद्यायें तुमने सीखी हैं चौदह करोड़ स्वर्ण मुद्रा लाकर के समर्पित करो। एक बटुक ब्रह्मचारी अकिंचन चौदह करोड़ स्वर्ण मुद्रा कहाँ से प्राप्त कर सकता है, पर उसने प्रतिज्ञा की कि मैं अवश्य उपस्थित करूँगा। रघु के दरबार में जाता है रघु ने स्वागत किया कौत्स समझ गया कि इस समय राजा के पास कुछ नहीं है राजा प्रार्थना करते हैं कि आपका आगमन किसलिए हुआ है, आज्ञा करो। कौत्स ने कहा कोई आवश्यकता नहीं है बहुत हठ करने पर अपना मन्तव्य व्यक्त करता है। रघु उस कौत्स की गुरु दक्षिणा पूर्ण करने के लिए कुबेर पर आक्रमण करने की कामना करते हैं, संकल्प करते हैं अब कुबेर भयभीत होकर के रात्री में ही स्वर्ण मुद्राओं की वर्षा करता है पूरा कोष भर जाता है। राजा कहते हैं कि यह तुम्हारे लिए सारा कोष है लेकिन उसने कहा कि मुझे तो चौदह करोड़ ही स्वर्ण मुद्रा चाहिये। एक पूर्ण देता है एक केवल आवश्यकताभर लेता है यह शिक्षा कहाँ मिलती थी. गुरुकुलों में मिलती थी जहाँ समान शिक्षा पद्धति थी, समान व्यवहार था। चाहे राजा का पुत्र हो, चाहे सुदामा जैसा गरीब बालक हो, चाहे गुरुदेव वशिष्ठ के यहाँ भगवान् श्रीरामभद्र अपने चतुर्विध अवतार के रूप में उपस्थित हों, चाहे निशादराज हो सबको समान शिक्षा प्राप्त होती थी, परन्तु आज वह शिक्षा पद्धति नहीं है। जिस देश का अपना साहित्य नहीं है, जिस देश का अपना इतिहास नहीं है, जिस देश में अपनी शिक्षा नहीं है वह राष्ट्र कैसे उन्नति कर सकता है वह तो सदा-सदा के लिए गुलाम ही बना रहता है। शायद गुलामी के काल में हम इतने गुलाम नहीं रहे होंगे जितने हम आज बन गये हैं। हमारी शिक्षा पद्धति में हमारा संस्कार प्रधान था, संस्कार समाप्त हो गया है। कहना नहीं चाहिये भाईयों अधिक कहना कष्ट हो जाता है। इसके लिए केवल शासन ही दोषी नहीं है, इसके लिए दोषी हम सब आचार्य और समाज दोषी है। आज शिक्षा का माध्यम अर्थ हो गया है छात्र शिक्षा के लिए जाता है या अर्थ के लिए जाता है। अध्यापक शिक्षण करता है अर्थ के लिए, शिक्षा संस्थायें शिक्षा संस्था खोलकर के वहाँ के अधिकारी अर्थ चाहते हैं शिक्षा नहीं चाहते हैं जब तक ये दुर्भावना हमारे हृदय से समाप्त नहीं होगी तब तक हमारी शिक्षा लागू नहीं हो सकती है, शिक्षा का सर्वथा

समाजीकरण होना चाहिये । राजनीतिकरण शासकीकरण समाप्त होना चाहिये । हम राज्य-मुखापेक्षी क्यों बने हुये हैं, हम शिक्षा के लिए राज्य से, शासन से अनुदान चाहते हैं । अनुदान प्राप्त विद्यालयों की क्या दुर्दशा है देख लो, इतने राजकीय शासकीय पाठशालायें हैं कहीं पर छात्र नहीं, कहीं पर अध्यापक नहीं छात्र भले ही हो अध्यापक के नाम पर कोई नहीं होता। प्राथमिक शिक्षा आपकी क्यों समाप्त हो गई बल्कि छोटे-छोटे स्कूल चलते हैं शिशु मन्दिर सरीखे वैसे भी लोग खोल लेते हैं वह अच्छे चलते हैं वहाँ शिक्षा भी होती है । यद्यपि वह भी माध्यम अर्थ का ही है परन्तु कुछ शिक्षा होती है परन्तु शासकीयकरण के नाते यह प्राथमिक विद्यालय सब समाप्त से हैं । अनुदान लेने के परिणाम स्वरूप उनके ऊपर शासन दबाव डालता है तुम धार्मिक शिक्षा नहीं दे सकते हो । अल्पसंख्यकों के विद्यालयों में छूट है चाहे वह ईसाई हों, चाहे मुस्लिम विद्यालय हों वह अपने यहाँ धर्म की शिक्षा देते हैं और हम आप अच्छी से अच्छी डोनेशन फीस देकर के अपने बालकों को वहाँ एडमीशन दिलाते हैं, जहाँ हमारे देवताओं को कहा जाता है कि तुम्हारे देवता तो बुढ़े हो गये, पुराने हो गये, ईसामसीह ही देवता है। लोहे की मूर्ति हमारे हनुमान, गणेश आदि की प्रस्तुत की जाती है बच्चों के सामने, कोमल हृदय जिनका होता है उनके सामने और काठ की मूर्ति ईसा की दी जाती है, लोहे की मूर्ति पानी में डूब जाती है और काठ की मूर्ति पानी में डूबती नहीं है तैरती है तो कहते हैं जो तुम्हारे देवता डूब जाते हैं तुमको क्या बचायेंगे । हमारे देवता ईसा हैं यह देखो तैर रहे हैं यह तुम्हें भी तारते हैं कोमल बालकों के हृदय में ऐसी भावना भर कर के अपने देश, अपनी संस्कृति, अपने धर्म के प्रति अनास्था पैदा करते हैं और वहाँ हम जो धनीमानी हैं ये अपने बालकों को वहीं शिक्षा दिलाते हैं, भाई याद रखो यदि राष्ट्र हित चाहते हो, अपनी परम्परा चाहते हो, अपना धर्म चाहते हो, अपना समाज चाहते हो तो शिक्षा का समाजीकरण करना पड़ेगा । और शासन से, राज्य से शिक्षा आपको हटानी पड़ेगी । समाज का दायित्व है अपने बालकों को सुयोग्य बनाना शासन का दायित्व नहीं है । आज माता-पिता को पुत्र स्वीकार नहीं करता है क्योंकि माता-पिता कभी पुत्र से मिलते ही नहीं, इतने ज्यादा व्यस्त हैं कि प्रातःकाल से लेकर के रात्रि तक जब आते हैं घर में तो बालक सो जाता है और बालक उठा नहीं उससे पहले तैयार होकर के चले गये बाबूजी फैक्ट्री में । जानते नहीं हमारा पिता कौन है, हमारी माता कौन है, हमारा संस्कारकर्ता कौन है, हमारा गुरु कौन है । तो मैं बतला रहा था संस्कार होना चाहिये बुरा नहीं मानियेगा संस्कार नहीं हो रहा है, दो-तीन संस्कार ही दिखाई पड़ रहे हैं प्रमुख रूप से पैदा तो हो ही गये भगवान् की इच्छा से, विवाह हो गया, अब अन्त में मर गये चोला करणादि संस्कार ही हमारा नहीं हो रहा है, वेदारम्भ नहीं हो रहा है और हम सोचते हैं कि हमारे बालक वैदिक बनेंगे कैसे सम्भव है, आज हमारे यहाँ शिखा सूत्र का अभाव हो रहा है । बड़े-बड़े दायित्व सम्पन्न लोगों के चुटिया नहीं है, अरे भाई यह कटाना हो तो हमारे सरीखे आओ हम मूड़ते हैं, सन्यास देते हैं, सब कटाओ चुटिया और नहीं तो रखो, या तो सन्यास पर्यन्त सन्यास में वह चुटिया कटनी चाहिये अथवा इस शरीर के साथ ही समाप्त होनी चाहिये । वैज्ञानिक युग में लोग कहते हैं कि क्या आवश्यकता है चुटिया क्यों रखें यदि क्यों का उत्तर लेना है तो हमारे माधवाचार्यजी की 'क्यों' पुस्तक पढ़ो, सब उसमें क्यों मिलेगा आपको

जितने क्यों हैं सबका उत्तर मिल जायगा। हमारे यहाँ चुटिया रखने की पद्धति गोखुर के बराबर, गौ में हमारी श्रद्धा थी इसलिए वह माप दे दिया गया। वैज्ञानिक लोग समझें जहाँ पर हम चुटिया रखते हैं वहीं पर हमारा मस्तिष्क होता है जो सारे शरीर का नियन्त्रण केन्द्र है, सारे शरीर की नसें यहाँ गुच्छा बनकर के बैठी हुई है, चुटिया से उसकी सुरक्षा होती है। अब तो राजस्थान में भी साफा बाँधना बन्द हो गया, कोई-कोई भाई दिखाई पड़ रहे हैं नये लोग तो यहाँ भी साफा बाँधना बन्द कर दिये मस्तिष्क की रक्षा कैसे हो, पहले पैदल चलते थे तब भी साफा बाँधते थे आज मोटर साईकिल पर चलते हैं तो हैलमेट लगाना पड़ता है और गिर जाते हैं तो कहाँ चोट लगती है यहीं चोट लगती है तो तुरन्त मर जाते हैं कहते हैं ब्रेन-हेम्रेज हो गया, चुटिया रखो ब्रेनहेम्रेज नहीं होगा, मोटी बढ़िया रखो सुरक्षा होती है चोट से भी। चुटिया से स्निग्धता मिलती है हमारे मस्तिष्क को, रोज जुखाम बना रहता है बहुतों को कभी शान्त ही नहीं होता है जुखाम कैसे होता है, मस्तिष्क में शुष्कता से होता है। चाहे शीतकालीन जुखाम हो, चाहे ग्रीष्मकालीन जुखाम हो, हमारे वैद्यजी बैठे हैं जानते होंगे यह मस्तिष्क शुष्कता से होता है देहातों में भी इसका इलाज बाताया जाता है थोड़ा सा कड़वा तेल ले लो नाक से सूँघ लो जुखाम ठीक हो जायेगा। शिर दर्द होता है तो कहते हैं षड्बिन्दु तेल ले लो नाक में डालो, ले जाओ शिर में चढ़ाओ उससे मस्तिष्क में स्निग्धता पहुँचती थी और शुष्कता समाप्त होती थी। ये हमारा वैज्ञानिक पक्ष है चुटिया रखना केवल धार्मिक पक्ष नहीं है, धार्मिक पक्ष इतना ही है समस्त कृत्यों का हम जो कुछ भी कृत्य करते हैं संध्यावंदनादि से लेकर के यज्ञादि पर्यन्त सब में शिखा बन्धन करना हमारे लिए आवश्यक होता है, हमारी बुद्धि नहीं बनती है, हो भारतीय पर संस्कृति के अनुरूप हमारी बुद्धि कैसे बनेगी। अभी हमारे वासुदेवाचार्यजी ने संकेत किया था गो-दुग्ध के ऊपर, गो-दुग्ध पिलाकर के देख लो बालक को प्रारम्भ से लेकर के उसकी बुद्धि का परिचय लो और जरसी गाय के दूध को पिलाकर के अथवा भैंस के दूध को पिलाकर के एक बालक को देखो. एक गाय का अपने देशी गाय का दूध पिलाकर दोनों की बुद्धि को देखो। हमारी बुद्धि को नष्ट करने के लिए विदेशियों ने कुचक्र रचा और हमारे देशवासियों ने उसे स्वीकार कर लिया। हमारी शिक्षा कैसे भारतीय होगी इन सबको अपनाना पड़ेगा भाई, गो-दुग्ध-पान कराओ, गो-रक्षा करो और शिक्षा अपनी बनाओ, शासन पर शिक्षा मत छोड़ो यदि अपना संरक्षण चाहते हो, पापा-मम्मी मत बोलो, आजकल पापा-मम्मी कहलाने में बहुत अपना गौरव लोग मानते हैं यदि बालक न कहे तो अपने को छोटा मानते हैं, जब अभी से पापा-मम्मी हो गये, डेडी हो गये तो अन्त में तो डेड होना ही है बालक और क्या करेंगे इसलिए भगवत्परक नाम रखो, पापा-मम्मी मत बोलो, पिता बनो जो पालन करता है 'पाति रक्षति पिता सः' हमारे यहाँ का राजा पालन करता था अपनी प्रजा का इसलिए वह पिता कहलाता था, पालक कहलाता है आज हम अपने घर में भी पिता नहीं हैं, पालक नहीं हैं। जितना ही लम्बा खीचते जायेंगे बहुत खिचेगा, हमारा केवल यह ही उद्देश्य है कि शिक्षा का समाजीकरण होगा तब ही हमारी संस्कृति, हमारा धर्म, हमारा राष्ट्र सुरक्षित रहेगा। विदेशी शिक्षा से हमारे में परिवर्तन नहीं होगा बल्कि जहाँ हैं वहाँ से और भी हम अपने स्तर को गिराते चले जायेंगे अतः राष्ट्र के उत्थान के लिए हमें भारतीय परम्परा के अनुसार भारतीय शिक्षा की अपेक्षा है इसके लिए प्रयत्नशील होना चाहिये।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीहर्याचार्यजी महाराज

आचार्यगणों से आप सुन ही रहे हैं कि हमारी शिक्षा कैसी होनी चाहिये। शिक्षा एक संस्कार है, आप यदि अपने संस्कार को दूसरे के हाथ में दे दीजियेगा तो वह जैसा चाहेगा वैसा बना देगा इसलिए और तो कोई वस्तु दी जा सकती है लेकिन अपने संस्कार दूसरे को नहीं दिये जा सकते हैं। इसलिए सज्जनों! आज आपको योग्य है कि जो आपके संस्कृत संस्कार हैं, ऋषियों ने अपनी ऋतम्भरा प्रतिभा के द्वारा जिसका दर्शन करके और हमें प्रदान किया था उस सम्बल को आज भी सजोने के लिए हमें स्वयं को आगे आना होगा, हमारा उद्धार कोई दूसरा नहीं कर सकता यह आपको निश्चय समझना चाहिये इसलिए अपना उद्धार आप स्वयं करेंगे दूसरा आपका उद्धार नहीं करेगा। जब तक संस्कार व्यापारात्मक होता है आप जानते हैं तब तक वह लाभ नहीं करता है ये आप निश्चित समझ लें, जो छिद्रान्वेषण करने के लिए इस सभा में आया होगा उसको महापुरुषों की अमृत वाणी का तत्त्व नहीं मिलेगा वह कुछ छिद्र ही अन्वेषण कर रहा होगा। कौन महापुरुष है, क्या कह रहा है, उससे मेरे जीवन में क्या लाभ है ये उसको प्राप्त नहीं होगा लेकिन जो तथ्य का अन्वेषण करने के लिए आया है आप स्मरण रखें, तत्त्व को प्राप्त करने के लिए आया है वह यहाँ से अपने जीवन का पूर्ण पाथेय प्राप्त कर लेगा। विद्या शब्द का अर्थ मैंने दिन में भी बताया था। आज शिक्षा की जो परिस्थिति है मात्र व्यापारात्मक है जब तक इस दिशा में हम रहेंगे तब तक एक देशीयता शिक्षा में विद्यमान रहेगी और वह जब तक राजाश्रित रहेगी तब तक उधर से प्रभाव और दबाव आपके ऊपर रहेगा ही आप चाहे जितना चिल्लायें। हमारे यहाँ बासठ हजार विद्यार्थी महर्षि-वर्तन्तु ऋषि के आश्रम में निवास करते थे, आज विश्व के किसी भी युनीवर्सिटी में इतने छात्र विद्यमान नहीं है लेकिन वर्तन्तु ऋषि को रिवाल्वर लेकर, अंगरक्षक लेकर नहीं चलना पड़ता था इसलिए कि उनकी शिक्षा जैसी होनी चाहिये थी वैसी थी और बासठ हजार विद्यार्थियों में निकलकर जब वह खड़े होते थे तो एकदम सभा खड़ी होती थी, क्षमता नहीं थी कि कोई चरण से ऊपर दर्शन करे, इतना भय छात्रों में विद्यमान था। एक देवी ने हमें बताया, महाराज युनीवर्सिटी में मेरे पतिदेव पढ़ाते हैं शाम तक लौटकर आयेंगे कि नहीं आयेंगे इसके लिए मैं श्रीगणेशजी की आराधना करती रहती हूँ कि शाम तक वह लौटकर चले आवें, बताओ जहाँ का शिक्षक इतना भयभीत होगा, जहाँ का गुरु इतना डरा हुआ होगा, जहाँ का धर्माचार्य एक पक्ष में झुककर बोलता होगा, जहाँ का शासक किसी व्यक्ति या जाति या सम्प्रदाय से प्रभावित होकर के निर्णय देता होगा उस राष्ट्र का, उस देश का कल्याण कैसे होगा यह आप स्वयं विचार करें। इसलिए शिक्षा को यदि आप वास्तव में विशुद्ध बनाना चाहते हैं तो आपको स्वयं आगे आना होगा। संस्कारों को आप दृढ़ करना चाहते हैं तो आपको स्वयं आगे आना होगा तभी आपकी शिक्षा वह शिक्षा होगी जो राष्ट्र में एक दृढ़ता लायेगी, राष्ट्र में एक चरित्र लायेगी, राष्ट्र में एक आध्यात्मिकता लायेगी, राष्ट्र में एक धर्म और एक सत्यता का स्थापन करेगी वह शिक्षा सम्पूर्ण एक व्यष्टि से समष्टि को आप्लावित करेगी। यह कर्म क्षेत्र है यहाँ तुम आये हो तो तुम्हें कर्म करना पड़ेगा, कर्म करना ही चाहिये। श्रुति भगवती भी इसी के लिए बार-बार प्रेरणा करती है कि कर्म करना चाहिये, यदि तुम कर्म नहीं करोगे तो कर्म के फल के अधिकारी

भी तुम नहीं हो। कर्म तप है रामायण में मैंने कहा था सर्व प्रथम तप शब्द का प्रयोग है सम्पूर्ण रामायण का जो दर्शन है वह तप है वहाँ का राक्षस भी तप करता है, रावण ने जो शक्ति प्राप्त की थी वह उसका विनियोग नहीं कर सका, उसका उपभोग नहीं कर सका लेकिन जो शक्ति प्राप्त की थी वह तपश्चर्या करके प्राप्त की थी। पहले तप उसके बाद स्वाध्याय, आपका स्वाध्याय कैसा होना चाहिये आपका स्वत्व चला जायेगा यदि आपका अध्ययन दृढ़ नहीं होगा। बाहर के स्वाध्याय से आपको विशेष लाभ नहीं होगा। आज की जो शिक्षा नीति है वह केवल भौतिक है परीक्षा पास करने के बाद कुछ धनार्जन के रूप में उसको जोड़ दिया गया है। जो वैदिक वाङ्मय हमारा था, वह जो शिक्षा थी वह शिक्षा हमारी मानसिकता थी जिसके द्वारा जीवन पर्यन्त उसके ब्याज से हम जीते थे। आज वह मानसिकता आपको फिर से बनानी पड़ेगी तभी आपकी शिक्षा स्थाई रूप से आपको लामप्रद हो सकेगी।

महन्त श्रीनृत्यगोपालदासजी महाराज

आज की शिक्षा की जो नीति है उस पर थोड़े से शब्द हम अपनी ओर से रखने का प्रयास कर रहे हैं। हमारे यहाँ शास्त्रों में विद्या का मुख्य लक्ष्य रहा है 'विद्या ददाति विनियम्' विद्या का जो मुख्य लक्ष्य है वह विनय प्रदान करना है। जिस प्रकार से वृक्ष फलों से आच्छादित होते हैं नम जाते हैं, झुक जाते हैं उसी प्रकार से विद्या प्राप्तकर के, गुण प्राप्तकर के झुक जाना चाहिये। यह विद्या का सर्व प्रधान अंग है। हमारी जो प्राचीन वैदिक परम्परा है ऋषि-कुलों की, गुरुकुलों की परम्परा रही है आज भले ही हमारे सनातन धर्म और वैदिक परम्पराओं के ऊपर आक्षेप किया जाये परन्तु हमारी जो वैदिक परम्परायें रही है चाहे वह वर्ण और आश्रम की हों, चाहे अवतारवाद की हों एक वैज्ञानिक सत्य और तथ्य है। हमारे यहाँ आश्रम की परम्परा रही है, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास आश्रम के माध्यम से हम जीवन में आगे बढ़ें, हम लौकिक विद्याओं का ज्ञान प्राप्त करें, साथ ही साथ पारलौकिक, आध्यात्मिक चिन्तन भी करें, इसके लिए आवश्यक है कि हम प्राचीन परम्पराओं का संरक्षण, समवर्द्धन करें यही हमारी संस्कृति है। संस्कृति और शिक्षा का आत्मभाव सम्बन्ध है शिक्षा संस्कृति के बिना जीवित नहीं रह सकती, शिक्षा का प्राण संस्कृति है और हमें गर्व के साथ यह कहना पड़ेगा कि भारतीय संस्कृति और परम्परा अपने में अनुपम और श्रेष्ठ रही है। यदि आश्रमों की ये पर-म्परायें अक्षुण्ण रूप से चलती तो आज जो सामाजिक विकृतियाँ हैं वे न आती, शिक्षा का जो ह्रास चल रहा है वह नहीं होता। आज हम आकांक्षा तो करते हैं गुणों के अर्जन की परन्तु हम प्राचीन परम्पराओं को विस्मृत करते जा रहे हैं। आयु, विद्या, यश और कीर्ति की प्राप्ति करनी है, बल की प्राप्ति करनी है तो हमें अभिवादनशील होना चाहिये ये हमारा स्वभाव बन जाना चाहिये प्रणाम करने का, यह हमारी पुरातन परम्परा है बिना किसी प्रयास के ही केवल प्रणाम से ही हमें ये चार चीजों की उपलब्धि हो जाती है कितना सरल उपाय है। भगवत्-गीता में कहा गया है कि यदि ज्ञान की प्राप्ति करनी है तो उसके लिए आवश्यक है हम गुरु-जनों के, महापुरुषों के चरणों में प्रणाम करें, अभिवादन करें और जिज्ञासु बनकर के जाएँ। शिष्य वह है जिस पर अनुशासन किया जा सके, आज यदि कोई ताड़ना देता है तो कहते हैं

हमारे बच्चों को मारने का क्या अधिकार है इस प्रकार से बातें की जाती है । बिना शासन के ज्ञान प्राप्त नहीं होता है इसलिए एक ओर जहाँ शिष्यों का कर्तव्य है गुरु के अनुशासन में रहें वहीं आज गुरुजन भी अपने कर्तव्य से पदच्युत हो रहे हैं । वस्तुत: आज शिक्षा का जो स्तर है इतना गिर गया है कहने में बड़ा दु:ख होता है, ठीक है हम भौतिक विज्ञान में आगे बढ़ गये हैं परन्तु वास्तविक ज्ञान से बहुत कोसों दूर हो गये हैं । आज की जो सिनेमा की शिक्षा है, टेलीविजन की जो शिक्षा है वह सारी को सारी शिक्षा पर पानी फेर दे रही है, जब तक सिनेमा की शिक्षा परम्परायें रहेगी तब तक न विद्यार्थियों का विकास होगा और न समाज का विकास होगा । आज पाश्चात्य शिक्षा ने हमारे विद्यार्थियों को विषाक्त बना दिया है उनमें शराब और नशीले पदार्थों के सेवन की परम्परा बन गई है, पहले जो बच्चा माता का स्तन पान करता था वह माता-पिता के प्रति अनुगृहीत और कृतज्ञ बनता था, आज माता का दूध नहीं मिलता है बोतल का दूध मिलता है तो बड़े होने पर स्वाभाविक ही है वह बोतल से प्रेम करेंगे । छोटे बच्चों को पिस्तौल से प्रेम करने की शिक्षा दी जा रही है तो वह और बड़े होते हैं हाई स्कूल और इण्टर कालेजों में जब जाते हैं वहाँ पिस्तौल का प्रयोग करते हैं, कट्टा का प्रयोग करते हैं। आज की यह शिक्षा विनाशकारी शिक्षा है यदि यही क्रम रहा तो हमारी भारतीय संस्कृति और परम्पराओं को हम विनाश के कगार पर देखेंगे, इसलिए आवश्यक है इस रोग से बचने के लिए इससे मुक्ति के लिए हम कदम उठावें । आज बालकों को अण्डे के सेवन की शिक्षा दी जाती है, बुद्धिजीवी कहते हैं कि अण्डा तो शाकाहारी है ऐसी उल्टी-सीधी बातें करते हैं तो जो अण्डा का सेवन करेंगे, जो सुरापान करेंगे, नशीले पदार्थों का सेवन करेंगे तो हमारी संस्कृति, सभ्यता और हमारी शिक्षा एवं परम्पराएँ कैसे जीवित रह सकती है, यह एक कैन्सर की बीमारी हमारे छोटे-छोटे बालक जो देश और राष्ट्र का भविष्य हैं उनमें ये बीमारियाँ लग गई हैं यह सामाजिक प्रदूषण है । जहाँ खान-पान के प्रदूषण हैं वहाँ सबसे बड़ा जो प्रदूषण आ गया है शिक्षा में वह राजनीति का प्रदूषण है । हमारी शिक्षा को भी यह राजनैतिक लोग बिगाड़ रहे हैं । जब धर्म का अनुशासन राजनीति और राजनैतिकों के ऊपर नहीं रहेगा तो यह राजनैतिक स्वच्छन्द और उच्छृङ्खल रहेंगे । आज शिक्षक राजनीति से प्रेरित है, प्राचार्य, प्रिन्सीपल राजनीति से प्रेरित है और आज के बालक राजनीति से प्रेरित हैं । आज वही छात्र छात्रसंघ का अध्यक्ष होगा जो किसी राजनीति से जुड़ा हुआ है । अध्ययनकाल में यदि राजनीति की बीमारी और राजनीति का रोग लग जायेगा तो बालक अध्ययन नहीं कर सकते हैं, अध्यापक पढ़ा नहीं सकते हैं इसलिए हम यह आग्रह करेंगे कि राजनीति का शिक्षा जगत् से, शिक्षा क्रम से, शिक्षा पद्धति से पूर्ण बहिष्कार हो जाना चाहिये । आज हमारे यहाँ के प्राचीन इतिहास को दबाया जा रहा है, प्राचीन इतिहास को झुठलाया जा रहा है, हमें इस प्रकार के पाठ पढ़ाये जा रहे हैं इतिहास के माध्यम से कि हमारी संस्कृति और सभ्यता हजार-दो हजार वर्ष की है बहुत पुरानी नहीं है, पाश्चात्य लोग हजारों-लाखों वर्ष पुरानी हमारी भारतीय संस्कृति और परम्पराओं को हजार-दो हजार वर्ष से अधिक नहीं ले जाना चाहते हैं ऐसे इतिहास बिगाड़ा जा रहा है । कोई पाश्चात्य हमारे भारतीय संस्कृति और परम्पराओं पर वेदों पर व्याख्या करेगा तो आज हम उसको प्रामाणिक मानेंगे, आज इतिहास हमारा कोई पाश्चात्य कहेगा हम उसको प्रामाणिक

मानेंगे। इस प्रकार हमारी संस्कृति को बिगाड़ने का प्रयास इन पाश्चात्य इतिहासविदों ने किया है, इसलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि इतिहास हो चाहे भूगोल हो या हमारी संस्कृति परम्परा हो, हमारी वैदिक परम्पराओं के अनुसार हमारी संस्कृति, हमारा इतिहास, हमारा ज्योतिष्, हमारा वेद और वैदिक परम्पराओं का संरक्षण, समवर्द्धन हो। साथ ही साथ हम विज्ञान भी पढ़ें परन्तु हमारी संस्कृति और मर्यादायें अपनी हो, खान-पान अपना हो हमारा सभी अपना हो। पढ़ने को कुछ भी पढ़ें डाक्टर बनें, इन्जीनीयर बनें, वैज्ञानिक बनें परन्तु हमारी जो भारतीय संस्कृति है, भारतीय परम्परा है और भारतीय जो गौरव गरिमा है, सनातन धर्म की जो परम्परा है उसका हम पालन करें। हमारी संस्कृति पुरातन है सारे विश्व के लोग यह मानते हैं, हमारे ऋग्वेदादिक जो वेद हैं वे सबसे पुरातन हैं। शिक्षा के क्रम में उस वैदिक परम्पराओं का हम अनुसरण करें तभी हम संस्कृति की रक्षा कर सकते हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हमारे जितने भी शिक्षाविद् हैं, शिक्षा शास्त्री हैं वह थोड़ा सा समय निकालें और हमारी जो प्राचीन वैदिक परम्परा है, अपनी जो धरोहर संस्कृति है उसका संरक्षण, समवर्द्धन करते हुये शिक्षा के क्रम में आमूलचूल परिवर्तन करें और उसको पाश्चात्य दोष और वातावरण से मुक्त रखकर के अपनी भारतीय संस्कृति और परम्परा के ढांचे में ढालें।

श्रीमती कुसुमदेवी चतुर्वेदी

कल हमारे जगद्‌गुरु शंकराचार्यजी ने और हमारे आचार्यों ने कहा कि रामायण में क्या है तप है, रावण भी तप से लंका का राजा बना लेकिन उसने उसका सदुपयोग नहीं किया तो हमें तप करना है तप ये नहीं कि हमें ये चीज नहीं मिली वो चीज नहीं मिली। मनुष्य देह हमने प्राप्त की है सबसे पहले हमें प्राप्त करना है धर्म। धर्म किससे प्राप्त होगा जब हमारी धार्मिक शिक्षा हमको मिलेगी तभी हमको धर्म प्राप्त होगा। गीता में तीन श्रेणी बताई है—प्रथम श्रेणी क्या है धन धर्म में खर्च हो यज्ञ करो, अनुष्ठान करो, प्रातःकाल उठो तो उठकर के भगवान् को नमन करना है, अपने माता-पिता, सास-ससुर के चरण स्पर्श करें, अपने बालकों को धार्मिक शिक्षा की ओर प्रेरित करें। यह शरीर क्या है वेदान्त दशश्लोकी में बताया है—"ज्ञानस्वरूपं न हरेरधीनम्" ज्ञान स्वरूप है, वह जो शरीर में हमारी आत्मा है न उसको कोई देख सका है वह श्रीसर्वेश्वर भगवान् के अधीन है वह अणु से अणु है और कितनी अणु है कि ये बाल के अग्रभाग का सौंवा हिस्सा और उसका भी सौंवा हिस्सा तो हम उसको देख नहीं सकते अनुभव कर सकते हैं। जैसे कि गूँगे को हमने गुड़ दिया, उसने गुड़ खाया और वह कैसे कहेगा गुड़ खाकर के वह यह तो नहीं कह सकता कि गुड़ मीठा है क्योंकि वह गूँगा है अनुभव से कहेगा आनन्दमय उसका मुखड़ा हमको दिखाई देगा तब समझेंगे कि इसको अच्छा लगा है। ऐसे ही भगवान् जब हमको दिखाई देंगे तो हमको अनुभव होगा हमारा रोम-रोम हर्षायमान हो जायेगा, तो हमें अपनी आत्मा को पहचानना है फिर परमात्मा को पहचानना है, संसार के भी सभी काम करने हैं। हमारी मातृत्व शक्ति का क्यों इतना ह्रास हो रहा है क्योंकि कन्याओं को क्या चाहिये कि हमें तो तरह-तरह के सूट चाहिये, तरह-तरह के सजाने के लिए चीजें चाहिये। जैसा भगवान् ने बनाया है वैसे ही हमें रहना है। सभी जगह ब्यूटी क्लीनिक बन गये हैं अपना वास्तविक रूप आज कोई नहीं पहचान पा रही हैं इसलिए हमें जरा सम्भलना है वरना

तो भारतीय संस्कृति का कोई मूल्य ही नहीं रहेगा, भारतीय संस्कृति नष्ट हो जायेगी। कोई बात नहीं है बालकों को इंग्लिश चाहे पढ़ाओ लेकिन इंग्लिश के साथ-साथ संस्कृत का भी बोध कराये तभी हमारी संस्कृति अक्षुण्ण रह सकती है। अपनी संस्कृति के हिसाब से क्योंकि स्त्री को मर्यादित ही रहना चाहिये अमर्यादित हो जाने से एकदम उच्छृङ्खलता आ जाती है तो वह भी नहीं आनी चाहिये अपनी उचित मर्यादा तो रहनी ही चाहिये, आज हमने मर्यादा छुड़ा दी तो बस वो चाहे जैसे भी इधर-उधर फिरे इसमें गलती तो हमारी है न, माताओं की है पिता तो अपने रोजगार करेंगे पैसे लायेंगे भाई खा-पी लो लेकिन सोचना तो माताओं को ही है। ★

नशा–व्यसन परित्याग

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) के आचार्यपीठाभिषेक स्वर्णजयन्ती महोत्सव के शुभावसर पर दि० २२ मई से २८ मई तक अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन में निम्नांकित महानुभावों ने आचार्यचरण की सत्प्रेरणा से दि० २५/५/९३/ व २६/५/९३ के सभा मण्डप में सभी प्रकार का नशा व्यसन त्यागने की शपथ पूर्वक प्रतिज्ञा की। ये सभी भगवान् श्रीसर्वेश्वर के कृपापात्र रहेंगे—

क्र०	नाम	स्थान
१	श्रीमती कमलादेवी गोरवाल व्यास	परबतसर
२	श्रीमती कान्तादेवी ओझा	नसीराबाद
३	श्रीनन्दलालजी चतरावत	आसाम वाले
४	,, कानारामजी	करकेड़ी
५	,, चम्पालालजी जैन	रियां
६	,, भँवरी बाई यादव	श्रीनगर
७	,, रामकिशनजी जांगीड़	टिकावड़ा
८	,, युवराजसिंहजी	
९	,, संग्रामसिंहजी	
१०	श्रीकमलकुमारजी	किशनगढ़
११	,, चन्द्रकान्त ओझा	अजमेर
१२	,, ओमजी कामदार	सलेमाबाद
१३	,, मदनकँवर	भाकरोटा
१४	,, शंकरलाल	अजमेर
१५	श्रीकस्तुरी कावरा	किशनगढ़
१६	,, आशीष मोदी	किशनगढ़
१७	,, कानदासजी	डीडवाना
१८	,, भँवरलालजी छापरवाल	सुरसरा
१९	,, दीपारामजी कुमावत	मीठड़ी
२०	,, हगामीलालजी सोनी	
२१	,, ईश्वरसिंह नि. चिचरोडी	छोटा लामा
२२	,, प्रकाशचन्दजी	अजमेर
२३	,, हनुमानसिंहजी	भाकरोटा
२४	,, राधेश्याम वैष्णव	बालोतरा
२५	श्रीमती विशाखादासी गोयल	जयपुर
२६	,, कौशल्यादेवी	मकराना
२७	,, पार्वतीदेवी	सांभर
२८	,, गंगादेवी	बालोतरा

इसी क्रम में प्रतिज्ञा करने वालों का नाम निरन्तर 'श्रीनिम्बार्क' पत्र में निकलता रहेगा—अतः नशा–व्यसन परित्याग करने वाले महानुभाव एक पोस्टकार्ड पर शपथ लेकर हस्ताक्षर करें तथा 'श्रीनिम्बार्क' पाक्षिक-पत्र कार्यालय के पते पर भेज दें।

—सम्पादक

※ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ※

※ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ※

हार्दिक शुभकामनाएँ— फोन नं० (O.) 23605 (R.) 25225

श्रीनिवास सैन्थेटीक्स मील

विक्रान्त अपार्टमेन्ट, राधाकृष्ण टाकीज के पास

इचलकरंजी (कोल्हापुर) महाराष्ट्र ४१६११५

श्रीनिवास चून्नीलाल बाल्दी

रायली जीन के सामने, मु. पो. आकोला (महा०) ४६०००१

शुभेच्छु :

बाल्दी परिवार

※ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ※

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ— फोन नं० (O.) 26001, (R.) 21535

श्रीसर्वेश्वर सैन्थेटिक्स

पावरलूम कैंब्रिक के निर्माता एवं विक्रेता

४/११९ दातेमला, उपाध्ये बिल्डींग

मु. पो. इचलकरंजी [कोल्हापुर] ४१६११५

—दामोदर रामप्रताप बाहेती

फोन नं० 2870490, 603432

मिलीयन्स ※ फँशन

उच्चकोटि के रेडीमेड वस्त्र निर्माता एवं विक्रेता

६/१० भेरू काम्पलेक्स ए. एस. चार स्ट्रीट

फस्ट क्रॉस मामुलपेठ लाल बिल्डींग, मु. पो. बंगलोर – ५३

—मधुसूदन बाहेती, राजेन्द्र बाहेती

※ श्रीसर्वेश्वरो जयति ※

अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

के

अन्तर्गत आयोजित

महिला सम्मेलन

[मिति ज्येष्ठ शु० ६ गुरुवार वि० सं० २०५० दिनांक २७-५-९३]

अध्यक्षा :

कवयित्री श्रीमती प्रभाठाकुर

किशनगढ़ (राजस्थान)

मुख्य अतिथि :

डॉ० विमला भास्कर

रोहतक (हरियाणा)

महिला सम्मेलन

[ज्येष्ठ शु० ६ वि० सं० २०५० गुरुवार दिनांक २७-५-९३ ई०]

प्रतिदिन की भाँति मन्दिर में प्रातःकालीन आरती, श्रीसर्वेश्वर प्रभु का अभिषेक, दर्शन, शृङ्गार आरती आदि दैनिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए एवं यज्ञ मण्डप में दैनिक देव पूजन, जप, पाठ, हवन आदि कार्यक्रम विधिवत् चलते रहे। हजारों की संख्या में भावुक भक्तजनों ने श्रद्धा भक्ति के साथ यज्ञ के दर्शन व परिक्रमा का लाभ उठाया। मध्याह्न में २ बजे से ५ बजे तक वृन्दावन निवासी स्वामी श्रीशिवदयालजी-गिरिराजप्रसादजी की रासमण्डली द्वारा श्रीरासलीलानुकरण हुआ।

सभा मण्डप में प्रातः ९ बजे वैदिक मंगलाचरण से सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ। आज के महिला सम्मेलन की अध्यक्षा राजस्थान की सुप्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती प्रभा ठाकुर एवं मुख्य अतिथि रोहतक निवासी डा० श्रीविमला भास्कर (दिल्ली) थी। सम्मेलन के विचारणीय बिन्दु थे—१. भारतीय संस्कृति में नारी का गौरव। २. नारी शिक्षा। ३. नारी जीवन की वर्तमान समस्या, तथा समाधानार्थ प्रश्न थे—१. नारी गौरव के निरन्तर ह्रास के लिए क्या वह स्वयं उत्तरदायी नहीं है? २. दूरदर्शन-चलचित्र एवं समाचार पत्रों के विज्ञापनों में नारी चित्रों का प्रयोग तथा व्यावसायिक मॉडलिंग (रूप प्रतियोगिता) क्या मातृशक्ति का अपमान नहीं है?

इन विषयों पर श्रीमती रामेश्वरीदेवी बजाज, श्रीरमा भारती, श्रीईश्वरीदेवी भटनागर वृन्दावन, डा० श्रीविमला भास्कर एवं श्रीमती प्रभा ठाकुर ने अपने विचार प्रकट किये। भारतीय संस्कृति में 'नारी गौरव' इस विषय पर पं० श्रीदयाशंकरजी शास्त्री ब्यावर एवं पं० श्रीखेमराजकेशवशरणजी शास्त्री नेपाल के भी सारगर्भित प्रवचन हुए।

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज ने अपने आशीर्वादात्मक प्रवचन में किशनगढ़ महाराजा श्रीसांवतसिंहजी अपर नाम नागरीदासजी की माता श्रीबांकावतीजी द्वारा श्रीमद्भागवत के अठारह हजार श्लोकों का हिन्दी अनुवाद, दोहों, छन्दों और चौपाइयों में सृजन करने का उल्लेख करते हुए इसे साहित्य जगत् में राजस्थान के नारी जगत् के लिए परम गौरव का विषय बताया और उसका जितना अंश प्रकाशित हुआ उसका अपने करकमलों द्वारा विमोचन किया।

रात्रि में भक्ति संगीत के कार्यक्रम हुए जिनमें श्रीमोहनलालजी शर्मा व उनकी संगीत मण्डली जोधपुर, कु० श्रीअनुराधा शर्मा मथुरा, पं० श्रीविश्वामित्रजी व्यास एवं श्रीरामकुमारजी शर्मा निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) ने भाग लिया।

महिला सम्मेलन : प्रथम सत्र

श्रीरामेश्वरीदेवी बजाज

भगवान् ने मनुष्य जन्म दिया तो ऐसे ही तो नहीं दिया और फिर नारी शरीर दिया नारी को मातृशक्ति कहकर महापुरुषों ने बहुत ऊँचा मान दिया है। स्वयं भगवान् भी राधा-सर्वेश्वर बनकर पहले राधाजी को नाम आगे लिया है। सीताराम, राधेश्याम सब प्रकार से भगवान् ने मातृशक्ति का नाम आगे किया है। तो पहले आप संस्कार श्रेष्ठ बनावें फिर आपके घर को स्वर्ग बनाओ, फिर पड़ौस को स्वर्ग बनाओ, फिर देश को स्वर्ग बनाओ तभी आपकी शिक्षा भगवान् स्वीकार करेंगे और आपकी पूर्ण आत्मा में भगवान् की प्रसन्नता होगी और सब पर असर पड़ेगा। आज हम हमारे बालक को कैसे जगाते हैं उठो बेटा चाय बन गई तो बेटा का क्या दोष है, पुत्रों का क्या दोष है। ऐसे बोलो बेटा उठो भगवान् का नाम लो। पहले स्कूलें कहाँ थी पर पहले माताओं में इतनी शक्ति थी हाथों से पीसती थी और प्रेम से रोटी बनाकर खिलाती थी, आज किसी के घर में कोई मेहमान आ जाये तो टी० वी० से उठ-कर के नमस्कार भी नहीं करे, तो स्त्री का पुण्य का और घर का धर्म तो चला गया। आप घर में टी० वी० देखो, टी० वी० देखना कोई गलत बात नहीं है लेकिन ऐसा मत देखो कि टी० वी० आपके ऊपर असर कर जावे और टी० वी० बिन आप रह न सको। मैं तो यहाँ उपस्थित माताओं से केवल यही कहती हूँ कि थोड़ा टी० वी० दर्शन कम करो तो सबको जीवनदान मिले। आपके घर में प्रेम है तो परमात्मा है। माताओं में जितना भाव और शक्ति है वह अन्य किसी में नहीं है, आप अपना घर स्वर्ग बनाइये और बालकों को अच्छा संस्कार दीजिये।

श्रीरमा भारती

यही बड़ा दुर्भाग्य आज है, अपने देश के साथ में।
राम के मन्दिर का फैसला (सरकार के हाथ में नहीं है) है हम सबके हाथ में।
रोक अयोध्या पर जाने से और पूजा पर पाबन्दी हो,
रामराज्य आयेगा कैसे जब नेताओं की नीयत गन्दी हो।
दोष पड़ौसी को क्या दें हम अपने ही बैठे घात में,
यही बड़ा दुर्भाग्य आज है अपने देश के साथ में।

श्रीईश्वरी भटनागर

आज का विषय है भारतीय संस्कृति में नारी गौरव। आप लोग पिछले इतिहास से सभी परिचित हैं कि हमारी महान् नारियाँ हुई हैं जैसे—सती अनुसुया जिन्होंने ब्रह्मा-विष्णु-महेश को ६-६ महीने के बालक बनाकर स्तन पान कराया, ऐसे ही लक्ष्मी बाई जिन्होंने अपनी ममता को बाँध कर मैदान में बड़े जोरों से लड़ी, भक्तिमती मीराबाई जिन्होंने राष्ट्र में भक्ति की धारा प्रवाह कर हम लोगों को कृतार्थ किया और शाडिल्य की पत्नी जिन्होंने सूर्य के प्रकाश

को भी बन्द कर दिया था और अपने पति को पुनः जीवित किया, इसी तरह से हमारी अनेक मातायें हुई हैं परन्तु अब हमको क्या करना है दूसरों के खाये हुए भोजन से हमारी तृप्ति नहीं होगी, हमको जो कुछ करना है उस पर विचार करेंगे इसी को मैंने छोटे से शब्दों में बनाया है–

इतिहास में जिनका गौरव है वह आप सभी कुछ जानती हैं
वह क्या थीं अब हम क्या होंगे बस इस पर अपन विचारती हैं।
अपना धर्म, अपनी कीर्ति हम कभी नहीं मिटने देंगी।
हम अबला नहीं हैं सबला हैं पानी में आग लगा देंगी।
सन्तों, भक्तों का रक्त बहे क्या इसको हम सह जायेंगी।
अपनी मर्यादा को तजि कर हम रणचण्डी कहलायेंगी।
जब तक इन साँसों में दम है और हाथ प्रभू का सर पे है।
चप्पा-चप्पा इस भारत का हम कभी नहीं मिटने देंगी।
भिक्षुक बनकर जो आयेगा वो हमसे कुछ ले जायेगा।
सामने का भोज उसे देकर के हम उसमें खुशी मनायेंगी।
जो हक को हमारे छीनेगा वो चूर—चूर हो जायेगा।
प्रभु के स्थान में कभी नहीं किसी और को हम घुसने देंगी।
आवो बहनों मिलकर सोचें भाईयों का साथ निभाना है।
या तो अब अन्याय मिटे नहीं कमर बाँध जुट जाना है।
जीवन तो इक दिन सबही का यहाँ मिट्टी में मिल जाना है।
फिर क्यों न लगावें चरणों में जो नाम अमर रह जाना है।

सभा संचालक : श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी महाराज

इस पावन वातावरण में, इस पावन शान्ति में, हजारों की उपस्थिति में विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का आज यह छटा दिन और उसका खुला अधिवेशन है अग्रिम कार्यवाही चलने के पहले जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज किसी आवश्यक विषय पर आपको संक्षेप में कुछ जानकारी प्रदान करेंगे आप लोग शान्तभाव से श्री 'श्रीजी' महाराज का पावन सन्देश सुनने का कष्ट करें।

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज

समुपस्थित समस्त सन्त-महात्मावृन्द, विद्वद्वृन्द तथा भगवच्चरणानुरागी परम भक्त महानुभाव ! आज यहाँ मञ्च पर सनातन धर्म सम्मेलन के अन्तर्गत महिला सम्मेलन का समायोजन चल रहा है। अभी जब हम आचार्यपीठ से प्रस्थान करने लगे मन्दिर से यहाँ के लिए तो किन्हीं महानुभाव ने गाड़ी में बैठते-बैठते हमको यह समाचार पत्र दिया। इस पत्र में कुछ उल्लेख है अभी हमने पढ़ा भी नहीं है ऊपर उसका शीर्षक है—"क्या वाकई श्रीजी महाराज विहिप के ऐजेन्ट हो गये" यह इसका शीर्षक है। आप भावुकजन सब समझ गये होंगे हमको व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं। हम समझते हैं हमारे जो पत्रकार वृन्द हैं हो सकता है

उनको भ्रम हो गया हो, वास्तविक वात नहीं समझ पा रहे होंगे। अपना आचार्यपीठ किसी भी राजनीति से न तो कभी सम्बन्धित रहा है, न आज है, और यों तो धर्माचार्यों का सभी से सम्बन्ध है, राजनीतिज्ञों पर भी यदि उनका नियन्त्रण नहीं होगा तो फिर धर्माचार्य कैसे। वे एक देशीय नहीं हैं। १०८ वर्ष हुए जब तत्कालीन भरतपुर नरेश थे, वहाँ पर किला में श्रीविहारीजी महाराज विराजते हैं वहाँ पर जब अंग्रेजों ने आक्रमण किया तो आचार्यपीठ से मन्दिर की रक्षा के निमित्त तीन सौ महात्मा भेजे गये मन्दिर की रक्षा के लिए और तीन सौ महात्माओं में से कुछ को छोड़कर शेष प्रायः सभी समर भूमि में देव मन्दिर सुरक्षार्थ वलिवेदी पर समर्पण हो गये और फिर हमारे आचार्यप्रवर श्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्यजी महाराज का यह प्रसंग है, श्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्यजी महाराज को अंग्रेजों ने कुछ समय के लिए आज की भाषा में जिसे नजरबन्द कहते हैं उस रूप में रखा और जो अजमेर मण्डल में अनेक कई ग्राम आचार्यपीठ से सम्बद्ध थे, समर्पित थे सरकार की ओर से उनको अंग्रेजों ने स्वयं के अधिकार में ले लिये तो ऐसे अनेक प्रसंग भी आये हैं। यहाँ पर आचार्यपीठ में जिस समय भारत को स्वतन्त्र करने के लिए जब हमारे भारत के शीर्षस्थ जो स्वतन्त्रता सेनानी थे उनका यथेष्ठ प्रयास था कि हमारा देश स्वतन्त्र हो, उसी प्रसंग में हमारे यहाँ राजस्थान के जो खरवा ठिकाना है ब्यावर के निकट, अजमेर से जब ब्यावर जाते हैं ब्यावर के पास में खरवा ठिकाना है वह अपने आचार्यपीठ के शिष्य परिकरों में से ही हैं और मोडसिंहजी एवं गोपालसिंहजो दोनों काका-भतीजा उन्होंने बम बनाने का निर्माण किया, बम बनाया उन्होंने गुप्त रूप से और जैसे सुभाषचन्द्र बोस क्रान्तिकारियों में से थे इसी प्रकार वे भी क्रान्तिकारी महानुभावों में से थे, उन्होंने योजना बनाई कि ऐसे केवल सत्याग्रह आन्दोलन से काम नहीं चलेगा हम देश को स्वतन्त्र नहीं कर पायेंगे इसलिए हमको अपने को समग्र सामग्री भी एकत्रित करनी है इस दृष्टि से उन्होंने प्रयास किया। गुप्त रूप से बम बना रहे थे परन्तु उनका भेद खुल गया, भेद खुलने के बाद वो वहाँ से गुप्तवास की ओर चल दिये। गुप्तवास के क्रम में भ्रमण करते हुए आचार्यपीठ होते हुए वे जा रहे थे शिष्य यहीं के थे पर उनको विदित नहीं था कि यहीं अपना गुरुद्वारा है, आचार्यपीठ है ऐसा उनको अनुभव में नहीं था। वे यहाँ होकर निकल गये, यहाँ से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर पींगलोद गाँव है पींगलोद गाँव पहुँचे और वहाँ पहुँचकर के उनके पास ऊँट थे, रायफलें थीं और सभी प्रकार की युद्ध सामग्री थी, कुछ बालकों से कहा कि हमको तेल चाहिये थोड़ा तेल ले आओ, थोड़ा गुड़ चाहिये ऊँटों के लिए, बालकों ने जाकर गाँव में चर्चा की कि ऊँट लिये कोई आये हुये हैं और उनके पास में बन्दूकें हैं न जाने कौन क्या हैं और तेल मंगाया है, गुड़ मंगाया है, गाँव के कुछ लोग आये बाहर उन्होंने देखा उनको भी कुछ शंका हुई न जाने कौन हैं क्या है। उनसे कहा कि सन्ध्या का समय हो गया है रात्रि में आप लोग कहाँ पर विश्राम करेंगे, यदि आपको विश्राम करना हो तो यहाँ आचार्यपीठ निकट है और वहाँ विश्राम आप करो, बोले कहाँ है तो उन्होंने कहा कि आप किधर होकर के आये हो उन्होंने कहा हम पीछे से आये हैं गढ़ जैसा एक दिखाई तो दिया था, अपना जो मन्दिर है यह किला जैसे लगता है मन्दिर जैसे आभास नहीं होता है बाहर से देखेंगे तो किला जैसे ही है और युद्ध के लिए भी जैसे किले में चिह्न रहते हैं ऐसे ही ओखा बने हुये हैं

उनके द्वारा रायफल आदि का प्रयोग किया जा सकता है तो वे इसको किला ही समझे थे तो बोले अच्छा वह मन्दिर है तो हम वहीं विश्राम करेंगे। वहाँ से लौटकर के यहाँ आये, प्रभु के दर्शन किये, हमारे आचार्यश्री को विदित हुआ तो उनकी व्यवस्था करा दी। कोई आये हैं ये पता नहीं कि खरवा ठाकुर साहब हैं, खरवा राव साहब हैं, कौन हैं ये पता नही है केवल इतना आभास हुआ कि मारवाड़ से कोई आये हैं। उनके निवास की व्यवस्था हो गई, भोजनादि की व्यवस्था हो गई और एक इसी ग्राम के निवासी जो प्रतिवर्ष दुपट्टा, कण्ठी, प्रसाद लेकर के उधर उस क्षेत्र में खारी नदी का परिसर खारी का ढावा कहलाता है विजयनगर एवं केकड़ी के आस-पास का क्षेत्र जहाँ जागीरदार-ठिकाने प्रसिद्ध हैं तो वहाँ पर उनको प्रसाद देने के लिए जाते थे, वहाँ से भेंट आती थी वो भेंट लेकर के आते थे उन्होंने पहचान लिया कि खरवा ठाकुर साहब व राव साहब है। महाराजश्री से आकर निवेदन किया कि यह तो खरवा ठाकुर साहब श्रीगोपालसिंहजी एवं राव साहब श्रीमोडसिंहजी हैं। तो महाराजश्री ने उन्हें बुलाया और उनको कहा कि आपका ऐसे कैसे हटात् आगमन, कोई समाचार नहीं, हम तो समझे कोई ऐसे ही आ गये होंगे। उन्होंने अपनी सम्पूर्ण घटना सुनाई और कहा कि हम तो गुप्तवास में हैं। सरकार की ओर से जो उनका कोई पता लगा ले तो उसको पाँच हजार का पुरस्कार घोषित था। उस समय में पाँच हजार अपना महत्व रखते थे, आज से लगभग ६०-७० वर्ष पहले पाँच हजार का विशेष महत्व था, ऐसा उन्होंने महाराजश्री से निवेदन किया तो उनकी व्यवस्था कर दी निवास की, आप चिन्ता न करें आपको कोई हानि नहीं होगी। परन्तु ये समाचार पींगलोद गांव के जिन्होंने व्यवस्था दी थी कि रात्रि में वहाँ निवास करें उन लोगों को जब यह पता लगा कि यह तो गोपालसिंहजी एवं मोडसिंहजी हैं, तो उन्होंने जाकर के किशनगढ़ स्टेट में समाचार दे दिये। किशनगढ़ महाराज के वहाँ से सूचना पहुँच गई अजमेर चीफ कमिश्नर के पास, वह सेना लेकर यहाँ आ गये आचार्यपीठ को घेर लिया, जो वयोवृद्ध यहाँ के प्राचीन जिन्होंने दृश्य को देखा वह बतलाते हैं कि हजारों अश्वारोही (घुड़सवार) सशस्त्र सैनिक और तोप लाकर परकोटा के उत्तरी भाग के बाहर रख दी थी कि यदि इस मन्दिर का दरवाजा नहीं खोलेंगे तो वे एक ओर से आचार्यपीठ का परकोटा नष्ट कर देंगे और उसमें फिर प्रवेश करेंगे ऐसी योजना बन गई। एक बड़ा धर्म संकट हो गया। दोनों खरवा ठाकुर साहब गोपालसिंहजी एवं राव साहब मोडसिंहजी ने केसरिया रंग में अपने वस्त्र रंग लिए और युद्ध के लिए तत्पर हो गये। महाराजश्री से निवेदन किया कि आप देखिये आपके शिष्यों का क्या पराक्रम है, ये हजारों की सेना यहाँ पर आई हुई है किन्तु इनमें से एक नहीं बचेगा, हम दो हैं और ये हजारों हैं इनमें से एक नहीं बच सकता है। महाराजश्री ने कहा कि आप विचार न करें जो भी सुन्दर समाधान होगा हम प्रयास कर रहे हैं। प्रयास किया गया सुन्दर समाधान हुआ चीफ कमिश्नर स्वयं अन्दर आये, दूर से ही भगवद्दर्शन किये और अन्दर आकर के महाराजश्री जहाँ महल में विराजते थे वहाँ आकर मिलना हुआ। सब चर्चा हुई परस्पर में, समझौता हुआ प्रसंग लम्बा है हम विस्तृत व्याख्या नहीं करेंगे परन्तु फिर बाद में मारवाड़ में पता लगा कि गोपालसिंहजी एवं मोडसिंहजी को आचार्यपीठ ने गिरफ्तार करवा दिया, ये चर्चा हुई। यहाँ के जो जितने राजा, महाराजा, ठाकुर साहब इत्यादि सबके मन में आशंका हो गई कि गुरुदेव ने ऐसा

कैसे किया । तब खरवा ठाकुर साहब को, राव साहब को यह समाचार दिये गये कि इस प्रकार सबको भ्रान्ति हो रही है, तब उन्होंने एक विज्ञप्ति निकालकर के सबको सूचित किया कि गुरुदेव की कृपा से ही हमारी रक्षा हुई है । जिस समय वे जाने लगे अपने समस्त शस्त्र, वाहन ऊँट और उनकी तलवार, पिस्तौल, राइफलें जो भी सामग्री थी सब भगवान् के समर्पण करके वे यहाँ से आचार्यपीठ के बग्गी-वाहन से खरवा पहुँचे । बहुत बड़ा सम्बन्ध यहाँ राज परिवार से, जोधपुर से, बीकानेर से, जैसलमेर से और कोटा, बूँदी, जयपुर, किशनगढ़ आदि-आदि जितने भी यहाँ के २२ रजवाडा, २२ स्टेट सबसे आचार्यपीठ का गहरा सम्बन्ध रहा है वे परम निष्ठावान् शिष्यों में से रहे हैं । आचार्यपीठ में ऐसा भी था कि हमारे यहाँ आज जहाँ पर छात्रावास है उसको आज भी कैद का चौक बोलते हैं वहाँ कैद करते थे, कोई अपराध करता उसको हमारे यहाँ २-३ महीने के लिए कैद में रखते थे बाद में समाचार करने पर फिर स्टेट से व्यक्ति आकर के उन्हें ले जाते थे । तो ये सब व्यवस्थायें पहले थी तीन-तीन सौ घोड़ा, दो-दो सौ ऊँट, चार-पाँच हाथी और बग्गी, रथ इस प्रकार से सब व्यवस्थायें प्राचीन समय में थो । जब भी आचार्यपीठस्थ आचार्यश्री कहीं पधारते तो दो सौ व्यक्ति के बिना कहीं बाहर यात्रा नहीं होती थी । हमारे समय तक भी जब पहले हम रथों से यात्रा करते थे तो कम से कम ५०-६० व्यक्ति हमारे साथ रहते थे इनके बिना यात्रा कहीं नहीं होती थी । कालक्रमानुसार शनैः-शनैः कम करते आज भी १०-१५ व्यक्ति बिना तो अभी भी निर्वाह नहीं होता है जब कहीं बाहर जाना होता है तो साथ में रहते हैं। तो कहने का तात्पर्य आचार्यपीठ किसी एक देशीय नहीं है सभी से सम्बन्ध है, सभी से सम्पर्क है । उनको पता नहीं है पत्रकार-वृन्दों को कि ये जो विराट् सनातन धर्म सम्मेलन हो रहा है इसके जो महामन्त्री हैं वो कांग्रेस के हैं और जो प्रचारमन्त्री है वह भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता हैं श्रीदिनेशजी किरण और श्रीराधेश्यामजी ईनाणी जो कांग्रेस के विशिष्ट कार्यकर्ता है । यहाँ कम्युनिष्ट हो, कांग्रेस हो, चाहे अन्य-अन्य कोई वर्ग हो सभी शिष्य प्रशिष्य सब हैं, सब यहाँ मन्त्र उपदेश लेते हैं सबका स्वागत है । जो कोई भगवद्भक्ति करता है, प्रभु आराधना करता है, भगवत्चरणारविन्दों में अनन्य अनुराग रखता है उन सभी से सम्बन्ध है, आचार्यपीठ किसी एक संस्था की नहीं है सबका सम्बन्ध है परन्तु इतना साथ-साथ ध्यान रखना पड़ता है कि यदि कोई हमारे सनातन धर्म का जो मूल कोई प्रश्न हो, किसी प्रकार की कोई समस्या हो उस समस्या का सबको ध्यान रखना पड़ता है, आज जैसे श्रीअयोध्याजी में श्रीराम मन्दिर का प्रसंग है यह केवल कोई विश्व हिन्दू परिषद् अथवा किसी संस्था विशेष जैसे भारतीय जनता पार्टी का यह विषय नहीं है, यह समस्त सनातन धर्म जगत् का, यह हमारे समस्त सन्त-महात्माओं का, समस्त धर्मप्राण जनता का चाहे वह कांग्रेसी हो, चाहे वह भारतीय जनता पार्टी का हो, चाहे कम्युनिष्ट हो, चाहे वह कोई अन्य दल से हो, किसी प्रकार की कोई भी संस्था हो सभी से आचार्यपीठ का स्वाभाविक सम्बन्ध है राजनीति का भक्ति क्षेत्र में कोई प्रसंग नहीं । अतः किन्हीं को भ्रान्ति होनी ही नहीं चाहिये ।

सभा संचालक : श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी महाराज

अट्ठारह वर्ष पहले जो विराट् सनातन धर्म सम्मेलन इसी प्रांगङ्ग में हुआ था उस प्रांगण में राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमन्त्री माननीय श्रीहरिदेवजी जोशी वक्ता के रूप में आये थे और उसी पण्डाल में भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजमाता श्रीविजयराजे सिन्धिया भी यहाँ पधारी थीं इस पीठ पर। इस पीठ में पूरे भारत राष्ट्र ही नहीं विश्व के प्राणीमात्र की श्रद्धा का यह केन्द्र है। देश-विदेश से सारे विचार, सारी योजनायें सारे क्षेत्रों के लोग यहाँ आकर आचार्यचरणों को नमन करते हैं और आचार्यचरण समान मुद्रा में समान भावों से सबको अपना शुभाशीर्वाद प्रदान करते हैं। हमारे यहाँ कभी कोई दर्शन करने आया चुनाव के दिनों में और वो आशीर्वाद लेकर गया तो अखबारों में छपा अमुक पार्टी के नेता आज यहाँ आशीर्वाद लेने गये तो दुनियाँ समझे या और कोई समझे कि ये महाराज तो इस पार्टी में हैं। दूसरे दिन दूसरी पार्टी का आदमी नमन करने आयेगा। हमारा तो गणेशजी का मन्दिर है गणेशजी के मन्दिर में गणेशजी को निमन्त्रण देने सारी दुनियाँ आती है, अब जब सारी दुनियाँ आती है तो गणेशजी महाराज का क्या दोष है। गणेशजी तो सारे राष्ट्र के हैं, गणेशजी तो प्राणीमात्र के हैं, ऐसे ही श्री 'श्रीजी' महाराज तो प्राणीमात्र के हैं, पूरे राष्ट्र के हैं, समस्त धर्मों के हैं, समस्त विचारों के हैं, समस्त मित्रों के हैं, समस्त शिष्यों के हैं, समस्त अनुयायियों के हैं। इसलिए इस बात को यहीं विराम देकर अब मैं पत्रकार बन्धुओं से कहूँगा कि राजस्थान के पत्रकार बन्धुओं ने हमारे विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के प्रचार-प्रसार में अभूतपूर्व योगदान दिया है, बड़ी सेवा की है पूरी तरह से हमारे पत्रकार मित्रों ने बहुत अच्छे विचारों से, बहुत ही व्यापक रूप में भारत की, राजस्थान की जनता के पास हमारे सम्मेलन के प्रचार को, हमारे सम्मेलन के विचारों को भली प्रकार पहुँचाया है इसलिए मैं पत्रकार बन्धुओं को हम सबकी ओर से बधाई देता हूँ, धन्यवाद देता हूँ और यह जो समाचार किसी असावधानी से छप गया है उसके निराकरण करने के लिए भी पत्रकार बन्धुओं से अनुरोध करता हुआ अग्रिम कार्यवाही की तरफ पूरे मण्डप को ले जाता हूँ।

डा० विमला भास्कर

शत् शत् प्रणाम है निम्बार्कपीठ शत् शत् प्रणाम गुरुदेवासीन।
तुम राधा हो सर्वेश्वर हो पूर्ण हो तुम अपने में फिर भी उस शरण हुये राधासर्वेश्वर के,
जो स्वयं शरण्य है भक्तों के, तुम धन्य हो धन्य हो मेरे गुरुदेव, धन्य तुम्हारे पितृदेव।
तुम निम्बार्कपीठ को पाकर और पीठ तुम्हें पाकर हम दोनों को पाकर और पाकर
सन्त समागम के इस वृहद् रूप के दर्शन को, सचमुच धन्य हुये धन्य हुये धन्य हुये।

लगता है यह सन्तों का समागम नहीं सलेमाबाद की इस पावन धरती पर प्रकटा है स्वयं स्वर्ग अपना पावन रूप लिए जिसकी स्वर्णिम आभा आज बिखेर रही है चहुँ ओर, यहाँ हर पीठ से आने वाले महामण्डलेश्वर, मण्डलेश्वर, आचार्यवर सच कहती हूँ लगते हैं ब्रह्मा, विष्णु और महेश। यहाँ ये सन्त समागम भवसागर को पार कराने का एक सेतु बना है सशक्त यहाँ

कितना विशाल यह सागर है, कितना विशाल यह समागम है यह सेतु बना है भवसागर से पार कराने का, मानवता को पार कराने का। यह समागम सेतु बना है समाज, राष्ट्र का, भक्ति-भक्त का सेतु बना है, धर्म संस्कृति का सेतु बना है ज्ञान-ज्ञेय और ज्ञाता का सेतु बना है विभिन्नता एकता यानि कि द्वैताद्वैत दर्शन है इस पीठ का दर्शन है. इस पीठ का यह दर्शन नहीं इस पीठ का देख लो तुम सब स्वयं पर यह तो दर्शन है मानव जाति का, यहाँ द्वैत नहीं अद्वैत नहीं है यह उन दोनों का सुन्दर समन्वित पुष्ट रूप जिसमें छिपा है महावाणी का यह मूल मन्त्र—"सब मिलि चलो, सब मिलि चलो" इस मूल मन्त्र को गांठ बांध आवो आज से यह प्रण करें अपने देश, धर्म व जाति हित सब मिलि चलेंगे मिलि चलेंगे मिलि चलेंगे। उस दिन भी आपने एक प्रण किया था और वह प्रण था आपका मादक द्रव्यों को छोड़ना और इसी तरह का प्रण आज हम इन आचार्य महानुभावों के सामने फिर से करते हैं कि हम सब मिलकर के अपने देश, जाति, संस्कृति और मानवता के लिए चलते चले जायेंगे। सब मिलि चलेंगे मिलि चलेंगे मिलि चलेंगे। हे गुरुदेव, हे सन्तप्रवर, हे विद्वत्समाज इन उपस्थित भक्तों का है सबको प्रणाम सबको प्रणाम। सलेमाबाद की हे पावन धरती तुम धन्य हो तुम पावन हो पावन बनी रहो। मानवता में अपने इस बीज रूप मन्त्र का बीज सब में भरती रहो भरती रहो और चलती रहो और चलती रहो, तुम्हारे यहाँ सन्तों के समागम गूँजते रहें ऋषि-मुनियों के पावन स्वर। तुम तुम्हारा दर्शन तुम्हारा पीठ सृष्टि में अमर रहे, हे गुरुदेव ! तुम तुम्हारा दर्शन तुम्हारा पीठ सृष्टि में अमर रहे अमर रहे अमर रहे और अमर बनें मेरे गुरुदेव, पीठासीन देव अमर बनें मेरे गुरुदेव शत शत प्रणाम शत शत प्रणाम शत शत प्रणाम।

श्रीमती प्रभा ठाकुर

हमारे इस अंचल का, इस पूरे क्षेत्र का यह बड़ा भारी एक सौभाग्य है, एक गौरव है, यह गौरव जो हमें हमारे परम श्रद्धेय आदरणीय श्री 'श्रीजी' महाराज की कृपा से मिला कि आज इतना बड़ा एक धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न हो रहा है, इतने बड़े-बड़े भव्य सन्तों के हमें दर्शन प्राप्त हुए हैं और उनके सान्निध्य का, उनकी पुनीत वाणी को सुनने का हमें यह सौभाग्य मिला। यह अवसर हमें दिया उसके लिए हम सब श्रीनिम्बार्काचार्य भगवान् के प्रति जितनी कृतज्ञता ज्ञापित करें कम है। आज का यह जो महिला सम्मेलन है इसमें विभिन्न विषयों पर विचार हुये। यह जो धर्म अनुष्ठान कुछ दिनों से चल रहा है इसमें धर्म की धारा के साथ-साथ जो भी सामयिक विषय हैं सामाजिक हो, चाहे संस्कृति से जुड़े हो, चाहे धर्म से जुड़े हो उन सभी पक्षों पर यहाँ चिन्तन हुआ है, मनन हुआ है, विचार हुआ है और यह इस तरह के अनुष्ठान धार्मिक मञ्चों से होने आज के समय में बहुत जरूरी हो गये हैं। आज जबकि कई लोग आम जनता को जब गुमराह कर रहे हैं उस समय बहुत बड़ी आवश्यकता है कि ऐसे हमारे धर्माचार्य हमें सही रास्ता दिखायें और सही मार्ग हमें बतायें। जो दिशा यहाँ से चली है मुझे उम्मीद है वह पूरे देश तक पहुँचकर के बहुत-बहुत लोगों का दिशा निर्देशित करेगी जैसा कि आज हमारे पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि सन्तों का तो किसी राजनैतिक पार्टी से कोई सम्बन्ध नहीं होता, वह सभी के होते हैं सब उनके दरबार में आते हैं उनका दरबार सबके लिए समान रूप से खुला है वहाँ कोई भेदभाव नहीं है और यह बात सत्य है इसे सभी जानते हैं।

श्राज हम सभी चाहे कोई किसी वर्गों के हों, समाज के हों, चाहे किसी संगठन के हों सब यहाँ पर शिर झुकाते हैं। श्रापने इन दिनों में एक विशेष बात नोट की होगी, श्राप एक बात को जरा सोच के देखना कि यहाँ हजारों-हजारों श्रद्धालु श्रा रहे हैं समारोह में श्रा रहे हैं दर्शन करने श्रा रहे हैं श्रौर इतना धार्मिक प्रवचन चल रहा है, सत्संग चल रहा है लेकिन कोई श्रप्रिय घटना नहीं हुई, कोई किसी तरह का कहीं संघर्ष नहीं हुश्रा इसका कारण क्या है, उसका कारण है कि जब धर्म का समारोह जब धर्माचार्य करते हैं, धर्माचार्य जब धर्म की बात करते हैं तो शान्ति रहती है, प्रेम होता है, सद्भाव बढ़ता है श्रौर राजनीतिज्ञ जब धर्म की बात करते हैं जब धर्म की श्राड़ लेकर के जब कोई श्रौर बात करना चाहते हैं वहाँ चाहे १०० लोग भी इकट्ठे हो तो वहाँ संघर्ष होता है, वहाँ कलह होती है क्योंकि वहाँ उद्देश्य कुछ श्रौर होते हैं। श्राज श्राप देखिये हजारों लाखों भक्तजन यहाँ श्राये कितनी शान्ति से यह सम्मेलन कितनी सद्भावना से, कितने प्रेम से यह सम्मेलन सम्पन्न हो रहा है मुझे गौरव मिला है, यह सौभाग्य मुझे मिला कि मैं इतने सन्त शिरोमणियों के दर्शन पा सकी श्रौर इसमें उपस्थित हो सकी। इस महिला सम्मेलन के लिए श्राज जो इतनी बहनें यहाँ पधारी हैं, कई मेरी बहनों ने विचार रखे इसमें कुछ खास विचार हमें दिये गये थे जिन पर श्रपने विचार व्यक्त करना है। एक तो नारी का पारम्परिक जो सांस्कृतिक गौरव है, नारी का पहले प्राचीनकाल में क्या गौरव था फिर उसका क्या ह्रास हुश्रा, क्या पतन हुश्रा, श्राज के समय की नारी की क्या समस्यायें हैं, क्या परेशानियां है कुछ इस बारे में मैं श्रपने चन्द विचार रखना चाहती हूँ—जो श्रादिकालीन नारी का, प्राचीन नारी का जो गौरव था श्राप सभी जानते हैं इस देश में गार्गी श्रौर मैत्रेयी जैसी महिलायें भी हुई हैं, इस देश में पुराने काल में सीता, सावित्री, दमयन्ती जैसी सतियाँ हुई हैं जिन्होंने जल के प्राण नहीं दिये। बाद में तो उसका श्रर्थ ही बदल गया कि जिन्हें जबर्दस्ती जलाया जाय उन्हें सती कहा गया लेकिन वह महासतियाँ ऐसी हुई जो कि जीतेजी महासती का जिन्होंने पद हासिल किया जो सच्चे श्रर्थों में होता है तो वह समय था जब शिक्षा का समय था जब स्त्रियों को खुले श्राम बैठकर के शास्त्रार्थ करने की श्रनुमति थी वो एक समय था जब इस देश में कोई पर्दा प्रथा नहीं थी। मेरी मातायें-बहनें सब जानती है। हम सीताजी का चित्र देखें, राधाजी का चित्र देखें या कोई रुक्मणीजी का चित्र देखें, चाहे दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती का कोई भी चित्र देखें किसी के भी मुख पर पर्दा नहीं होता क्योंकि सनातन धर्म में श्रादिकाल में यह प्रथा नहीं थी। स्त्री को सचमुच में बराबर का श्रधिकार प्राप्त था, स्वयं-वर के द्वारा श्रपना वर चुनने की उसे श्रनुमति थी तो इतना श्रागे बढ़ा हुश्रा समाज था वह। गौरवशाली समाज जब कहा जाता था कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता रमण करते हैं। यह उक्ति तब सही मायने में थी श्रौर नारी के सम्मान के लिए इससे बड़ी बात क्या कही जा सकती है। हमारे यहाँ शास्त्रों में यह कहा गया कि शक्ति के बिना शिव भी शव है, शक्ति के साथ ही शिव शिव है श्रन्यथा शव है। इससे ज्यादा नारी का श्रौर क्या सम्मान किया जा सकता है। हमारे यहाँ जो श्रर्धनारीश्वर की जो परिकल्पना है जिसमें शिव श्रौर शक्ति को एक साथ एक दूसरे का जो पूरक बताया गया है वह इस बात का एक सबसे बड़ा उदाहरण है, एक सबसे बड़ा प्रतीक है कि स्त्री श्रौर पुरुष

समान हैं ये इस जीवन गाड़ी के दो बराबर के पहिये हैं अब कालान्तर में जाकर के ऐसी स्थितियाँ बनी कि पतन हुआ, ह्रास हुआ, कुछ ऐसा हुआ कि स्त्रियों के लिए शास्त्रों का पढ़ना, सद्ग्रन्थों का पढ़ना बन्द हो गया तो शिक्षा का पतन हो गया। जब महिलाओं को बाद में शिक्षा से दूर कर दिया गया तो फिर आप बताइये कि वह समाज की गाड़ी कैसे चलेगी जिसमें एक पहिया तो ट्रक का लगा दिया जाय और एक पहिया बैलगाड़ी का लगा दिया जाय उसकी क्या गति रहेगी। तो आज के समय में सबसे ज्यादा जरूरत है शिक्षा की। शिक्षा का जितना प्रचार-प्रसार होगा महिलाओं में, लड़कियों में उतना ही ज्यादा विकास होगा। क्योंकि गाँधीजी ने भी एक जगह कहा है कि जब एक पुरुष शिक्षित होता है तो एक व्यक्ति शिक्षित होता है लेकिन जब एक महिला शिक्षित होती है तो पूरा परिवार शिक्षित होता है, पूरा समाज शिक्षित होता है, क्योंकि बालक की पहली गुरु उसकी माँ होती है और यदि गुरु जो है पहला गुरु वही शिक्षित नहीं है तो वह बालक को क्या शिक्षा देगा। तो मैं माताओं-बहिनों से यही कहना चाहूँगी कि आज जो इतनी समस्यायें हैं हमारे जीवन में, दहेज की समस्या है जब आज लड़की घर में पैदा होती है तो खुशी की जगह दुःख होता है, दुःख क्यों होता है। दुःख इस बात का है कि भाई पता नहीं कैसा लड़का मिलेगा, कैसा घर-परिवार मिलेगा, लड़की को कैसे रखेगा, हजारों-लाखों रुपये दहेज के कैसे जुटेंगे ये तमाम समस्यायें हैं जिसके कारण लड़की का जन्म एक अभिशाप सा बन गया है और इस तरह से उसके प्रति सोचा जाता है तो मैं यह कहना चाहूँगी कि आप लड़कियों को शिक्षित करें, लड़कियाँ जितनी शिक्षित होंगी आर्थिक रूप से आत्म निर्भर होंगी तभी वह समाज में अपनी एक पक्की जमीन बना पायेगी। तो मैं आज आपसे कह रही हूँ कि लड़कियों को हीन भावना से नहीं देखना चाहिये, ऐसा समय और जमाना आ गया है यदि उन्हें बचपन से ही हीन भावना से देखें, उसे छोटा समझ कर दुतकार दें तो फिर उसका आत्म विश्वास कैसे बढ़ेगा, आत्म गौरव कैसे बढ़ेगा तो इस बात पर विचार करें कि लड़का और लड़की को उचित पथ पर हम लोगों को देखना है और आज जो दहेज की यह कुरीति है, अन्धविश्वास है और जो पर्दा प्रथा है इनके लिये यदि महिलायें आगे नहीं आयेंगी तो कौन आयेगा। आज हम लोग देखते हैं कि अमुक जगह सास ने ननद ने दहेज के खातिर बहू को जला दिया, फलानी जगह ससुर और पति ने मिलकर के आग लगा दी, इस तरह के समाचार हम सब नित्य पढ़ते हैं लेकिन यह भूल जाते हैं कि भाई हम भी किसी के घर की कोई बहन-बेटी हैं तो जब भी समाज में, सोसायटी में कोई इस तरह का काम होता है या इस तरह की कोई घटना होती है तो पूरे समाज को मिलकर, इकट्ठा होकर उसके खिलाफ आवाज उठानी चाहिये और उसका सामाजिक बहिष्कार करना चाहिये ताकि और लोगों को सबक मिले। गाँवों में जो औरते होता है उन औरतों में आत्मबल ज्यादा होता है और शरीर बल पुरुष में ज्यादा होता है यह एक प्राकृतिक बात है। गाँवों में जब औरतों को काम करते हुये देखते हैं तो पुरुषों से पीछे नहीं रहती। गाँव की औरते घर का भी काम करती है, दोहरा बोझ उठाती है, चक्की-चूल्हा भी करें, खेत-खलिहान का काम भी करती है, बच्चों को जन्म दे उनको पाल-पोस कर बड़ा करती है इतनी जिम्मेदारियाँ गाँव की औरते उठाती हैं। गाँव की औरतों के लिए खास तौर से सरकार को कुछ ध्यान देने की आवश्यकता है, जरूरत

है कि कम से कम हर गाँव में एक प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था जरूर हो जिससे कि वह वहाँ पर पढ़ सकें। आज एक जो और विषय है कि फिल्मों के द्वारा, विज्ञापनों के द्वारा, दूरदर्शन के द्वारा अश्लील चित्रों के द्वारा जो हम लोग अश्लीलता देखते हैं पता नहीं इसको सेंसर बोर्ड कैसे पास कर देता है यह बड़े ही आश्चर्य की बात है। इसके लिए सरकार को तो प्रतिबन्ध लगाना ही चाहिये, लेकिन साथ ही साथ धार्मिक एवं सामाजिक संगठनों को भी एकजुट होकर इसके खिलाफ आवाज उठानी चाहिये कि हम नारी का इस तरह अपमान होना नहीं देख सकते तभी जाकर इस बात में क्रान्ति हो सकती है और इसकी बहुत आवश्यकता है। हमारे यहाँ नारी को मातृ स्वरूप, अपने यहाँ वन्दनीय माना गया है, नारी पुरुष की शक्ति है उसकी प्रेरणा है उस शक्ति का, नारी का यदि विज्ञापनों द्वारा, चित्रों के द्वारा, फिल्मों के द्वारा अपमान होता है तो सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों का यह कर्तव्य है कि एकजुट होकर उसके खिलाफ आवाज उठावें, यह नैतिक जिम्मेदारी हम लोगों की है, सारे समाज की है कि हम लोग इस जिम्मेदारी को समझें। यहाँ और कुछ अधिक न बोलते हुए मैं तो यह कहूँगी कि आज नारी कहाँ नहीं है, हवाई जहाज में पायलेट तक नारी है, वैज्ञानिक है, कालेज में पढ़ाती है, राजनीति में नारी है, किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। पहले भी आप देखें भक्तों में मीराबाई, सन्ताबाई और सहजोबाई जैसी सन्त महिला हुई हैं जिनको कि सदियों बाद भी लोग याद कर रहे हैं। किसी भी क्षेत्र में नारी पीछे नहीं है फर्क सिर्फ इतना ही है कि उनको अवसर नहीं मिलता है अवसर देकर देखो वह बुद्धि में भी पीछे नहीं रहेगी, कुछ करके ही दिखायेगी। इस देश में लक्ष्मीबाई और दुर्गावती जैसी नारियाँ हुई हैं जिन्होंने रणभूमि में उतरकर के युद्ध किया है, राज-काज चलाया है, इस देश में बड़ी-बड़ी स्त्रियाँ विभूतियाँ हुई हैं तो आज वह समय है कि स्त्रियों में एक चेतना आनी चाहिये, एक जागरूकता आनी चाहिये, कुरीतियों के प्रति, कुसंस्कारों के प्रति, कुप्रथाओं के प्रति और धर्म के प्रति वास्तव में एक चेतना आनी चाहिये। आजकल हम देखते हैं कि धर्म का सारा ठेका औरतों को ही सौंप रखा है हर जगह कथा-कीर्तन आदि प्रायः औरते ही करती है आदमी लोग प्रायः कम देखने को मिलते हैं, मन्दिर में आरती में, व्रत-उपवास करने में, कथा कराने में आदि धार्मिक कार्यों को सम्पन्न करने में औरते ही सबसे आगे हैं। पुरुषों को भी धर्म के काम में बराबर की हिस्सेदारी करनी चाहिये केवल औरतों का ही कार्य नहीं है तो इस प्रकार की एक धार्मिक चेतना बचपन से आना जरूरी है। धर्म से भी आदमी को जुड़े रहना चाहिये, धर्म वह चीज है जो आदमी को सही रास्ते पर रखता है, सही रास्ता दिखाता है, धर्म से आपस में व्यक्ति-व्यक्ति में प्रेम बढ़ता है, आपस में सुख-शान्ति बढ़ती है यदि आज धर्म को हम लोग नहीं भूलते तो जो यह परेशानियाँ और यह दुःख जो आजकल हम लोग भुगत रहे हैं यह नहीं होता। हम लोगों को यह नहीं सोचना चाहिये कि धर्म तो औरतों की चीज है या साधु-सन्तों की चीज है या बुढ़ापा आने पर धर्म करेंगे तो इस बात को आज बदलने की जरूरत है। धर्म का पालन सभी के लिए अत्यन्त आवश्यक है धर्म रहित जीवन पशुतुल्य है। अतः धर्म ही हमारे जीवन का मूल आधार है।

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज

आज महिला सम्मेलन है और महिला सम्मेलन के अन्तर्गत यह एक ऐसा महत्वपूर्ण प्रसंग है कि आप सब सुनकर अवाक् रह जायेंगे, आश्चर्य होगा, विस्मय होगा और आपको ही नहीं सम्पूर्ण नारी जगत् के लिये यह परम गौरव का प्रसंग है। हमारे यहाँ किशनगढ़ के महाराज साँवतसिंहजी अपर नाम नागरीदासजी जिन्होंने ७२ ग्रन्थों की रचना की है राज-प्रासादों में बैठकर, राजमहलों में बैठकर और अन्त में विरक्त होकर के वृन्दावनधाम में जाकर लता कुञ्जों के मध्य में बैठकर के, कलिन्दजा के कमनीय कूल पर स्थित होकर के, कदम्ब कुञ्ज, जम्बु कुञ्ज, तमाल कुञ्ज आदि उन कुञ्जों के अन्तः स्थल में बैठकर के अपने युगल प्रिया-प्रियतम श्रीराधामाधव का चिन्तन किया है उनकी माताजी थी श्रीबांकावतीजी, आचार्यप्रवर श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी महाराज की वह परम शिष्या थी और नागरीदासजी महाराज भी उन्हीं आचार्यवर्य के परमकृपा पात्र थे। बाँकावतीजी ने जब वैष्णवी दीक्षा ग्रहण की तब उनका नाम रखा गया व्रजदासी अथवा व्रजकुँवरी ये दो नाम उनके वैष्णव परक थे। उनके आराध्यदेव श्री-बाँकेबिहारीजी अपने यहाँ श्रीराधामाधवजी के मन्दिर में जब श्रीसर्वेश्वर प्रभु की ओर दर्शन करते हैं तो जो ठाकुरजी विराजमान हैं वह बाँकावतीजी के ठाकुरजी हैं। उनके चरण चौकी में लिखा है बाँकावती, आज भी अंकित है। नागरीदासजी महाराज का जीवन परम पवित्र था, परम पावन था, वैष्णवता से ओत-प्रोत था, उन श्रीनागरीदासजी महाराज की माताश्री बाँकावतीजी जिन्होंने श्रीमद्भागवत के १८ हजार श्लोकों का अनुवाद किया है, छन्दानुवाद हिन्दी में, दोहों में, चौपाइयों में इतना सरस अनुवाद है और २३ हजार छन्दों में किया है। सम्पूर्ण विश्व की नारी जगत् में किसी ने भी ऐसा साहित्य का सृजन नहीं किया है। हम तो जहाँ तक समझते हैं साहित्य जगत् में जो गौरव राजस्थान को और राजस्थान में भी किशनगढ़ को प्राप्त हुआ है और यहाँ का सम्बन्ध आचार्यप्रवर श्रीवृन्दा-वनदेवाचार्यजी महाराज से उन्होंने मन्त्रोपदेश लिया था, वह यहाँ की शिष्या थी इसलिए निम्बार्काचार्यपीठ को भी यह गौरव प्राप्त हुआ है। उस महान् ग्रन्थ का प्रकाशन बहुत प्रयास करने पर भी अब तक न हो सका। सर्वेश्वर प्रभु की कृपा है हमारे ही भगवत् भक्तों में श्रीव्रजमोहनजी छापरवाल ने ऐसी अभिलाषा प्रकट की कि हम इस ग्रन्थ सम्पादन की सेवा करना चाहते हैं उनकी भावना के अनुसार उस ग्रन्थ का प्रकाशन आचार्यपीठ से आरम्भ हो चुका है और सम्भवतः एक वर्ष के मध्य में २३ हजार छन्दों का विशाल यह व्रजदासी-श्रीमद्-भागवत आपके सामने प्रकाशित होकर के प्रस्तुत हो जायेगा। उसका आज जितना भी अंश शुभारम्भ हो गया है उसका विमोचन यहाँ पर होने वाला है। तो मूल अभिप्राय यह है कि भारत की श्रेष्ठ नारियों ने अपने नियम, व्रत, तप के अनुपालन से सम्पूर्ण जगत् को अनुप्राणित किया है।

कवि--सम्मेलन

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव के अवसर पर दिनांक २३ मई से २५ मई तक प्रतिदिन दीर्घकाल रात्रि तक भक्ति संगीत के कार्यक्रम निरन्तर चलते रहे। इसी क्रम में दि० २६ मई को रात्रि में कवि सम्मेलन का भी आयोजन हुआ, जिसमें बाहर से आये हुए कवियों ने अपने कविता पाठ से जन मानस को आनन्दित किया।

कवि-सम्मेलन का शुभारम्भ सभा संचालक श्रीसत्यनारायणजी सत्यन इन्दौर ने श्रीगणेशजी की आराधना से किया। कुमारी ममता शर्मा आगरा ने 'नमन शारदे माँ' से माँ सरस्वती की वन्दना की। अमरोहा से आये हुए वीर रस के कवि श्रीराजवीर क्रान्तिकारी ने अपना घोषणा पत्र पढ़कर सुनाया जिसमें कहा गया 'किसी वंश के खोटे सिक्के नहीं चलेंगे नहीं चलेंगे भारत में' इस कविता का सीधा संकेत अयोध्या के विवादित ढांचे से जुड़ा हुआ था। इस क्रान्तिकारी कवि ने एक और कविता सुनाई 'अबकी बार जंग हुई तो नामोनिशान नहीं रहेगा, कश्मीर तो होगा मगर पाकिस्तान नहीं होगा' श्रोताओं ने इस कविता की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इनके पश्चात् अलीगढ़ से आये हुए प्रो० विष्णु सक्सेना ने अपना गीत सुनाया। पश्चात् आगरा से आई हुई कु० ममता शर्मा पुन: मञ्च पर आई और अपनी ओजस्वी वाणी में "भारत में रामराज लाने के लिए रावणों से देश हमें बचाना होगा, अब तो हाथों में धनुष बाण उठाना होगा" गीत सुनाकर श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। उज्जैन से आये हुए प्रो० रमेश गुप्ता चातक ने भी अपनी एक कविता सुनाई। इनके पश्चात् श्रीराजेन्द्र राजन् ने अपना गीत 'वतन की जो हालत बताने लगेंगे तो पत्थर भी आँसू बहाने लगेंगे। कहीं भीड़ में खो गई आदमियत जिसे ढूंढने में जमाने लगेंगे।' सुनाया। राजन् के पश्चात् कोटा से आये हुए श्री जगदीश सोलंकी ने 'बोल समुद्र तुझ में कितना पानी, चुल्लूभर में तेरी मेहरबानी' कविता सुनाई। बदायु से आये डा० उर्मिलेश ने अपनी चिरपरिचित रचना 'गायेंगे हम वन्देमातरम्' सुनाई जिसकी दर्शकों ने सराहना की। पश्चात् अपने व्यंग्य व चातुर्य से बीच-बीच में पाण्डाल में बैठी जनता का भरपूर मनोरंजन करते हुए श्रीसत्यनारायण सत्यन ने राम मन्दिर पर कविता सुनाई 'ढांचे के तीन गुम्बज गिरे केन्द्र सरकारें चार गिरा दी' तथा गुम्बज जड़ से आज उखाड़े, अब रामलला विराजित वहाँ बजने लगे नगाड़े।' अन्त में प्रसिद्ध हास्यकवि श्रीनिर्भय हाथरसी मञ्च पर आये। गेरुवा वस्त्र धारण किये हुए इस सन्त के मञ्च पर आते ही हास्य व्यंग्य आरम्भ हुआ। कवि ने अपनी राम मन्दिर की कविता सुनाई 'तम्बू भी बनेगा तो धूमधाम से, बम्बू भी बनेगा तो धूमधाम से, मन्दिर भी बनेगा धूमधाम से, जय जय बजरंगी, हर हर महादेव' जिसे श्रोताओं ने स्वर देकर चार चांद लगा दिये।

बुधवार की अर्द्धरात्रि से प्रारम्भ हुआ यह कवि सम्मेलन प्रात:काल ५ बजे तक चला। धर्म सम्मेलन के अन्तर्गत हुए इस आयोजन में कवियों ने मर्यादा का पूर्णरूपेण पालन किया।

—सुशील

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

के

आचार्यपीठाभिषेक के

स्वर्णजयन्ती महोत्सव

के शुभ अवसर पर

समस्त भक्तजनों को

–: हमारी शुभकामनाएँ :–

शुभेच्छु :

आचार्यश्री का एक कृपापात्र चरणकिंकर

※ श्रीसर्वेश्वरो जयति ※

अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

समापन-समारोह

[मिति ज्येष्ठ शु० ७ शुक्रवार वि० सं० २०५० दिनांक २८-५-९३]

अध्यक्ष :

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य

स्वामी श्रीवासुदेवानन्दजी महाराज

ज्योतिष्पीठ (बद्रिकाश्रम)

मुख्य अतिथि :

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य

श्रीरामेश्वराचार्यजी महाराज

अहमदाबाद

समापन-समारोह

[ज्येष्ठ शु० ७ वि० सं० २०५० शुक्रवार दिनांक २८-५-९३ ई०]

प्रतिदिन की भाँति मन्दिर में प्रातःकालीन मङ्गला आरती, श्रीसर्वेश्वर प्रभु का अभिषेक, दर्शन, शृङ्गार आरती आदि कार्यक्रम विधिवत् सम्पन्न हुए। यज्ञ मण्डप में आज प्रातःकाल दैनिक देव पूजन, जप, पाठ, हवन आदि कार्यक्रम होकर मध्याह्न में यज्ञ का समापन हुआ।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज के आचायपीठाभिषेक के अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव पर आयोजित स्वर्णजयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का यह समापन समारोह विशेष भव्यता लिए हुए था। विशाल मञ्च पर रजत सिंहासनों पर विराजमान विभिन्न धर्माचार्यों के दर्शन से श्रद्धालु जन अपने जीवन को धन्य मान रहे थे। इस अवसर पर स्वागत समिति के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने धर्माचार्यों एवं सन्त समुदाय का पुष्पहारों व जय ध्वनि से अभिनन्दन किया। जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीवासुदेवानन्दजी महाराज ज्योतिष्पीठ बद्रिकाश्रम की अध्यक्षता एवं जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीरामेश्वराचार्यजी महाराज अहमदाबाद के मुख्य आतिथ्य में हुए इस समापन समारोह में व्रजविदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहन्त श्रीरासविहारीदासजी काठिया वृन्दावन, श्रीप्रेमाचार्यजी महाराज दिल्ली, श्रीरामकथा के सरस प्रवक्ता श्रीसर्वेश बापू, म० श्रीनृत्यगोपालदासजी महाराज अयोध्या, जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्रीवासुदेवाचार्यजी महाराज अयोध्या, श्रीम० श्रीमुरलीमनोहरशरणजी महाराज उदयपुर, म० श्रीरामसुखदासजी जोधपुर एवं जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज ने अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन की सफलता एवं उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए गो-हत्या पर प्रतिबन्ध, राष्ट्रीय शिक्षा का स्वरूप, हिन्दू संस्कृति में नारी का सम्मान आदि विषयों पर हुई चर्चाओं का दिग्दर्शन कराया। जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीवासुदेवानन्दजी महाराज ने अपने अध्यक्षीय प्रवचन में सम्मेलन की सफलता का दिग्दर्शन कराते हुए कहा कि सम्मेलन में विचारित विषयों ने जन मानस को उद्वेलित किया है। धर्म के सम्बन्ध में आपने कहा कि धर्म राष्ट्रीय एकता को बल प्रदान करने में सहायक है। मुख्य अतिथि जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीरामेश्वराचार्यजी महाराज ने अपने समापन प्रवचन में कहा कि सन्तों का कर्तव्य लोगों को धर्म का सच्चा मार्ग बताना है एवं प्राणीमात्र का उपकार करना सनातन धर्म का सच्चा पालन है। जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज के आशीर्वचन के पश्चात् स्वागत समिति के अध्यक्ष श्रीभीमकरणजी छापरवाल, स्वागताध्यक्ष श्रीजुगलकिशोरजी तोषनीवाल एवं महामन्त्री श्रीराधेश्यामजी ईनाणी ने आयोजन को सफल बनाने में सभी धर्माचार्यों, सन्त-महन्तों, विद्वानों एवं भक्तजनों का आभार प्रकट किया।

रासमण्डली के वयोवृद्ध स्वामी श्री श्रीगोपालजी (वृन्दावन) को श्रीनिम्बार्कसुदर्शन महाचक्र प्रतीक एवं उपहार प्रदान करते हुए आचार्यश्री, साथ खड़े अध्यक्ष, महामंत्री, स्वागताध्यक्ष, महन्तजी (जूसरी) महन्तजी (पलसाना)।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त रासमण्डली के स्वामी श्री श्रीरामजी शर्मा (वृन्दावन) को श्रीनिम्बार्कसुदर्शन महाचक्र प्रतीक एवं उपहार प्रदान करते हुए आचार्यश्री। साथ खड़े हैं पार्षद

आदर्श रासमण्डली के संचालक स्वामी श्रीकन्हैयालालजी (वृन्दावन) को श्रीनिम्बार्कसुदर्शन महाचक्र प्रतीक एवं उपहार प्रदान करते हुए आचार्यश्री। साथ खड़े हैं - म. श्री बनवारीशरणजी (जूसरी) समिति के अध्यक्ष, स्वागताध्यक्ष, महामंत्री एवं म. श्रीमनोहरदासजी (पलसाना)।

मन्दिर में पुष्पकुञ्ज (फूल बंगले) में विराजमान भगवान् श्रीराधामाधव, श्रीसर्वेश्वर प्रभु।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु [illegible] श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज [illegible] चन प्रदान करते हुए।

कवि सम्मेलन में कविता पाठ करते हुये सुप्रसिद्ध हास्यकवि श्रीनिर्भय हाथरसी एवं इन्दौर निवासी सत्येन्द्रजी आदि कविवृन्द।

महिला सम्मेलन को सम्बोधित करती हुई डॉ. बिमला भास्कर।

महिला सम्मेलन में अध्यक्षीय भाषण करती हुई कवयित्री श्रीमती प्रभा ठाकुर।

समापन सत्र

चतुःसम्प्रदाय श्रीमहन्त श्रीरासविहारीदासजी काठियाबाबा

हमारे बंग प्रदेश में एक महापुरुष थे नाम था रामकृष्णदेव। रामकृष्णदेवजी अपने पंचवटी में करतल ध्वनि के साथ भगवान् का नाम-कीर्तन कर रहे हैं—हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, तो रामकृष्णदेवजी के जो गुरुजी थे तोतापुरीजी महाराज, तोतापुरीजी महाराज उत्तरप्रदेश के सन्त थे और रामकृष्णजी बंगाल के सन्त थे तो रामकृष्णदेवजी गंगाजी के पवित्र तट पर कलकत्ता में एक रमणीय स्थल है पंचवटी, तो पंचवटी में रामकृष्णदेवजी करतल ध्वनि के साथ भगवान् का नाम ले रहे हैं तो तोतापुरी-जो आये संयोगवश आकर तोतापुरीजी ने कहा कि रामकृष्णजी आप क्या कर रहे हैं, क्या रोटी बना रहे हैं। रामकृष्णदेवजी ने कहा—नहीं महाराज हम रोटी नहीं बना रहे हैं हम इस शरीर रूपी वृक्ष में जो ६ पक्षी हैं उन्हीं पक्षियों को हटा रहे हैं। देखिये ये जो हम लोगों के ये शरीर जो हैं वृक्ष हैं, इस शरीर वृक्ष में भक्ति, विश्वास, निर्भरता, ज्ञान, कर्म सब अच्छे-अच्छे फल फले हुये हैं जैसे वृक्षों पर जब पक्षी बैठते हैं तो सुन्दर-सुन्दर फलों को चोंचों के माध्यम से खा जाते हैं और वह श्रीहीन हो जाता है उसी प्रकार हमारे शरीर में जो गुरुजी का दिया हुआ और उनके उपदेश द्वारा प्राप्त हुआ जो भक्ति, ज्ञानरूप जो फल है उस फल को जो ये पक्षी खा रहे हैं वे पक्षी क्या है, तो कहते हैं—शरीर में ६ पक्षी हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य ये छः पक्षी हैं। ये पक्षी बड़े ही भयंकर पक्षी हैं, ये क्या करते हैं, शरीर के जो फल हैं, जो भगवच्चरणारविन्द में भक्तित्व प्राप्त हुआ है उन फलों को यह खा जाते हैं इसलिये हम करतल ध्वनि के साथ भगवान् के नामोच्चारण के साथ उन पक्षियों को हटा रहे हैं। जैसे कि वृक्षों पर जब पक्षी बैठते हैं तो हम उनको हटाते हैं कि नहीं करतल ध्वनि के साथ उनको भगाते हैं। उसी प्रकार हमारे शरीर में जो ये पक्षी है इनको भगाने के लिए करतल ध्वनि के साथ भगवान् का नाम-स्मरण करने का विधान शास्त्र में है। आज इस स्वर्णजयन्ती के उपलक्ष्य में जो ये भव्य आयोजन हुआ ऐसा दिव्य आयोजन तो मैंने कभी देखा नहीं, ये किसका फल है ये आचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज की तपस्या का प्रतिफलन है। ऐसे दिव्य महापुरुषों का दर्शन करना ये जन्म-जन्मान्तर का परम सौभाग्य है कि आचार्यश्री ने कुछ समय पहले अपने मुखार-विन्द से कहा कि आज से ५० साल पहले हमारे महाराजश्री की उपस्थिति में उनका आचार्य-पीठाभिषेक हुआ था तो इसलिए आज यह विराट् सनातन धर्म के रूप में यह पाटोत्सव जयन्ती महोत्सव मनाया जा रहा है। यह परम सौभाग्य का विषय है और महाराजश्री का ऐसा संस्कार है एवं उनका तपः प्रभाव है और उनकी ऐसी दिव्य मनोभावना है जिसका यह फल है, यह मेरा परम सौभाग्य है कि जिनकी मनोभावना से, प्रेरणा से, आदेश से जो इतने सन्त-महान्तगण यहाँ पधारे हुये हैं इनका सत्संग प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। इतने आचार्यों का समागम एक साथ में करोड़ों रुपया खर्च करने पर भी ऐसा सुन्दर सुमहान् संगम आचार्यों का सम्भव नहीं होता है, इसीलिये मनोभावना शुद्ध होनी चाहिये और आचार्य-सन्तों की कृपा होनी चाहिये तभी ऐसा शुभ अवसर प्राप्त हो सकता है। कुछ दिनों से पर्यावरण प्रदूषण

निराकरण तथा राष्ट्रीय शिक्षा का स्वरूप, भारतीय शिक्षा में नारी का स्वरूप तथा संस्कृत शिक्षा का स्वरूप विषय में बहुत अच्छी चर्चायें हुई। तो मैं इसमें कुछ निष्कर्ष में संक्षेप स्वरूप कुछ कहना चाहता हूँ। हिन्दू संस्कृति के संरक्षण में हमें दो वस्तु की आवश्यकता है संगठन और शक्ति। न तो हम में संगठन है और न हम में शक्ति है, दोनों का एक साथ में रहना अनिवार्य है। रामजन्मभूमि का उद्धार हुआ इसलिए संगठन होना हम लोगों के लिए परम अपेक्षित है। यह संगठन और शक्ति एक वस्तु नहीं है शक्ति माने आत्मबल, आत्मबल के लिये शक्ति और संगठन के लिए सत्संग चाहिये। सत्संग के नाम पर संगठन हो सकता है। संगठन और शक्ति नहीं रहेगी तो फिर हिन्दू संस्कृति रसातल को चली जायेगी इसलिए हिन्दू संस्कृति के रक्षणार्थ संगठन और शक्ति की परम अपेक्षा है, तो हम आचार्य श्रीचरणों से यही प्रार्थना करेंगे कि आपके शुभाशीर्वाद से इन श्रद्धालुजनों को संगठन और शक्ति की प्रेरणा मिले। इस-लिए कर्म ही प्रधान है कर्म शुद्ध हो और सन्त समागम से जो विद्यायें प्राप्त होती है उससे सब समस्या का समाधान हो सकता है, जीव का कल्याण हो सकता है और शिक्षा के स्वरूप से हम लोग अवगत हो सकते हैं इसमें कोई सन्देह नहीं है। सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ।।

श्रीप्रेमाचार्यजी महाराज

आज हिन्दू समाज में शक्ति जागृत है इसका प्रमाण ५-६ महिना पहले ६ दिसम्बर को अयोध्या में दिखा दिया गया, यदि शक्ति जागृत न होती तो वह झगड़े की जड़ कभी खतम नहीं हो सकती थी। उस ढाँचे का गिरना हिन्दुओं की जागृत शक्ति का प्रमाण है। आप कहेंगे कि ढांचा गिरा दिया गया विवादित ढांचा था, अखबार वाले सुप्रीमकोर्ट तक यही बोलते विवादित ढांचा, पर हमारे कुछ मान्य नेतागण ने जो सुप्रीमकोर्ट ने नहीं कहा वह स्वयं अपने व्याख्यानों में और ६ दिसम्बर को सायंकाल टेलीविजन पर अपने भाषण में उसको मस्जिद कहकर के सम्बोधन किया। जिसको आज तक सुप्रीमकोर्ट ने भी मस्जिद नहीं कहा और स्वयं मुसलमान भी नहीं मानते। तो पुराना श्रीराम मन्दिर हमारी चीज हमारे ही मन्दिर में से बनाये हुये तीन गुम्बद जहाँ कभी नमाज नहीं पढ़ी जा सकती थी और कोई दीनदार ईमानदार मुसलमान वहाँ नमाज पढ़ना पसन्द भी नहीं कर सकता था क्योंकि एक तो वहाँ मीनार नहीं थी, दूसरा हाथ धोने को वजूह करने को जल का इन्तजाम नहीं था दो कारणों से और तीसरा कारण महत्वपूर्ण हमारे पुराने मन्दिर के जो चौदह स्तम्भ उस ढांचे में मौजूद थे उन स्तम्भों पर दशावतार के चित्र थे, उन दशावतारों में एक वाराह भगवान् का भी चित्र था माने शूकर का चित्र, सूअर का भला मस्जिद में क्या काम, यदि वह मस्जिद थी तथाकथित तो वहाँ सूअर का चित्र नहीं हो सकता था। एतावता ढांचे की तो यह ही किस्मत थी, इसका यही होना था और यही इसका हो सकता था इसके अलावा और कोई चारा नहीं था। पर मैं आज से साढ़े नौ लाख वर्ष पुरानी बात बता रहा हूँ उस समय भी राष्ट्रीय गौरव, राष्ट्रीय संस्कृति इन दोनों के मिलने में एक ढांचा रुकावट बना हुआ था पुराना ढांचा, भगवान् श्रीराम और भगवती जानकी के मिलने में पुराना ढांचा रुकावट था भगवान् शंकर का धनुष,

उस ढांचे का टूटना जरूरी था बिना उसके टूटे संस्कृति और राष्ट्रपुरुष का मेल नहीं हो सकता था इसलिए उस जरूरी काम को अपने सारे जीवन भर राष्ट्र को जोड़ने वाले भगवान् श्रीराम ने जीवन भर जोड़ने का काम किया। जो लोग बोलते हैं कि साधु को राजनीति से क्या लेना। स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज से कुछ लोग यह पूछते थे पुरानी बात है महाराज, साधु हो कुटिया में बैठकर राम-राम करो आपको क्या लेना राजनीति से, तो स्वामीजी महाराज उत्तर दिया करते थे कि भाई राजनीति में यदि साधु नहीं आयेंगे तो राजनीति में गुण्डे आयेंगे, हिस्ट्रीशीटर आयेंगे, बदमाश आयेंगे और वही हो रहा है। घटना ज्यादा पुरानी नहीं है सारी रामायण में सारी रामकथा में माताओं एक ही बात है सज्जनों, हिन्दुस्तान की एक बेटी को गुण्डों का एक सरदार उठाकर ले गया, रावण महाआतंकवादी था जिसके सामने देवता भी मुँह उठाने की हिम्मत नहीं रखते थे। भगवान् ने बन्दरों को, भालुओं को बटोरा। हनुमानजी ने जानकीजी से कहा भी कि माता आपको वापस ले जाना हो तो मैं अभी ले जा सकता हूँ पर आपको वापस ले जाना बड़ा काम नहीं है, आपको यहाँ उठाकर लाने की हिम्मत करने वाले उस दुष्ट को जब तक दण्ड नहीं दिया जायेगा तब तक आपको ले जाना कोई मूल्य नहीं रखेगा। इसलिए अपने को सुप्रीम मानने वाले रावण को दण्ड दिया गया और जानकीजी को वापस लाया गया यह रामकथा का सार है। पर आज तो हमारी-तुम्हारी नहीं भारत के गृहमन्त्री की बेटी को गुण्डे उठाकर ले जाते हैं, घटना ज्यादा पुरानी नहीं है और शर्त यह है कि हमारे साथी गुण्डों को जेल से छोड़ा जाय तब हम तुम्हारी बेटी को वापस करेंगे। सरकार तथाकथित के बहुत लम्बे हाथ होते हैं वह लम्बे हाथ छोटे पड़ गये, गुण्डों के बदले गुण्डे छोड़े गये तब जाकर बेटी वापस आई। यदि रामकथा की प्रचलित रामायण को राष्ट्रीय ग्रन्थ माना गया होता तो बेटी कभी वापस लेने के लिए गुण्डे नहीं छोड़े जा सकते थे उसके लिए और रास्ता अपनाया जा सकता था। विश्वामित्र ऋषि आये हैं रामजी को मांगने राजा दशरथ चक्रवर्ती से, उनसे कहा कि अपने बेटा दे दो दुष्टों का बड़ा खतरा है तो राजा ने छाती पर पत्थर रखकर के अपने गुरु की आज्ञा का पालन किया और भगवान् श्रीराम को विश्वामित्रजी को सौंप दिया, इसलिए तब भी राजा पर महात्माओं का अंकुश था आज भी महात्मा अपने-अपने आश्रमों से, अपने-अपने मठों से निकलकर राजा पर अंकुश लगाने के लिए मैदान में आ गये हैं इसलिए अब राममन्दिर बनकर रहेगा, संसार की कोई शक्ति उसे रोक नहीं सकती है और एक निवेदन हमारा धर्माचार्यों से भी है जनता के धैर्य की परीक्षा ज्यादा न लेवें। जब भी धर्माचार्यगण अनशन करेंगे मन्दिर निर्माण करने के लिए तो मेरे साथ भारतवर्ष की जनता इस काम को पूरा करने के लिए अयोध्या पहुँचेगी इसका आप आश्वासन रखिये। हिन्दू धर्म में माताओं को पुरुषों के बराबर नहीं माना जाता, पढ़ी-लिखी बेटियाँ औरों के बहकावे में आकर झंडा उठाती है हमें पुरुषों के बराबर अधिकार होना चाहिये। देवियों, हिन्दू संस्कृति में माताओं को पुरुषों के बराबर नहीं पुरुषों से ऊँचा स्थान दिया गया है, आप हमसे ऊपर हो, जो तुम्हें हमारे बराबर करना चाहते हैं वह तुम्हारा उत्थान नहीं तुम्हारा पतन चाहते हैं. नीचे आवो तुम उतरकर के परन्तु हमने तुम्हें ऊपर बिठा रखा है. तुम ऊपर हो इसलिए हम माँ को पहले याद करते हैं पिता को बाद में याद करते हैं, व्यवहार में भी पूछते हैं तुम्हारे माता-पिता कहाँ रहते हैं। मण्डी में देखो बड़ा भारी तराजू लगा हुआ है जहाँ अनाज तुलता है, उसके एक पलड़े

पर एक क्विन्टल-दो क्विन्टल के बांट लदे हैं और दूसरी तरफ अनाज के बोरा लादे जाते हैं दिनभर मण्डी में अनाज तुलता है शाम होती है तब दुकान का मालिक सब सामान भीतर रखता है। परन्तु वह एक क्विन्टल दो क्विन्टल के बांट बाहर ही पड़े रहने देता है, यदि किसी के पास ५ ग्राम हीरा हो तो कहाँ रखेगा, सोने की डिबिया में, सोने की डिबिया को चन्दन के बक्से में, चन्दन के बक्से को अखरोट के डिब्बे में और अखरोट के डिब्बे को गोदरेज की अलमारी के लौकर में और जब घर से बाहर जायेगा तो पहले डिबिया को ताला फिर डिब्बे को ताला, फिर बड़े डिब्बे को ताला, फिर लौकर को, अलमारी को ताला और फिर घर को ताला माने सात ताले के भीतर ५ ग्राम हीरा रखा जाता है। हमारे हिन्दू संस्कृति में मातायें तो ५ ग्राम हीरे की तरह है बहुत ही सम्भाल कर रखी जाती है, बड़ी सुरक्षा के साथ बड़ी हिफाजत के साथ। एक महात्मा की बात सुनकर उपसंहार करते हैं—एक महात्मा हमसे बोलते थे पण्डितजी यदि कभी ऐसा समय आ जाय और सारे संसार की देवियाँ समाप्त हो जाँय, कभी कल्पना करो केवल पुरुष रह जाँय कभी ऐसा समय आ गया तो ज्यादा से ज्यादा १०० साल के भीतर संसार समाप्त हो जायेगा और इसका उल्टा हो गया माने सब पुरुष समाप्त हो जाँय केवल देवियाँ रह जाँय तब दुनियाँ का कुछ नहीं बिगड़ेगा संसार ज्यों का त्यों चलेगा हमने कहा–महाराज यह कैसे, तो बोले कि मान लो सब देवियाँ नहीं रही केवल पुरुष रह गये तो जो बच्चा आज पैदा हुआ है वो ज्यादा से ज्यादा १०० साल जीयेगा, तो १०० साल के भीतर दुनियाँ समाप्त हो जायेगी और यदि उल्टा हुआ पुरुष सब समाप्त केवल देवियाँ रह गई तो यदि कुछ हजार मातायें भी उस समय गर्भवती रही होगी तो दश महिने बाद फिर नये बालक आयेंगे, फिर दुनियाँ शुरु हो जायेगी संसार का कुछ नहीं बिगड़ेगा। इसलिए माताओं! दुनियाँ तुम्हारे ऊपर टिकी है, तुम्हारा नाम घर है, हिन्दू संस्कृति में तुम्हारा बहुत सम्मान, हिन्दू संस्कृति बहुत आदर करती है। हमने स्त्री को माँ समझा, बहिन समझा और महापुरुषों को, अवतारों को जन्म देने वाली आदरणीय जननी माना है। पश्चिम ने नारी को केवल भोग्य सामग्री समझा। इसलिए पश्चिम यहाँ नहीं है यहाँ भारतवर्ष है उसी भारत के स्वरूप का दर्शन कराने के लिए यह सारे सन्त-महात्मा, विद्वान्, आचार्य यहाँ संघटित हैं।

श्रीसर्वेश बापू

जिस स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के माध्यम से यहाँ हम सब एकत्रित हैं जिस परम्परा के अन्तर्गत जिस धाम में आप सदैव आते रहे हैं और अपने श्रद्धाभाव को आप समर्पित करते रहे हैं इस पावन निम्बार्क धाम के विषय में कुछ शब्दों में कहा जाये यह बड़ा कठिन है, वस्तुतः अल्प समय में क्या वर्णन किया जाय यद्यपि हम शायद अधिकारी भी नहीं हैं अधिकार तो था हमारा कि हम धर्माचार्यों की पावन वाणी को श्रवण करते रहें, श्रवण करते रहें, पीते रहें और अपने आपको धन्य बना दें किन्तु फिर भी जो आदेश हुआ है उसके अनुसार मैं एक ही बात रखूँगा कि हमारा जो यह भारतदेश है धर्मपरायण देश है, हमारे देश की कोई भी क्रिया का जो शुभ प्रारम्भ है वह हमारे धर्माचार्यों का जो मार्ग है, हमारे धर्माचार्यों के जो आदेश हैं, उनके जो संकेत हैं उसके माध्यम से यहाँ पर प्रत्येक कार्य का निर्वाह होता आया है, इसलिए

शास्त्रों में शास्त्रकारों ने कहा है कि "धर्मो रक्षति रक्षितः" धर्म की रक्षा करने से धर्म हमारी रक्षा करता है श्रौर धर्म क्या है, इसका वास्तविक स्वरूप क्या है, यह केवल मात्र हमारे यहाँ जो श्राचार्य परम्परायें हैं, हमारी जो धर्म परम्परायें हैं, हमारे महापुरुषों की जो परम्परायें हैं हमारे जो वेदशास्त्र हैं उससे हमको प्राप्त होती है, तो जब तक जीव धर्म का श्रनुसरण नहीं करता, जब तक जीव धर्म को श्रपने जीवन में ठीक से लाने का प्रयास नहीं करता जब तक श्रपने देश श्रौर संस्कृति की मर्यादा का पालन नहीं करता, जब तक श्रपने शास्त्रों का सम्मान किसी व्यक्ति के हृदय में नहीं होता तब तक वह धर्मपरायण कहलाने के योग्य नहीं होता । श्राप जानते हैं कि हमारा देश भक्ति-प्रधान देश है, ज्ञान-प्रधान देश है श्रौर हमारी जो यह सनातन संस्कृति है, जो श्रादि सनातन धर्म है जिसका श्रादि-श्रन्त का वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता वह श्रनादिकाल से चलता श्रा रहा है जो सदैव से है सनातन है, इस धर्म में हम लोग श्रास्था रखते हैं श्रौर श्रद्धा रखते हैं एवं इसी के श्रनुकूल जीवन जीने का हम सबको श्रधिकार है । श्राज जो यह बड़े-बड़े श्रायोजन होते हैं चाहे माध्यम कुछ भी हो, हमारे जो महापुरुष हैं हमारे जो धर्माचार्य हैं इनका एक सहज स्वभाव रहा है कि समाज को कुछ देने के लिए कोई न कोई स्वरूप प्रस्तुत कर देते हैं चाहे स्वरूप कोई भी हो, लेकिन उसके पीछे लक्ष्य जो है केवल एक ही है कि यह जनता, हमारा देश, हमारे देश के लोग धर्मपरायण बनें, धर्म का पालन करने वाले बनें, हमारे देश के लोग संस्कृति श्रौर मर्यादा का पालन करने वाले बनें, हमारे देश के लोग भक्त बनें, हमारे देश के लोग राष्ट्र भक्त बनें, हमारे देश के लोग संस्कृति के श्रनुकूल जीवन जीकर श्रौर इस देश का पुनः-पुनः गौरव बढ़ाते रहें, तो मूल लक्ष्य हमारे धर्माचार्यों का यही है । हमारे देश में जो भी श्रवतार हुये हैं यह भारतभूमि ऐसी है कि जहाँ पर परमात्मा को भी श्रवतार लेने की इच्छायें हुई है । विविध रूप में श्रवतार लेकर के वे श्राये हैं श्रौर इस पावन भूमि के ऊपर परमात्मा ने क्रीड़ायें की है । भगवान् के जो श्रवतार लेने के कारण हैं वैसे तो विविध कारण हैं पुराण काव्य श्रौर शास्त्रों में श्रध्ययन करें श्रापको मिलेगा लेकिन भगवान् जब भी धरती के ऊपर श्राते हैं तो केवल धर्म की रक्षा के लिए ही परमात्मा श्रवतार लेकर श्राते हैं "परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे" भगवान् जब-जब भी श्राते हैं श्रपने भक्तों श्रौर सन्तों की रक्षा के लिए श्राते हैं । भगवान् श्रीराम का प्राकट्य इस देश में हुश्रा तो परमात्मा ने जगत् को बताया कि मातृ-पितृ भक्ति क्या है, एक पत्नीव्रत धर्म क्या है, भ्रातृ-प्रेम क्या है, मानव का मानव के प्रति कैसा प्रेम हो, श्रपनी संस्कृति श्रौर धर्म की मर्यादा क्या है यह सब बातें स्वयं परमात्मा ने इस देश में श्राकर के चरितार्थ कर दी । जो सात दिन तक श्राप लोगों ने यहाँ साधना की है, जो तपस्या की है श्रौर जो धर्माचार्यों के उपदेश श्रापने श्रवण किया है उसको जब तक हम श्रौर श्राप जीवन में उतारने का प्रयास नहीं करेंगे तब तक यह साधना हमारी सफल नहीं मानी जायेगी । श्राप जानते हैं श्राज देश के श्रन्दर हमारी संस्कृति को तोड़ने के लिए, हमारे धर्म की मर्यादाश्रों को तोड़ने के लिए, हमारे देव स्थानों की पवित्रता को श्रौर मर्यादा को मिटाने के लिए श्रनेक षडयन्त्र चल रहे हैं । श्राज हमारे धर्माचार्य, हमारे सन्तपुरुष, हमारे महापुरुष देश के कोने-कोने में भ्रमण कर रहे हैं इस तीव्र गर्मी श्रौर सर्दी को सहन करके जो भ्रमण कर रहे हैं । इसके पीछे श्रवश्य

कोई लक्ष्य है और वह लक्ष्य केवल इतना है कि अपने सनातन धर्म की मर्यादा की रक्षा हो, अपनी संस्कृति की रक्षा हो, अपने देश की रक्षा, अपने देश की अखण्डता और एक सूत्र में लोग बँधे रहें इसलिए यह आज हमारे धर्माचार्य, हमारे सन्तवृन्द इतना कष्ट सहन करते हुए हम लोगों के बीच में आते हैं। तो हमारा और आपका परम कर्तव्य बनता है कि हम इन सबके आदेशों का पालन करें और जिस सूत्र में बाँधने के लिए आज तन-मन-धन से सर्वस्व देकर भी हमारे धर्माचार्य आगे बढ़ रहे हैं उस मर्यादा को रखने के लिए हम धर्माचार्यों के वचनों का पालन करें और हमारे ऊपर यदि हमारे देश की संस्कृति को तोड़ने के लिए या हमारे राष्ट्र के गौरव को मिटाने के लिए या हमारे धर्म की मर्यादाओं को तोड़ने के लिए यदि कोई हाथ आगे बढ़ाये तो हमारे अन्दर इतनी एकता और इतनी ताकत हो कि हम उस हाथ को काटकर अलग कर दें ताकि पता चले कि भारतवर्ष का गौरव क्या है, भारतवर्ष का बलिदान क्या है, भारतवर्ष की संस्कृति क्या है, भारतवर्ष की मर्यादा क्या है, भारतवर्ष की धर्मनिष्ठा क्या है इसका परिचय किसको देना है आपको हम सबको एक सूत्र में बँधकर देना है। आज भारत का जिसको स्वर्ण माना जाता है उस कश्मीर की दशा हमारे देश के राजनीतिज्ञों ने, हमारे देश के सत्ताधारियों ने ऐसी बना दी है कि आज लाखों-लाखों हिन्दू उस काश्मीर से अपने घरों का परित्याग करके, अपनी सम्पत्तियों का परित्याग करके और दर-दर की ठोकरे खा रहे हैं, सड़कों के ऊपर खड़े हैं आज ऐसी दशा बना दी है यहाँ की राजनीति ने और यहाँ के नेताओं ने। क्या यही रामराज्य है, क्या यही सपने हम आजादी से पहले लेने के लिए यहाँ जन्म लेकर आये हैं आजादी से पहले मेरे भाई-बहिन सोचते थे कि आजादी मिलेगी तो शायद रामराज्य आ जायेगा, शायद सत्य का राज्य आ जायेगा, धर्म का राज्य आ जायेगा, आजादी आ गई रामराज्य नहीं आया, आजादी आ गई सत्य का राज्य नहीं आया, आजादी आ गई और यहाँ पर कहीं शान्ति का अनुभव नहीं हुआ। हम सब मर्यादाओं का त्याग कर रहे हैं एकता को भूलते जा रहे हैं इसी कारण आज हमारे ऊपर इतने बड़े-बड़े संकट हैं। एक ही सन्देश, एक ही प्रार्थना, एक ही विनय आप सबके चरणों में मैं करूँगा कि जिस प्रकार से आज यह वातावरण यहाँ दिखाई दे रहा है, आज यह जो भीड़ उमड़ रही है मैं तप्ती धूप में देख रहा हूँ मध्याह्न में ही आज दिन में अजमेर से आ रहा था और मैं देख रहा था कि देहात की चारों ओर की माताओं को, हमारी बहनों को, भाईयों को, बुजुर्गों को उनकी साधना को तो मुझे बड़ा हर्ष और आनन्द हुआ। वास्तव में आप लोग धर्मपरायण हैं, आचार्यों की परम्परा के अनुकूल आप चलना चाहते हैं आपको मार्गदर्शन की आवश्यकता है और आप अवश्य पालन करने में समर्थ हैं आप करेंगे, इसी प्रकार भाव बनाये रखना इन आचार्यों के चरणों में, श्रद्धा बनाये रखना, अपनी निष्ठा बनाये रखना और जहाँ तक रामराज्य का प्रश्न है रामराज्य आपको केवल मात्र हमारे यह धर्माचार्य ही हमको रामराज्य दे सकते हैं, यह राजनेता हमको रामराज्य नहीं दे सकते। यदि एकता के सूत्र में आप बँधे रहेंगे तो अवश्य ही एक समय ऐसा आयेगा कि हमारा भारत जो गुरुओं का देश माना गया है उसका यह गौरव, उसकी यह धर्मपताका आकाश में फहरायेगी और हम आप सब धनी होंगे।

श्रीमहन्त श्रीनृत्यगोपालदासजी महाराज

बड़े ही सौभाग्य का अवसर है सभी लोग यहाँ महापुरुषों के सान्निध्य में बैठकर विभिन्न विषयों की चर्चायें श्रवण कर रहे हैं। सन्तों का दर्शन बड़े सौभाग्य से मिलता है। वस्तुत: स्थिति यह है साधु-सन्त जब कुछ बोलते नहीं है एकान्त साधना करते हैं तब लोग यह कहते हैं कि यह केवल अपने कल्याण के लिए लगे हुये हैं, अपने मोक्ष के ही लिए यह प्रयत्नशील हैं इन्हें समाज की चिन्ता नहीं है, इन्हें राष्ट्र की चिन्ता नहीं है और यदि वे महात्मा-सन्तजन कुछ कहते हैं कल्याण की बात, कल्याण की चर्चायें करते हैं तो लोग कहते हैं कि यह राजनैतिक हो गये, अब हम लोगों की समझ में नहीं आता कि क्या करें, चुप रहें या कहें। आप लोग सभी जानते हैं आपके घर का आपकी गली का कुत्ता जिसको आप झूठी रोटी खिलाते हैं वह रात्रि में आपकी पहरेदारी करता है, आपके जान-माल की रक्षा करता है और यह धर्माचार्य जिनका आप सम्मान करते हैं, जैसा नहीं खाते उससे अच्छे से अच्छा खिलाते हैं आदर करते हैं, आरती-पूजा करते हैं, अभिनन्दन-वन्दन करते हैं तो क्या इन धर्माचार्यों का कर्तव्य नहीं हो जाता कि जिस समाज ने हमें समादृत किया है, जो समाज हमारा आदर कर रहा है उसका हित सम्पादन किया जाय। क्या धर्माचार्य होने के नाते हम लोगों का उत्तरदायित्व नहीं हो जाता कि हम लोग धर्म की रक्षा के लिए सही और सच्ची बात कहें, इसलिए सही और सच्ची बात कहने में चाहे भले ही किसी को अच्छा लगे या बुरा लगे हम लोगों को इसकी कोई चिन्ता नहीं। और वस्तुत: साधु-सन्त किसी राजनीति से जुड़े नहीं है हाँ रामजी से जरूर जुड़े हुये हैं जो राम का है वह हमारे काम का है, जो राम का नहीं उससे हमारा कोई लेना देना नहीं। हमारा कितना भी हितैषी हो वह हमारे किसी काम का नहीं. हम लोग अयोध्यावासी हैं यद्यपि हमारे सन्तजन, प्रेमीजन वृन्दावनवासी भी कहते हैं पर हम लोग तो अयोध्यावासी है। अयोध्यावासी होने के नाते लोग पूछते हैं कि महाराज आप लोग यहाँ पधारे तो जरा अयोध्याजी की ताजा खबर, कोई नया समाचार मन्दिर कब बनेगा, जहाँ जाते हैं जहाँ पूछते हैं। अयोध्यावासी होने के नाते, राममन्दिर से जुड़ा होने के नाते लोग कहते हैं कि महाराज ढांचा ढ़ह गया और बड़े आश्चर्य की बात है ढांचा ढ़हा और लोग छाती पीटते थे जो विरोधी लोग थे कि हाय ढांचा ढ़ह गया देश का बड़ा अपमान हो गया, देश की मर्यादा खत्म हो गई और देश को नीचा शिर करना पड़ गया। हम लोग कहते हैं कि इसमें देश का अपमान नहीं देश का स्वाभिमान जागृत हुआ है, हिन्दु जाति का स्वाभिमान जागृत हुआ है। लोग कहते हैं कि ढांचा किसने तोड़ दिया, किसने ढांचा तोड़ा बड़ी सुगठित सुनियोजित योजना थी, योजनाबद्ध होकर ढांचा तोड़ा गया है। हम यह बता देना चाहते हैं कि रामजी की कृपा से ढांचा टूटा और राम के सेवकों के मनोबल से ढांचा टूटा यह सब भगवान् राम की इच्छा से हुआ है। नहीं तो एक महीना में हजारों लोग सब साधन सामग्री से भी तोड़ते तो एक महीना लग जाता, यह केवल ५ घण्टे में तोड़ना भगवान् राम की इच्छा है और किसी दूसरे की इच्छा नहीं है। दूसरी बात राम कार सेवकों का मनोबल एक शक्ति होती है उस भावना से यह ढांचा ढ़ह गया यह भगवान् की इच्छा से हुआ है। हम लोग कहते हैं हो गया ढांचा ढ़ह गया, जो होना था हो गया, अब महाराज मन्दिर कब बनेगा हम यह बता देना चाहते हैं, विनम्र निवेदन

करना चाहते हैं कि भगवान् श्रीराम चाहते हैं कि हमारा मन्दिर तो बाद में बनें, हमारा मन्दिर तो थोड़ा बाद में बन जांय कोई चिन्ता की बात नहीं है परन्तु हिन्दुत्व के मन्दिर का निर्माण होना चाहिये, यदि हिन्दुत्व के मन्दिर का निर्माण होता है तो राममन्दिर ही नहीं भगवान् श्री कृष्ण का जन्म स्थान होगा, काशी विश्वनाथ का मन्दिर बनेगा और रामराज्य, अखण्ड भारत की जो परिकल्पना है, हिन्दू राष्ट्र की जो परिकल्पना है वह साकार होगी। आप लोग कहेंगे कि हिन्दुत्व के मन्दिर के निर्माण का क्या तात्पर्य है, वह यह विनम्र निवेदन करेंगे सभी भक्त सज्जनों से, माताओं से, बहिनों से, हिन्दुत्व के मन्दिर के निर्माण का अर्थ है पहले हम हिन्दू हैं फिर किसी जाति के हैं, पहले हम हिन्दू हैं फिर किसी पार्टी के हैं, पहले हम हिन्दू हैं फिर किसी प्रान्त के हैं, किसी भाषा के हैं, पहले हम हिन्दू हैं यह स्वाभिमान जिस दिन जागृत हो जायेगा उसी दिन हिन्दुत्व का अभ्युदय हो जायेगा। आज हमें दुःख के साथ यह कहना पड़ता है और सोचना पड़ता है कि हम आज पार्टी को प्रधानता दे रहे हैं, आज हम जाति को प्रधानता दे रहे हैं, प्रान्त और भाषा को प्रधानता दे रहे हैं। आज होना यह चाहिये कि पहले हम हिन्दू हैं फिर किसी जाति, किसी पार्टी, किसी प्रान्त और भाषा के हैं, इसलिए आज हिन्दुओं में हिन्दुत्व की आवश्यकता है, हिन्दुत्व की जागृति की आवश्यकता है। भगवान् राम के मन्दिर का जो शुभारम्भ हुआ, मन्दिर के निर्माण का जो श्रीगणेश और उसकी जो चर्चायें चली यह आप लोग जान लें कि यह हिन्दु के मन्दिर की नींव पड़ रही है और राम मन्दिर का निर्माण हो जायेगा तो हिन्दुत्व की प्रतिष्ठा हो जायेगी, तो हिन्दुत्व के मन्दिर की नींव पड़ी है राममन्दिर के माध्यम से, जितने अंशों में जिस प्रकार से होना चाहिये वैसा नहीं हुआ है परन्तु हम लोग आशा करते हैं भगवान् राम की ऐसी कृपा रहेगी तो आज हिन्दू जाति जो सैकड़ों वर्ष, हजारों वर्ष तक जो सोई रही है वह निश्चित ही जगेगी और एक दिन आयेगा कि जो सारे विश्व में "एतद्देश प्रसूतस्य सकासादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।" प्रिय सज्जनों! अब लोग यह कहते हैं कि देखिये राममन्दिर का यह जो मामला है लोगों ने एक विवाद का मामला खड़ा कर रखा है, हिन्दू-मुसलमान का झगड़ा, राष्ट्र के सामने अनेक समस्यायें हैं राममन्दिर की समस्या खड़ी करके नई समस्या खड़ी कर दी। सज्जनों, काश्मीर की समस्या हो सकती है, पंजाब की समस्या हो सकती है परन्तु राममन्दिर की कोई समस्या नहीं है, क्योंकि भगवान् राम एक ऐतिहासिक परमब्रह्म परमात्मा राम हैं, वह दशरथनन्दन राम है कौशल्यानन्दन राम है इसलिए भगवान् राम की वह जन्मभूमि है, जिस प्रकार से मुसलमानों के लिए मक्का-मदीना का महत्व और स्थान है वैसे ही हिन्दूमात्र के लिए भगवान् राम की जन्मभूमि का स्थान है इसलिए उसकी मर्यादा भगवान् राम के स्वरूपानुरूप मन्दिर का निर्माण यह कोई समस्या नहीं है यह तो लोगों ने समस्या खड़ी कर दी है। लोग उलाहना दे रहे थे जब ढांचा ढ़ह गया था, कि देखिये राममन्दिर के कारण से हजारों लोगों की मृत्यु हुई, करोड़ों की सम्पत्ति की हानि हुई। हम यह बता देना चाहते हैं कि भगवान् का नाम सदा मंगलभवन अमंगलहारी है तथा भगवान् के नाम से, भगवान् के रूप से, लीलाधाम से कभी भी अमंगल हो नहीं सकता है। तो यह सब झगड़े क्यों हुये थे, यह नुकसान और हानि क्यों हुई, हम यह बता देना चाहते हैं जिनका जो स्वभाव है उस स्वभाव के कारण हुआ है राममन्दिर के कारण

नहीं हुआ है। हमारे जो मुस्लिम बन्धु हैं वह यह आक्षेप देते हैं कि राममन्दिर के कारण से उत्पात हो रहे हैं, नहीं यह मुसलमानों के स्वभाव के कारण है उनका झगड़ा करने का स्वभाव है। ईरान-ईराक लड़ता है, ईराक-कुवैत लड़ता है, अफगानिस्तान-पाकिस्तान लड़ रहा है जिसका स्वभाव है लड़ने का तो यह लड़ने के स्वभाव के कारण हुआ है न कि राममन्दिर के कारण हुआ है। दूसरी बात यह जो सारे विवाद और झगड़े-झंझट हुये हैं वस्तु स्थिति का सही परिज्ञान न कराने के कारण हुआ है। एक छोटी सी बात बतायें कि भरी सभा में एक अबला को निर्वस्त्र किया जा रहा है, भरी सभा में द्रोपदी को नग्न किया जा रहा है वहीं भीष्म पितामह बैठे हैं, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य बैठे हैं, पाँचों पाण्डव उसके पति बैठे हैं आप लोग सभी जानते हैं यदि भीष्म पितामह अकेले कह देते या द्रोणाचार्य कह देते कि नहीं एक अबला हमारी कुलवधू है उसका अपमान हम नहीं देख सकते हैं तो दुश्शासन एवं दुर्योधन की हिम्मत नहीं थी जो भरी सभा में एक अबला को अपमानित करता। सही सच्ची बात न कहने के कारण एक अबला को भरी सभा में अपमानित होना पड़ा और महाभारत जैसा युद्ध हुआ, वैसे ही आज सही सच्ची बात न कहने के कारण ही सारे झगड़े-झंझट हैं। आज यदि यह कहा गया होता चाहे वह मुसलमान है, चाहे हमारी केन्द्रीय सरकार है या विरीधी पार्टियाँ है कोई भी हो यह ही सीधी सच्ची बात कहते कि भगवान् राम की जन्मभूमि है ८ लाख वर्ष पुराना इतिहास है बाबर की बात तो जाने दो मोहम्मद साहब का भी संसार में आगमन नहीं हुआ था तब से भगवान् राम है राम की जन्मभूमि है, ऐतिहासिक स्थल है। वहाँ मुसलमानों का कोई तीर्थ स्थान औलिया, फकीर का कोई स्थान नहीं है वह भगवान् राम की जन्मभूमि है यदि यह सही सच्ची बात कही होती तो मुसलमान भी नाराज नहीं होते और इस प्रकार से लड़ाई-झगड़े, तोड़-फोड़ नहीं होती। परन्तु हमारे सभी नेताओं ने, विरोधी पार्टी और सभी लोगों ने मस्जिद तोड़ी जा रही है, ४०० साल पुरानी ऐतिहासिक मस्जिद तोड़ी जा रही है ऐसी गलत बात कहकर के ही सारे झगड़े-झंझट कराये। कारण यह है कि एक मुस्लिम सन्तुष्टिकरण की नीति अपना रखी है। करोड़ों की संख्या में घुसपैठिये बंगलादेश से आ गये हैं परन्तु वोट बैंक के नाते उनको सुरक्षित रखा गया है यह नहीं कि इनको देश से निकाल बाहर करो। कहने का मतलब यह है कि सही सच्ची बात न कहने के कारण ही आज सारे उपद्रव हो रहे हैं। भगवान् राम हमारे पूज्य हैं, भगवान् राम की जन्मभूमि "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" हमारा पूज्य स्थान है इसलिए हम भगवान् राम की मर्यादा और अपनी मर्यादा के अनुसार दिव्य भव्य मन्दिर का निर्माण करेंगे। इसमें आप बतायें कौनसी साम्प्रदायिकता है और कौनसी पार्टी की बात है। चतुर्दिक् हिन्दुत्व के ऊपर प्रहार हो रहा है इसलिए हम यह नम्र निवेदन और आग्रह करेंगे कि भगवान् राम के मन्दिर के निर्माण के साथ ही साथ हिन्दुत्व की रक्षा के लिए आप लोग तैयार हो जांय, हिन्दुत्व की रक्षा के लिए चाहे प्राण न्यौछावर करने पड़े, तन-मन-धन न्यौछावर करना पड़े, आप हमेशा तैयार रहें। आप यदि तैयार रहते हैं तो राममन्दिर का निर्माण निश्चित होगा संसार की कोई भी ताकत राम-मन्दिर के निर्माण को नहीं रोक सकती है। देखिये आपका जो यह अजमेर क्षेत्र है यहाँ के हमारे अविनाशजी माहेश्वरी को आज हम इस अवसर पर याद करते हैं जो विवादित ढांचा

को ढ़ाहने और उस क्रिया-कलाप में शहीद हो गया है, उस अविनाश माहेश्वरी को स्मरण कर रहे हैं, कृतज्ञता ज्ञापन कर रहे हैं और उसको फिर उसके वंश और परिवार वालों को हार्दिक धन्यवाद और बधाई देते हैं कि उसने राजस्थान की पवित्र भूमि का नाम उज्ज्वल किया है।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीरामेश्वराचार्यजी महाराज

वेद भगवान् ने जो उपदेश मानव समाज को दिया, जो शिक्षा महर्षियों ने दी, जिस वेद वाणी की व्याख्या, व्याख्या के ऊपर व्याख्या सूत्र स्वरूप में अथवा सूत्र भाष्य टीका टिप्पणी के स्वरूप में पूर्वाचार्यों ने हम लोगों को शिक्षा दी वह धर्म है, उससे विपरीत जो गया वह अधर्म है। एक वाणी मुझको याद आई है सामान्य वाणी हिन्दी भाषा में है उसमें ऐसा पढ़ा कि 'बन सके तो उपकार करो अपकार किसी का मत करो' यही धर्म है। यदि आपसे बनता है, आपकी बुद्धि वहाँ काम देती है, किया जा सकता है तो प्राणीमात्र का उपकार आप करें, किसका करें ऐसी बात नहीं प्राणीमात्र का करें, जीवमात्र का उपकार करें, पर यदि नहीं बनता है तो अपकार तो किसी का भी करना ही नहीं चाहिये यही धर्म है, धर्म का सार तत्त्व इतना ही है। आज हम अपने ही कर्तव्य से थोड़े से विचलित क्यों हुये, हमारे पास में वह शिक्षा नहीं है जिस शिक्षा के द्वारा हमारे हृदय में वह अभिमान आना चाहिये था, वह गर्व हमें होना चाहिये था कि मैं और यह हमारी भूमि, वह अभिमान जब तक नहीं आयेगा तब तक यह प्रकृति प्रसंग इसी प्रकार से गोलमाल ही रहेगा। शिक्षा से हमारा तात्पर्य है "या विद्या सा विमुक्तये" पाश्चात्य शिक्षा से नहीं, मैं इतिहास का पण्डित तो नहीं पर सुना जरूर हूँ आप सभी के मुँह से कि जब अपने इस प्राण से भी प्रिय भारत भूमि के ऊपर पाश्चात्य का अंकुश जम रहा था, पूरा जमा नहीं था तब भारत की शिक्षा में परिवर्तन किया गया। हमारी शिक्षा में परिवर्तन नहीं होता तो हमारी आज जैसी दुर्दशा नहीं हुई होती। अभी कुछ बिगड़ा नहीं है अभी वही वेद हमारे पास में हैं, अभी वही शिक्षा हमारे पास में है। पाश्चात्य भाषा हमको शिक्षित नहीं कर सकेगी। वह वही शिक्षा देगी जो उसके पास में है आपके पास में वह शिक्षा पच नहीं पायेगी। भारतीय मानस में संस्कृत भाषा की शिक्षा ही पचेगी, जिस भाषा के अन्दर लिखा होता है "मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव" पुनः लिखा होगा "अतिथि देवो भव" वही शिक्षा अपने लिए अनुकूल है, वही शिक्षा हम पचा पायेंगे। माता अपने छोटे से नन्हें बालक को पलने पर रखकर के बीच में बैठकर के हिलाती है उसको सम्भवतः उत्तर-प्रदेश व इधर की भाषा में लोरी कहते होंगे। वह माता छोटे बालक के लिए कहती है, क्या कहती है—अरे बालक तू हमारा लड़का नहीं है तू किसी का कुछ भी नहीं है तू तो शुद्ध-बुद्ध स्वरूप है, एक विशुद्ध जीवात्मा है इस प्रकार की शिक्षा जब माता देती है तो वह बालक, बालक बनता है, वह मानव, मानव बनता है। महाराष्ट्र प्रदेश में एक शिवाजी नाम के सशक्त व्यक्ति हुये थे जिनके गीत आज भी गाये जाते हैं, उनके पास में कुछ नहीं, खुले पैर से चलना और सूखे चने फांकना इस प्रकार की स्थिति उनकी थी। उनकी माता ने कहा कि हे शिवा वह सामने किला के ऊपर ध्वज किसका है, उन्होंने हाथ जोड़कर कह दिया कि माता वह तो दिल्लीश्वर का है। माता ने उनको तुरन्त फटकारा है कह दिया कि यह दिल्लीश्वर कौन होता

है, उस ध्वजा को उतार कर आना हमारे पास में वन्दना करने। वह एक सशक्त व्यक्ति थे, भारतीय संस्कृति के व्यक्ति थे प्रातःकाल होते ही माता की वन्दना करने चले जाते थे तो माता ने कह दिया कि वह ध्वजा उतर जाये तो आना वन्दना करने नहीं तो नहीं आना। आप सब जानते हैं कि प्रातःकाल होते-होते वहाँ पर केसरिया झंडा फहर गया था तो यह शिक्षा किसने दी, आज के आपके कॉलिजों ने दी या आज के आपके उच्च माध्यमिक विद्यालय ने दी। आप अपने स्वरूप को स्थित रखना चाहते हैं, भारत को भारत बनाना चाहते हैं तो उस शिक्षा के पीछे आप ध्यान दीजिये। संस्कृत शिक्षा ही उत्तम शिक्षा है उसी में दीक्षा है, उसी में मुक्ति है जिस मुक्ति के लिए मानव जन्म से लेकर अन्तिम क्षण तक तड़फता रहता है। ऐसा कोई हमारा शास्त्र नहीं है कि जिसमें मुक्ति की व्यवस्था न हो, जो मुक्ति की चर्चा न करता हो। पर मुक्ति कहाँ, इस पण्डाल में आप उसी मुक्ति को ढूँढने के लिए आये हैं, उसी मुक्ति के लिए आप हजारों कोस से चलकर यहाँ आये हैं। आपके बगीचे में आम के वृक्ष लगे होंगे पर मुक्ति का फल उनमें नहीं लगा हुआ है, वह फल लगा हुआ है उस शास्त्र में जिस शास्त्र को निचोड़ कर के ऐसे धर्माचार्य आपके मुँह में टपकायेंगे, आपके कान में टपकायेंगे, यदि आप उसका सदुपयोग करेंगे तो मानव जीवन सफल होगा। शिक्षा यदि सुशिक्षा हुई तो भारत और यदि शिक्षा कुशिक्षा हुई तो गारत। इसलिए बन्धुओं मैं तो यही आप सबों से निवेदन करूँगा कि आप उस पाश्चात्य शिक्षा को भूल जाइये और अपनी शिक्षा को अपनाइये, संस्कृत को अपनाइये, उससे निकली हुई भारत की समस्त भाषा को अपनाइये, इस पाश्चात्य भाषा के मोह में मत पड़िये। यदि आप भारतीय होकर के जीना चाहते हैं और उस मुक्ति धाम में पहुँचना चाहते हैं तो वह व्यवस्था पाश्चात्य संस्कृति में नहीं है। यह व्यवस्था आपके भारतीय संस्कृति में है इसलिए धर्माचार्यों से, धर्म प्रचारक बन्धुओं से, माता और भाईयों से मैं पुनः यही निवेदन करूँगा कि आप आधुनिक स्वरूप को बदलना चाहें तो संस्कृत के पक्षपाती बनें उसी के द्वारा आप सबों को अमृत का घूँट मिलेगा।

जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्रीवासुदेवाचार्यजी महाराज

आप लोग जानते होंगे कि कार्यक्रम समापन की ओर है और जब समापन की ओर कार्यक्रम है तो ऐसे अवसर पर अत्यधिक सूक्ष्म विवेचन होना चाहिये जैसे यव होता है, यव अर्थात् जिसे जौ बोलते हैं। इधर भी पतला उधर भी पतला और बीच में मोटा, बस अब जैसे प्रारम्भिक अवस्था में था कार्यक्रम, वैसे समापन की भी अवस्था में कार्यक्रम होना चाहिये। क्योंकि हमारे यहाँ का एक स्वाभाविक नियम है और जो बहुत ढंग से कहा जाता है—'अन्त भला सो सब भला' तो यहाँ तो आदि से लेकर के अन्त तक भला ही भला है उसमें कुछ छांटने की बात नहीं है कि कोई बात छाँटी जाय और फिर जहाँ जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज विराजमान हों, जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीवासुदेवानन्दजी महाराज विराजमान हों, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्रीरामेश्वराचार्यजी महाराज हों, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्रीहर्याचार्यजी महाराज हों, स्वामी श्रीवामदेवजी महाराज हों, श्रीमहन्त श्रीनृत्यगोपालदासजी महाराज हों, अनेक वयोवृद्ध गणमान्य धर्माचार्य एवं सन्त लोग विराजमान हों, वयोवृद्धों का नेतृत्व

जहाँ पर लगातार चल रहा हो वहाँ कोई काम गलत होगा इसकी कल्पना भी करना बहुत बड़ा पाप है। इसलिए काम तो अच्छा ही अच्छा है, पूरा का पूरा है, पूर्ण है। एक बात लोग जरूर पूछते हैं हमसे कि महाराजजी आप यह बतावें कि आज मध्याह्न में आप लोगों का प्रवचन नहीं हुआ, महिला सम्मेलन था शायद आप लोग महिलाओं के बारे में क्या जानें इसलिए लोगों ने सोचा होगा इनका महिला सम्मेलन में वक्तव्य न रखा जाय। लेकिन ऐसी बात नहीं है। आप लोग सोचते होंगे कि महिला सम्मेलन का समय भी बीत गया और महिला की चर्चा चला रहे हैं बात क्या है लेकिन बहुत बड़ी बात है और वह बात क्या है, वह बात यह है कि महिलाओं ने पुराना कर्ज अपना अदा कर दिया ६ दिसम्बर को, वह कौनसा कर्ज था, वह बहुत पुराना कर्ज था। जिस समय अशोक वाटिका में जनकनन्दिनी जानकीजी को रावण ने कैद कर रखा था अनला, अनिला, त्रिजटा, शर्मा आदि राक्षसियों को अशोक वाटिका में जनकनन्दिनी जानकीजी के पहरे में रख दिया था, जनकनन्दिनी जानकीजी को उस अशोक वाटिका रूपी जेल से छुटकारा दिलाया था भगवान् राम ने और ६ दिसम्बर को मैंने देखा वीराँगनाओं के रूप में हमारे देश की दुर्गावाहिनी की मातायें वीराँगना बनकर के उस ढांचे से मुक्त करा रही थी भगवान् राम को। मैंने सोचा वस्तुत: त्रेतायुग का आज बदला इन माताओं ने चुका दिया। यदि अशोक वाटिका में कैद जनकनन्दिनी जानकीजी का उद्धार भगवान् राम कर सकते हैं तो भगवान् राम उस पाँच सौ साल पुराने ढांचे में यदि कैद रहते हों तो उनका उद्धार देश की वीरांगनायें कर रही थी। उस दिन यह परम हर्ष का विषय था इसलिए महिलाओं को तो भगवान् राम के साथ जरूर जुड़ना है, रामजन्मभूमि के साथ महिलायें अवश्य जुड़ेगी, भगवान् राम के साथ महिलायें अवश्य जुड़ेगी। भगवान् राम के हर मोड़ पर मातायें आकर खड़ी होती नहीं तो प्रजापति पुरुष जिस समय प्रकट होते हैं अग्नि से, प्राजापत्य पुरुष का आविर्भाव होता है। गोस्वामीजी के शब्दों में "प्रकटे अग्नि चरू करि लीन्हे" क्षीरान्ह लेकर के अग्निदेव स्वयं प्रकट हो गये, क्या भगवान् नहीं प्रकट हो सकते थे उस यज्ञ कुण्ड से, लेकिन भगवान् ने कहा—नहीं-नहीं मुझे स्त्री के गर्भ से ही जन्म धारण करना है और भगवान् ने स्त्रियों को महिमा-मण्डित कर माँ कौशल्या के गर्भ से जन्म धारण किया। जब वन में जाते हैं भगवान् श्रीराम तो जनकनन्दिनी जानकीजी भी साथ में जाती है। दण्ड देना है यदि तो पूर्व जन्म में अगर मेरा कोई बड़ा भाई ही क्यों न रह चुका हो उसका कोई लड़का अगर इस जन्म में आता है तो उसका भी दण्ड विधान करना मेरा कर्तव्य है। भगवान् श्रीराम पूर्व जन्म में वामन भगवान् थे और जब वह भगवान् वामन थे तब इन्द्र के छोटे भाई थे। पूर्व जन्म में बड़ा भाई जो इन्द्र उसी का पुत्र जयन्त आकर माँ जानकीजी के स्तन पर प्रहार करता है उसी समय भगवान् श्रीराम ने उसे दण्डित करने का मन बना लिया और माँ जानकीजी के प्रति अपराध करने वाला जयन्त भगवान् राम के द्वारा तत्काल दण्ड का भागी बन गया। भगवान् श्रीराघवेन्द्र रामचन्द्रजी का यह दण्डप्रियता का, न्याय प्रियता का उदाहरण है। राज्य सिंहासन पर न बैठकर वनवास का मार्ग निश्चित किया, मेरा भारतीय संविधान वेद है और वेद यदि कहता है—"मातृदेवो भव" तो माँ कैकयी के आदेशानुसार वनवासी बन जाना चाहिये मुझे इसमें तनिक भी विलम्ब नहीं करना चाहिये, यह संविधान के प्रति समर्पण की भावना भगवान् राम

के जीवन में है और राज्य सिंहासन पर जब बैठ जाते हैं भगवान् श्रीराम, तब बदनामी चारों तरफ फैलने लगी कि जनकनन्दिनी जानकीजी रावण के क्रीड़ोद्यान में एक वर्ष लगातार रहकर के आई हैं, एक धोबी दूसरे के घर में ज्यादा समय बिता देने वाली अपनी पत्नी को डांटकर के बोल रहा था कि तू कहाँ गई थी, दूसरे के घर में गई थी तू कहाँ गई थी बता। स्त्री लोभी राम ने सीता को अपने यहाँ रख लिया एक वर्ष तक रावण के क्रीड़ोद्यान में उनको रखा गया और एक वर्ष तक वहाँ रह गई लेकिन उसके बाद भी राम ने रख लिया, मैं राम नहीं हूँ जो तुम्हें रखूँ इस प्रकार धोबिन को डांट रहा था। भगवान् श्रीराम ने भद्र आदि लोगों के माध्यम से इन बातों का श्रवण किया और स्वयं भी पता लगा लिया। फिर वशिष्ठजी से पूछा कहा गुरुदेव क्या आदेश है ऐसी चर्चायें चल रही है अयोध्या में, वशिष्ठजी ने कहा कि यथा राजा तथा प्रजा जैसे राजा उसी प्रकार से प्रजा होगी। यदि जनकनन्दिनी जानकीजी को इस समय राजमहल में रखोगे तो तुम्हारे राज्य शासन में ऐसी परम्परा हो जायेगी कि किसी के घर में कितने ही दिनों कोई स्त्री रह लेगी और उसके बाद भी इस घर में आकर अधिकार जमाने लगेगी तो उस घर में व्यक्ति को उसे रखना पड़ेगा, ऐसी गलत परम्परा न पनपने लग जाय आपके राष्ट्र में इसलिए आपको सीता का त्याग करना पड़ेगा। भगवान् श्रीराम ने कहा कि भगवन् यह कैसे हो सकता है, जिस जनकनन्दिनी जानकीजी को प्राप्त करने के लिए मैं दर-दर भटकता रहा, समुद्र के ऊपर पुल बाँध दिया जिस जानकी को प्राप्त करने के लिए, उस जानकी का त्याग। वशिष्ठजी ने कहा कि यदि तुम सीताराम होते केवल तब तो अयोध्या की किसी भी गली में अपनी जिन्दगी बसर कर सकते थे, अपना जीवन निर्वाह कर सकते थे लेकिन तुम सीताराम ही नहीं हो केवल, इस समय तुम राजाराम हो और राजाराम होने के कारण राज्य के चरणों में तुम्हें जनकनन्दिनी जानकी का समर्पण करना होगा, जानकी का त्याग करना होगा। भगवान् राघवेन्द्र श्रीरामचन्द्रजी ने जनकनन्दिनी जानकी को लक्ष्मण के माध्यम से वन में भिजवाया। आज के इन सफेदपोश नेताओं को यह उपदेश देने के लिए कि ऐ कलयुग में होने वाले नेताओं! राष्ट्र का कल्याण करने के लिए यदि मैं अपनी प्राणाधिका जनकनन्दिनी जानकी का त्याग कर सकता हूँ, तो तुम राष्ट्र को कर्ज के बोझ से उबारने के लिए स्वीटजरलैण्ड के बैंकों में जमा अपनी धनराशि राष्ट्र के नाम समर्पित कर देना। लेकिन आज के नेताओं ने भगवान् श्रीराम के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण जो अंश जन्मस्थान है उसी को कल्पित सिद्ध करना प्रारम्भ कर दिया। भगवान् श्रीराम ने राज्य का उपभोग नहीं किया, राज्य का उपयोग भी नहीं किया। भगवान् श्रीराम ने राज्य की उपासना की थी। भगवान् श्रीराम ने उपासना में जनकनन्दिनी जानकीजी का ही समर्पण किया था इससे बढ़कर उपासना और क्या हो सकती है। आज भगवान् राम की कृपा से सोता हुआ हिन्दू जागृत हुआ है। बहुत वर्षों से लगातार अत्याचार होता चला आया, भगवान् के भक्त जब सोते हैं तो बहुत खर्राटे लेकर सोते हैं इनकी निद्रा ऐसी होती है कि फिर जगने का जल्दी नाम नहीं लेते हैं। जिस प्रकार मुचकुन्द की निन्द्रा खुलते ही कालयवन भस्म हो गया उसी प्रकार यवनों के दुराचार के कारण आज हिन्दू रूपी मुचकुन्द के नेत्र खुल चुके हैं, वह जग चुका है अब तो कालयवन का विनाश निश्चित है ध्रुव है। बन्धुओं, केवल हमें जगने की आवश्यकता है, कुछ करने

की जरूरत नहीं है केवल हम जग जायें इसलिए और ऐसे चरित्रनायक भगवान् राघवेन्द्र श्री-राम ने हमें जगाने के लिए ऐसा प्रयोग और माध्यम चुनवाया है जिससे वह अत्याचारी स्वयं ध्वस्त हो जाने वाले हैं बस केवल हमें जागृत हो जाने की बात है। जो भगवान् राम हमारे नस-नस में व्याप्त हैं, जन्म के साथ ही जिन भगवान् राम का हम स्मरण करते हैं, जब जन्म होता है हमारे तो मातायें गीत गाती हैं किसके घर में सोहर गाती है सोहर और सोहर गाकर के कहती है कि भाई किसके घर में भगवान् राम ने जन्म लिया, किसके घर में लक्ष्मण, शत्रुघ्न एवं भरत ने जन्म लिया सोहर गाती है, वधैया बाजती है और इतना ही नहीं जब विवाह का प्रसंग आता है तो यह मातायें क्या कहती है—"झुक जावो तनिक रघुवीर झुकनी पड़सी रे" यानी उस समय भी मातायें भगवान् राम का स्मरण करती है। और जब व्यक्ति मर जाता है परमपद के बाद भी जब शवयात्रा उसकी होती है तो सब लोग क्या बोलते हैं राम नाम सत्य है, गोपाल नाम सत्य है यही बोलते हैं। जन्म से लेकर के जो भगवान् राम मरण पर्यन्त, मरण के बाद भी दिव्यधाम में हमें प्राप्त होने वाले हैं ऐसे भगवान् के लिए लोग बोलते हैं कि उनका नाम लेना साम्प्रदायिक है, कहते हैं कि राम नाम साम्प्रदायिक है। मैं कहता हूँ कि वह साम्प्रदायिक नहीं है साम्प्रदायिक तो यह हैं जिन्होंने भारतवर्ष की परम्परा को ध्वस्त किया, भूल गये वह लोग अपने रास्ते को, देश की स्वतन्त्रता को, जिसको गाँधीजी ने "रघुपति राघव राजाराम" का कीर्तन करके प्राप्त किया था, उनकी समाधि पर आज भी दिल्ली में 'हे राम' लिखा हुआ है। असली श्रद्धाञ्जलि तो वही होगी भगवान् राम का भव्य मन्दिर निर्माण हो। लोग कहते हैं कि महाराज दूसरा कोई मन्दिर बना दे तो क्या आपत्ति है। रामजन्मभूमि न्यास ही जो पहले से बना है वही मन्दिर बनायेगा। क्यों वही मन्दिर बनायेगा, भैया इसलिए कि कृतज्ञता के कारण, हमारा धर्म शास्त्र कहता है गो-हत्या कर दो तो प्रायश्चित्त है, मदिरा पान कर लो तो प्रायश्चित्त है, चोरी कर लो तो प्रायश्चित्त है, प्रतिज्ञा से भ्रष्ट हो जाओ तो प्राय-श्चित्त है, लेकिन यदि कोई कृतघ्न है तो कृतघ्नता का कोई प्रायश्चित्त नहीं है। जिन कार-सेवकों ने जिस रामजन्मभूमि न्यास के आह्वान पर तन-मन-धन ही नहीं अपने प्राणों तक की बाजी लगा दी ३० अक्टूबर और २ नवम्बर को, यदि उस न्यास के माध्यम से राममन्दिर का निर्माण नहीं हुआ तो उन कारसेवकों को वास्तविक श्रद्धाञ्जलि नहीं होगी। इसलिए बन्धुओं उसी के द्वारा मन्दिर निर्माण हो। उन लोगों को कोई अधिकार नहीं है मन्दिर निर्माण करने का जिनके हाथ कारसेवकों के खून से रंगे हुये हैं और उस पंजे को भी कोई अधिकार नहीं है जिसने तत्कालीन मुलायमसिंह की सरकार को बचाने का प्रयास किया था। उसके भी पंजे कारसेवकों के खून से रंगे हुये हैं। अतः उसी रामजन्मभूमि न्यास के माध्यम से मन्दिर निर्माण हो। यह बात दूसरी है कि उस रामजन्मभूमि न्यास में दिव्य-दिव्य उच्चकोटि के शास्त्रज्ञ विद्वान् जिनको पाञ्चरात्रागमविधान ज्ञात है, जिनको उत्तर-दक्षिण देश की पूजा पद्धतियों का पूर्ण अनुभव है ऐसे महापुरुषों को प्रविष्ट किया जा सकता है। ऐसी बात नहीं है कि ना हो यह, उनका भी स्वागत है उसमें। लेकिन मन्दिर का निर्माण तो रामजन्मभूमि न्यास के माध्यम से ही होना चाहिये दूसरा कोई माध्यम मन्दिर निर्माण के लिए उचित नहीं होगा।

अन्त में अब मैं धर्म के सम्बन्ध में यह अन्तिम वाक्य कहकर कि धर्म को छोड़ा नहीं जा सकता, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हाथ-पैर, कान, नाक, आँख, मुँह आदि, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और ग्याहरवाँ मन, इन ग्यारह इन्द्रियों की जो हलचल है उसी हलचल का नाम धर्म है और इन्हीं ग्यारह इन्द्रियों की जो हलचल है उसी हलचल का नाम अधर्म है। इन ग्यारह इन्द्रियों की हलचल से धर्म तब बनेगा जब वह शास्त्रानुमोदित, धर्मानुमोदित पूर्वाचार्य समर्थित होगा। जब इन्हीं आँखों से आप भगवान् का दर्शन करेंगे तो धर्म हो जायेगा और इन्हीं आँखों से किसी स्नान करती हुई स्त्री को विपरीतावस्था में यदि देखेंगे तो अधर्म हो जायेगा। इन्हीं पैरों से यदि भगवान् की परिक्रमा करेंगे भगवान् के मन्दिर की तो धर्म हो जायेगा और इसी पैर से किसी ब्राह्मण, किसी गाय को मार दोगे तो अधर्म हो जायेगा। इन्हीं हाथों से भगवान् के चरणों की सेवा कर दोगे तो धर्म हो जायेगा और इन्हीं हाथों से कहीं चोरी कर लोगे तो अधर्म हो जायेगा। इसलिए शास्त्र से समर्थित इन ग्यारह इन्द्रियों की क्रियायें धर्म हैं और शास्त्र के विरुद्ध इनकी क्रियायें अधर्म है। धर्म को कभी अलग नहीं किया जा सकता है। जल की शीतलता जल का धर्म है जल को कितना भी उबाल दिया जाय लेकिन उबलता हुआ भी जल दन्दह्यमान अग्नि के अंगारे को बुझा देता है, लेकिन उबलता तेल अंगारे को नहीं बुझा पाता। यानि जल का शीतलत्व जो उसका गुण है वह उसमें उस समय भी है जब वह उबल रहा है। बन्धुओं, धर्म को हम कैसे छोड़ सकते हैं धर्म पति है, राजनीति पत्नी है। धर्मरूपी पति और राजनीति रूपी पत्नी के द्वारा सुख और शान्ति रूपी सन्तान पैदा होती है यदि धर्म नहीं रहेगा तो राजनीति विधवा हो जायेगी और विधवा से जब सन्तान पैदा होगी तो उसे आप लोग क्या कहेंगे वर्ण संकर कहेंगे, हरामी कहेंगे। हरामी का कोई दीन नहीं होता इसलिए वह बेदीन होगा, जो बेदीन होता है उसका कोई ईमान नहीं होता इसलिए वह बेईमान होता है, जो बेईमान होता है उसे कोई शर्म नहीं होती इसलिए वह बेशर्म होता है। धर्म निरपेक्ष शासन का मतलब बेधर्म, बेदीन, बेईमान, बेशर्म शासन इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं। इसलिए धर्म को छोड़ना नहीं, धर्म को छोड़ने की बात आज इसलिए यह धर्म निरपेक्ष नेता करते हैं क्योंकि यदि धर्म आ जायेगा तो बूथ कैप्चरिंग बन्द हो जायेगी क्योंकि अधर्म के बल पर ही बूथ कैप्चरिंग करते हैं, अधर्म के बल पर ही वोट अपने मनमाना लगाना शुरु करते हैं, बूथ कैप्चरिंग करके मोहर लगाकर दे दनादन डालते चले गये, तो यदि धर्म आ जायेगा बन्धुओं, तो मार्केटिंग में मिलावट नहीं होगी, बाजार में मिलावट कैसे होगी क्योंकि उस समय तो धर्म की भावना रहेगी। यहाँ पर भी और परलोक में भी हमें शाश्वत शान्ति प्राप्त हो वह धर्म है इसलिए राजनीति से अधर्म को अलग करना चाहिये, धर्म को अलग नहीं करना चाहिये। आपकी आँख का धर्म है देखना यदि आपकी आँख धर्म निरपेक्ष हो जायेगी तो आपको एक लकड़ी पकड़कर के रास्ते में चलना पड़ेगा अन्धे बन जाओगे। आपके कान का धर्म है सुनना, यदि आपका कान धर्म निरपेक्ष हो गया तो आप बहरे बन जाओगे। आपके पैर का धर्म है चलना, यदि वह धर्म निरपेक्ष बन गया तो आप लंगड़े बन जायेंगे, पंगु बन जायेंगे। आपकी जिह्वा का धर्म है बोलना, यदि आपकी जिह्वा धर्म निरपेक्ष हो जाय तो आप गूँगे हो जायेंगे। लोकनायक जय-प्रकाशनारायण की किडनी धर्म निरपेक्ष हो गई थी। किडनी धर्म निरपेक्ष हो गई तो डाय-

लेसिस मशीन मंगाकर के उस पर चढ़ाया गया, उनको बैठाया गया। जब राष्ट्र की किडनी धर्म निरपेक्ष हो जायेगी तो दुनियाँ की कोई भी डायलेसिस मशीन राष्ट्र का कल्याण नहीं कर सकती है इसलिए "यतो धर्मस्ततो जयः" जहाँ धर्म है वहीं विजय है।

पं० श्रीदयाशंकरजी शास्त्री

इस महान् सनातन धर्म सम्मेलन का यह परिशिष्ट रूप है। अतः विनम्र प्रार्थना है कि आज आपका प्रसाद मात्र हम लोगों को मिले इस दृष्टि से समय की सीमा में ही कृपा करेंगे ऐसा मेरा विश्वास है। जोधपुर महामण्डल रामद्वारा के महन्त श्रीरामसुखदासजी महाराज पधारे हैं बड़े प्रिय सन्त हैं आपका हमारे आचार्यश्रीचरणों से बड़ा घनिष्ठतम सम्बन्ध है इस दृष्टि से आप अनिवार्य परिस्थिति के कारण हमारे इस सप्त दिवसीय सम्मेलन में नहीं पधार सके, आज प्रातःकाल ही आपका पादार्पण हुआ है उनसे निवेदन करता हूँ कि आप कृपा करके अपना प्रसाद हमको दें।

महन्त श्रीरामसुखदासजी महाराज

आज जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज और जगद्गुरु शंकराचार्यजी महाराज एवं अन्य सन्त-महात्मा आपके सामने विराजमान हैं। कहते हैं कि महात्माओं की सत्संग कैसी होती है वस्तुतः वह एक शिक्षा के समान है, निर्मल दर्पण के समान है, सन्तों के पावन वचन के द्वारा सारे संसार का कल्याण हो सकता है। आप इतना कष्ट सहकर इसलिए आये हो कि हमारा कल्याण हो, हमको शान्ति मिले, हमको सन्मार्ग दर्शन हो, हम प्रभु के चरणों मे पहुँचे और शीघ्र ही भगवत्प्राप्ति करें यह ही लक्ष्य लेकर आये हैं और कोई लक्ष्य नहीं है। महापुरुषों की आप एक ही बात धारण कर लेना तो आपका कल्याण हो जायेगा। श्री 'श्रीजी' महाराज का यह आयोजन जो कि आत्मा का प्रकाश फैलाने के लिए आप लोगों के लिए रखा गया है महाराजश्री के सामने तो हम जैसे ही आये तो हमारी जो भावना जो हम सुन रहे थे साकार-रूप में हो आई है वास्तव में यह आयोजन सत्य है। साधु-सन्तों में, भक्तों में सब जय-जयकार कर रहे हैं आज तक ऐसा सम्मेलन नहीं हुआ, यहाँ नहीं पूरे भारतवर्ष में ऐसा नहीं हुआ है। सबके लिए प्रेम और सहिष्णुता और महाराजश्री की नम्रता है इतने बड़े पद पर रहते हुये भी कितनी नम्रता, सबको पूछते हैं ठीक-ठीक हो न आपको सुविधा मिली कि नहीं, भोजन किया कि नहीं, प्रसाद पाया कि नहीं। यह क्या हैं यह पारस के समान हैं सन्त-महात्मा कहते हैं कि एक तो महापुरुषों का चरण कमल, जहाँ-जहाँ सन्तन के चरण पड़ते हैं वह भूमि पवित्र हो जाती है, एक जो सन्त महापुरुष वचन बोलते हैं, पद बोलते हैं उसको भी चरण कहते हैं जो चरण हमारे कान में पड़ जाँय तो हमारा कान पवित्र हो जाँय, हमारा अन्तःकरण पवित्र हो जायेगा, हमारा रोम-रोम पवित्र हो जायेगा इसलिए यहाँ आये महापुरुषों ने जो वचन श्रवण कराये हैं उनको याद रखें तो आपका कल्याण होगा। हमारे शास्त्रीजी ने जो बात कही यह बिलकुल सत्य है कि महाराजश्री का प्रभाव एक इन्द्र के समान है, इन्द्र जब वर्षा करते हैं तो वह यह नहीं देखते हैं कि यह ऊसर है, यह कांटा है, यह गन्दी जगह है, यह अच्छी जगह है

स्वामी श्रीवेदरामजी (वृन्दावन) को श्रीनिम्बार्कसुदर्शन महाचक्र एवं उपहार प्रदान करते आचार्यश्री, साथ में खड़े समिति के अध्यक्ष, महामंत्री, स्वागताध्यक्ष एवं म. श्रीबनवारीशरणजी, म. श्रीमनोहरदासजी (पलसाना) बायीं ओर विराजमान महन्त श्रीहरिवल्लभदासजी महाराज (रैनवाल) अन्य सन्त समुदाय।

चार्यश्री के सान्निध्य में बालरूप श्रीकान्त को
वराज पद पर अभिषेक के अनन्तर उदबोधन
ते हुए श्रीमहन्त मुरलीमनोहरशरणजी एवं
राजमान तीनों अनी के महन्त, चतुसम्प्रदाय
महन्त, खालसा श्रीमहन्त तथा विशिष्ट सन्त,
त्मा व विद्वद्जन।

मेवाड़ महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी को श्रीनिम्बार्कसुदर्शन महाचक्र का प्रतीक प्रदानकर सम्मानित करते हुए आचार्यश्री, साथ में दुशाला लिए खड़े श्रीनवलबिहारीशरणजी, बायीं ओर खड़े समिति के अध्यक्ष श्रीभीमकरणजी छापरवाल, महामंत्री - श्रीराधेश्यामजी इनाणी, स्वागताध्यक्ष - श्री जुगलकिशोरजी तोपनीवाल, श्री मांगीलालजी राठी एवं अन्य महानुभव।

आदर्श रामलीला मण्डली (मथुरा) के संचालक स्वामी श्रीवासुदेवजी चतुर्वेदी को श्रीनिम्बार्कसुदर्शन महाचक्र प्रतीक एवं उपहार प्रदान करते हुए आचार्यश्री। सिंहासनासीन जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीवासुदेवानन्द सरस्वतीजी महाराज एवं सन्त, महन्त, विद्वज्जन।

रासमण्डली के वयोवृद्ध स्वामी श्रीकुँवरपालजी (वृन्दावन) को श्रीनिम्बार्कसुदर्शन महाचक्र प्रतीक एवं उपहार प्रदान करते हुए आचार्यश्री, सिंहासनासीन जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर स्वामी श्रीवासुदेवानन्दजी महाराज (बद्रिकाश्रम) पीछे खड़े – समिति के अध्यक्ष श्रीभीमकरणजी छापरवाल।

रासमण्डली के सुविख्यात स्वामी श्री हरिगोविन्दजी वृन्दावन को श्रीनिम्बार्कसुदर्शन महाचक्र प्रतीक एवं उपहार प्रदान करते हुए आचार्यश्री, साथ खड़े म. श्रीबनवारीशरणजी (जूसरी) समिति के महामंत्री, अध्यक्ष, स्वागताध्यक्ष।

वह तो सब जगह एक सी वर्षा करते रहते हैं। महापुरुषों का तो यह ही विशेष गुण होता है सब पर समान कृपा करते हैं जो कृपा का लाभ लेना चाहते हैं वह लेकर के अपना जन्म सफल बनायें।

जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीवासुदेवानन्दजी महाराज

विगत २२ तारीख से चलने वाला यह श्रीनिम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के पाटोत्सव के सम्बन्ध में स्वर्णजयन्ती समारोह के उपलक्ष्य में अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन अपनी पूर्णता की तरफ गतिमान हो रहा है। नित्य ही किसी न किसी विषय पर विशेष चर्चा होती रही है, सामयिक विषय पर विशेष चर्चा हुई हैं। वर्तमान में हमारे इस आन्दोलन के पुरोधा कहें जिनको हम लोग बहुत ही गम्भीर व्यक्ति वेदान्त के ही स्वरूप में माना करते थे ऐसे महापुरुष भी श्रीरामजन्मभूमि के सम्बन्ध में अपने चित्त को गम्भीर नहीं रख सके, उनके द्वारा नित्य की आँखों देखी घटना के साथ-साथ समस्त विवरण श्रवण किया आप लोगों ने। हमारे जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्रीवासुदेवाचार्यजी महाराज ने उस विषय को पुष्ट करते हुए विद्वत्शैली में उसका विश्लेषण प्रस्तुत किया। हमारी शिक्षा का सुधार कैसे हो इस पर विचार किया गया। आज मध्याह्न में मातृशक्ति सम्मेलन था। मातृशक्ति ही एक ऐसी शक्ति है जो इन समस्त समस्याओं का समाधान करने में सहयोग कर सकती है। यद्यपि बहुत-बहुत बातें हुआ करती हैं, माताओं की मातृशक्ति का बड़ा अपमान हो रहा है, बताई जाती है लेकिन हमारी भारतीय संस्कृति में संस्कृत वाङ्मय का कोई ऐसा ग्रन्थ नहीं है जिसमें मातृशक्ति का अपमान किया गया हो। लोग गोस्वामीजी की एक चौपाई 'ढोल गंवार शूद्र पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी' पर आक्षेप करते हैं। किन्तु यह उनके वाक्य नहीं हैं यह तो समुद्र के वाक्य हैं, बस एक ही वाक्य कुछ मिलता है वह भी अपमान जनक नहीं है उसमें भी शिक्षा निहित है। ताड़ना का मतलब शिक्षा है वहाँ पिटाई करना नहीं है। मातायें साक्षात् धर्म की मूर्ति हैं कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। आज धर्म का जो कुछ भी रूप दिखाई पड़ रहा है इसका श्रेय माताओं को ही है। आप आश्चर्य मानोगे कि जिस ६ दिसम्बर को घटना के सम्बन्ध में लोग छाती पीट रहे थे उस ६ दिसम्बर की घटना में भी एक मातृशक्ति को देखा गया, उस माँ ने भावावेश में अपने पति से कहा कि क्या देख रहे हो खड़े-खड़े तुम। बेचारा फिर भी चुपचाप खड़ा रहा। उस माँ ने अपनी चूड़ियाँ निकालकर उसके ऊपर फेंक दी और कहा कि ये चूड़ियाँ तुम पहन लो मैं चलती हूँ, मैं इसका काम तमाम करूँगी, यह वाक्य सुनते ही उस व्यक्ति में भी शक्ति प्राप्त हुई। उसने अपने कमर में बँधी एक रस्सी को निकाला, उसमें शायद छक्का भी था, उसने छक्का मारा और उस पतली रस्सी के सहारे उस गुम्बज पर चढ़ गया और कारसेवा उसने प्रारम्भ कर दी। यह मातृशक्ति की कृपा है। कार्य तो हनुमानजी ने किया, कराया ही है। हमारे इन राजनेताओं ने ही यह भावना प्रबल की विरोधी वक्तव्य देकर के, कारसेवकों पर दमन की नीति अपनाकर के हिन्दू समाज के प्रति भावना जागृतकर के, लाख-लाख हिन्दू कश्मीर से भगाये गये परन्तु उनके पुनर्वास की तरफ ध्यान न देकर के, यदि और सही कहेंगे तो कटु सत्य होगा। यह राजनेता सबसे पहले जिम्मेदार हैं इनको पहले दण्ड

मिलना चाहिये, भले ही यह दण्ड अपने आप स्वीकार न करें पर आज नहीं तो कल इनको दण्ड प्रकृति देगी और वह प्रकृति समस्त जनता के हृदय में बैठकर के इनको दण्ड देगी। प्रातः-काल सती प्रथा की भी चर्चा चल गई, सतीत्व माताओं का बहुत बड़ा पवित्र धर्म है। सारा समाज उसके सामने नतमस्तक होता है और ईश्वर भी नतमस्तक होता है। सती अनुसुयाजी का प्रसंग आप लोगों ने सुना होगा कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों जिसके सतीत्व के सामने बालक बनकर के गोद में खेलने लग जाते हैं और जाते समय अपने-अपने अंश से एक रूप में वहाँ रह भी जाते हैं यह उनके सतीत्व का परिणाम है। हाँ जलने और जलाने की प्रक्रिया दक्ष पुत्री सती माता ने प्रारम्भ की, भगवान् शिव का भाग दक्ष के यज्ञ में न देखकर के उन्हें अपमान प्रतीत हुआ, उसे सहन न कर सकी और किसी के जलाने से नहीं, किसी अग्नि से नहीं, योगाग्नि से इस शरीर का परित्याग कर दिया उन्होंने। रामायण काल में भी आप लोगों ने सती सुलोचना का चरित्र पढ़ा होगा कि युद्ध के समय मेघनाद का शिर भगवान् के पास आ गया था, मेघनाद के मरने पर रावण जैसा वीर नहीं ले जा सका था उस सिर को। राम के चरित्र पर रावण को इतना विश्वास था कि रावण निश्शंकभाव से कहता है कि बेटी सुलोचना तू ही चली जा राम के पास अपने पति का शिर ले आ और अपने धर्म का तू पालन कर। सुलोचना जाती है भगवान् से प्रार्थना करके शिर को ले आती है और सती होती है। पर मन्दोदरी को सती होने के लिए भगवान् ने भी आदेश नहीं दिया था, तारा सती नहीं हुई थी। यहाँ तक कि कौशलया, सुमित्रा, कैकयी मातायें भी भरत की प्रार्थना पर सती नहीं हुई, जिसका गुरुदेव वशिष्ठजी ने अनुमोदन भी किया था। हमारे चित्तौड़ के किले में हजारों–हजारों माताओं ने जौहर कर लिया था, इसलिए जौहर किया था कि पुरुष सब केसरिया बाना पहन कर के देश की रक्षा में सब काम आ गये, दुर्ग में मातायें हैं उनको रक्षा कौन करेगा, उनके सतीत्व में कोई कलंक न उपस्थित हो इसलिए उन्होंने जौहर कर लिया था। इसलिए कि वह सती धर्म था बलात् लादा नहीं गया था। अस्तु सती धर्म के प्रति हम सब लोग निष्ठावान् हैं, सती प्रथा के प्रति निष्ठावान् नहीं हैं। उसका विरोध करना चाहिये। अभी हमारे रामानन्दाचार्य जी महाराज माता मदालसा की चर्चा कर रहे थे, माताओं को मूर्खा नहीं होना चाहिये मातायें यदि मूर्खा होगी तो बालक उनके कहाँ से विद्वान् निकलेंगे। भगवान् शंकराचार्य जिस समय दिग्विजय के लिए मण्डन मिश्र के दरवाजे पर पहुँचते हैं उस समय की विद्वत्ता देखो माताओं की, कूएँ पर पानी भरने वाली माताओं से पूछते हैं कि मण्डन मिश्र का घर कहाँ है, मातायें मारवाड़ी में उत्तर नहीं देती हैं, न अवधी में उत्तर देती हैं, न बंगला में देती हैं, न उड़िया में देती हैं, न तेलगू, तमिल, मलयालम आदि में देती है शुद्ध संस्कृत में उत्तर देती है कि 'स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं कीराङ्गना यत्र गिरो गिरन्ति। द्वारस्थलेनान्तरसन्निरुद्धा अवेहि तन्मण्डनमिश्रधाम।।' जाओ देखो जहाँ पर ब्रह्म स्वतः प्रमाणित है अथवा दूसरे प्रमाण से सिद्ध होता है इस प्रकार का विचार जिस द्वार पर पिंजड़े में बन्द होकर के कीराङ्गना करते हों उसे समझ लो मण्डन मिश्र का घर है, चले जाते हैं दोनों विद्वानों का शास्त्रार्थ होता है उसका मध्यस्थ कौन होता है, मण्डन मिश्र की पत्नी भारती होती है उसने निर्णय दिया और सही निर्णय दिया, यह माताओं की शिक्षा है। माताओं की वीरता और धार्मिकता का

प्रमाण तो कहना ही क्या है, अहिल्याबाई होलकर स्टेट की रानी थी जिन्होंने पूरे भारत में अपने वैभव से धर्म स्थानों की सुरक्षा की थी, आजकल के राजाओं की तरह, शासनाधिकारियों की तरह नहीं कि अपने क्षेत्र में बने हुये धर्मस्थानों पर निग्रह करें। वीरता के सम्बन्ध में इन्हीं माताओं का दूध पीकर के हनुमान्, राम, शिवा पौरुष को प्राप्त करते हैं, परन्तु मातायें अब तो दूध पिलाने में भी संकोच करती हैं। मातायें जब अपने बालकों को दूध नहीं पिलायेंगी तो यह बालक कैसे मातृभूमि की रक्षा करेंगे, कैसे माता की रक्षा करेंगे, यह तो अवश्य उच्छृङ्खल हो जायेंगे, बोतल पीते-पीते बोतल पीने लग जाते हैं। माताओं! तुम्हारे दूध ने बहुत बड़ा चमत्कार दिया है भारत में, आज तो लगता है कुछ लोग ऐसा ही दूध पीकर के आगे बढ़ रहे हैं जो धर्म और देश एवं राष्ट्र के प्रति कृतज्ञता का व्यवहार कर रहे हैं, माताओं का दूध पीकर के कभी बालक अपनो माँ की लज्जा को रखने में संकोच नहीं करता है आगे बढ़ता है। माताओं का सबसे बड़ा आज दायित्व है, देश के लिए ऐसे बालकों को जन्म दो जो देश की रक्षा के लिए आगे बढ़ें, अपना दूध पिलाकर के उन्हें बड़ा करो जिससे उनके मन में कायरता न आवे। मातृशक्ति बहुत बड़ी शक्ति है बिना मातृशक्ति के हम भगवान् का भी पूजन नहीं करते हैं, भगवान् भी बाद में पूजे जाते हैं हम सीताराम कहते हैं तो पहले सीता कहते हैं तब राम कहते हैं, पहले राधा हैं तब कृष्ण हैं, पहले गौरी हैं तब शंकर हैं। माताओं का अपमान हमारे शास्त्रों में कहाँ कहा है, पग-पग पर इनका सम्मान है और सभी शास्त्रज्ञ कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करते हैं, मातृचरणों में नमन करते हैं, उनकी महत्ता को स्वीकार करते हैं। यह सम्मेलन सनातन धर्म सम्मेलन आपका एक बहुत बड़ी उपलब्धि लेकर के सामने आ रहा है वह उपलब्धि यह है कि हमारी शिक्षा धार्मिक शिक्षा होनी चाहिये इसका प्रयत्न करने के लिए प्रयत्नशील हो रहे हैं लोग, केवल निम्बार्कतीर्थ में ही नहीं सनातन धर्म का यह महासम्मेलन भारत के कौ-कौने में हो, हर प्रान्त में हो। हमारे वासुदेवाचार्यजी ने तो आपको निमन्त्रण भी दे रखा है हम तो उसी में अपना समावेश कर लेंगे, बद्रिकाश्रम में आवश्यक नहीं है प्रयाग में आवश्यक है और प्रयाग में सनातन धर्म महासम्मेलन बिना बुलाये हमारे इकट्ठा होता है कुम्भपर्व यहाँ लगता है समस्त भारत के लोग एकत्रित होते हैं, सन्त-महात्मा और स्वर्ग तक से भी लोग आते हैं सिद्ध-ऋषि, गन्धर्व सभी लोग हमारे प्रयाग में आते हैं वहाँ तो सनातन धर्म सम्मेलन होता ही है और एक और हो जायेगा। इस सम्मेलन का संकल्प बड़े-छोटे रूप में हुआ परन्तु उसका यह विस्तार रूप देखकर के बड़ी प्रसन्नता हुई। सम्मेलन बहुत ही सफल रहा है हम आयोजकों के प्रति, स्वागत समिति के प्रति, व्यवस्था समिति के प्रति, जिस प्रकार की अलग-अलग व्यवस्था है उन समस्त व्यवस्थापकों के प्रति, सुरक्षा के प्रति, सुरक्षा अधिकारियों के प्रति, प्रशासन के प्रति अपनी मंगलकामना एवं शुभाशीर्वाद देते हुए श्रीराधामाधव प्रभु के चरणों में प्रार्थना करते हैं यह भारत फिर से जगद्गुरु के रूप में प्रतिष्ठित हो। इन्हीं शब्दों के साथ सबके प्रति मंगलकामना करते हुए वाणी को विराम देते हैं।

मेवाड़महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी महाराज

[सभा संचालक]

अपनी आयु में कई सैकड़ों अधिवेशनों में मैं गया हूँ सभी जगह जाता हूँ और कुछ न कुछ देखता हूँ किन्तु जितनी शान्त, जितनी गम्भीर, जितनी एक आसन पर बैठकर योगी की तरह कथा सुनने वाली जनता मैंने सलेमाबाद और मारवाड़–राजस्थान की देखी उतनी मैंने कहीं नहीं देखी। मैं अपनी ओर से यहाँ ५ लाख से भी अधिक आई हुई इस जनता को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। मैं कई लोगों को जानता हूँ जो आठ-आठ घन्टे मातायें यहाँ बैठी रही, मैं आश्चर्य करता हूँ कि कब भोजन करना है, कब स्नान करना है, कब जल पीना है, कब नित्यकर्म करना है कुछ पता नहीं, भगवान् की कथा में लीन। ऐसे पवित्र श्रोताओं का दर्शन करके हम लोग भी पवित्र हुये, ऐसे श्रेष्ठ श्रोताओं का सान्निध्य पाकर हमारा जीवन भी धन्य हुआ। पूज्य श्री 'श्रीजी' महाराज ने मुझे यह अवसर दिया कि मैं आपके बीच रहूँ ५-७ दिन। मैं आचार्यश्री का बहुत ऋणी हूँ आचार्यश्री की बहुत मुझ पर कृपा है और यह हमारे सम्प्रदाय के आचार्य हैं इनके नेतृत्व में हम लोग कार्य करते हैं, इनके नेतृत्व में हमने बहुत कार्य पहले भी किए हैं और आगे भी ठाकुरजी की कृपा होगी तो सेवा करते रहेंगे, फिर भी मैं आचार्यश्री के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करना अपना कर्तव्य समझता हूँ। मैं श्रीईनाणीजी, श्रीछापरवालजी एवं श्रीतोषनीवालजी को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने इन सन्त-महात्माओं, धर्माचार्यों का बहुत ध्यान रखा, रात-दिन अपनी गाड़ियाँ लगाई रखी। हम साधुओं को लाना वापिस ले जाना, यह करना, वह करना तो इन तीनों महानुभावों को और पूरी इनकी टीम को, इनकी पूरी पार्टी को मैं अपनी ओर से, अपने सब की ओर से धन्यवाद देता हूँ। सभी सन्त-महात्माओं ने कृपा करी, कई वक्ताओं ने चिट दिये थे लेकिन समय की कमी से वे चिट मैं उपयोग में न ला सका उनसे मैं क्षमा चाहता हूँ। आचार्यचरणों को तो मैं कुछ कहना ही नहीं चाहता उनका तो अधिकार है वह तो आचार्य हैं आचार्य के ऊपर तो कोई होता ही नहीं है इसलिए आचार्यों के ऊपर तो कोई होगा ही नहीं, इसलिए आचार्यों ने यहाँ विराजकर अपनी उपस्थिति से हम सबको उपकृत किया। यहाँ तो फूल मण्डली वाले आये, छप्पनभोग के लोग आये, रासमण्डल के लोग आये, होली आई, रवीन्द्रजी आये, रामानन्दजी सागर आये, बी० आर० चोपड़ाजी आये पता नहीं कितना का कितना पूरा ब्रह्माण्ड ही जैसे अनेक उपमेय कला की अभिव्यक्ति के साथ प्रकट हुआ। इन सारे प्रकट होने वाले संस्कारों को मान्यताओं को, कलाओं को प्रणाम करता हुआ जनता जनार्दन को अपना प्रणाम प्रस्तुत करता हूँ।

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

जो भी कुछ होता है वह अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक क्षराक्षरातीत निखिलजगदभिन्ननिमित्तोपादानकारण जगज्जन्मादिहेतु प्रणतार्तिक्षपणस्वभाव मुक्तोपसृप्य नवाम्बुदानीकमनोहर कोटिकन्दर्पदर्पदलनपटीयान् निरतिशय सौन्दर्यमाधुर्यलावण्यकारुण्यमार्दवादि-अनन्तकल्याणगुणगणमहोदधि भगवान् श्रीसर्वेश्वर के कृपा प्रसाद से होता है यह सब अपने साधन साध्य नहीं है. परिश्रम साध्य नहीं है, कृपा साध्य है जब उनकी कृपा होती है वे कर्तुमकर्तुं अन्यथा

कर्तुं सर्वसमर्थ हैं जब जैसी अपनी कृपा करते हैं, प्रेरणा प्रदान करते हैं, किसी को निमित्त बनाते हैं तो इस प्रकार के विराट् आयोजन हो जाते हैं यह उनका कृपा प्रसाद है वह तो अनुग्रह विग्रह हैं अपने निर्हेतुकी कृपा की सर्वदा अभिवृष्टि करते हैं। कब किस पर कृपा करें यह तो उनके ऊपर निर्भर है जिन पर वह कृपा कर दें उनको ही प्राप्त होते हैं तो यह सब उनकी कृपा का फल है। ठीक है निमित्त किसी को बना दें कुछ भी कर लें "प्रियशिष्यं अर्जुनं निमित्ती कृत्य गीताशास्त्रं समुपदिष्टं भगवतापुरुषोत्तमेन" प्रभु ने अर्जुन को निमित्त बनाकर के और गीता का उपदेश किया संसार के समस्त प्राणियों के लिए तो निमित्त किसी को बना दें। जीवन में ऐसा क्षण प्राप्त होना बड़ा कठिन है आज यहाँ पर यह अपार जन समुद्र और यहाँ जहाँ धर्माचार्यप्रवर पधार कर के अपने कृपा के द्वारा, अपने उपदेशों के द्वारा सबको अभिषिक्त किया है अनेक महापुरुष पधारे, अनेक सन्त-महात्मा पधारे, हमारे महन्तजी महाराज जिन्होंने इस मंच को ऐसे इस प्रकार से व्यवस्थित रखा अपने सुन्दर मध्य-मध्य में उपदेशमय वचनों के साथ-साथ। यह सब सारा जो प्रसंग है पाण्डाल, मञ्च इत्यादि का वह सब महामण्डलेश्वर श्री-व्रजविहारीशरणजी 'राजीव' उनका निर्देशन भी बहुत अद्भुत रहा है। इसी प्रकार हमारे समितियों के कार्यकर्ताओं ने जो अपनी सेवायें प्रस्तुत की हैं वह भी परम महनीय है सभी का सर्वतोभावेन योगदान है, एक ही चक्का की गाड़ी तो चलती ही नहीं है सभी का सामूहिक रूप से जब सहयोग होता है, योगदान होता है तभी कार्य पूर्णतः सफल होता है। यहाँ पर अभी आप हमारे रामानुजाचार्यजी महाराज ने जो उद्बोधन दिया, हमारे शंकराचार्यजी महाराज ने और पहले श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराज ने जो अपने दिव्य प्रवचनों में भाव व्यक्त किये, रामानन्दाचार्यजी महाराज जो आज प्रातःकाल जिनका आप सबों ने दर्शन किया और कल श्रीहर्याचार्यजी महाराज ने जिनका प्रवचन श्रवण किया, बड़ा सरस प्रवचन श्रीवल्लभाचार्यजी महाराज ने और इसी प्रकार शाहपुरा से पधारे हुये हमारे रामस्नेही सम्प्रदायाचार्यप्रवर ने, दादू सम्प्रदायाचार्यप्रवर आदि सभी ने पधारकर के अनुपम कृपा की है, न हमारे इधर से किसी प्रकार का कोई सेवा सम्मान, कोई कार्य करना कुछ भी तो नहीं, कोई व्यवस्था नहीं। अरण्य प्रदेश क्षेत्र है हम लोग जंगल में निवास करते हैं रेतीला क्षेत्र है, जल के दर्शन भी कठिन है सारी समस्यायें हैं, जहाँ धूल भरी आँधी चलती है फिर यह ज्येष्ठ मास बड़ा इसको श्रेष्ठ कहें, प्रेष्ठ कहें क्या कहें अद्भुत जहाँ गीष्म का तीव्र ताप है ऐसे में जब यह पण्डाल भी इतना व्यवस्थित नहीं बन सका जैसा होना चाहिये, सूर्य की रश्मियाँ परिव्याप्त है परन्तु भगवज्जनों की महिमा का वर्णन करना कठिन है, भूख-प्यास का पता नहीं कब जल पीते हैं, कब विश्राम करते हैं कुछ भी तो नहीं, जब देखते हैं जब पण्डाल भरा हुआ ही दीखता है। जब आते हैं रात्रि के दो बजे देखते हैं तो वही स्थिति है, मध्याह्न में देखें, प्रातःकाल देखें, अपराह्न में देखें, सन्ध्या के समय देखें जिस समय भी अवलोकन किया जाय यही स्थिति है। वस्तुतः आज हम लोगों के सामने अनेक समस्यायें हैं, राष्ट्र के सामने विभिन्न प्रकार की जो परिस्थितियाँ हैं हमारे सनातन धर्म जगत् के सामने जो अनेक प्रसंग हैं उन सबके समाधान के लिए इन आचार्य-प्रवरों ने जो निर्देश दिये हैं वह अनुपम है, अवधारणीय है, आचरणीय है, अनुकरणीय है, परिपालनीय है। अब हम तो जैसे भी हैं आपके हैं जिस अवस्था में हैं जैसे भी हैं जो भी यहाँ

नाना प्रकार की अव्यवस्थायें, त्रुटियाँ न जाने किन-किन को कैसा-कैसा कष्ट हुआ होगा, इन आचार्यप्रवरों की कोई व्यवस्था न कर सके, सन्त-महात्माओं की व्यवस्था नहीं हुई, भक्तजनों को नहीं हुई, समिति के कार्यकर्ताओं की नहीं हुई और यह समागत जो अनन्त रूप से धर्मप्राण भावुकजन यहाँ अवस्थित हैं उनकी कोई व्यवस्था नहीं, किसी की कोई व्यवस्था नहीं परन्तु सबकी कृपा है। जब सबकी कृपा समवेत रूप से होती है तो उसी से हम अपने आपको कृतार्थ मानते हैं और फिर यह है जब भगवान् स्वयं नृसिंहजी स्वयं सर्वेश्वर भी प्रह्लाद के सम्मुख क्षमा याचना करते हैं इसी प्रकार जब सर्वान्तरात्मा सर्वाधिष्ठान सर्वज्ञ श्रीसर्वेश्वर प्रभु भी क्षमा याचना करते हैं जब अपने प्रपन्न भक्त के सामने तो इसी प्रकार समवेत रूप से सभी भगवज्जन, आचार्यप्रवर, विद्वत्प्रवर और सन्तप्रवर सभी से हम क्षमापूर्वक यह भावना व्यक्त करते हैं कि आपको किसी भी विधा से कोई भी कष्ट हुआ हो तो आप क्षमा पूर्वक अपनी करुणामयी दृष्टि से अभिषिक्त कर दें जिससे कि हमारा जीवन चरितार्थ हो जाय, इन्हीं वचनों के साथ हम अपने भावों को विराम दे रहे हैं।

श्रीभीमकरणजी छापरवाल, अध्यक्ष–स्वागत समिति

आचार्यपीठाभिषेक स्वर्णजयन्ती महोत्सव पर आयोजित इस सप्त दिवसीय अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के संरक्षक अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज, सभा में विराजमान जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीवासुदेवानन्दजी महाराज, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीहर्याचार्यजी महाराज, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीरामेश्वराचार्यजी महाराज, जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्रीवासुदेवाचार्य जी महाराज, श्रीमहन्त श्रीनृत्यगोपालदासजी महाराज, समुपस्थित पूज्य समस्त महामण्डलेश्वर, मण्डलेश्वर तथा दिगम्बर, निर्वाणी, निर्मोही अनियों के श्रीमहन्त, अन्य श्रीमहन्त, महन्त तथा सन्त मण्डल एवं समस्त महानुभावों !

आप सबने कृपा पूर्वक पधार कर इस आयोजन को अत्यन्त सफल बनाया है तथा आचार्यश्री के प्रति अगाध श्रद्धा भावना अभिव्यक्त की है। प्रतिदिन लगभग ५० हजार से भी अधिक सम्मेलनार्थियों ने यहाँ आकर सनातन धर्म सम्मत ज्ञान, भक्ति एवं सदुपदेशों का, राष्ट्रीय स्तर के भक्ति संगीत, कवि सम्मेलन, सम्मान समारोह का अभूतपूर्व आनन्द प्राप्त किया। प्रतिदिन रासलीला, यज्ञ, भगवान् श्रीसर्वेश्वर एवं श्रीराधामाधवजी मन्दिर के दर्शन, फूल-बंगला, छप्पन भोग आदि के लाभ लिए हैं।

यह सम्मेलन कुम्भ पर्व से भी महत्वपूर्ण कहा जायेगा क्योंकि हम सबने यहाँ मूर्द्धन्य शंकराचार्य, सनातन धर्म के समस्त जगद्गुरु, समस्त वैष्णवाचार्य, गणमान्य महामण्डलेश्वर, मण्डलेश्वर, श्रीमहन्त, सन्त–महन्तों के एक मंच पर एकात्म रूप में भव्य दर्शन करते हुए उन्हीं के श्रीमुख से राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की विविध ज्वलन्त समस्याओं के समाधान सुनकर, दिशादर्शन प्राप्त किया है। राष्ट्रीय स्तर के सभी समाचार पत्रों में इसकी अद्भुत चर्चाएँ हुई है। इस प्रकार यह सम्मेलन 'न भूतो न भविष्यति' सिद्ध हुआ है। इस भीषण ग्रीष्मकाल में आपका पधारना अत्यन्त कष्टप्रद रहा है पर समागत भावुक भक्तों ने आवास, भोजन प्रसाद

आदि की असुविधाओं की परवाह न कर प्रतिदिन १८-२० घन्टों तक सभा मञ्च में अत्यन्त शान्त भाव से लगातार बैठे रहकर आचार्यचरणों के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति का परिचय दिया है। सभी धर्माचार्य, सन्त-महन्त, विद्वान्, भक्तों को जो असुविधायें, त्रुटियाँ अनुभूत हुई है उन्हें हमारी विवशताएँ मानकर कृपा पूर्वक क्षमा करावें।

श्रीजुगलकिशोरजी तोषनीवाल, स्वागताध्यक्ष

प्रातः स्मरणीय श्रीआचार्यचरणों की स्वर्णजयन्ती के शुभावसर पर आयोजित इस अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन में पधारे हुए सभी पूज्य आचार्यचरणों, जगद्‌गुरु, सन्त-महन्त महानुभावों के प्रति मैं स्वागत समिति की ओर से हार्दिक धन्यवाद अर्पित करता हूँ कि उन्होंने कृपा पूर्वक यहाँ पधार कर के हमें वचनामृत देकर कृतार्थ किया। आपके दर्शनों से यहाँ कुम्भ पर्व जैसा अनुपम लाभ मिला है।

सम्मेलन में लाखों भक्त आये हैं, सभा मण्डप में २५-३० हजार लोग लगातार कई घन्टों तक शान्ति पूर्वक बैठे रहे हैं, यह उनकी आचार्यचरणों के प्रति अगाध भक्ति है। उनको व्यवस्था सम्बन्धी जो कष्ट हुआ है उसके लिए करबद्ध क्षमा प्रार्थना है। आचार्यचरणों के चमत्कार से ही यह सम्मेलन सफल हुआ है। श्रीसर्वेश्वर भगवान् से प्रार्थना है कि हमारे आचार्यश्री शतायु हों जिससे हमें ऐसे कई सम्मेलन देखने का लाभ मिले।

श्रीराधेश्यामजी ईनाणी, महामन्त्री–स्वागत समिति

आचार्यपीठाभिषेक स्वर्णजयन्ती महोत्सव पर आयोजित इस सप्त दिवसीय अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के संरक्षक अनन्त श्रीविभूषित जगद्‌गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज, सभा में विराजमान जगद्‌गुरु शंकराचार्य श्रीवासुदेवानन्दजी महाराज, जगद्‌गुरु रामानन्दाचार्य श्रीहर्याचार्यजी महाराज, जगद्‌गुरु रामानन्दाचार्य श्रीरामेश्वराचार्यजी महाराज, जगद्‌गुरु रामानुजाचार्य श्रीवासुदेवाचार्य जी महाराज, श्रीमहन्त श्रीनृत्यगोपालदासजी महाराज, महामण्डलेश्वर, मण्डलेश्वर, तथा दिगम्बर, निर्वाणी, निर्मोही अनियों के श्रीमहन्त, अन्य श्रीमहन्त तथा सन्त मण्डल एवं समस्त भक्त महानुभावों !

मैं समागत सभी जगद्‌गुरु, धर्माचार्य, सन्त-महन्त एवं भक्त महानुभावों, भक्तिमति माताओं का अत्यन्त आभार व्यक्त करता हूँ कि आपने यहाँ पधार कर के कठोर ग्रीष्मकाल में सात दिन तक लगातार आवास, भोजन प्रसाद एवं आवागमन की असुविधाओं को सहते हुए सम्मेलन को सफल बनाया इसके लिए हम पूर्ण आभारी हैं।

पूज्य आचार्यश्रीचरणों ने हमें इस आयोजन के लिए महत्वपूर्ण दिशा दर्शन दिया है अतः हम सब उनके प्रति अत्यन्त विनीतभाव से कृतज्ञता प्रकट करते हैं तथा उनके दीर्घ आयुष्य के लिए श्रीसर्वेश्वर भगवान् से मंगल अभ्यर्थना करते हैं। इस आयोजन को सफल बनाने में हमें आरक्षी विभाग, बिजली-जल आपूर्ति विभाग, टेलीफोन विभाग, आयुर्वेद-चिकित्सा आदि विभागों ने अपूर्व सहयोग दिया है। साथ ही विभिन्न सामाजिक संगठनों, पत्रकारों एवं स्वयंसेवकों ने हमारा सक्रिय सहयोग किया है, मैं उन सबका हार्दिक धन्यवाद प्रकट करता हूँ।

श्रीगोपाल महायज्ञ का समापन

(ज्येष्ठ शु० ७ शुक्रवार वि० सं० २०५० दिनांक २८-५-९३ ई०)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव स्वर्णजयन्ती महोत्सव के शुभावसर पर विश्व कल्याण की भावना से आयोजित सप्त दिवसीय श्रीगोपाल महायज्ञ का आज समापन दिवस था। मध्याह्न १ बजे जैसे ही आचार्यश्रीचरणों का यज्ञ मण्डप में पादार्पण हुआ हजारों की संख्या में प्रातःकाल से उपस्थित भक्तजनों ने पूरे यज्ञ मण्डप को "श्रीसर्वेश्वर भगवान् की जय", "श्रीनिम्बार्क भगवान् की जय", श्री "श्रीजी" महाराज की जय से गुञ्जायमान कर दिया। तदनन्तर ५१ वैदिक विद्वानों ने आधा घन्टे तक पूर्णाहुति के वेदमन्त्रों का उच्चारण करते हुए आचार्यश्री के सान्निध्य में पूर्णाहुति का कार्यक्रम सम्पन्न कराया, यज्ञ में बैठे पाँचों यजमान दम्पत्तियों ने पूर्णाहुति दी। जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज ने यज्ञ की पूर्णाहुति के समापन पर अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि यह यज्ञ मानव मात्र के कल्याण के लिए आयोजित किया गया था। यज्ञ की पावन महिमा से श्वेत यव अंकुरों का दुर्लभ व विस्मयकारी चमत्कारिक रूप से अङ्कुरित होना इस यज्ञ की सफलता का द्योतक है। पश्चात् 'यज्ञ भगवान् की जय' के साथ यज्ञ मण्डप की चार परिक्रमाओं के पश्चात् सप्त दिवसीय स्वर्णजयन्ती महोत्सव का आज विधिवत् समापन हो गया।

इस पञ्चकुण्डीय श्रीगोपाल महायज्ञ में पाँच जोड़ों ने भाग लिया। प्रधान कुण्ड पर श्रीराजगोपालजी तोषनीवाल बीजापुर मुख्य यजमान थे। अन्य चार यज्ञ कुण्डों पर क्रमशः श्रीघनश्यामजी तोषनीवाल बीजापुर, श्रीबंकटलालजी बंग धूलिया, श्रीगणेशनारायणजी भराडिया बम्बई तथा श्रीनन्दलालजी अग्रवाल बालोतरा यजमान थे। सात दिन तक ११ पण्डितों द्वारा श्रीमद्भागवत, गीता, श्रीगोपालसहस्रनाम व सुदर्शनकवच के पाठ एवं श्रीगोपाल मन्त्र जाप अनवरत चलते रहे। सवा लाख पुरश्चरण व एक लाख ८० हजार आहुतियों द्वारा यह मांगलिक कार्य सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन दस हजार श्रद्धालुओं ने यज्ञ के दर्शन व परिक्रमा का लाभ उठाया।

पूर्णाहुति के समय अपार भीड़ एकत्रित हो गई थी। प्रातःकाल से ही श्रद्धालुजन यज्ञ मण्डप स्थल पर एकत्रित होना प्रारम्भ हो गये थे, मध्याह्न तक भीषण गर्मी व तेज धूप होने पर भी लोगों के आने की कतार लगी हुई थी, लगभग दस हजार श्रद्धालुओं ने यज्ञ की पूर्णाहुति के दर्शन व यज्ञ मण्डप की परिक्रमा का लाभ उठाया।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वर-शरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के आचार्यपीठाभिषेक अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

पर सप्त दिवसीय

अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन

के अन्तर्गत आयोजित–

卐 **हिन्दु संस्कृति सम्मेलन**

卐 **विश्व शान्ति सम्मेलन**

卐 **शिक्षा सम्मेलन**

एवं

卐 **महिला सम्मेलन**

में

पारित-प्रस्ताव

अखिल भारतीय सनातन धर्म-सम्मेलन के अन्तर्गत आयोजित

विभिन्न सम्मेलनों में पारित-प्रस्ताव

हिन्दू संस्कृति सम्मेलन में दि० २४-५-९३ को पारित-प्रस्ताव

प्रस्ताव सं० १—

※ अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) अजमेर में श्रीनिम्बार्काचार्यपाठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज की स्वर्णजयन्ती महोत्सव पर आयोजित अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन की यह सभा मानती है कि भारत की केन्द्रीय सरकार सम्पूर्ण देश में कानून बनाकर गो हत्या प्रतिबन्धित करने में पूर्णतया असफल और निश्चेष्ट रही है। यह राष्ट्र का ज्वलन्त प्रश्न है जो कि भारतीय संस्कृति का मेरूदण्ड तथा हिन्दू धर्म का प्राण तत्त्व है। अतः समस्त सनातन धर्म सम्प्रदायी लोगों की यह प्रतिनिधि विराट् सनातन धर्म महासभा सर्वसम्मति से यह मांग करती है कि सरकार सम्पूर्ण भारतवर्ष में इस विषय पर जनमत संग्रह कराकर अविलम्ब निर्णय ले।

समर्थक :	प्रस्तावक :
डा० रामप्रसाद शर्मा	**चन्द्रदत्त पुरोहित**

प्रस्ताव सं० २—

※ अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) अजमेर में श्रीनिम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज की स्वर्णजयन्ती समारोह पर आयोजित अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन की यह सभा मानती है कि राजस्थान सरकार आये दिन कानून बनाकर देवस्थान एवं मन्दिरों के सम्बन्ध में हस्तक्षेप कर रही है और इस प्रकार संविधान द्वारा प्रदत्त धार्मिक स्वतन्त्रता के अधिकारों का हनन कर रही है जो कि लोकतन्त्रात्मक शासन की रीति नीति के प्रतिकूल कार्य है। अतः यह सभा राज्य सरकार से मांग करती है कि धार्मिक एवं देवस्थानों पर नियन्त्रण करने सम्बन्धी समस्त कानूनों को तत्काल निरस्त करके जनता की भावना का आदर करे।

अनुमोदक :	प्रस्तावक :
स्वामी कन्हैयालाल	**आचार्य हरिशरण उपाध्याय**
दयाशंकर शास्त्री	

प्रस्ताव सं० ३—

※ अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) अजमेर–राजस्थान में स्वर्णजयन्ती महोत्सव पर आयोजित अ० भा० सनातन धर्म सम्मेलन की यह विराट्

सभा यह अनुभव करती है कि भारतीय संस्कृति की मुख्य अंग गो माता की हत्या पर भारत के स्वतन्त्र होते ही प्रतिबन्ध लगना नितान्त आवश्यक था किन्तु बड़े खेद की बात है कि स्वतन्त्र भारत में आज तक गोहत्या पर प्रतिबन्ध नहीं लगना भारत के भाल पर यह एक महान् कलंक है।

अतः यह सभा भारत सरकार से मांग करती है कि अविलम्ब कानून द्वारा सम्पूर्ण देश में गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगाकर भारत की कोटि-कोटि जनता की भावना का आदर करे।

समर्थक :
आचार्य हरिशरण उपाध्याय

प्रस्तावक :
दयाशंकर शास्त्री

प्रस्ताव सं० ४—

※ अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) अजमेर में श्रीनिम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज की स्वर्णजयन्ती समारोह पर आयोजित अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन की यह सभा मानती है कि भारत सरकार सम्पूर्ण देश में धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध न लगाकर विदेशी पूंजी के आधार पर राष्ट्र में सक्रिय हो रहे अलगाववादी असामाजिक तत्वों का मार्ग प्रशस्त कर रही है। ऐसी स्थिति में यह सभा भारत सरकार से मांग करती है कि धर्मान्तरण पर कानूनी प्रतिबन्ध लगाकर राष्ट्रवादी जनता की भावना का आदर करे।

अनुमोदक :
स्वामी कन्हैयालाल
चन्द्रदत्त पुरोहित

प्रस्तावक :
सीताराम शास्त्री

प्रस्ताव सं० ५—

※ अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) अजमेर-राजस्थान में स्वर्णजयन्ती महोत्सव पर आयोजित अ० भा० सनातन धर्म सम्मेलन की यह विराट् सभा अनुभव करती है कि हमारे कृषि प्रधान भारत देश में सांस्कृतिक एवं आर्थिक दृष्टि से योजनाबद्ध उपायों से गो पालन परमावश्यक है, किन्तु भयंकर महर्घता के कारण हमारे देश की जनता गोपालन करने में भारी कठिनाई का अनुभव करती है। अतः भारी संख्या में समुपस्थित जनता के रूप में यह सभा भारत सरकार तथा प्रान्तीय सरकार से मांग करती है कि—इस भयंकर मंहगाई के समय में देशभर में स्थान-स्थान पर राजकीय गोशालाओं की स्थापना करे एवं गोपालनकर्ताओं को अल्प मूल्य पर घास उपलब्ध कराने की योजना बनाकर राष्ट्रीय कर्तव्य का पालन करे।

समर्थक :
दयाशंकर शास्त्री

प्रस्तावक :
चन्द्रदत्त पुरोहित

⁝—⁝

विश्व शान्ति सम्मेलन में दि. २५-५-९३ को पारित–प्रस्ताव

प्रस्ताव सं० १—

※ अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) अजमेर में श्रीनिम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज की स्वर्णजयन्ती समारोह पर आयोजित अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन की यह सभा ऐसा अनुभव करती है कि मादक द्रव्य एवं मद्य निषेध सम्बन्धी भारत सरकार की नीति विरोधात्मक है क्योंकि सरकार एक ओर तो उत्पादित नशीली वस्तुओं पर "स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है" के लेबल लगवाती है तो दूसरी ओर इनके उत्पादन लाईसेन्स–परमिट मुक्त हस्त से देकर इनका भारी उत्पादन कराती है। ऐसा करना मानव हितों के साथ भारी खिलवाड़ है, स्वयंसिद्ध जालसाजी जैसा काम है। अतः यह सभा मांग करती है कि ऐसी दोहरी नीति छोड़कर नशा निषेध के लिए व्यावहारिक कानून बनाकर इसे अविलम्ब प्रतिबन्धित करे।

अनुमोदक : **डा० रामप्रसाद शर्मा**

प्रस्तावक : **खेमराज केशवशरण शास्त्री**

प्रस्ताव सं० २—

※ अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) अजमेर में श्रीनिम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज की स्वर्णजयन्ती समारोह पर आयोजित अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन की यह सभा अनुभव करती है कि भारत सरकार नई पीढ़ी में नशा व्यसन के प्रचलन को बढ़ावा दे रही है, क्योंकि ऐसे उत्पादकों के प्रति वह कोई कानूनी प्रतिबन्ध की कार्यवाही नहीं कर रही है जो कि नशीले उत्पादों पर मुग्धकारी भगवत् नामांकनों एवं चित्रों का प्रयोग कर रहे हैं, विशेष रूप से महाविनाशकारी जर्दा के गुटकों पर इसी प्रकार के लुभावने आवरण देकर अबोध बालकों को इसका व्यसनी बना रही है तथा नौनिहालों को मौत के मुँह में धकेल रही है। ऐसी परिस्थिति में विराट् सनातन धर्म सम्मेलन की यह सभा भारत सरकार से अनुरोध पूर्वक मांग करती है कि नशीले पदार्थों एवं विशेष रूप से इन गुटकों के ऐसे विज्ञापनों पर अविलम्ब कानूनी प्रतिबन्ध लगावे।

अनुमोदक : **म० राधाकृष्णदास**
दयाशंकर शास्त्री

प्रस्तावक : **डा० रामप्रसाद शर्मा**

प्रस्ताव सं० ३—

※ अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) अजमेर में श्रीनिम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज की स्वर्णजयन्ती समारोह पर आयोजित अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन की यह सभा अनुभव करती है कि हमारे सनातन धर्म समाज की नई पीढ़ी अपने परम्परागत गौरवशाली संस्कारों का परित्याग करती जा रही है।

पाश्चात्य संस्कृति के अन्धानुकरण से हिन्दुत्व के प्रमुख प्रतीक "शिखा और सूत्र" को रखना अब कोई पसन्द नहीं करता जिसकी रक्षा हमारे ऐतिहासिक महापुरुष राणा प्रताप, शिवाजी, गुरुगोविन्दसिंहजी ने प्राणप्रण से की थी। अतः आज यह विराट् सनातन धर्म सम्मेलन सभा प्रस्ताव करती है कि हम स्वयं शिखा (चोटी) रखेंगे तथा हमारी नई पीढ़ी को भी इस ओर प्रेरित करेंगे।

अनुमोदक :
सीताराम शास्त्री श्रोत्रिय

प्रस्तावक :
चन्द्रदत्त पुरोहित

प्रस्ताव सं० ४--

※ सनातन धर्म सम्मेलन की यह विशाल सभा अनुभव करती है कि राजस्थान की आयुर्वेद परीक्षाओं में प्रवेश के लिए न्यूनतम योग्यता के लिए उपाध्याय मान्य थी इसका परिवर्तन करके उपाध्याय के स्थान पर सीनियर हायर सैकण्डरी परीक्षा को मान लिया है यह सर्वथा अनुचित है, क्योंकि आयुर्वेद के लिये संस्कृत ज्ञान नितान्त अपेक्षित है। यह भी आवश्यक है कि आयुर्वेद के लिए विज्ञान का भी ज्ञान होना चाहिए।

यह सभा राजस्थान सरकार से मांग करती है कि उपाध्याय परीक्षा में ही वांछित विज्ञान के पाठ्यक्रम का समावेश करके आयुर्वेद में प्रवेश के लिए उपाध्याय परीक्षा को ही मान्य किया जावे।

समर्थक :
डा० रामप्रसाद शर्मा

प्रस्तावक :
दयाशंकर शास्त्री

शिक्षा सम्मेलन में दि० २६-५-९३ को पारित–प्रस्ताव

प्रस्ताव सं० १--

※ अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) अजमेर में श्री निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज की स्वर्णजयन्ती समारोह पर आयोजित अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन की यह सभा मानती है कि हमारी संस्कृति की मूलाधार गो-गंगादि के स्वरूप एवं उसके सम्मान के प्रति अनुदारता एवं उपेक्षा का वर्ताव कर रही है ऐसी बातें शैक्षणिक पाठ्यक्रमों से निरस्त कर रही हैं जो कि इनके प्रति सम्मानसूचक है। अतः यह सभा राजस्थान सरकार से निवेदन करती है कि शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में किये जा रहे इन परिवर्तनों को अविलम्ब रोका जावे।

अनुमोदक :
चन्द्रदत्त पुरोहित

प्रस्तावक :
वासुदेवशरण उपाध्याय

प्रस्ताव सं० २--

※ अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) अजमेर में श्रीनिम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज की स्वर्णजयन्ती समारोह पर आयोजित अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन की यह सभा मानती है कि वर्तमान शिक्षा और उसका पाठ्यक्रम नितान्त अव्यावहारिक और जीवन में अनुपयोगी सिद्ध हुआ है । अतः यह सभा मांग करती है कि शिक्षा नीति में आमूलचूल परिवर्तन किया जावे तथा पाठ्यक्रम में नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा का समावेश किया जावे ।

अनुमोदक :
डा० रामप्रसाद शर्मा
सीताराम शास्त्री श्रोत्रिय

प्रस्तावक :
प्रो० श्रीमती विमला भास्कर

प्रस्ताव सं० ३--

※ अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) अजमेर में श्रीनिम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज की स्वर्णजयन्ती समारोह पर आयोजित अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन की यह सभा ऐसा अनुभव करती है कि धार्मिक शिक्षा के नाम पर गांव-गांव में चलाये जा रहे मकतना मुस्लिम भाईयों की नई पीढ़ी को हमारी राष्ट्रधारा से प्रतिकूल रहने की मानसिकता बना रहे हैं । हमारे देश की संस्कृति रीति-नीति एवं एकात्म भावना को ह्रास होता जा रहा है । अतः भारत सरकार अविलम्ब ऐसी राष्ट्र विरोधी गतिविधियों पर रोक लगावे ।

अनुमोदक :
चन्द्रदत्त पुरोहित
प्रो० (डा०) विमला भास्कर

प्रस्तावक :
सीताराम शास्त्री श्रोत्रिय

प्रस्ताव सं० ४--

※ अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) अजमेर में श्रीनिम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के आचार्यपीठाभिषेक स्वर्णजयन्ती महोत्सव के अवसर पर आयोजित अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन की सभा यह अनुभव करती है कि हमारे देश में चलाये जा रहे (मदरसे) ईसाई शिक्षण संस्थाएँ योजनाबद्ध रूप से हमारे भाईयों में राष्ट्र विरोधी आचरण की शिक्षा देते हुए राष्ट्रीय धारा से विमुख करती जा रही है । इन परिस्थितियों में सनातन धर्म सम्मेलनार्थ समागत सभी धर्माचार्यों, गणमान्य महन्त, सन्तों से निवेदन है कि हमारी सांस्कृतिक परम्परानुसार सुनियोजित पाठ्यक्रमों की व्यवस्था करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर भव्य व आधुनिक शिक्षण संस्थाएँ चलानी चाहिए ।

अनुमोदक :
ब्रजमोहन शर्मा

प्रस्तावक :
दुर्गाशंकर गुप्ता

धार्मिक न्यासों सम्बन्धी अधिसूचना को निरस्त करने हेतु राज्यपाल महोदय को भेजा गया

खुले अधिवेशन में स्वीकृत प्रस्ताव

अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) अजमेर राजस्थान का यह महाधिवेशन राजस्थान के माननीय महामहिम राज्यपाल महोदय द्वारा प्रधान सचिव महोदय देवस्थान राजस्थान सरकार से अनुरोध करता है कि देवस्थान वक्फ सैनिक कल्याण सचिवालय राजस्थान द्वारा १६ फरवरी १९९३ की राजस्थान राजपत्र में प्रकाशित अधिसूचना जिसमें राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम अध्याय १० धारा ५२ (ई) को प्रभावी किया गया है उस अधिसूचना को तुरन्त प्रभाव से निरस्त करने का नवीन आदेश प्रसारित करने का श्रम करें।

यह अधिवेशन अनुभव करता है कि यह अधिसूचना जल्दी में बिना विचार-विमर्श के तथा उचित परामर्श लिये बिना ही विज्ञापित की है। क्योंकि धार्मिक न्यास पूर्व में ही पंजीकृत है तथा सभी न्यासों में न्यास मण्डल समितियां परम्परागत एकल न्यासी आदि विधिवत् उस न्यास के मतानुसार प्रबन्धक धार्मिक प्रबन्ध आदि विधिवत् चलाये जा रहे हैं। सभी न्यासों में हजारों व्यक्ति प्रसन्नता पूर्वक लाभान्वित हो रहे हैं, चार्टड एकाउन्टेन्ट से न्यासों का विधिवत् आडिट होता है, बजट बनता है सारी व्यवस्थाएँ विधिवत होती है इस प्रकार सभी न्यास निरन्तर प्रगति पर है। महाधिवेशन अनुभव करता है कि हिन्दू सनातन परम्परा के सम्प्रदायों के धार्मिक न्यास गुरु की प्रधानता वाले होते हैं। जहाँ गुरु ही गुरु शिष्य परम्परा के क्रम में धार्मिक सम्प्रदाय के रीति–रिवाज़ परम्परा शास्त्र परम्परा के अनुसार एक न्यासी का स्वनिर्मित न्यास मण्डल द्वारा समस्त सुप्रबन्ध किये जा रहे हैं तथा भविष्य में किये जाते रहेंगे।

इस अधिसूचना द्वारा न्यासी तथा न्यास मण्डल पर एक ओर सरकार द्वारा मनोनीत प्रबन्ध समिति की रचना दोहरी व्यवस्था-अव्यवस्था वाद-विवाद अनुभवहीनता के कारण न्यास का भारी नुकसान प्रगति में अवरोध होना सुनिश्चित है। अतः इन न्यासों का पंजीयन तथा अन्य धाराओं द्वारा आवश्यक सुप्रबन्ध नियन्त्रण पूर्व से ही व्यवस्थित है। अतः अकारण न्यासों को आपत्ति में डालने वाली इस अव्यवस्था को जन्म देने वाली अधिसूचना को तुरन्त प्रभाव से निरस्त करने का कष्ट करें।

अधिवेशन अनुभव करता है कि यदि यह अधिसूचना जारी रही तो पूरे राजस्थान में अकारण आन्दोलन, न्यासों के अदालतों के चक्कर, जन आर्थिक हानि आदि व्यर्थ की समस्याएं उत्पन्न हो जायेगी, जो न राज्य सरकार और न न्यासों के हित में हैं। अतः इस अधिसूचना को अविलम्ब निरस्त करने का कष्ट करें।

यह प्रस्ताव श्रीमान् की सेवा में प्रेषित कर अनुरोध है कि आप अपनी इस अति-महत्वपूर्ण संवेदनशील प्रश्न पर अपनी विवेकपूर्ण न्यास प्रियता से युक्त अपनी अनुकंपा माननीय महामहिम राज्यपाल महोदय तथा प्रमुख सचिव महोदय देवस्थान सचिवालय राजस्थान सर-

कार जयपुर राजस्थान को भिजवाने का श्रम करें। यह अधिवेशन इस प्रश्न पर सरकार को शीघ्र उचित निर्णय का अनुरोध करता है। सर्व सम्मति से स्वीकृत महाधिवेशन यह स्पष्ट करना उचित समझता है कि सनातन धर्म के धार्मिक न्यासों की परम्परा में गुरु शिष्य परम्परा ही प्रचलित है जबकि जैन, सिख, ईसाई, पारसी, धर्म स्थानों में गुरु शिष्य परम्परा से प्रबन्ध नहीं होता है। जबकि सनातन धर्म के सम्प्रदायों के धार्मिक स्थानों पर प्रबन्ध गुरु की आज्ञा से किया जाता है। अतः नई प्रबन्ध समिति बनाकर विघ्न उत्पन्न करना उचित नहीं मानती है। अतः यह अधिसूचना निरस्त के योग्य है।

अनुमोदक :
राधेश्याम ईनाणी

प्रस्तावक :
डा० रामप्रसाद शर्मा

महिला सम्मेलन में दि० २७-५-९३ को पारित–प्रस्ताव

※

१. महिलाओं को हर शिक्षा का समुचित अवसर निःशुल्क प्राप्त हो।

२. गांव–गांव तक महिलाओं में शिक्षा का प्रचार प्रसार।

३. शिक्षित महिलाओं को सरकारी नौकरियों में स्थान।

४. विधवा, परित्यक्ता, शिक्षित महिलाओं को रोजगार में प्राथमिकता।

५. विकृत दहेज प्रथा, टीकाप्रथा आदि के विरोध में सामाजिक चेतना, मामाजिक संस्थाओं द्वारा तथा सरकार द्वारा।

६. दहेज आदि कुरीतियों से पीड़ित महिलाओं को समाज का समर्थन, संरक्षण, शोषण करने वाले तत्वों को शीघ्र कठोर दण्ड व्यवस्था, शोषित मसिलाओं को समुचित न्याय।

७. परदा प्रथा का विसर्जन।

८. स्त्रियों में परिवार नियोजन के प्रति सही शिक्षा, चेतना जगाना आवश्यक।

९. नारी प्रधान अश्लील विज्ञापन, फिल्मों, दूरदर्शन द्वारा नारी के अपमानजनक चित्रों के प्रसारण का सामाजिक, धार्मिक मञ्चों द्वारा खुला विरोध हो तथा सरकार द्वारा इस विषय में कड़े प्रतिबन्ध का रुख अपनाया जाये।

१०. स्त्रियां धर्म एवं संस्कृति के संरक्षण की संवाहक बनें।

—**प्रभा ठाकुर**

भारतीय संस्कृति में नारी गौरव

सामाजिक परिपेक्ष में मानवजीवन की आधारशिला उसकी प्राचीनतम संस्कृति है। हमारा देश मूल रूप से अपनी महान् संस्कृति के कारण विश्वभर में आकर्षण का केन्द्र रहा है। वास्तविकता तो यह है कि विश्व के रंगमञ्च पर भारत की प्राचीन गरिमा का श्रेय उन चन्द नेताओं को नहीं अपितु उस वीरप्रसूता जननी को है जिसने धार्मिक, राजनैतिक, साहित्यिक आदि विभिन्न क्षेत्रों में अपना अदम्य साहस एवं प्रतिभा दिखाकर यह कहने को विवश कर दिया है कि सदा से विश्व का भारत की ओर अपलक दृष्टि का कारण रही हैं हमारी प्राचीन भारतीय नारियाँ।

हमारे भारत में विश्व संस्था "संयुक्त राष्ट्र संघ" के अध्यक्ष पद को सुशोभित करने वाली विजयालक्ष्मी पण्डित ने हमारे देश को विश्व में गौरव प्रदान किया। विद्वता के क्षेत्र में महादेवी वर्मा ने अपनी कृतियों के माध्यम से साहित्योत्थान को सुरभित करते हुए देश की महान् सेवा की। जिसके हम सदैव आभारी रहेंगे। तिलोत्तमा जैसी महान् नारियों ने बड़े-बड़े शास्त्रार्थ में पुरुषों को परास्त कर उनके उत्थान का प्रेरणा स्रोत बन गई। इतना ही नहीं इतिहास के पन्ने पलटकर देखें तो असंख्य उदाहरण भरे पड़े हैं ऐसी वीरांगनाओं के, जिनका नाम इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में सदैव अंकित रहेगा।

लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगना ने विदेशी ताकतों को शक्तिहीन कर जो डटकर संग्राम किया, उसमें कमर में कसी उसकी ममता ने उसे किंचित्मात्र भी विचलित नहीं किया डटकर शत्रुओं को परास्त करती रही और अन्त में वीरगति को प्राप्त हो गई।

हाड़ी वाली रानी ने डोली से उतर कर युद्ध क्षेत्र में गए अपने पति को अपना शिर काटकर भेजने में तनिक भी संकोच नहीं किया और उसका पति धन्यमुण्डमाल कहकर युद्ध में जुट गया। राजा मोरध्वज की पत्नी अपने पति के साथ कठिन परीक्षा की कसौटी पर खरी उतरी और अपने पुत्र को आरे से चिरवाकर उनके समक्ष प्रस्तुत किया और किञ्चित्मात्र भी अश्रु उनके नेत्रों से नहीं टपका। निश्चय ही यही है अदम्य साहस एवं वीरता की पराकाष्ठा।

सामाजिक क्षेत्र में भी अनेक पद्मिनी आदि नारियाँ सतीत्व का उदाहरण प्रस्तुत कर अमरत्व को प्राप्त हुई। पतिव्रत धर्म के अनेक रोमांचकारी प्रमाण भारत के अतिरिक्त विश्व में कहीं नहीं हैं। जिसके कारण रामायण जैसा महाकाव्य भी विश्व प्रसिद्ध हो गया। सीताजी ने नारी धर्म का अनूठा उदाहरण अग्नि परीक्षा देकर प्रस्तुत किया। अनुसूयाजी ने पतिव्रत धर्म के प्रभाव से ब्रह्मा, विष्णु, महेश को बालरूप देकर वात्सल्य प्रकट किया। माता शांडिल्य ने भी पतिव्रत धर्म के प्रताप से सूर्य को रोकने की अद्भुत शक्ति दिखाई और पूर्ववत् अपने पति दर्शन का लाभ प्राप्त किया और सूर्य प्रकाशित हुए। इतना ही नहीं उर्मिला एवं सुलोचना जैसी पतिव्रताओं का तो निर्णय करना ही कठिन हो गया कि किसका धर्म श्रेष्ठ है।

राजरानी मीरा की प्रभु प्रेम की प्रगाढ़ता के कारण ही जहर का प्याला भी अमृत-स्वरूप बन गया।

आज भी हमारे देश में सती, पतिव्रता व वीरांगनाओं की कमी नहीं जिन पर हमें गर्व है। जो अपने संस्कारों एवं कलाकौशल के माध्यम से देश की महान् सेवा कर रहीं हैं तभी तो हमारे ग्रन्थों ने कहा है कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:" और सत्य ही कहा है कि "गृहणीहीनं गृहं अरण्यसदृशम्"।

राष्ट्र की प्रथम इकाई परिवार है। जिसकी अधिकतम सफलता मात्र स्त्री पर ही निर्भर है। माँ ही प्रथम गुरु है जिसकी शिक्षा की अमिट छाप बच्चे के मन-मस्तिष्क पर अंकित होकर उसके भावी जीवन की सफलता को प्रभावित कर अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्र की संस्कृति के उत्थान का योगदान बनती है।

यद्यपि आधुनिक युग में हम स्त्रियाँ उन्नति की ओर अग्रसर हो रही हैं तथापि मुझे यह कहने में कदापि संकोच नहीं कि आज पाश्चात्यमय बनने में हम जीवन की सार्थकता समझकर अपने को उन्नत कहलाने का दावा करते हैं। और साकार कर रहे हैं उन विदेशी स्वप्नों को जिन्होंने अपनी भाषा के माध्यम से हमें पाश्चात्यमय बनाकर हमारी प्राचीन संस्कृति पर कुठाराघात करने का लक्ष्य बनाया था। दुर्भाग्य की बात तो यह है कि हम अपनी राष्ट्रभाषा के बोलने के गौरव को तिरस्कार की दृष्टि से देखते हुए अंग्रेजी भाषा को आवश्यकता से अधिक सम्मान देने की भूल कर रहे हैं।

इसी प्रकार विदेशी परिवेश, रीति-रिवाजों व विचारों को अपनाने में ही अपने को आधुनिक समझते हैं। मुझे यह कहने में कदापि संकोच नहीं इसमें पूर्ण दोषी है हमारा महिला जगत्। जो आज की पीढ़ी में अच्छे संस्कार न डालकर, होड-प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हुए देश को पतन की ओर ले जाने में सहायक बन रही हैं। परिणाम स्वरूप अच्छे संस्कारों व अच्छी शिक्षा के अभाव में दहेज प्रथा जैसी भयंकर कुरीतियां उग्ररूप लेकर हमारे समक्ष आ खड़ी हैं और जीवन संघर्षमय बन गया है।

अत: आज हमें आधुनिकता एवं पुरातन संस्कृति का अनोखा सामञ्जस्य अपने मानस पटल पर अंकित करके देश के भावी कर्णधारों के जीवन को उज्ज्वलमय बनाना होगा तथा संघटित रूप से मर्यादानुरूप समस्त समस्याओं का निराकरण करना होगा। अन्ततोगत्वा सारुप में अपेक्षा है समाज से कि स्त्रियों को उचित स्थान व उचित सम्मान देकर उन्नति के अवसर प्रदान किए जायें और हम स्त्रियों को भी अपनी प्राचीन महान् संस्कृति के उदाहरण को समक्ष रखते हुए अपने परिवार के प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से निभाना है, अपनी संस्कृति की गरिमा को सुस्थिर रखते हुए उसे और सुदृढ़ बनाना है। यदि आज हम सब यह संकल्प लें तो वह दिन दूर नहीं जब हमारा भारत उन्नति के चरम-शिखर पर होगा और सफलता उसके कदम चूमेगी।

यही नहीं जो सेवा भाव, दयाभाव, चारित्रिक उत्कर्ष, सन्तोष एवं भक्ति व नारी सुलभ लज्जा, भारतीय नारी में पायी जाती है वह विश्व में कहीं नहीं पायी जाती। अतः यदि भारतीय नारी को समुचित शिक्षा मिले तो भारत को ही नहीं समस्त विश्व को एक नया मोड़ दे सकती है विश्वबन्धुत्व की भावना को स्थापित कर सकती है और "वसुधैव कुटुम्बकम्" की उक्ति चरितार्थ हो सकती है।

–ईश्वरी भटनागर

स्वर्णजयन्ती के शुभावसर पर–

ज्येष्ठ मास और श्रीनिम्बार्क

की

अनुपम – तुलना

ज्येष्ठ मास तू श्रेष्ठ मास है, क्या कहना है तेरा मित्र ।
स्नान दान और ईश भजन से, करता सबको परम पवित्र ।।

इसी मास के कृष्ण पक्ष की, पंचमी तिथि को जो आता ।
वामन भट्टाचार्य देव का, शुभ पाटोत्सव मन भाता ।।

ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी शुभ दिन, केशवकाश्मीरि भट्टाचार्य ।
परम सुपावन है पाटोत्सव, किया जिन्होंने अद्‌भुत कार्य ।।

शुक्ल पक्ष पंचमी शुभ दिन, दो पाटोत्सव अति सुन्दर ।
श्रीनिम्बार्कशरणदेव अरु, व्रजराजशरण आचार्यप्रवर ।।

तिथि सप्तमी शुक्ल पक्ष की, महा महिम मंगलकारी ।
श्रीस्वरूपाचार्य पाटोत्सव, हे ज्येष्ठ तुम्हारी बलिहारी ।।

शुक्ल पक्ष तिथि नवमी को, दो पाटोत्सव अति पावन ।
आनन्द मनोहर रूप मनोहर, वृन्दावन चन्द्र जू मन भावन ।।

राधामाधव राधासर्वेश्वर, दशमी तिथि को पाटोत्सव ।
देवि जाह्नवी श्रीगंगाजी का, जन्म दिवस और दिव्य महोत्सव ।।

वर्तमान आचार्यचरण का, है पाटोत्सव दिव्य महान ।
शुक्ल पक्ष की दूज तिथि को, दर्शन से होता कल्यान ।।

श्रीसर्वेश्वर राधामाधव, देते रहें सदा ही हर्ष ।
दिन दूना और रात चौगुना, बढ़े आपका नित उत्कर्ष ।।

ज्येष्ठ मास निम्बार्क प्रभु की, तुलना करके यों तोलो ।
'सन्त' सदा भज राधामाधव, सर्वेश्वर की जय बोलो ।।

रचयिता — पं० गोविन्ददास 'सन्त'

स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में सप्तपदी

रचयिता — भागीरथ भराड़िया, सेन्धवा

सम्पन्न हुआ यह स्वर्ण महोत्सव (श्री) चरणों का मंगलकारी ।
जन मन में श्रद्धा प्रेम बढ़ा आनन्द मग्न सब नर नारी ।।
(श्री) गोपालयज्ञ गौघृत द्वारा सम्पन्न हुआ सुखदाई है ।
दूषित वायु प्रभाव मिटा जग में और शुद्ध शान्ति जग छाई है ।।
श्रीचक्रराज निम्बार्क प्रभु ने स्वयं यहां अवतार लिया ।
(श्री) राधासर्वेश्वरशरण रूप में जग में भक्ति प्रचार किया ।।
हैं कृपा-वारिधर अति उदार श्रीचरण, दया के जल निधी हैं ।
परहित-रत, नवनीत-सदृश, अतिसरल, दिव्य-गुण वारिधी हैं ।।
दीर्घायु, स्वस्थ, चिरायू हों यह हार्दिक भाव हैं जनता में ।
हरिभक्ति प्रभाव बढ़े जग में हो प्रेम परस्पर जनता में ।।
श्रीनिम्बार्कतीर्थ में इस तरह होते रहते हैं आयोजन ।
उद्देश्य विश्वकल्याण का है श्रीचरणों का सारा जीवन ।।
श्रीराधामाधव श्रीसर्वेश्वर प्रभु से है अति पुकार दीन हीन जन की ।
आश्रय केवल श्रीचरणों का है (यह) विनय है भागीरथ जन की ।।

परम धन श्री श्रीजी महाराज

श्रीनिम्बार्काचार्य जगद्गुरु, श्री श्रीजी महाराज ।
वर्ष पंचाशत स्वर्णजयन्ती, दिव्य महोत्सव आज ।। परम ......
मङ्गल मोद बधाई बाजत, शुभ दिन शुभ घड़ी आज ।
जेष्ठ शुक्ल तिथि दूज सुहावनि, स्वर्णजयन्ती काज ।। परम ......
श्रीसर्वेश्वर रखते निशदिन, परमारथ का लाज ।
देन बधाई हुआ एकत्रित, वैष्णव बन्धु समाज ।। परम ......
जय जय जय श्रीराधामाधव, सर्वेश्वर महाराज ।
भाग्य उदय भये आज हमारे, दरश कर वैष्णव बन्धु समाज ।। परम ......
नित्य नये संकटमय बादल, आवत करि करि गाज ।
बुद्धिमान नर हैं जो बांधत, पानी पहिले पाज ।। परम ......
करें प्रतिज्ञा आज सभी हम, गो रक्षण के काज ।
आय करेंगे धर्म सुरक्षा, सर्वेश्वर महाराज ।। परम ......
सत्य सनातन धर्म हमारा, बना रहे सरताज ।
'सन्त' सदा भज राधामाधव, सब दुःख जायें भाज ।। परम ......

रचयिता — पं० गोविन्ददास 'सन्त'

श्रीगोपालयाग-स्वर्णजयन्ती महोत्सव प्रशस्तयः

श्रीमन्निम्बार्कपीठप्रकटितविभवाः सर्वतंत्रस्वतंत्रा
द्वैताद्वैताख्य सम्यक् श्रुति सममननस्पष्टसिद्धांतभाजः ।।
श्री श्रीश्रीजीतिसिद्धास्त्रिभुवगुरवो राजराजाधिराजाः
सौवर्णायोजनेऽस्मिन् यतिदिनपतयोऽनल्पकल्पं जयन्तु ।।१।।

सितद्वितीया सकला दर्शयन्ति विधोः कलाम् ।
धन्या ज्येष्ठद्वितीयेयं पूर्णचंद्रमदर्शयत् ।।२।।

सनातनाय धर्माय बृहदायोजनं त्विदम् ।
द्वितीयमपि दिव्यात्मन् अद्वितीयमिवोच्यते ।।३।।

निर्माणं चात्रनिर्मानं धर्मं रक्षसि वर्मवत् ।
कर्माणि लोकशर्माणि कोन्यो धन्योऽनुतिष्ठति ।।४।।

श्रोतारश्चात्र होतारः श्रौता धौतान्तरा द्विजाः ।
प्रेम्णि प्रोताश्च पूतात्मन् कलधौताभिधोत्सवे ।।५।।

गोपालयागोऽर्पितदेवभागो राधामुकुंदांघ्रिषु रम्यरागः ।
धर्माचलोद्धारणशेषनागः विराडयं कुंभ इव प्रयागः ।।६।।

भूभागेऽनवकाशपीडिततनुः कीर्तिः परं पीवरी
हर्म्योत्तंगविनिर्मितिव्यपदिशा स्वर्गोन्मुखं प्रोद्गता ।।
कुण्डस्यांगणसौदृढोद्धरणसद्व्याजेन शेषांतिकं
यातुं कामयते यथाऽत्रभवतामाचार्यवर्याधुना ।।७।।

स्तवनैः वसुपर्णैश्च सुवर्णैः कर्णतर्पणैः ।
सौवर्णी वैजयंतीव धूयतां श्रीमतां सदा ।।८।।

राधावल्लभः शास्त्री कचनारिया
दूदू (जयपुर)

श्रीगुरु महिमा

करें किस तरह हम वर्णन जो शुभ दिन आज आया है।
यह देखो गगन का चाँद, भूमी पर उतर आया है ॥
खिले हैं बाग-बगियां सब, अनोखा रंग छाया है ।
इच्छायें पूर्ण पाकर के, समय भी मुस्कुराया है ॥

पंचाशत वर्ष से शोभित किया इस राजगद्दी को ।
असीमित वर्ष हो पूरे, प्रभू से यह मनाया है ॥
फैलाई कीर्ति प्रभू की, घूम चारों दिशाओं में ।
विदेशों ने भी यश जिनका, मधुर वाणी में गाया है ॥

बड़े हैं भाग्य उस घर के, जिन्होंने "रत्न" जाया है ।
लुटा दी खुशियाँ सब जग को, इसी में सुख मनाया है ॥
न बीधे स्वर्ण के बन्धन, चमक थी जिनमें गौरव की ।
बड़ी ही सादगी का अब तलक जीवन बिताया है ॥

चपल है चाल मनोहारी, चरण पंकज लजाते हैं ।
यु बंधकर प्रेम धागे में, कष्ट कितने उठाते हैं ॥
दयामई दृष्टि हैं इनकी, जो हर दिल खींच लेती है ।
छुड़ा के जग के बन्धन को, प्रभू सान्निध्य देती है ॥

बड़े हैं भाग्य भूमी के जहाँ ये वास करते हैं ।
'माधव" भी छोड़कर वृज को यहीं उत्सव मनाते हैं ॥
कमी थी वृज के भक्तों में जो वृज को छोड़कर आये ? ।
बहाना करके उत्सव का सभी को खींच लाते है ॥

लेते हैं स्वयं से सेवा, स्वयं ठाकुर कहाते हैं ।
बिना राधा की सेवा के नहीं आनन्द पाते हैं ॥
मेरी अलपज्ञ बुद्धि आपको क्या जान पायेगी ।
क्षमा करिये मेरें अवगुण, तुम्हारे ही कहाते हैं ॥

संतों भक्तों का सदा रहे शीश पर हाथ ।
"ईश्वरी" मांगे है यही नित नव हो उलास ॥
कीर्ति पताका फहर कर, देवे नव संदेश ।
लग जाओ श्रीचरण में, समय नहीं अब शेष ॥

रचयित्री — ईश्वरीदेवी भटनागर, वृन्दावन

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ द्वारा सञ्चालित–

❋ पारमार्थिक संस्थाएँ ❋

१. श्रीसर्वेश्वर मासिक पत्र–

यह पत्र प्रति मास की पहली तारीख को श्री 'श्रीजो' मन्दिर संस्थित श्रीसर्वेश्वर प्रेस से प्रकाशित होता है। वार्षिक शुल्क ३०) रु० मात्र। आजीवन सदस्यता के ४०१) रु० है एक बार देने से फिर वार्षिक शुल्क नहीं देना पड़ेगा।

२. श्रीनिम्बार्क पाक्षिक पत्र–

यह पाक्षिक पत्र प्रति मास के दिनांक १ तथा १५ को प्रकाशित होता है, वार्षिक शुल्क २०) रु० मात्र। आजीवन सदस्य शुल्क २०१) रु० एक साथ जमा कराने पर वार्षिक शुल्क नहीं देना पड़ेगा।

३. श्रीनिम्बार्क ग्रन्थमाला–

इस ग्रन्थमाला के अब तक ४५ पुष्प प्रकाशित हो चुके हैं। मंगवाकर सम्प्रदाय सिद्धान्त की जानकारी प्राप्त कीजिये। आप भी अपनी रुचि के अनुसार किसी एक अप्रकाशित पुष्प को प्रकाशित कराने में आर्थिक योगदान देकर साहित्य सेवा में हाथ बटाइये। प्रकाशित ग्रन्थों का सूचीपत्र मंगाकर लाभ उठाइये।

४. श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय–

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर एवं अजमेर विश्व विद्यालय अजमेर द्वारा मान्यता प्राप्त उक्त महाविद्यालय में छात्रों को प्रवेशिका, उपाध्याय, शास्त्री तक अध्ययन की सुविधा प्राप्त है। श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के सज्जनों को यह जानकर परम हर्ष होगा कि बोर्ड एवं विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में भी मुख्य विषय के रूप में निम्बार्क दर्शन निर्धारित है।

५. श्रीनिम्बार्क दर्शन विद्यालय–

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा मध्यमा तक की स्थायी मान्यता प्राप्त उक्त विद्यालय श्रीनिम्बग्राम जि० मथुरा उत्तरप्रदेश में सञ्चालित है। जहाँ उत्तरप्रदेश, विहार, मध्यप्रदेश आदि विभिन्न प्रदेशों तथा नेपाल के छात्रों को व्याकरण, साहित्य आदि विषयों के अध्ययन की सुविधा प्राप्त है।

६. श्रीसर्वेश्वर वेद विद्यालय–

भारत सरकार की योजना के अन्तर्गत राजस्थान संस्कृत अकादमी जयपुर के सौजन्य से संस्थापित इस विद्यालय में सस्वर वेदाध्ययन की व्यवस्था है। ६ छात्रों को प्रति मास सौ-सौ रु० छात्रवृत्ति और वेदाध्यापक का पारिश्रमिक एक हजार रुपये की राशि भी सरकार की ओर से ही प्राप्त होती है। इनके आवास, भोजन आदि की व्यवस्था आचार्यपीठ की ओर से है। इसके अतिरिक्त आचार्यपीठ से दी जाने वाली वृत्ति वाले छात्र भी अध्ययन करते हैं। वर्तमान में कुल १२ छात्र वेदाध्ययन करते हैं।

७. श्रीनिम्बार्क वेद विद्यालय–

श्रीनिम्बार्कनिकुञ्ज, निम्बार्कनगर, हीरापुरा–जयपुर में चल रहा है यहाँ पर भी ६ छात्र वेदाध्ययन में रत हैं।

८. श्रीराधासर्वेश्वर छात्रावास–

तीनों विद्यालयों के कुल मिलाकर इस छात्रावास में इस समय १०० छात्र हैं, जिनके आवास, प्रकाश, पुस्तक एवं भोजन-वस्त्रादि की व्यवस्था पीठ की ओर से ही हो रही है। धनीमानी सज्जनों को चाहिये कि इन छात्रों

के लिये अन्न या वस्त्र आदि भेजकर इस शिक्षा सम्बन्धी सर्वोत्तम सेवा में सहयोग दें।

९. श्रीराधामाधव गोशाला–

इस गोशाला में इस समय दूध देने वाली तथा न देने वाली कुल मिलाकर १०० गायें हैं। दूध देने वाली गायों का दूध भगवत्सेवादि कार्यों में ही लिया जाता है। बिक्री आदि में नहीं। इस गोशाला में विद्युत् प्रकाश के साथ-साथ पंखे, बांसुरी वादन आदि दुग्धवर्द्धन साधनों की योजना भी है, स्वच्छता आदि पर भी पूर्ण ध्यान दिया जाता है। गोभक्त प्रेमियों को गो-सेवार्थ आर्थिक सहयोग भेजकर गो-सेवा में सहयोग प्रदान करना चाहिये।

१०. श्रीहरिव्यास पारमार्थिक औषधालय–

इस औषधालय द्वारा रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा कर औषधि दी जाती है। इसमें श्रीकृष्णगोपाल आयुर्वेद भवन कालेड़ा एवं श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवन झांसी द्वारा औषधियों का समय २ पूर्ण सहयोग संप्राप्त है।

११. श्रीनिम्बार्क पुस्तकालय–

इस प्राचीन पुस्तकालय में स्मृति, पुराण, इतिहास, व्याकरण, साहित्य, न्याय मीमांसा, एवं वेदान्तादि अनेक हस्त-लिखित तथा प्रकाशित सहस्रों ही धार्मिक ग्रन्थों का संग्रह है। इनमें प्राचीन हस्तलिखित कई एक ग्रन्थों के प्रकाशन का कार्य भी चल रहा है।

१२. श्रीहंस वाचनालय–

इस वाचनालय में संस्कृत तथा हिन्दी के दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक तथा वार्षिक अनेक पत्र पत्रादिक आते हैं। जिनको पढ़ कर सभी लाभ उठाते हैं।

१३. सन्त–सेवा–

अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्क-तीर्थ (सलेमाबाद) एवं आचार्यपीठ द्वारा संचालित (१) तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज संस्थित श्रीपरशुरामद्वारा (३) श्री श्रीजी मन्दिर प्रताप बाजार वृन्दावन तथा (४) श्रीनिम्बार्कराधा-कृष्णविहारी मन्दिर निम्बार्क तपःस्थली निम्ब-ग्राम (५) श्रीनिम्बार्ककोट अजमेर (६) श्री राधासर्वेश्वर मन्दिर, मदनगंज--किशनगढ़ (७) श्रीगोपालविहारी मंदिर, किशनगढ़-शहर (८) श्रीनिम्बार्कनिकुञ्जविहारी मन्दिर, निम्बार्कनगर, हीरापुरा-जयपुर (९) श्री निम्बार्क मारुति मन्दिर, निम्बार्कतीर्थद्वार, किशनगढ़–मकराना मार्ग, इन सभी संस्थानों में प्रतिदिन सन्त-सेवा होती है।

१४. पक्षी सेवा–

मोर, कबूतर, तोता, मैना, चिड़िया आदि पक्षियों को ज्वार–बाजरा–मक्का आदि का दाना दिया जाता है। इसमें भी जो भक्त अपनी सेवा अर्पित करना चाहें तदर्थ अपनी यथारुचि यथाशक्ति सेवा कर के परम पुण्य का लाभ प्राप्त करें।

उपर्युक्त इन पारमार्थिक संस्थाओं में आप अपनी इच्छानुसार आर्थिक सेवायें प्रदान कर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

महोत्सव आयोजन–

१ श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी महोत्सव निम्बार्कतीर्थ
२ बलराम जयन्ती गोपालद्वारा किशनगढ़
३ श्रीराधाष्टमी श्रीराधासर्वेश्वर मन्दिर मदनगंज
४ श्रीभागवत जयन्ती निम्बार्ककोट अजमेर
५ श्रीनिम्बार्कजयन्ती श्रीपरशुरामद्वारा पुष्कर
६ झूलन महोत्सव श्रीजी बड़ा मन्दिर वृन्दावन

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ द्वारा संचालित–

विभिन्न देवालय

१ मन्दिरश्रीविजयगोपालजी निम्बार्कतीर्थ
२ ,, नृसिहजी ,,
३ आचार्य समाधि स्थल, श्रीहनुमानजी ,,
४ महादेवजी का मन्दिर ,,
५ मन्दिरश्रीनिम्बार्क महादेव, सूर्य मन्दिर ,,
६ ,, हनुमानजी गंगासागर ,,
७ ,, बाली वाले हनुमानजी ,,
८ ,, निम्बार्क मारुति खातोली मोड़
९ ,, राधासर्वेश्वर मदनगंज
१० ,, गोपालविहारीजी किशनगढ़
११ ,, निम्बार्कगोपीजनवल्लभजी अजमेर
१२ ,, परशुरामद्वारा पुष्कर
१३ ,, गोपालजो महाराज भीतियां
१४ ,, जगमोहनद्वारा रूपनगर
१५ ,, गोपालद्वारा ,,
१६ ,, गोपालजी महाराज करकेड़ी
१७ ,, युगलविहारीजी फतेहगढ़
१८ ,, गोपालजी जोधपुर
१९ ,, निम्बार्कनिकुञ्जविहारीजी जयपुर
२० ,, नृसिंह टेकरी महू
२१ ,, निम्बार्कराधाकृष्णविहारीजी निम्बार्क तपःस्थली नीमगांव
२२ ,, द्वारकाधीश अमरावती
२३ ,, नृसिंहजी नागपुर
२४ ,, भजनदासमठ पंढ़रपुर
२५ ,, आनन्दमनोहरवृन्दावनचन्द्रजी बड़ी कुञ्ज, वृन्दावन
२६ मन्दिरश्रीमुरलीमनोहरजी बड़ी कुंज वृन्दावन
२७ ,, रूपमनोहरचन्द्रजी बांदी कुंज वृन्दावन
२८ ,, कृष्णचन्द्रमाजी छोटी कुंज ,,
२९ ,, नागरविहारीजी नागरकुंज ,,
३० ,, सहजविहारीजी जीवाराम कुञ्ज वृन्दावन
३१ ,, दानविहारीजी दानविहारी कुंज वृन्दावन
३२ ,, राधाकृष्णविहारीजी पन्नावाली कुंज वृन्दावन
३३ ,, सर्वेश्वर वाटिका वृन्दावन
३४ ,, ईमली कुंज ,,
३५ ,, विहार घाट वृन्दावन
३६ ,, परशुराम द्वारा मथुरा
३७ निम्बार्क निकेतन चौक बाजार मथुरा
३८ मन्दिरश्रीगोपालजी महाराज चला
३९ ,, दूदाधारी गोपालजी भीलवाड़ा
३० ,, गोपालजी सांगानेर
४१ ,, ब्रजराजजी लावा (राज०)
४२ श्रीजी का बड़ा बगीचा (पक्का बगीचा) परिक्रमा मार्ग वृन्दावन
४३ निम्बार्क निकेतन शाहगंज मथुरा

'स्मारिका' का स्वरूप

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के आचार्यपीठाभिषेक अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव स्वर्णजयन्ती महोत्सव के शुभावसर पर अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के अन्तर्गत आयोजित हिन्दू संस्कृति सम्मेलन, विश्व शान्ति सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, संगीत सम्मेलन आदि सम्मेलन दि० २२ मई १९९३ ई० से दि० २८ मई १९९३ ई० पर्यन्त सप्त दिवसीय कार्यक्रम के साथ विभिन्न स्थानों से पधारे हुए विशिष्ट धर्माचार्यों, महामण्डलेश्वरों, मण्डलेश्वरों, श्रीमहन्तों, महन्तों, सन्त-महात्मा एवं विद्वानों की उपस्थिति में सफलतापूर्वक सानन्द सम्पन्न हुए ।

सभी आगन्तुक महानुभावों के लिए आवास की समुचित व्यवस्था की गई थी, भक्तजनों के लिए शाला के विशाल प्राङ्गण में वी० आई० पी० टेन्ट, स्विस काटेज, ई० पी० टैन्ट, रावटियाँ आदि लगी हुई थी । भोजन-प्रसादादि के लिए कच्चे और पक्के दोनों प्रकार के भोजन की व्यवस्था थी । प्रतिदिन दूर-दूर से व आस-पास से आने वाले भावुकजनों के लिए विशाल सभा मण्डप बना हुआ था जिसमें लाख-डेढ लाख श्रोताओं के बैठने की व्यवस्था थी तथा स्थान-स्थान पर टी० वी० सेट लगे हुए थे जिससे दूर बैठे हुए श्रोताओं को भी सभामञ्च का सम्पूर्ण दृश्य दृष्टिगोचर हो रहा था ।

सम्मेलन में विशिष्ट धर्माचार्यों ने अपने प्रवचनों में सभी सामयिक समस्याओं पर गम्भीरता पूर्वक अपने विचार प्रकट करते हुए मार्गदर्शन प्रदान किया, इनमें धर्मनिरपेक्षता, गोहत्या निषेध, अयोध्या में श्रीराम मन्दिर निर्माण, देवालयों की सुरक्षा, आधुनिक शिक्षा नीति और भारतीय संस्कृति का ह्रास आदि विषय प्रमुख थे जो आज जन-जन को उद्वेलित किए हुए हैं । इन विषयों पर धर्माचार्यों के प्रवचनों को बहुत थोड़ा संक्षिप्त करके यथावत् देने का प्रयास इस "स्मारिका" में किया गया है ।

इस वृहद् सम्मेलन का विवरण "स्मारिका" के रूप में प्रकाशित करना भी एक दुरूह कार्य था, इसके आर्थिक समाधान के लिए व्यवसायी बन्धुओं को पत्र लिखे गये और उन्होंने सहर्ष अपने व्यावसायिक विज्ञापन भेजकर स्मारिका के प्रकाशन में जो आर्थिक सहयोग प्रदान किया उसके लिए हम उनके पूर्ण आभारी हैं । विज्ञापन प्राप्ति के इस कार्य में मदनगंज से श्रीरामगोपालजी बंग, श्रीघनश्यामजी आगीवाल, श्रीरामस्वरूपजी चौधरी, श्रीओमप्रकाशजी भँवर । जयपुर से श्रीकल्याणजी सूतवाले, अजमेर से श्रीश्यामजी छापरवाल, मकराना से श्रीकैलाशचन्द्रजी काबरा, श्रीनटवरलालजी, व्रजमोहनजी रांधड़, इचलकरंजी से श्रीरामगोपालजी बाल्दी, शाहपुरा से श्रीरामस्वरूपजी मून्दड़ा का जहाँ सहयोग मिला वहीं श्रीहरिप्रसादजी भँवर मदनगंज का उत्साह विशेष सराहनीय रहा जिन्होंने पत्रों के आदान-प्रदान में हमें पूर्ण सहयोग दिया, रंगीन चित्रों के प्रकाशन में जयपुर प्रिन्टर्स जयपुर का सहयोग मिला तथा श्रीनवलकिशोरजी व्यास का निर्देशन विशेष सहायक रहा । अत: इन सभी महानुभावों को धन्यवाद देते हुए आभार प्रकट करना हम अपना कर्तव्य समझते हैं । सभी के सम्मिलित सहयोग से "स्मारिका" का जैसा भी स्वरूप बन सका है वह श्रद्धालु पाठकों के करकमलों में सादर समर्पित है । जय श्रीसर्वेश्वर !

--व्यवस्थापक

सम्मेलन में समाचार पत्रों का योगदान

अखिल भारतीय जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव पर आयोजित अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन दि० २२ मई १९९३ से २८ मई १९९३ पर्यन्त सानन्द सम्पन्न हुआ। सम्मेलन की सफलता में जहाँ अनेकानेक बन्धुओं का पूर्ण सहयोग रहा वहीं पत्रकार बन्धुओं का सहयोग भी विशेष चिरस्मरणीय रहेगा। अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने अपने विशेष अंकों द्वारा राजस्थान ही नहीं सम्पूर्ण भारतवर्ष के कौने-कौने में सम्मेलन के विचारों का व्यापक प्रचार-प्रसार कर अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है। हम उन सभी व निम्न पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशक, सम्पादक एवं सम्वाददाताओं का हार्दिक आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद अर्पित करते हैं और आशा करते हैं कि आचार्यपीठ में जब-जब भी इस प्रकार के समारोहों का आयोजन हो वे अपना योगदान निरन्तर बनाये रखेंगे।

—सम्पादक

वे पत्र-पत्रिकाएँ जिन्होंने अपने अंकों में सम्मेलन के समाचार प्रसारण को विशेषरूप से प्रमुखता दी—

दैनिक—'नवज्योति' अजमेर, जयपुर व कोटा से प्रकाशित
समाचार प्रसारण यथावसर दि० १ मई १९९३ से २९ मई १९९३ तक

,, 'राजस्थान पत्रिका' जयपुर, कोटा, उदयपुर, जोधपुर व बीकानेर से प्रकाशित
यथावसर दि० १२ मई १९९३ से २९ मई १९९३ तक

,, 'न्याय' अजमेर, जयपुर व अलवर से प्रकाशित
यथावसर १२ मई १९९३ से २९ मई १९९३ तक

,, 'आधुनिक अजमेर' अजमेर से प्रकाशित वर्ष ११ अंक ८६ (२९ मई)

,, 'दिशादृष्टि' अजमेर, नागौर व जयपुर से प्रकाशित
यथावसर २१ मई से २९ मई १९९३ तक

,, 'गुलशन' अजमेर से प्रकाशित वर्ष ३ अंक ४३ (२९ मई ९३)

,, 'राज्यादेश' अजमेर से प्रकाशित वर्ष १० अंक ७५ (६ जून ९३)

,, 'समाज' अजमेर से प्रकाशित दि० २१ जून ९३

साप्ताहिक—'पाञ्चजन्य' दिल्ली से प्रकाशित वर्ष ४७ अंक १ (१३ जून ९३)
,, 'इतवारी पत्रिका' जयपुर से प्रकाशित वर्ष २० अंक २५ (जून ९३)
,, 'काठेडा' जयपुर से प्रकाशित वर्ष २ अंक ५१ (३ जून ९३)
,, 'धर्मध्वनि' अयोध्या से प्रकाशित वर्ष ९ अंक ४६–४७ (२७ मई ९३)
पाक्षिक—'भभक' हाथी भाटा अजमेर से प्रकाशित वर्ष २६ अंक १०–११ (मई-जून ९३)
,, 'पाथेय' जयपुर से प्रकाशित वर्ष ६ अंक ४ (जून ९३)
,, 'न्यूज टाइम्स' केकड़ी से प्रकाशित वर्ष १ अंक १२ (१ जून ९३)
,, 'सन्मार्ग' लक्ष्मणगढ़ (सीकर) से प्रकाशित वर्ष २ अंक १-२ (जून ९३)
,, 'ओसवाल ज्योति' जयपुर से प्रकाशित वर्ष २ अंक २२ (मई ९३)
त्रैमासिक—'दिव्य उपसाना' प्रयाग से प्रकाशित वर्ष ७ अंक १ सं० २०५०
मासिक—'विप्र गौरव' जयपुर से प्रकाशित वर्ष ११ अंक १० (जुलाई ९३)
,, 'वरदायी' अजमेर से प्रकाशित (मई-जून ९३)
,, 'माया' इलाहाबाद से प्रकाशित वर्ष ६४ अंक ९ (१५ मई ९३)
,, 'संगीतकला' हाथरस से प्रकाशित वर्ष ५९ अंक ७ (जुलाई ९३)
,, 'भक्ति-भागीरथी' वर्ष ३२ अंक ६/७, 'भक्ति-भागीरथी कार्यालय' श्रीनृसिंहपीठ–नृसिंहपोल, ठेंगावाड़ा, अहमदाबाद से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक व प्रकाशक महामण्डलेश्वर श्रीव्रजविहारीशरणजी 'राजीव' महामन्त्री अ० भा० श्रीनिम्बार्क महासभा।

आप श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय की विशिष्ठ विभूति हैं तथा आचार्यपीठ में आयोजित समारोहों में सदैव अग्रणी रहते हैं। स्वर्णजयन्ती महोत्सव के इस अवसर पर भी आपकी उपस्थिति में कार्यकर्ताओं को जो मार्गदर्शन मिला वह परम सराहनीय है। आपका निर्देशन सभी सम्मेलनों की सफलता में सहायक रहा, जिसके लिए स्वागत समिति आपकी पूर्ण आभारी है, धन्यवाद।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ :–

BEAWAR

हार्दिक शुभकामना
22527 (ऑफिस)
52527 (निवास)
स्वस्तिक बैटरी कॉरपोरेशन
निर्माता : स्वस्तिक बैटरी एवं बैटरी प्लेट्स
21, निम्बार्क मार्केट, पृथ्वीराज मार्ग, अजमेर-305 001

॥ श्री हरि ॥

हार्दिक शुभकामनाएँ

जीवनराम मोहनलाल डाड

जनरल मरचेन्ट एण्ड
कमीशन एजेन्ट

राजस्थान बैंक के पास,
भूपालगंज, भीलवाड़ा (राज.)

प्रोपराइटर
रतनलाल प्रमोद कुमार डाड

॥ श्री राधा सर्वेश्वरो विजयते ॥
श्री निम्बार्क महामुनिन्द्राय नमः
हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ

कन्चन कार्पोरेशन

बस स्टैण्ड, शाहपुरा (भीलवाड़ा)

भवदीय
कैलाश झंवर

हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ

✆ 26706 दुकान
22250 घर

मै. गोयल ट्रेडर्स

जिला वितरक : सरदार खाद (जी.एस.एफ.सी.)
एवं कीटनाशी व बीज के विक्रेता

बाजार नं. 2, भोपालगंज,
भीलवाड़ा (राज.)

भवदीय
नन्दलाल अग्रवाल
कृष्ण गोपाल अग्रवाल
(शाहपुरा वाले)

श्री निम्बार्काचार्यपीठस्थ पूर्वाचार्यों के समाधिस्थल का अनुपम दर्शन